तर्जमा: ऐ लोगो! इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं।
(पारा 14, सूरे नहल)

हम से पूछिये

तालीफ़

मौलाना मुहम्मद इल्यास खान नूरी
(फ़ाज़िल उलूमे इस्लामिया कानपुर यू.पी)
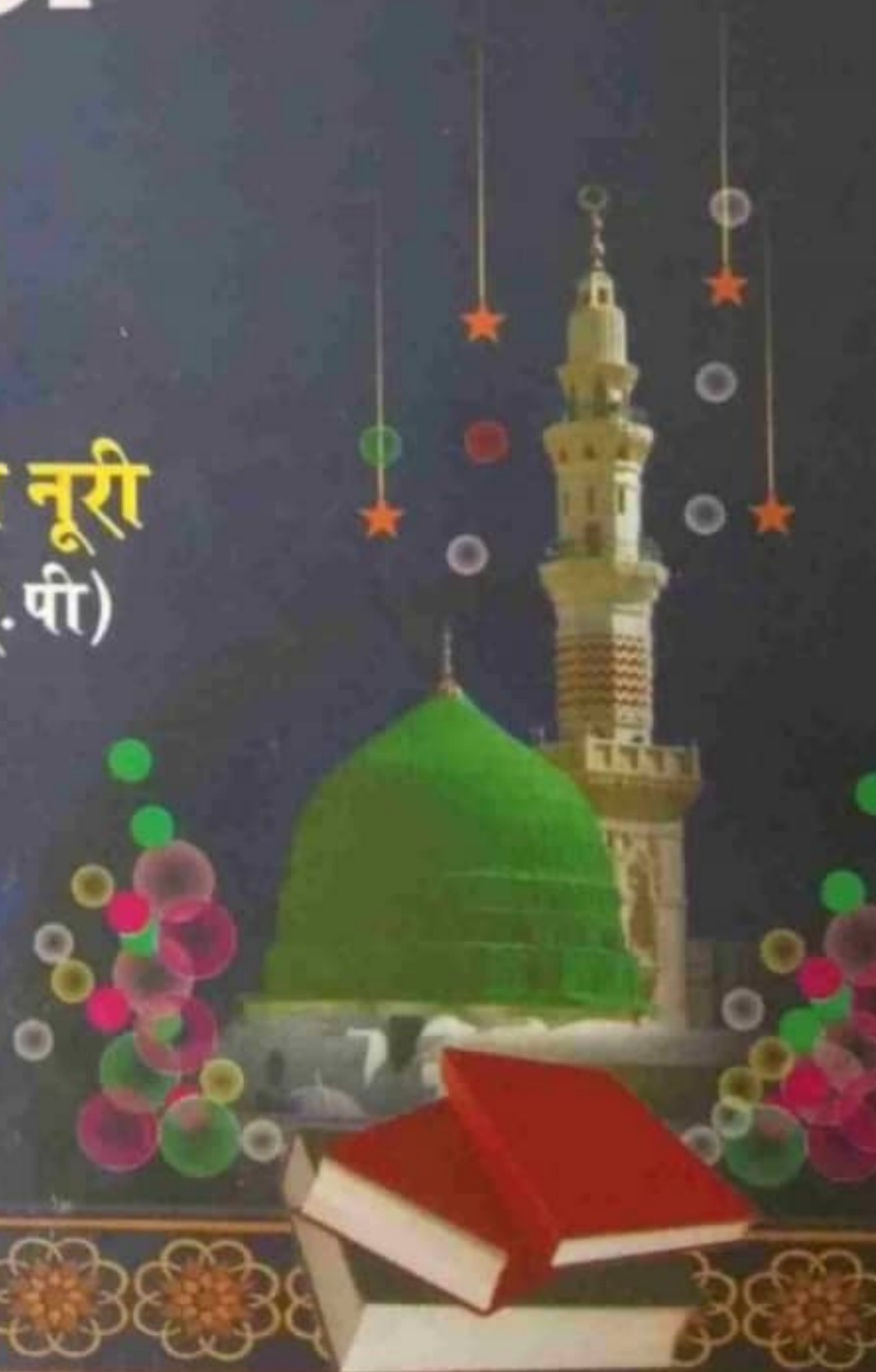
प्रकाशक
रज़वी किताब घर
423, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

तर्जमा : "ऐ लोगो! इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हे इल्म नहीं।"
(पारा 14, सूरह नहल)

हम से पूछिये

तालीफ़

मौलाना मुहम्मद इल्यास ख़ान नूरी

(फ़ाज़िल उलूमे इस्लामिया कानपुर, यू0पी0)
मु0 पो0 रतनपुर, तहसील-मातर,
जि0 खेडा (गुजरात)

प्रकाशक
रज़वी किताब घर
423, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006
Phone : 011 - 23264524 Mobile : 9910920970

मुख़्तसर तार्रुफ मोअल्लिफ किताब हाज़ा

नाम मोअल्लिफ	:	मौलाना मुहम्मद इलयास खान नूरी
वालिद गिरामी	:	रमज़ान अली ख़ान
तारीख़े पैदाईश	:	1962 ई०
वतने अज़ीज़	:	मौज़ा शंकरपुर पोस्ट रानीजोत, तहसील तुलसीपुर जिला बलरामपुर, (यू०पी०)
मुक़ीम हाल	:	मुकाम पोस्ट रतनपुर, तअलुका मातर ज़िला खेड़ा, (गुजरात)
असनाद	:	मुंशी मौलवी, आलिम, फाज़िल इलाहाबाद बोर्ड
मादरे इल्मी	:	जामिया अरबिया अनवारुल कुरआन, बलरामपुर
सनदे फरागत	:	जामिया अरबिया अहसनुल मदारिस कदीम, नई सड़क, कानपुर,
पीर व मुरशिद	:	शहज़ादए आला हज़रत ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ्तीए आज़म हिंद, अलैहिर्रहमा, बरैली
तारीख़े हज व ज़्यारत	:	14 मई, 1990 ई०
मशग़ला	:	दर्स व तदरीस और दीनी ख़िदमात
असातज़ा-ए-किराम	:	शारेह बुख़ारी मुफ़्ती शरीफुल हक अमजदी अलैहिर्रहमा अमीने इब्ने शरीयत मुफ़्ती रिफाकत हुसैन अलैहिर्रहमा मुफ़्ती मुहम्मद असलम अलैहिर्रहमा सूफी अब्दुर्रहमान मुजद्दिदी मुफ़्ती गुलाम मुहम्मद खां अज़ीज़ी मुफ़्ती दानिश अली फरीदी बलरामपुरी मौलाना अबुल लैस आज़मी मुफ़्ती ज़ैनुल आबेदीन अकबरपुरी अल्लामा वकील अहमद रज़वी मौलाना शाह मुहम्मद कैफ़ी वस्तवी मुफ़्ती हफ़ीजुल्लाह खां साहब नईमी मुफ़्ती अब्दुर्रहमान खां साहब तुलसीपुरी अल्लामा ज़ैनुल आबेदीन शमसी मौलाना अली अहमद आज़मी (एम०ए० अलीगढ़)

इनमें जो असातज़ा-ए-किराम इस दुनिया में नहीं रहे अल्लाह उनकी क़ब्रों पर रहमतों की बारिश बरसाये। और इन्हें अपने जवारे रहमत में जगह अता फरमाये। अल्लाह उनकी मग़्फिरत फरमाये और उनके सदके में हमारी भी मग़्फिरत फरमाये। और जो बा-हयात हैं उनकी उम्र में इज़ाफा फरमाये और उनसे दीन की ख़िदमत लेता रहे।

ख़ाके पा : मौलाना मुहम्मद इलयास खान नूरी

इंतेसाब

मुफ़स्सिरे कुरआन, रईसुल मुहक्क़ेक़ीन हकीमुल उम्मत हज़रत अल्लामा मुफ्ती अहमद यार खां नईमी बदायूंनी रहमतुल्लाह अलैहि के नाम जिनकी तसानीफ़ से इस्तेफ़ादा करके अहकामे इलाही के इसरार व रमूज़ आपकी ख़िदमत में पेश करने की शर्फ़ हासिल किया।

अबर रहमत उनकी मरक़द पे गुहर बारी करे
हश्र तक शाने करीमी नाज़ बरदारी करे

ख़ादिमे दीन व मिल्लत

मुहम्मद इल्यास ख़ान नूरी

मु0 पो0 रतनपुर, तहसील-मातर,
जि0 खेडा (गुजरात)

नज़रानए अकीदत

उन उलमा फुक़हा, मुफ़स्सेरीन, मुहद्देसीन, मुजद्देदीन की बारगाह में जिनके क़लम की स्याही शहीदों के ख़ून पर भारी है।

खादिमे दीन व मिल्लत

मुहम्मद इल्यास ख़ान नूरी

अर्जे मोअल्लिफ़

एक तवील अर्से से मेरी दिली ख़्वाहिश थी कि तफ़सीरे नईमी के तमाम आम फ़हम एतेराज़ात के जवाबात यकजा करके किताबी शक्ल दूं, लेकिन कुछ मसरूफ़ियात और फुरसत के फुक़दान की कमी जंज़ीर पा बनती रही। अलहम्दुलिल्लाह! आज मेरी दिली ख़्वाहिश पूरी हुई और तफ़सीरे नईमी की १८ जिल्दें जो मुझे दस्तयाब हो सकीं मैंने उसमें से तमाम आम फ़हम एतेराज़ात के जवाब मज़ीद इज़ाफ़े के साथ तरतीब देकर यह किताब (हम से पूछिये) आप की ख़िदमत में पेश करने का शर्फ़ हासिल किया। अगर आप दिल व दिमाग़ को बरुए कार लाते हुए इस किताब का मुताला करेंगे तो यह किताब इंशाअल्लाह तआला आपके मालूमात में मज़ीद इज़ाफ़ा का बाइस होगी।

अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र व एहसान है और पीर व मुरशिद आक़ाए नेमत, ताजदारे अहले सुन्नत, शहज़ादए आला हज़रत हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म हिंद अबुल बरकात मुहय्युद्दीन जीलानी अल्लामा शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा नूरी बरैलवी अलैहिर्रहमा की दुआओं का फैज़ान है कि यह गुनाहगार अब तक एक दर्जन से ज़्यादा किताबें अपने क़ारेईने किराम की ख़िदमत में पेश कर चुका हैं यह मेरे मुरशिद का करम नवाज़ी नहीं तो क्या है? वरना कहां मुझ जैसा कम इल्म और कहां दुनियाए तसनीफ़ व तालीफ़! सच पूछो तो तसनीफ़ व तालीफ़ उन अज़ीम हस्तियों का इस्तेहक़ाक है जो ज़ेवरे इल्म व अमल से आरास्ता हैं। मैं तो हेच हूं बल्कि हेच से भी कमतर हूं। ऐसे हेच व कमतर से भला क्या हो सकता है। इस किताब में अहकामे इलाही के इसरार व रमूज़ सवाल व जवाब की शक्ल में तरतीब दिया यह तो सिर्फ़ मैं उन रिवायात व वाक़ियात का नाक़िल हूं जिसे हकीमुल उम्मत हज़रत मुफ़्ती अहमद यार खां नईमी बदायूंनी रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी तसानीफ़ व तफ़सीर में तहरीर फ़रमाया है। मेरे लिये बस यही काफ़ी है कि इल्म व हिकमत से भरपूर यह इल्मी ज़ख़ीरा क़ारेईने किराम तक पहुंचा रहा हूं।

इस किताब पर मैंने किसी आलिम की तक़रीज़, तसदीक़, व तसहीह की ज़रूरत इसलिये नहीं महसूस की कि सेहते किताब के लिये हज़रत हकीमुल उम्मत अलैहिर्रहमा का नाम ही काफी हैं फिर भी आप से मैं बसद एहतेराम इल्तिमास करूंगा कि बतकाज़ाये बशरी इस किताब में अगर कोई कलमी लग्ज़िश हुई हो तो दुआ फरमायें कि अल्लाह तआला अपने प्यारे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदके व तुफ़ैल में हज़रत हकीमुल उम्मत अलैहिर्रहमा को माफ फरमायें और उनकी कब्र को नूर से मामूर फरमाये और उलमाए हक़ के सदका तुफ़ैल में अल्लाह हम सबकी बख़्शिश व मग्फिरत फरमाये। आमीन सुम्मा आमीन।

आख़िर में आप से यही कहूंगा कि जब आप किसी दीनी व मज़हबी किताब का मुताला करें तो ख़ूब गौर व फ़िक्र करें। दिल व दिमाग़ से ग़फलत की पट्टी खोल दें, माना, मतालिब, मफाहीम समझने की भरपूर कोशिश करें क्योंकि पढ़ना समझने के लिये होता है। अगर हम किसी दीनी व मज़हबी किताब को समझ कर न पढ़ें तो मुताला का मक़सद फौत हो जाता है। मुताला करते वक़्त अक़्ल व दिमाग़ की हाज़िरी ज़रूरी है बुजुर्गों का कौल है कि एक मन इल्म के लिये दस मन अक़्ल की ज़रूरत है तब इल्म समझ में आता है वरना नहीं।

आज लोगों का ज़ौके मुताला बिल्कुल खत्म हो चुका है, किसी मज़हबी किताब को पढ़ने के लिये लोगों को शौक ही नहीं। बहुत कम हज़रात ऐसे मिलेंगे जिनमें ज़ौके मुताला है अच्छी किताब ख़रीदने के लिये लोग पैसा ख़र्च नहीं करते, जब कि किस्से, नाविल, कहानी, शेर व शायरी की किताबें, अख़लाक सोज़ किताबें ख़रीदने के लिये लोगों के पास पैसे भी हैं और पढ़ने के लिये वक़्त भी है मगर कुरआन की तफसीर अहादीसे नबविया व मज़हबी किताबें पढ़ने के लिये लोगों के पास वक़्त नहीं। अफ़सोस सद अफ़सोस।

वाए नाकामी मताअे कारवां जाता रहा.
कारवां के दिल से एहसासे ज़ियां जाता रहा

किसी दानिशवर का कौल है कि दो चीज़ की कीमत ख़्वाह कितनी

ज़्यादा क्यों न हो मगर ले लो। एक उम्दा किताब जो इल्म व हिकमत और नसीहत से भरपूर हो, दूसरी सेहत बख़्श दवा। दुनिया में कोई भी ऐसी चीज़ नहीं जो बचपन, जवानी, और बुढ़ापे में इंसान के लिये मुनासिब हो, मगर इल्म व हिकमत से भरपूर किताब हर इंसान के लिये हर हाल में मुनासिब है। एक उम्दा और अच्छी किताब से बढ़कर कोई साथी और दोस्त नहीं। और आख़िर में यह भी आपको बता दूं कि जिस आदमी में इल्म नहीं वह जानवर है और जिस घर में आलिम नहीं वह घर नहीं बल्कि जानवरों का दरबा है और जिस मुल्क में इल्म का रिवाज नहीं वह मुल्क नहीं बल्कि हैवानात का जंगल है।

मेरे भाई! इल्म बहुत बड़ी दौलत है। इसकी हुसूल में गफ़लत व सुस्ती न करो। चौबीस घंटे में सिर्फ़ आधा घंटा सुबह व शाम वक़्त निकालकर पाबंदी के साथ ग़ौर व तदब्बुर से तफ़सीर कुरआन, अहादीसे नबविया और दीनी किताबें समझ कर पढ़ें। अगर आप ऐसा करेंगे तो बहुत थोड़े दिनों के अंदर आप अपने में एक नई तबदीली पायेंगे एक नया बदलाव देखेंगे।

आख़िर में आप से बसद एहतेराम इल्तेमास करूंगा कि आप अपने हलक़ए अहबाब में बिलख़ुसूस उलमाए किराम और आइम्मए मसाजिद जिन्हें मुताला का शौक़ है मगर किताबें ख़रीदने से क़ासिर हैं अगर आपका जेब ख़ास इजाज़त देता हो तो आप इन्हें कोई मतलूबा इस्लामी लिटरेचर ख़रीदकर हदिया या तोहफ़ा में ज़रूर दें या नशरयाती इदारों की आप ताव्वुन करें, या अपने तरफ़ से अपने मरहूमों की ईसाले सवाब के लिये कोई किताब शाया करा दें। यकीन जानिये यह आपके लिये सदक़ा जारिया हैं आप अपने घरों में इस्लामी किताबें बसाईये, ख़ुद पढ़िये और अपने अहल व अयाल को भी पढ़ने की तलक़ीन कीजिये। अल्लाह तआला हम सबको हक़ पढ़ने, हक़ समझने और हक़ पर अमल करने की तौफ़ीक़ बख़्शे। आमीन।

अंदाज़े मेरा अगर चे बहुत शोख़ नहीं है
शायद कि उतर जाये तेरे दिल में मेरी बात

ख़ादिमे दीन व मिल्लत : **मुहम्मद इलयास ख़ान नूरी**

मुकाम व पोस्ट, रतनपुर, तहसील मातर, जिला खेरा, गुजरात

नमदहु व नुसल्लि आला रसूलेहिल करीम

सवाल : अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातहू

जवाब : वालेकुम अस्सलाम वरहमतुल्लाहि व बरकातहु व मग़्फिरतहू

सवाल : अस्सलामु अलैकुम का मायने क्या होता है और यह सलाम तमाम मज़हबों के सलाम से अफ़जल क्यों है?

जवाब : बुख़ारी व मुस्लिम ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने पैदा फ़रमाया तो फ़रमाया देखो वह फ़रिश्तों की जमाअत बैठी है वहां जाओ और उन्हें सलाम करो और उनके जवाब में गौर करो क्योंकि वही तुम्हारी औलाद का सलाम व जवाब होगा। चुनांचे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम वहां गये और कहा अस्सलामु अलैकुम वह सब बोलने लगे वअलैकुम अस्सलाम वरहमतुल्लाह उलमा फरमाते हैं कि सलाम अगरचे एक आदमी को करे मगर अलैकुम ज़मीर जमआ इस्तेमाल करे कि हर शख़्स के साथ फरिश्ते होते हैं। करामन कातेबीन और मुहाफेज़ीन इनको भी सलाम हो जाये चुनांचे वह भी जवाबे सलाम देते हैं। ख़्याल रहे कि जमअ का इतलाक़ कम से कम तीन पर होता है। तिर्मिज़ी, अबू दाऊद ने हज़रत इमरान बिन हसीन से रिवायत की कि एक शख़्स नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया अस्सलामु अलैकुम हुज़ूर ने जवाब दिया और फरमाया, दस। फिर दूसरा आया, अर्ज़ किया अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह जवाब दिया और फ़रमाया बीस। फिर तीसरा हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातहू जवाब दिया और फरमाया तीस। शारेहीन हदीस फ़रमाते हैं कि पहले को दस नेकियां मिलीं, दूसरे को बीस और तीसरे को तीस नेकियां मिलीं।

सवाल : उलमा कहते हैं कि हर इंसान के साथ करामन कातबीन और मुहाफिज़ फरिश्ते रहते हैं, इसलिये अस्सलामु अलैकुम में लफ्ज़ अलैकुम ज़मीर जमअ का इस्तेमाल हुआ तो क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ यह

फ़रिश्ते और करामन कातेबीन नहीं होते? यहां क्यों अस्सलातु वस्सलामु अलैका में अलैक ज़मीर वाहिद का इस्तेमाल हुआ और अगर हुज़ूर के साथ फ़रिश्ते और करामन कातेबीन होते हैं तो यहां पर भी ज़मीर जमअ का इस्तेमाल होना चाहिये।

जवाब : इन्सान ख़ता व निस्यान का पुतला है इसलिये करामन कातेबीन को नेकी व बदी लिखने के लिये मुक़र्रर किया गया और उनकी ज़रूरत है लेकिन अंबियाए किराम गुनाहों से मासूम होते हैं फिर करामन कातेबीन की ज़रूरत ही क्या है? अल्लाह तआला ने अंबियाए किराम पर करामन कातेबीन को उठा लिया है। रहा मुहाफ़ेज़ीन फ़रिश्तों की बात जो हर इंसान के साथ होते हैं, मगर मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो दोनों आलम के मालिक व मुख़्तार हैं तमाम उम्मत ख़्वाह वह उम्मते इजाबत या उम्मते दावत (ग़ैर मुस्लिम) तमाम इंसान आप ही की मिलकियत में हैं। आप ही की उम्मत में हैं और हिफ़ाज़त मिलकियत की जाती है न कि मालिक की। मालिक ने अपने फेक्ट्री या कारख़ाने की हिफ़ाज़त के लिये मुहाफ़िज़ (चौकीदार) रखा है न कि अपने लिये। लिहाज़ा मेरे सरकार के साथ मुहाफ़िज़ फ़रिश्तों के होने का सवाल ही पैदा नहीं होता, क्योंकि कुरआन में अल्लाह तआला ने ख़ुद उनकी हिफ़ाज़त का वादा फ़रमाया है। नीज़ मुहद्देसीन व मुफ़स्सेरीन फ़रमाते हैं कि हर इंसान के दोनों कंधों के दर्मियान शैतान अपनी नशिस्त गाह बनाता है और वहीं बैठ कर अपने सूंड को इंसान के दिल में डालकर वसवसा पैदा करता है, बुराईयों और गुनाहों की तरफ़ बुलाता है, मासियत में गिरफ़्तार करता है।

तफ़सीर रूहुल ब्यान में है कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोनों शानों मुबारक के दर्मियान मुहरे नुबूवत लगा दिया जिस पर शैतान की नशिस्त ना मुमकिन हैं गोया कि अल्लाह तआला ने मुहरे नुबूवत लगाकर शैतान की नशिस्त ही ख़त्म कर दी और अपने महबूब के तुफ़ैल अंबियाए किराम को शैतान के मकर व फ़रेब और शर से हमेशा के लिये महफ़ूज़ फ़रमा दिया और इन मुक़द्दस हस्तियों को मासूम अन अनिलख़ता का एजाज़ बख़्शा। उनके लिये न करामन कातेबीन की ज़रूरत है न मुहाफ़ेज़ीन की। इस लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम पेश करने में ज़मीर वाहिद अलैक का इस्तेमाल हुआ।

इसमें कोई शक नहीं कि इस्लामी सलाम तमाम सलामों से अफ़ज़ल है। हिंदु

कहते हैं राम राम, जवाब देते हैं जी सीताराम। पंडित कहते हैं पाय लागू, नमश्कार, जवाब देते हैं सुखी रहो। मजूसी पारसी कहते हैं जियो हज़ारों साल। ईसाई कहते हैं गुडमार्निंग। मुसलमानों की जाहिल औरतें कहती हैं सलाम। जवाब मिलता है जीती रहो, बड़ी उम्र हो, दुनिया में ऐश से रहो। यह सब सलाम व जवाब बेहूदा व जाहिलाना हैं क्योंकि इनमें से बाज़ में तो शिर्क व कुफ़्र की बू है और बाज़ में दुनिया की हवस का इज़हार। सबसे बेहतर है अस्सलामु अलैकुम जिसका मायने व मतलब हुआ तुम पर अल्लाह की तरफ़ से सलामती हो। जवाब में व अलैकुम अस्सलाम तुम पर भी अल्लाह तआला की तरफ़ से सलामती हो। इसमें दीनी, दुनियावी हर मुसीबत से सलामती का ज़िक्र आ गया बाज़ लोग दूर से सिर्फ हाथ उठा देते हैं या सर हिला देते हैं ये तरीक़ा इस्लामी आदाब व सलाम के ख़िलाफ़ है। सलाम इतना बुलंद आवाज़ से करना चाहिये कि सामने वाला सुन सके। सलाम का जवाब देना वाजिब है, अगर कोई सुनकर सलाम का जवाब न दे तो वह गुनाहगार है। सलाम अल्लाह तआला के सिफ़ाती नामों में से एक नाम है।

सवाल : दुनिया की इब्तेदा किस तरह हुई?

जवाब : अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को मिट्टी से बनाया। मिट्टी को दरिया की झाग से बनाया। झाग को मोजों से बनाया और मोजों को पानी से बनाया। इस तरह दुनिया की इब्तेदा हुई।

सवाल : दुनिया का सबसे पहला इंसान कौन है?

जवाब : हज़रत आदम अलैहिस्सलाम दुनिया के पहले इंसान हैं, जो तमाम इंसानों के बाप हैं और यही सबसे पहले नबी व रसूल भी हैं, जो दुनिया में तशरीफ लाये। आप साहबे शरीयत और साहबे किताब हैं। इस एतेबार से दुनिया का सबसे पहला इंसान मोहिद मुसलमान है।

सवाल : नबी और रसूल में क्या फर्क है?

जवाब : रसूल साहबे शरीयत और साहबे किताब होता है और नबी रसूल के ज़माने में उनकी दीन और शरीयत का मुबल्लिग़ बनकर आता है।

सवाल : रसूलों की कुल कितनी तादाद है?

जवाब : मुफ़स्सेरीन, मुहद्देसीन और फुकहा के क़ौल के मुताबिक रसूलों की तादाद ३१३ है। इसी तादाद की मुनासबत से मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम जंगे बदर में अपने जां निसारों के साथ आये थे।

सवाल : अहले अरब के लिये रसूलों और नबियों की तादाद कितनी है?

जवाब : सरज़मीने अरब में कुल सात पैग़म्बर तशरीफ लाये। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हजरत इस्माईल अलैहिस्सलाम, हज़रत हूद अलैहिस्सलाम, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम, हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम, हज़रत शीस अलैहिस्सलाम और हमारे हुजूर हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

सवाल : तमाम अंबियाए किराम का दीन क्या था?

जवाब : सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान के मुताबिक सबका दीन इस्लाम ही है अलबत्ता शरीयतें अलग अलग हैं। लफ्ज़ शरीयत शरअ से बना है जिसके मायने पुख़्ता सड़क के होते हैं जो रसूल अल्लाह का पैग़ाम जिस अंदाज़ व अस्लोब से बंदों तक पहुंचाया वह अंदाज़े दावत व अस्लोबे ब्यान उस रसूल की शरीयत बन गयी।

सवाल : इस्लाम और ईमान में क्या फर्क है?

जवाब : कलिमा पढ़ना, नमाज़ पढ़ना, रोज़ा रखना, ज़कात देना, और साहबे इस्तेताअत हो तो हज करना यह इस्लाम है और अल्लाह तआला पर, उसके रसूलों पर, उसकी किताबों पर और आख़िरत पर अच्छी बुरी तक्दीर पर मुकम्मल यकीन रखना यह ईमान है। हुज़ूर की ताज़ीम व अदब और आपसे इश्क व मुहब्बत ही ईमान है। ईमान असल है आमाले उसकी फरअ। ईमान जड़ है आमाल इसकी शाखें। जिस तरह किसी दरख़्त की जड़ को काट देने से उसकी शाखें ख़ुद बख़ुद मुरझा जाती हैं बिल्कुल इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शाने अक्दस में अदना सी गुस्ताख़ी आमाल की खेती को तबाह व बरबाद कर देती है। ईमान की बुनियाद ख़ुश अकीदगी पर हैं अगर अकीदा बिगड़ गया तो तमाम आमाल बरबाद व बेकार है। इसलिये आमाल से ज़्यादा अकीदा की इस्लाह व दुरुस्तगी ज़रूरी है और मदारे नजात भी ईमान ही पर है, अमल पे नहीं। लोग ईमान की वजह से जन्नत में जायेंगे और दर्जे उनके आमाल के मुताबिक बुलंद किये जायेंगे।

सवाल : अल्लाह ने कुल कितनी किताबें नाज़िल की हैं?

जवाब : कुल एक सौ चार किताबें नाज़िल की हैं। उन तमाम किताबों और

सहीफ़ों की वज़ाहत मन तज़क्का वाली आयते करीमा की तफ़सीर में मौजूद है। ५० सहीफ़ा हज़रत शीश अलैहिस्सलाम पर, ३० सहीफ़ा हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम पर, ३० सहीफ़ा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर, तौरेत, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर, ज़बूर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर, इंजील हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर, और कुरआन हमारे आक़ा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ जो तमाम आसमानी किताबों का निचोड़ है जो पूरी नस्ले इंसानियत के लिये सुबह क़यामत तक हिदायत व रहनुमा है।

सवाल : वह कौन सा पानी है जो आबे कौसर और आबे ज़मज़म से भी अफ़ज़ल है?

जवाब : सुलह हुदयबिया के मौक़े पर हमारे आक़ा व मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबूवत वाली उंगली मुबारक से जो पानी निकला था और जिससे चौदह सौ सहाबा सैराब हुए थे वह पानी तमाम पानियों से ज़्यादा अफ़ज़ल है।

सवाल : वही क्या है, और हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को किस तरह मिलता था?

जवाब : अल्लाह तआला का जो पैग़ाम हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम हमारे हुज़ूर के पास लाये वह वही है और जो कुरआन की शक्ल में है। अल्लाह तआला क़लम को हुक्म देता था तो ये लोहे महफ़ूज़ पर लिख देता था और यह लोह (तख़्ती) हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम पर नाज़िल होता था। हज़रत इसराफ़ील हज़रत मिकाईल अलैहिस्सलाम को देते थे और हज़रत मिकाईल हज़रत जिब्राईल अमीन अलैहिस्सलाम को दे देते थे और हज़रत जिब्राईल अल्लाह का पैग़ाम मेरे हुज़ूर को पहुंचाते थे।

सवाल : अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को एक तरह की मिट्टी से बनाया या मुख़्तलिफ़ क़िस्म की मिट्टी से बनाया?

जवाब : मुख़्तलिफ़ क़िस्म की मिट्टी से बनाया इसी हर इंसान का चेहरा मोहरा एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ है ताकि एक दूसरे की पहचान हो जाये। नीज़ हज़रत आदम का मुजस्समा बनाने के बाद जो मिट्टी बची अल्लाह तआला ने

उस मिट्टी से खजूर का दरख़्त बनाया इसलिये खजूर इंसानी सेहत के लिये बहुत ही फायदे मंद है।

सवाल : इंसान की ज़िन्दगी में ख़ुशी कम और ग़म ज़्यादा क्यों हैं?

जवाब : तफासीर की किताबों में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाईश के किस्से में आया है कि अल्लाह तआला ने जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का पुतला अपने दस्ते कुदरत से बनाया और उसे मैदाने अरफात में रखा तो उस पर चालीस रोज़ तक मुसलसल बारिश हुई। उनतालीस दिन तक रंज व ग़म की बारिश हुई और एक दिन ख़ुशी की। इसलिये इंसान को रंज व ग़म ज़्यादा रहता है और ख़ुशी कम होती है।

सवाल : रूह डालने के बाद आदम अलैहिस्सलाम की ज़ुबान से सब से पहला लफ्ज़ क्या निकला था?

जवाब : जब रूह डाली गयी तो आपको छींक आ गयी और आपकी ज़ुबान से अलहम्दोलिल्लाह निकला। इसलिये कुरआन की इब्तेदा अलहम्दोलिल्लाह से की गयी क्योंकि यह इंसानी ज़ुबान से निकला हुआ पहला लफ्ज़ है।

सवाल : छींक क्या है, और यह क्यों आती है और इस पर अलहम्दोलिल्लाह क्यों पढ़ा जाता है?

जवाब : इंसान हो कि जानवर, छोटा हो या बड़ा सभी के दिल में ख़ून गर्दिश करता है और साफ होकर दिल से तमाम रगों में पहुंचता है। जब ख़ून में कोई कारबन यानी कि कचरा आ जाता है तो दिल में ख़ून पहुंचने में रुकावट आ जाती है, जिसकी वजह से पल भर के लिये दिल की धड़कन में भी रुकावट आ जाती है और फिर छींक आने पर झटके के साथ ख़ून वापस चल देता है कारबन दूर हो जाता है, और फिर से एक लम्हे के बाद दिल की धड़कन शुरू हो जाती है। अगर छींक न आये तो आदमी की दिल की धड़कन रुक जाये और इंसान की मौत वाकेय हो जाये। यह छींक आना धड़कन लम्हा भर को रोककर वापस शुरू होना कुदरत के हाथ की बात हैं इंसान के बस की बात नहीं। इसलिये छींक आने पर अल्लाह तआला का यह लफ्ज़ बोलकर शुक्र व एहसान अदा किया जाता है। एक जर्मन साइंस दां रोडलफ ने इस पर रिसर्च किया तो उसने भी यही कहा जो मैंने लिखा। दुनिया के बहुत से साइंस दानों ने सुन्नते नबवी पर

रिसर्च किया तो उन्होंने बर मला एतेराफ़ किया कि पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हर बात में कोई न कोई साइंसी पहलू छुपा हुआ है मैं दावे के साथ कहता हूं कि दुनिया अगर सुन्नते नबवी और आपकी तालीमात पर रिसर्च करे तो साइंस की हर नई तहक़ीक़ और रिसर्च में इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम की तालीमात सबके लिये रहबर व रहनुमा साबित होगा।

सवाल : मर्द के कफ़न में तीन कपड़े और औरत के कफ़न में पांच कपड़े क्यों दिया जाता है?

जवाब : हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने जब गंदुम का दाना खा लिया तो उनके बदन से जन्नती लिबास जाता रहा। आपने इंजीर के तीन पत्तों से दो पीछे और एक आगे के शर्मगाह को छिपाया इसलिये मर्द के कफ़न में तीन कपड़े दिया जाता है। और हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने पांच पत्तों से अपने बदन को छिपाया जिनमें से दो सीने के हिस्से को छुपाया इसलिये औरत को कफ़न में पांच कपड़े दिया जाते हैं।

सवाल : गंदुम का दाना कितना खाया था और वह कितने बड़े बड़े थे?

जवाब : सिर्फ़ दो दाना खाया था, मुफ़स्सेरीन के क़ौल के मुताबिक़ वह दाना मुर्गी के अंडा जितना बड़ा था।

सवाल : हज़रत आदम अलैहिस्सलाम गंदुम का दाना खाने के बाद जन्नत से कहां पर उतारे गये और किस लिबास में उतारे गये?

जवाब : तफ़सीर के हवालों से सरअंदीप नाम के पहाड़ पर उतारे गये जो श्रीलंका में है, उस वक़्त लंका हिंदुस्तान का एक हिस्सा था, आप जब जन्नत से दुनिया में आये, तो जन्नत के दरख़्त के तीन पत्ते पहने हुए थे।

सवाल : हज़रत आदम हज़रत हव्वा से हैं या हज़रत हव्वा हज़रत आदम से हैं?

जवाब : हज़रत हव्वा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हैं यानी आपको हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की बायीं पसली से पैदा किया गया है इसीलिये तलाक़ का मुकम्मल हक़ मर्द को दिया गया है।

सवाल : जुमा का दिन क्या है, और इसको जुमा क्यों कहते हैं

जवाब : जुमा हफ्ते का छटा दिन है, इस दिन दुनिया मुकम्मल हुई, क़यामत तक पैदा होने वाले तमाम इंसानों की रूहों को अल्लाह तआला ने इस दिन इकट्ठा जमा किया था इसलिये इसको जुमा कहते हैं, और एक रिवायत के मुताबिक़ यह भी है कि इस दिन तमाम मुसलमान एक जगह जमा होकर अल्लाह की इबादत करते हैं, इसलिये इस दिन को जुमा क़हा गया है, और भी बहुत सी वजहें हैं।

सवाल : जो फरिश्ते इंसानों की नेकी और बदी लिखते हैं, तो उनकी क़लम स्याही और लिखने के लिये तख़्ती क्या है?

जवाब : बंदे की जुबान उनकी क़लम है, थूक स्याही है और दिल उनकी तख़्ती है जिस पर फरिश्ते नेकी और बुराई लिखते हैं, कल बरोज़ क़यामत उसे आमाल नामा की शक्ल में पेश किया जायेगा।

सवाल : सूरज कहां से निकलता है और कहां जाकर डूबता है?

जवाब : सूरज एक पानी के झरने में से निकलता है और वापस झरने में डूब जाता है और पानी का यह झरना काफ नाम के एक पहाड़ में है।

सवाल : वह कौन सी क़ब्र थी जो दुनिया में चारों तरफ फिरती थी और उसमें रहने वाला इंसान अल्लाह की इबादत में मसरूफ था?

जवाब : वह क़ब्र मछली का पेट है जिसनें हज़रत नबी यूनुस अलैहिस्सलाम को निगल लिया था और वह मछली पूरी दुनिया में चारों तरफ फिरती थी। मगर अल्लाह तआला के नबी हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट में रहकर अल्लाह की इबादत और ज़िक्र में मसरूफ थे।

सवाल : हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के कश्ती की लंबाई, चौड़ाई, और ऊंचाई कितनी थी?

जवाब : मुफस्सिरेकिराम अपनी अपनी तफासीर में लिखते हैं कि तीन सौ हाथ लंबा, पचास हाथ चौड़ा और तीस हाथ ऊंची कश्ती थी और इसमें जो तख़्ते लगे थे तमाम नबियों के तादाद के मुताबिक़ थे। सब से आगे तमाम नबियों के सरदार अहमदे मुख़्तार मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम पाक की तख़्ती लगी थी।

सवाल : जन्नत को जन्नत और जहन्नम को जहन्नम क्यों कहते हैं?

जवाब : जन्नत के मायने होते हैं छुपा हुआ बाग़, चूंकि वह बाग़ इसकी बहारें, उसके महल्लात दुनिया वालों के निगाहों से छुपा हुआ है इसलिये उसे जन्नत कहते हैं, और जहन्नम का लफ्ज़ यह ग़ैर अरबी है। असल में जहन्नम का लफ्ज़ चाह नम था यानी गहरा कुंआ। चूंकि वह निहायत ही गहरा मकाम है और गोया आग का कुंआ है इसलिये इसको जहन्नम कहा गया है।

सवाल : जन्नत या जहन्नम पैदा हो चुके या क़यामत के बाद पैदा होंगें?

जवाब : यह दोनों पैदा हो चुके हैं, वहीं पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम रहे। वहां ही की खिड़की मोमिन की क़ब्र में खुलती है वहां ही की सैर हुज़ूर ने मेराज में फ़रमाई जहन्नम में लोगों को अज़ाब में मुबतला देखा वग़ैरह वग़ैरह।

सवाल : इतने पहले इन्हें क्यों पैदा फ़रमाया? इनमें दाख़िला तो क़यामत के बाद होगा तब पैदा फ़रमा दिया जाता। (ग़ैर मुस्लिम)

जवाब : हुकूमत के दफ़ातिर, कोठियां, जेलख़ाने, फांसी के घर पहले से ही तैयार किये जाते हैं, इसका इंतज़ार नहीं किया जाता कि कोई चोर पकड़ कर आए तो जेल बनायी जाये।

सवाल : यह दुनिया की आग जिससे हम अपनी बहुत सी ज़रूरियात पूरी करते हैं यह कहां से आयी?

जवाब : यह आग जहन्नम ही से दुनिया में आयी है मगर सात समुंद्र के पानी से इसे ठंडा किया गया है। फिर भी इतनी शिद्दत है इससे जहन्नम की असल आग की शिद्दत का अंदाज़ा लगाईये।

सवाल : जब जन्नत लाखों साल पुरानी है तो वहां की नहरें और नहरों की चीज़ें, दूध, पानी, शहद, फल, फ्रूट, मेवे वग़ैरह सब ख़राब हो चुका होगा। (मुलहेदीन)

जवाब : बिगड़ना और ख़राब होना उन चीज़ों में होता है जो मख़लूक़ की हिफ़ाज़त में हो, मगर जिसका मुहाफ़िज़ अल्लाह तआला हो उसका बिगड़ना और ख़राब होना ग़ैर मुमकिन है। समुंद्र में पानी लाखों बरस का है लेकिन न ही वह बिगड़ा ना ही वह ख़राब हुआ।

सवाल : जन्नत व दौज़ख़ में इंसानों के सिवा दूसरी मख़लूक़ भी जायेगी या नहीं?

जवाब : जन्नत सिर्फ़ ईमान वालों और नेक इंसानों के लिये है जो ख़ुदा की वहदानियत और रसूल की रिसालत पर ईमान लाये, और दौजख़ काफ़िरीन, मुश्रेकीन इंसानों, जिन्नातों के लिये है। हां दौज़ख़ में कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन के झूटे ख़ुदा बुत, पत्थर, दरख़्त, सूरज भी जायेंगे मगर अज़ाब पाने के लिये नहीं बल्कि काफ़िरों को अज़ाब देने और अपनी बेबसी ज़ाहिर करने के लिये।

सवाल : दौज़ख़ में फ़रिश्ते होंगे या नहीं, अगर होंगे तो उन्होंने क्या गुनाह किया है, वह तो गुनाहों से पाक होते हैं। (बाज़ जाहिल बे अदब)

जवाब : दौज़ख़ में फ़रिश्ते होंगे मगर अज़ाब पाने के लिये नहीं बल्कि जहन्नमियों को अज़ाब देने के लिये जैसे जेल में पुलिस के सिपाही या जेलर और दरोग़ा जेल में रहते है। मगर सज़ा देने के लिये होते हैं, सज़ा पाने के लिये नहीं।

सवाल : शैतान भी अगर दौज़ख़ में गया तो उसे अज़ाब क्या होगा? वह क़ौमे जिन्न से है और जिन्न की पैदाईश आग से है, भला आग को आग ने क्या तकलीफ़ हो सकती है?

जवाब : आग को आग से तकलीफ़ पहुंच सकती है जैसे अगर कोई आपके सर में मिट्टी का ढीला या ईंट मारे तो आपको तकलीफ़ होती है हालांकि वह भी मिट्टी है और आप भी मिट्टी ही के बने हैं।

सवाल : फ़रिश्तों को जन्नत क्यों नहीं मिलती, वह भी तो बड़े आबिद हैं?

जवाब : उनके पास नफ़्स नहीं है लिहाज़ा उन्हें इबादत में कुछ तकलीफ़ नहीं। उनके लिये इबादते इलाही ऐसी है जैसे हमारे लिये सांस, लेना, और सवाब इबादत का होता है न कि आदत का। जज़ा के लिये जन्नत में पहुंचाने वाली चीज़ नफ़्से अम्मारा है जब उसके मुंह में शरीयत की लगाम हो।

सवाल : हदीस शरीफ़ में है कि तमाम जन्नती खूब सूरत तीस साला जवान होंगे और काफ़िर व मुश्रिक इतने मोटे होंगे कि उनकी एक दाढ़ पहाड़ के बराबर होंगे। नीज़ बाज़ रिवायतों में है कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़ातिल को कुत्ते की शक्ल में देखा गया। यह जिस्मों की तबदीली आवा गवन है जो इस्लाम में हराम है। (आरिया)

जवाब : जिस्म की तबदीली का नाम आवागवन नहीं है बल्कि रूह की तबदीली का नाम आवा-गवन है और इसका मानना कुफ़्र है इंसानी रूह का किसी जानवर में दख़ूल होना यह नामुमकिन है। अलबत्ता जिस्म और शक्ल का बदल जाना यह आवागवन नहीं जैसे हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम जब जब हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये तो इंसानी शक्ल व सूरत में ही आये। हज़रत मरयम के पास आये तो एक ख़ूबसूरत नौजवान की शक्ल में आये हालांकि वह फ़रिश्तों में से हैं।

सवाल : जन्नत में औरतें अजनबी मर्दों से पर्दा करेंगी या नहीं?

जवाब : वहां पर्दा नहीं होगा, वहां कोई चीज़ वाजिब या हराम न होगी। ये अहकाम दुनियावी ज़िन्दगी के लिये हैं। अगर वहां पर यह फ़र्ज़ हो तो वह जगह अमल की हो गयी हांलाकि वह जगह सिर्फ़ जज़ा की है अमल की नहीं। दुनिया दारुल अमल है आख़िरत दारुलजज़ा है।

सवाल : तब तो बड़ा फसाद होगा, औरत मर्द का मिलना ख़तरे का बाइस होता है? (आरिया)

जवाब : वहां नफ्से अम्मारा जो तमाम फ़ितना फसाद की जड़ है वह फ़न और ख़त्म हो जायेगा। इंसान का दिल वही चाहेगा जो रब तआला को पसंद हो। दुनिया की पाबंदियां नफ़्से अम्मारा की वजह से हैं। जब वही न रहा तो पाबंदी कैसी? परिन्दे को उसी वक़्त पिंजरे में रखते हैं जब तक उसके पर हैं जब पर ही काट दिये गये तो अब उसे पिंजरे में रखने की क्या ज़रूरत है?

सवाल : क़यामत को क़यामत क्यों कहते हैं?

जवाब : क़यामत के मायने हैं खड़ा होना, चूंकि उस दिन सारे इंसान मर्द व औरत अपनी अपनी क़ब्रों से खड़े होकर मैदाने महशर में जायेंगे और वहां सब हिसाब के इंतज़ार में खड़े ही होंगे लिहाज़ा उसका नाम क़यामत है।

सवाल : हदीस शरीफ़ में है कि महशर का मैदान मुल्के शाम होगा तो दुनिया के तमाम इंसान मुल्के शाम की सरज़मीन में कैसे समा जायेंगे।? (आरिया)

जवाब : बड़ी आसानी से, जैसे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के इशारे पुराना सागर एक प्याले में समा गया था, जिसे करामत कहते हैं। ऐसे ही अल्लाह के

हुक्म और इशारे पर तमाम इंसान मुल्के शाम में समा जायेंगे। यह ख़ुदा की कुदरत है जो ख़ुदा उन आंख की पुतलियों में चांद व सूरज, सितारे और दुनिया के बड़े बड़े शहर व मनाज़िर समा देता है वह ख़ुदा इस बात पर भी क़ादिर है कि तमाम इंसानो को एक छोटी सी जगह में समा दे।

सवाल : क़यामत क्यों होगी और इस से फ़ायदा क्या है? (आरिया)

जवाब : इस दुनिया में मोमिन और काफ़िर एक ही ज़मीन पर आबाद हैं क़यामत में उनकी छांट होगी। छांट के बाद मोमिन को जन्नत में और काफ़िर व मुश्रिक को दौज़ख़ में भेजा जायेगा। क़यामत छांट का दिन है। देखिये मुलज़िम को पहले हवालात में रखते हैं, फिर उसे अदालत में हाकिम के सामने पेश करके फ़ैसला हासिल करके जेल पहुंचाते हैं क़यामत मुक़द्देमात की पेशी का दिन है इसलिये इसे यौमुल हिसाब भी कहते हैं। उस दिन सब को इंसाफ़ मिलेगा, किसी के साथ ज़र्रा भर नाइंसाफी नहीं होगी।

सवाल : क़यामत में हिसाब क्यों होगा? क्या अल्लाह तआला को अपने बंदों के आमाल की ख़बर नहीं कि कौन जन्नती है कौन जहन्नमी? (आरिया)

जवाब : अल्लाह तआला को ज़र्रे ज़र्रे, क़तरे क़तरे की ख़बर है, ये हिसाब रब के इल्म के लिये नहीं बल्कि इंसानों का मुंह बंद करने के लिये होगा ताकि जहन्नमी यह न कह सके कि मुझे दौज़ख़ क्यों दी, फलां को जन्नत क्यों मिली, या मुझे जहन्नम में सख़्त जगह क्यों मिली, दूसरों को हल्की क्यों दी गयी।

सवाल : क़यामत के दिन लोग पहले तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलाम के पास क्यों जायेंगे? बाद में हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास क्यों आयेंगे?

जवाब : ताकि सबको मालूम हो जाये कि हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिवा कोई शफ़ाअत या मदद व दस्तगीरी करने वाला नहीं। अगर तमाम महशर वाले पहले हुज़ूर के पास चले जाते तो शायद कोई कह देता कि शफ़ाअत तो और जगह भी हो जाती, हम और जगह गये नहीं, गोया शाने इज़हारे मुस्तफ़ा के लिये मैदाने महशर क़ायम होगी।

सवाल : इंसानों की हिदायत के लिये नबी की क्या ज़रूरत है, क्या अल्लाह नबी के बग़ैर फ़ैज़ और हिदायत नहीं दे सकता था?

जवाब : जब कमज़ोर चीज़ किसी ताक़तवर और मज़बूत चीज़ से फैज़ लेना चाहे तो दर्मियान में वास्ता ज़रूरी है वरना कमज़ोर फ़ना हो जायेगा। अगर रोटी को आग से गर्म करना है तो बीच में तवा ज़रूरी है। अगर सूरज को देखना है तो बिल्लोरी और ठंडे शीशे का वास्ता लाज़िम है। ख़ालिक़ क़वी व क़ादिर है और मख़लूक़ कमज़ोर व ज़ईफ है इसलिये दर्मियान में किसी ऐसी चीज़ का होना लाज़िम है जो ख़ालिक़ से फैज लेने और मख़लूक़ तक पहुंचाने की ताक़त रखता हो। उस वास्ता, वसीला और चीज़ का नाम नबी व रसूल है।

सवाल : तो फिर रब तआला मजबूर हुआ, कि वह अपने बंदों को बग़ैर पैग़म्बर के अहकाम न पहुंचा सका? (आरिया)

जवाब : रब तआला मजबूर नहीं हुआ बल्कि हम मजबूर हुए कि रब से बिला वास्ता फैज़ हासिल न कर सके, रोटी कमज़ोर है न कि आग।

सवाल : तौरेत, ज़बूर, इंजील, और दूसरे सहीफे जो नबियों पर नाज़िल हुई हैं वह भी तो कलामे इलाही है इन पर अमल कर सकते हैं कि नहीं अगर नहीं तो क्यों?

जवाब : कुरआन, इस्लाम और दीने मुहम्मदी के बाद अल्लाह तआला ने तमाम दीन और मज़ाहिब को मंसूख़ कर दिया। अब नजात सिर्फ और सिर्फ इस्लाम में है। कुरआनी अहकाम पर अमल करने में है। लालटेन और गेस रात में रौशनी देंगे, दिन में नहीं, आफताब ने उन सबको बे कार कर दिया। हर एक के इस्तेमाल का एक वक़्त होता है ऐसे ही उन दीनों के इस्तेमाल का वक़्त अब निकल चुका। डाक्टर और हकीम मरीज़ के नुस्ख़ों में मरीज़ के हालत के मुताबिक़ तबदीलियां करता रहता है अगर उन दीनों में अब भी नजात होती तो यहूद व नसारा को इस्लाम और कुरआन मानने और क़बूल करने की दावत क्यों दी जाती?

सवाल : नमाज़ों की रकाअतों की तादाद मुख़्तलिफ क्यों है?

जवाब : इसलिये कि यह नमाज़ें मुख़्तलिफ पैग़म्बरों की यादगार हैं। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने सुबह फज्र की दो रकअत पढ़ी। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दोपहर जुहर की चार रकअत पढ़ी। हज़रत उज़यर अलैहिस्सलाम ने अस्र की चार रकअत पढ़ीं। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने मग़रिब में

तीन रकअत पढ़ी और हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ईशा की चार रकअत अदा की। इसीलिये नमाज़ को जामेउल इबादात कहते हैं। जिसने इन्हें कायम रखा आबाद मख़लूक के बराबर उसके नामा आमाल में सवाब लिखा जायेगा।

सवाल : सफर में चार रकअत को कसर करके दो क्यों पढ़ते हैं? तीन रकआत में कस्र क्यों नहीं

जवाब : इसलिये कि सफरे मेराज में दो-दो रकअतें ही फ़र्ज़ हुई थीं लिहाज़ा तुम भी सफर में जाओ तो सफरे मेराज की याद ताज़ा करो। और चूंकि तीन का आधा सही नहीं बन सकता इसलिये इस में कसर नहीं।

सवाल : जुहर व असर में आहिस्ता किरअत क्यों किया जाता है बाकी तीन नमाज़ों में ज़ोर से क्यों?

जवाब : इब्तिदाये इस्लाम में कुफ्फार व मुश्रेकीन का ग़ल्बा था। वह किरअत सुनकर अल्लाह और हज़रत जिब्राईल की शान में बकवास बकते थे और इन दोनों वक़्तों में वह बाज़ारों में आवारा घूमते रहते थे। मग़्रिब में खाने में मशगूल हो जाते थे। ईशा में सो जाते थे। फ़ज्र में जागते न थे। इसलिये इन दोनों नमाज़ों में आहिस्ता किरअत का हुक्म हुआ। और दूसरी वजह यह ब्यान की गयी है कि चूंकि दोपहर में कारोबार शबाब पर होता है, अस्र दिन का आखिरी निचोड़ होता है वक्त कम होता है और हर शख़्स अपने फैले हुए कारोबार को समेटने की फिक्र में होता है ताकि वह अपनी मंज़िल पर दिन के उजाले में पहुंच जाये और चूंकि आवाज के साथ पढ़ना बा नसबत आहिस्ता पढ़ने में वक्त कम लगता है इसलिये आहिस्ता का हुक्म दिया गया है।

सवाल : नमाज़ के लिये वुज़ू क्यों ज़रूरी है?

जवाब : इसलिये कि वुज़ू नमाज़ की कुंजी है जब कुंजी नहीं तो ताला कैसे खुलेगा और नमाज़ जन्नत की कुंजी है मगर वोह नमाज़ जो ख़्याले नबी में डूब कर पढ़ी जाये वरना बग़ैर दनदाने की कुंजी है।

सवाल : वुज़ू में चार आज़ा का धोना क्यों ज़रूरी है?

जवाब : इसलिये कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने जब गंदुम खा लिया तो उसमें इन्हें चार आज़ा ने काम किया था। दिमाग़ में खाने का ख़्याल आया,

पांव से चल कर गये, हाथ से गंदुम पकड़ा और मुंह से खाया। गोया लग्ज़िश में यह चारों आज़ा शामिल थे। इसलिये बतौर सज़ा नमाज़ के लिये इन्हीं चारों आज़ा को धोया जाये क्योंकि वुज़ू के पानी से गुनाह धुल जाते हैं।

सवाल : नमाज़ जमाअत से क्यों पढ़ी जाती है, इसमें क्या हिकमत है?

जवाब : जमाअत से नमाज़ अदा करने में बहुत सी दीनी हिकमतें हैं दीनी फ़ायदे यह हैं कि अगर जमाअत में एक की नमाज़ कबूल हो गयी तो सबकी कबूल और बा जमाअत नमाज़ पढ़ने से २७ गुना सवाब ज़्यादा मिलता हैं जमाअत के लिये आने जाने में हर क़दम पर दस नेकियां मिलती हैं। और दुनियावी हिकमतें यह हैं कि जमाअत के बरकत से क़ौम में तंज़ीम रहती है आपसी इत्तेफाक़ बढ़ता है। रोज़ाना पांच बार की मुलाक़ात से दुआ सलाम, दिल की अदावत, नफ़रत, कीना, रंजिश गिले शिकवे को दूर करता है। जमाअत से मुतकब्बेरीन का गुरूर टूटता है। मसावात निज़ाम कायम होता है, जिसमें न कोई अमीर होता है और न कोई ग़रीब। न कोई गुलाम होता है न आक़ा बल्कि यहां बादशाह को भी ग़रीब फ़कीर के साथ खड़ा होना पड़ता है।

एक ही सफ़ में खड़े हो गये महमूद व अयाज़
न कोई बंदा रहा और न कोई बंदा नवाज़
बंदा वे साहब व मोहताज व ग़नी एक हुए
तेरी सरकार में पहुंचे तो सभी एक हुए

सवाल : इस्लाम में जुमा को ईदुल मोमिनीन क्यों माना गया, जुमा में कौन सी ख़ूबी है और ईसाई इतवार की क्यों ताज़ीम करते हैं?

जवाब : ईसाई इतवार को सिर्फ़ इसलिये मानते हैं कि इस दिन हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर आसमान से दस्तरख़्वान उतरा था। लिहाज़ा यह उनकी ईद का दिन है। इसलिये वह इस दिन तातील रखते हैं। लेकिन जुमा मुसलमानों का ईद इसलिये बना कि वह इंसानी दुनिया का पहला और आख़िरी दिन है क्योंकि जुमा के दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पैदा हुए और क़यामत भी जुमा ही के दिन आयेगी। नीज़ अंबियाए किराम पर बड़े बड़े इनामात इसी दिन में हुए और हफ़्ते के सात दिन हैं जिनमें पहला दिन जुमा है लिहाज़ा जुमा को इबादत के लिये ख़ास किया गया है ताकि हफ़्ते की शुरूआत इबादत और बरकत पर हो।

सवाल : रोज़ा दिन में फ़र्ज है रात में क्यों नहीं? (आरिया)

जवाब : इसलिये कि फ़ितरी तौर पर रात में इंसान के खाने की आदत नहीं होती और दिन में इंसान कुछ न कुछ खाता पीता रहता है, यह इंसानी आदत है। अगर रात में रोज़ा फर्ज होता तो आदत व इबादत, तबीयत व शरीयत में फ़र्क मालूम न होता। इसलिये रात के बजाए दिन में फ़र्ज हुआ ताकि आदत और इबादत का पता चल जाये।

सवाल : रोज़ा में सिर्फ़ खाने पीने और जिमाअ ही से क्यों रोका गया, दूसरी चीज़ें भी मना होनी चाहिये थीं या रात को भी रोज़ा होना चाहिये था जैसा कि हिंदुओं में है? (आरिया)

जवाब : रोज़ा का मक़सद नफ़्से अम्मारा को तोड़ना और जान बाकी रखना है। हिंदुओं के रोज़े, अजीब वाहियात हैं कि वह अनाज के सिवा बाक़ी सब चीज़ें खाते पीते रहते हैं और कभी रात को भी नहीं खाते। इसकी बेहूदगी ज़ाहिर है कि जब दूध, दही, फल वग़ैरह खाते रहे तो नफ़स मरा और कमज़ोर हुआ ही नहीं बल्कि और ज़्यादा मोटा, ताक़तवर हुआ और मुसलसल रोज़ा रखने से या कुछ कई दिनों तक न खाने पीने से तमाम कारोबार छूट जाते हैं और जान के लाले पड़ जाते है। जिससे वह हलाक होकर दूसरे बहुत से इबादतों से महरूम हो जाता है। रोज़ा से नफ़स की इस्लाह मंजूर है न कि इसका हलाक करना। जैसा कि गांधी के मरनबरत से तर्जबा हुआ और आज भी भूक हड़ताल से हो रहा है, ऐसा रोज़ा रखना हलाकत का बाइस है। इस्लामी रोज़ा हर शख़्स बिला तकलीफ़ रख सकता है और इबादत वह है जो हर शख्स कर सके, दिल व दिमाग़ और जिस्म पर गिरां न हो।

सवाल : रोज़ा के लिये शमसी महीना (अंग्रेज़ी महीना) मुर्करर क्यों न हुआ, क़मरी महीना (इस्लामी महीना) क्यों मुक़र्रर किया गया? (आरिया)

जवाब : क्योंकि चांद के महीने मौसमों में गर्दिश करते रहते हैं लिहाज़ा मुसलमान हर मौसम में रोज़ा रखेंगे, कभी सर्दी की आसानी से फ़ायदा उठायेंगे और कभी गर्मी की मशक़्क़त से ज़्यादा सवाब पायेंगे। नीज़ शमसी महीनों में मौसम परस्ती का वहम है सारे इस्लामी काम क़मरी महीने (इस्लामी महीना) से हैं ताकि मालूम हो कि मुसलमान ख़ालिके मौसम के परस्तार हैं।

सवाल : ३० रोजा फर्ज होने की हिकमत क्या है? (अवामुन्नास)

जवाब : जन्नत में हजरत आदम अलैहिस्सलाम ने गंदुम के दाने को खा लिया जिसका असर आप के पेट में ३० दिन तक रहा। इस लिये अल्लाह तआला ने हजरत आदम अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि वह ३० दिन तक रोजा रखें, कुछ खायें पिये नहीं ताकि इसका असर जायल हो जाये। इसलिये आदम की औलाद को ३० रोजा रखने का हुक्म दिया गया।

सवाल : रोजों के लिये रमजान ही का महीना क्यों मुन्तखब हुआ? (आरिया)

जवाब : इसलिये कि रमजान में कुरआन नाजिल हुआ यानी लोहे महफूज से मुन्तकिल होकर आसमान पर आया, फिर वहां से २३ साल में जैसे जैसे जरूरत पड़ी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाजिल हुआ। कुरआन रब की बहुत बड़ी नेमत है नेमत मिलने पर शुकराने के तौर पर रोजा रखवाये गये।

सवाल : जब रमजानुल मुबारक ऐसा अजमत वाला महीना है तो इसके जाने पर ईद (खुशी) क्यों मनायी जाती है? मुबारक चीज जाने पर गम मनाना चाहिये न कि खुशी? (आरिया)

जवाब : यह खुशी दो वजह से है एक तो माहे मुबारक में इबादत की तौफीक मिलने का शुक्रिया कि खुदाया तेरा शुक्र है कि तूने खैर से रोजा, तरावीह, एतेकाफ अदा करा दिये। दूसरे यह कि मुसलमानो को रमजान के जाने का बहुत सदमा होता है इसलिये जुमातुल विदा (रमजान का आखिरी जुमा) को लोग जार व कतार रोते हैं। इस गम को हल्का करने के लिये ईद रख दी गयी ताकि रंज व गम का एहसास कम हो।

सवाल : इस्लाम ने जकात क्यों फर्ज की? अपना कमाया हुआ माल दूसरों को मुफ्त क्यों दिलवाया? (मार्डन मुसलमान)

जवाब : इस सवाल के बहुत से जवाब हैं। मुख्तसर तौर पर अर्ज करता हूं जकात फर्ज होने की सही वजह यह कि सखावत इंसान का कमाल है और बखालत, कंजूसी, ऐब व नक्स है। जकात देने से ये ऐब दूर हो जाता है और वह कमाल हासिल होता है। (२) जकात से इमदाद बाहमी का जज्बा पैदा होता है। (३) खर्च करने से नेमत बढ़ती है, रोकने से घटती है। अंगूर और बेरी की

शाखें काट देने से फल ज़्यादा आते हैं। (४) चलती फिरती चीज़ बेहतर रहती है और रुकी हुई चीज़ बिगड़ जाती है। कुंए का पानी निकलता रहे तो ठीक रहता है वरना बिगड़ जाता है। लिहाज़ा दौलत बंद न करो, इसे चलता फिरता रखो। (५) जैसे हमारी कमाई में हुकूमत का हिस्सा होता है जिसे टेक्स कहते हैं। फिर वह टेक्स हमारी ही मफाद यानी मुल्की इंतज़ाम पर ख़र्च होता है। ऐसे ही हमारी कमाईयों में रब तआला का हक है जो हमारे ही ग़रीब भाईयों पर ख़र्च होता है। यह मिसाल सिर्फ समझाने के लिये है वरना ज़कात टेक्स नहीं।

सवाल : जब अल्लाह तआला ने हमें माल दिया तो वह हमारा ही हिस्सा है, हम ही इस्तेमाल करें, अपना हिस्सा मुफ़्त ख़ोरों को क्यों दें? (नास्तिक लोग)

जवाब : अल्लाह तआला जो चीज़ किसी को ज़रूरत से ज़्यादा दे तो उसमें दूसरों का भी हिस्सा होता है। भेंस के थन में दस सैर दूध होता है क्योंकि वह सिर्फ उसके बच्चे ही के लिये नहीं दूसरों का भी इसमें हिस्सा है। कुतिया के थन में थोड़ा सा ही दूध है क्योंकि वह सिर्फ उसके बच्चों ही के लिये है। बिल्कुल इसी तरह अमीरों के दौलत में गरीबों और मजबूरों का भी हिस्सा है।

सवाल : ज़कात से क़ौम में और भीक मांगने की रस्म व आदत बढ़ती है इसलिये आज जितने भिकारी मुसलमानों में हैं इतने दूसरी क़ौमों में नहीं। लोग सोचते हैं कि जब मुफ़्त मिले तो मेहनत कौन करे? (बाज़ जाहिल मुसलमान)

जवाब : ज़कात से मुस्लिम क़ौम दूसरों की मोहताज न होगी। अपनी ज़रूरतें अपनी ही क़ौम से पूरी होगी। बोहरा क़ौम को देखिये कि उनमें कोई ज़कात की वजह से ग़रीब नहीं। मुसलमानो में गुरबत व अफ़लास की असल वजह मुसलमानों की अय्याशी, बेकारी, मुक़द्दमा बाज़ी शादी ब्याह में फ़िज़ूल ख़र्ची और हराम रस्मों का रिवाज है। इस्लाम ने जहां ज़कात का हुक्म मालदारों को दिया है वहां ग़रीबों को भीक मांगने से सख़्त मना भी किया है। जितना इस्लाम ने भीक मांगने की मज़म्मत की है इतना किसी और मज़हब ने नहीं की। क़सूर भिकारियों का है इस्लाम का नहीं।

सवाल : ज़कात ग़रीब रिश्तेदारों को देना क्यों जायज़ है, होना तो ये चाहिये कि ये बिल्कुल अजनबी को दी जाये जिससे कोई दुनियावी ताल्लुक न हो।

जवाब : ग़रीब रिश्तेदारों को ज़कात देने में दो फ़ायदा हैं एक तो इबादत और दूसरा अपने रिश्तेदार की ख़िदमत। रिश्तेदार की ख़िदमत और मदद वैसे भी लाज़िम व ज़रूरी है। रब का यह करम है कि उसने इस ज़मन में इबादत भी अदा करा दी और मदद भी हो गयी।

सवाल : ज़कात को ज़कात क्यों कहते हैं?

जवाब : ज़कात के लुग़वी मायने पाकी के हैं, चूंकि ज़कात निकालने के बाद माल पाक हो जाता है इसलिये इसे ज़कात कहते हैं।

सवाल : हज के क्या मायने होते हैं?

जवाब : ख़ाना काबा की ज़्यारत करना और उसको ताज़ीम की नज़र से देखना बंदे के इस फेअल को हज कहते हैं और फेअल के करने वाले को हाजी कहते हैं और हज के मायने इरादा के भी होते हैं क्योंकि क़सदन वहां आदमी जाता है।

सवाल : वह कौन सी हस्ती है जिसकी रूह मलकुल मौत ने नहीं बल्कि अल्लाह ने खुद क़ब्ज़ की है?

जवाब : वह शहज़ादीए कौनेन ख़ातूने जन्नत हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हैं जिनकी रूह पर्दे के तक़ाज़े की वजह से खुद खुदाए तआला ने अपने दस्ते कुदरत से क़ब्ज़ की है।

सवाल : कुरबानी क्यों की जाती है? क्या जानवर की जान लेना भी इबादत है? (आरिया, ग़ैर मुस्लिम)

जवाब : हर वह काम जो खुदा के हुक्म के तहत हो वह इबादत है। अल्लाह तआला ने हमें कुरबानी करने का हुक्म दिया है इसलिये मुसलमान अपने ख़ालिक के हुक्म का पालन करता है। पंडित जी भी तो अपनी पेट पूजा के लिये गेहूं और धान के फस्लों में डीटीडी पाउडर डालकर करोड़ों जानवरों की हत्या कर देते हैं यह भी पाप होना चाहिये।

सवाल : इस्लाम में जिहाद क्यों रखा गया है? यह तो वहशियाना काम है खूंरेज़ी करने और अमन बरबाद करने में क्या फ़ायदा है? (आरिया)

जवाब : जिहाद में बहुत सी हिकमतें हैं, जिस क़ौम या जिस अफ़राद का

वजूद अमन व अमान के लिये ख़तरा हो उनको दबा देना या मिटा देना गोया अमन क़ायम करना हैं इसलिये हुकूमतें बदमाशों और मुजरिमों को सज़ायें देती हैं ताकि नेक और शरीफ लोग अमन व चैन से रहें। खेत से घास को उखाड़ कर फेंक दिया जाता है ताकि फसल को नुक़सान न हो। सड़ा हुआ अज़्व काट दिया जाता है ताकि दूसरे आज़ा को ख़राब न करे। बिल्कुल इसी तरह इंसानी समाज में कुछ जरायम पेशा लोग पैदा हो जाते हैं जो इंसानी मुआशरे के लिये नुक़सानदेह होते हैं, इन्हें ज़ालिम और सरकश जरायम पेशा अफराद का ख़ात्मा करने के लिये इस्लाम ने जिहाद का हुक्म दिया है।

सवाल : उलमा कहते हैं कि जिहाद नमाज़ से अफज़ल है यह क्यों?

जवाब : इसलिये कि जिहाद से कौ़म व मिल्लत की बक़ा है और कौ़म व मिल्लत की बक़ा से नमाज़ है जब कौ़म ही नहीं होगी तो फिर नमाज़ कौन पढ़ेगा।

सवाल : सबसे अफज़ल जिहाद कौन सा है?

जवाब : अपने नफ्स के साथ लड़ना, क्योंकि यही नफ्से अम्मारा इंसान को तमाम खराबियों और बुराईयों की तरफ ले जाता है और दुनिया में फित्ना व फसाद इसी की वजह से है। इसलिये नफ्स पर कंट्रोल सबसे बड़ा जिहाद है जिसे हदीस में जिहाद अकबर कहा गया है। नीज़ ज़ालिम हुक्मरां और बादशाह के सामने हक़ बात का ऐलान करना और कह देना यह भी अफज़ल जिहाद में शामिल है जैसे कि मुजद्दिदे अल्फेसानी ने मुग़लिया ताजदार अकबर के सामने बेख़ौफ व ख़तर ऐलाने हक फरमाया और उसके खुद साख़्ता बातिल मज़हबे दीन इलाही की धज्जियां बिखेरें। इसमें कोई शक नही कि अगर हिंद से कुफ्र की यलग़ार उठती है तो ग़ज़नी से हज़रत महमूद ग़जनवी की तलवार उठती चली आती है। अगर पृथ्वीराज का तूफाने ज़ुल्म व कुफ्र उठता है तो अजमेर के ख़्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती का रौशन ईमान मैदाने अमल में आ जाता है और जादूगरों को शिकस्त देकर लाखों हिदुंओं को इस्लाम व कुरआन के दामन में ले आत है। फिर अगर गंगूह थना भवन से देव का फसाद और इबलीस का शर उठता है तो बरैली की सरकार से रजा का नेज़ा बुलंद होता है और लश्कर फुकरा ये कादरी ऐसी सरफरोशी इल्मी कुव्वत अमली वहदत से रवां दवां होता है कि रज़ा का नेज़ा बन कर सीनए बातिल में गड़ जायें और दुनिया दखे ले कि

हैं कादरी फकीरों के झंडे गड़े हुए। गर्ज ये कि सलातीने इस्लाम और उलमाए इस्लाम औलिया इज्जाम ने बेखौफ व खतर जालिम और काफिर बादशाहों हुक्मरानों के समाने हक और सच्चाई का इजहार फरमाया। यह भी सबसे अफजल जिहाद ही है।

सवाल : इस्लाम में निकाह ईजाब व कबूल से ही क्यों होता है? हिंदुओं की तरह लड़का लड़की आग के आसपास चक्कर लगाने या ईसाईयों की तरह लड़के के गले में हार डालने का नाम निकाह क्यों नहीं? (आरिया)

जवाब : इसलिये कि हर लेनदेन ईजाब कबूल से होता है। निकाह में लड़की का लेना मेहर का देना है लिहाजा इसके लिये ईजाब व कबूल दरकार है। अगर मैं किसी मकान के आसपास सौ चक्कर भी लगा लूं या किसी जानवर के गले में दस हार भी हार भी डाल दूं तब भी में उसका मालिक नहीं बन सकता लेकिन अगर वह (मालिक) कह दे कि मैंने दिया मैं कह दूं कि मैंने लिया तो फिर मैं मालिक हो गया। ऐसे ही निकाह है।

सवाल : निकाह में दो गवाह क्यों शर्त है?

जवाब : ताकि औरत की इज्जत व शराफत महफूज हो जाये और उसकी किरदार पर किसी को शक या उंगली उठाने का मौका न मिले, कि यह औरत बदचलन है या भाग कर आयी है, बे निकाही है। मामूली चीजें बगैर तहरीर गवाह खरीदी जाती है मगर जमीन जायदाद की लेनदेन पर गवाहों के साथ रजिस्टर्ड स्टंप होता है ताकि आइंदा किसी किस्म का कोई फित्ना व फसाद और झगड़ा न हो। निकाह भी अहम लेन देन से है लिहाजा गवाह जरूरी है।

सवाल : मर्द औरत से अफजल क्यों माना गया और इसे घर का हाकिम क्यों बनाया? औरत को क्यों नहीं? वह भी तो अल्लाह की बंदी है? (आरिया)

जवाब : मर्द औरत के मुकाबिल हर तरह हर एतेबार से ताकतवर है। जब हाकिम एक हो तो हुक्म में तजाद नही होगा। फौज का कमांडर चीफ एक ही होता है मुल्क का बादशाह एक ही होता है, बाकी सब मातेहत होते हैं ताकि मुल्क का निजाम कायम रहे।

सवाल : अगर एक मर्द बयक वक्त चार औरतों से शादी कर सकता है तो एक औरत बयक वक्त चार मर्दों से शादी क्यों नहीं कर सकती? (आरिया)

जवाब : अगर एक औरत के कई शौहर हों तो बच्चे का नस्ब साबित नहीं होगा कि बच्चा किसका है। वह मजहुलुन्नसब होगा। यानी उसका नस्ब मालूम नहीं हो सकता। और इंसान का बच्चा परवरिश व तरबियत में मां बाप दोनों ही का मोहताज है। परवरिश मा के जिम्मे और तरतीब व तालीम बाप के जिम्मे है। नीज चंद खाविंद की सूरत में औरत और बच्चे के खर्च का कफील कौन बनेगा। जैसे चंद औलाद के लिये एक ही बाप चाहिये, एक शख्स के चंद बाप नहीं हो सकते ऐसे ही एक बीवी के लिये एक ही शौहर ज़रूरी है।

सवाल : ईसाई और हिंदुओं के यहां राहिब और साधू संत बे निकाह रहते है, इस्लाम में ऐसा क्यों नही? (आरिया, ईसाई)

जवाब : खुदा की दी हुई ताकत को बेकार करना हिमाकत है और सहीह मकाम पर खर्च करना ऐन कमाल हैं आंख बंद कर लेना हिमाकत है मगर उसे पराई औरत (गैर महरम) से रोकना कमाल है। कुव्वते शहवानी भी रब की नेमत है अगर ये बुरी होती तो रब देता ही क्यों? इस शहवत के रोकने के बड़े बड़े खतरनाक नतायज जिना की शक्ल में जाहिर होते हैं। अगर निकाह न करना कमाल होता तो हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम दो बीवियां, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने ९९ बीवियां, सुलेमान अलैहिस्सलाम ने एक हजार बीवियां क्यों रखीं। और राजा दशरथ ने दो, कन्हैया ने एक हजार बीवियां क्यों रखी? हिंदु, ईसाई क्या जवाब देंगे जो हमारे पैगम्बर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नो शादियों पर एतेराज़ करते हैं।

सवाल : मर्दो की तरह औरतों को भी तलाक देने का हक देना चाहिये, यह क्या मर्द तो आजाद हो और औरत मर्द की पाबंद? (आरिया)

जवाब : औरत में कुदरती तौर पर अक्ल कम होती है और जोश व गुस्सा ज्यादा होता है। इसको तलाक का हक देना गोया दीवाने के हाथ में तलवार देना हैं जिन कौमो ने औरतो को तालक का हक दिया वहां बात बात पर तलाकें हो रही है और घर बरबाद हो रहे हैं जैसे यूरोप वगैरह मे।

सवाल : इस्लाम में चोरी की सज़ा हाथ काटना क्यों है? यह जुर्म से ज़्यादा है कि चोरी दस रुपये का करे और हाथ वह कटे जिसकी कीमत ही न हो? (गैर मुस्लिम)

जवाब : चोर का हाथ काटना माल की सज़ा नहीं बल्कि कानून तोड़ने की सज़ा है। क़ानून हाथ से कहीं ज़्यादा कीमती है। क़ानून के लिये सैकड़ों क़त्ल कर दिये जाते है। अगर शहर के चौराहे पर सौ पचास चोरों के हाथ काट दिये जायें और पचास ज़ानियों को संग सार कर दिया जाये और मेरा मुल्क इन जरायम से छुटकारा पा ले तो सौदा बहुत सस्ता है उस एहतेजाज से जो रोज़ाना शहरों में होता है।

सवाल : हाथ काटने से क्या फायदा है? (आरिया)

जवाब : हाथ चोरी का आला हैं आला ही ख़त्म कर दो ताकि न रहे बांस न बजे बांसरी। हाथ कटने से दूसरे इबरत हासिल करेंगे इसको देखकर लोग चोरी से तौबा करेंगे। खुद यह भी अपना कटा हुआ देखकर आइंदा कभी चोरी न करेगा। सज़ा वह है जो दूसरों के लिये इबरत हो।

सवाल : जब चोर का हाथ काटा जो चोरी का आला है तो चाहिये कि ज़िना में ज़ानी का आज़ाए तनासुल काटो जो ज़िना का आला है ज़िना में संग सार क्यों करते हैं? (आरिया)

जवाब : चोरी हाथ से होती है मगर ज़िना तमाम जिस्म से होता है और सारे जिस्म को लज़्ज़त आती है लिहाज़ा सज़ा पूरे जिस्म को मिलना चाहिये, और यह उसी सूरत में हो सकता है कि ज़ानी को इतना संग सार किया जाये कि वह मर जाये।

सवाल : इस्लाम ने मुजरिमों के लिये जेल की सज़ा क्यों नहीं रखी?

जवाब : इसलिये कि इस से जुर्म बहुत ज़्यादा होगे, बुराईयां बढ़ेंगी। जरायम पेशा तबका अक्सर ग़रीब है जिनसे जुर्माना नहीं हो सकता। लिहाज़ा वह जुर्म पर दिलेर होंगे कि हुकूमत हम से क्या लेगी हमारे पास तो कुछ है नहीं। रहा अमीर तबका तो वह भी जुर्म पर दिलेर होगा इस ख़्याल से कि जुर्म कर लो रुपया भर देंगे। फिर हुकूमत भी जरायम की ज़्यादती चाहेगी क्योंकि जरायम हुकूमत के लिये ज़रिया आमदनी होंगे। अपनी आमदनी किसे बुरी लगती है। इस्लाम में सज़ाओं का मक़सद बदमाशी और जरायम को मिटाना है न कि बदमाशों से कमाना है। आज हुकूमतें एक तरफ़ शराब के ख़िलाफ़ ऐवानों में क़ानून बना रही हैं तो दूसरी तरफ़ वही शराब के ठेकेदारों और शराब बनाने

वाली कंपनियों को शराब बनाने और बेचने का लाईसेंस दे रही हैं। एक तरफ़ ज़िना के ख़िलाफ़ मरतकिबे ज़िना को सज़ायें दी जा रही हैं और ऐसे मुजरिमों को जो हवालात में बंद किया जा रहा है तो दूसरी तरफ़ तवायफ़ ख़ाने बनाने के लिये तवायफ़ों को लाईसेंस दिया जा रहा है। ऐसा क्यों? जुर्म बहरहाल जुर्म है ख़्वाह किसी भी जगह हो। इसकी वजह ये है कि इससे हुकूमतों को आमदनी होती है। इस्लाम इन तमाम बातों की क़तई इजाज़त नहीं देता बल्कि ऐसे मुजरिमों को करार वाकई सज़ा देता है। मुजरिम जब समझता है कि जुर्म की सज़ा जेल है जहां मुफ़्त की रोटियां मिलेंगी तो वह जुर्म पर दिलेर होगा। इस तरह मुआशरा और समाज में जरायम बढ़ते ही जायेंगे और जेल की वजह से हुकूमत पर ख़र्चा बहुत पड़ेगा इसलिये इस्लाम में गुनाह की सज़ा जेल नहीं।

सवाल : इस्लाम में मुरतद (जो शख़्स दीन इस्लाम से फिर जाये) की सज़ा क़त्ल क्यों है?

जवाब : इसलिये कि मुरतद हुकूमते इलाहिया बाग़ी है। जब दुनिया की आरज़ी हुकूमतों का बाग़ी क़त्ल और फांसी का मुस्तहिक़ है तो इस्लम का बाग़ी भी क़त्ल का मुस्तहिक़ है। इस्लाम ने हर शख़्स को मज़हब की आज़ादी दी है। किसी को इस्लाम पर मजबूर नही किया। मगर इस्लाम लाकर फिर जाये, गोया उसने क़ानूने इलाही से बग़ावत की इसलिये उसकी सज़ा क़त्ल है।

सवाल : ताबूते सकीना क्या है सुना है कि इसमें अंबियाए किराम की तसवीरें थीं तसवीर तो इस्लाम में हराम है फिर यह हराम चीज़ कैसे?

जवाब : तफसीर जलालीन, तफसीर मदारिक, तफसीर ख़ाज़िन, तफसीर रूहुल ब्यान में है कि यह एक ख़ूबसूरत संदूक थी जो शमशाद के लकड़ी से बनी हुई थी, जिसकी लंबाई चौड़ाई दो हाथ थी। अल्लाह ने इसे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर इब्तेदा में नाज़िल फरमाया था। इस संदूक में तमाम अंबियाए किराम की तसवीरें थीं और उनके मकानात वग़ैरह भी थे। इमामुल अंबिया हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी तसवीर मुबारक एक सुर्ख़ याकूत में नक़्श थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हालते नमाज़ में थे और आप के इर्द गिर्द सहाबा किराम बा अदब खड़े हुए थे। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने इन तमाम तसवीरों को देखा। ख़्याल रहे कि संदूक में जो तसवीरें थीं वह किसी इंसान क़ी

बनाई हुई नही थीं बल्कि अल्लाह तआला ने खुद अपने दस्ते कुदरत से बनाया था। इंसान की या किसी जानदार की तसवीर किसी मख़लूक़ को बनाना हराम है। अलबत्ता खुदाए तआला के लिये जायज़ क्यों कि अल्लाह तआला ख़ालिक़ व मालिक है और उसका नाम मुसव्विर भी है वह जो चाहे सो कर मगर मखलूक़ को इसके एहकाम की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने का हक़ नहीं।

सवाल : तावीज़ क्यों लिखे जाते हैं, इनसे क्या फ़ायदा है? (वहाबी, मुलहिद)

जवाब : जैसे बाज़ मखलूक़ की नामों में तासीर है किसी को उल्लू, गधा, कुत्ता कह दो तो वह गुस्सा और रंजीदा हो जाता है और हज़रत क़िब्ला व काबा कह दो तो वोह खुश हो जाता है हांलांकि उल्लू, गधा भी मखलूक़ हैं, और हज़रत क़िब्ला व काबा भी। ऐसे ही ख़ालिक़ के नाम में मुख़्तलिफ़ तासीरें हैं शाफी में शिफ़ा की, गफ़्फ़ार में बख़्शिश की, रहीम में रहम की और करीम में करम की। ख़्वाह यह नाम लिखकर पास रखो या दम करो ज़रूर असर करेंगें। बशर्ते कि ज़ुबान इस लायक़ हो कि इसे तमाम गुनाहों से महफ़ूज़ रखें ताकि तासीर पैदा हो।

सवाल : मुंह की सांस तिब्बी नुक़्ता थे नज़र से ज़हरली होती है इससे पानी पर दम करना बीमारी का बाइस होगा। (माद्दा परस्त)

जवाब : आपने इतना तो मान ही लिया कि जो बाहर की हवा जिस्म के अंदरूनी हिस्से से होकर आये उसमें बीमारी पैदा करने की तासीर हो जाती है। अब इतना और मान लो कि जो हवा उस ज़ुबान से मिल कर आये जिसने अभी अभी कुरआन पढ़ा है उसमें तंदरुस्त करने की तासीर हो जाती है। हवा अगर चमन या इत्र से गुज़रकर आये तो दिल दिमाग़ को मुअत्तर कर देती हैं गंदगी से होकर आये तो दिमाग़ को सड़ा देती है। आग से निकल कर आये तो झुलसा देती है। बर्फ से छूकर आये तो ठंडक पहुंचाती हैं ऐसे ही जिस ज़ुबान से अल्लाह का ज़िक्र किया गया हो उससे छू कर जो हवा निकले वह बीमारी को शिफ़ा और मिटा देती है।

सवाल : आयाते कुरआनिया अगर पढ़कर दम करें और शिफ़ा न मिले तो?

जवाब : अल्लाह का कलाम मिस्ल कारतूस के है और बंदे की जुबानें मिस्ल बंदूक़ के हैं। कारतूस से जभी शिकार हो सकता है जब बंदूक़ सही हो और अगर बंदूक़ ही बिगड़ी हो तो वह कारतूंस कैसे फेकेंगी। इसलिये अपनी जुबान की इस्लाह करें। ग़ीबत, चुग़ली से बचायें। गाली गलोज और बेहूदा गोई से महफ़ूज़ रखें और हलाल रोज़ी खायें। फ़रायज़ व वाजिबात को वक़्त पर अदा करते रहें। फिर देखें इंशाअल्लाह असर ज़रूर होगा।

सवाल : बाज़ लोग शरीयत के खिलाफ़ काम करते हैं और लोग उन्हें बुजुर्ग वली, पीर मानते हैं। यह किस हद तक दुरुस्त है? क्या ख़िलाफ़े शरअ काम करने वाला या बे नमाज़ी वली बन सकता है?

जवाब : बाज़ अल्लाह के बंदे इश्के मौला में अपने होश व हवास खो बैठते हैं जिन्हें मजज़ूब कहा जाता है। इन पर बहुत से शरई अहकाम जारी नहीं होते। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते है। कि तीन शख़्सों से क़लम उठा लिया गया है, बच्चा, दीवाना और मजज़ूब। जो अल्लाह की याद में जज़्ब हो कर अपने होश व हवास खो बेठा है यह लोग अल्लाह के प्यारे हैं। इन पर एतेराज़ न करो। मगर जिसके होश व हवास दुरुस्त हों फिर वह ख़िलाफ़े शरअ हरकत करे तो वह वली नहीं शैतान है। ख़्याल रहे कि जैसे शैतान लोगों को फांसने के लिये मुख़्तलिफ़ जाल बना रखे हैं जिनके ज़रिये लोगों को फांसता है बेशरअ जाहिल और बे अमल पीर इस का बदतरीन जाल हैं। वह शिकारी उस जाल से बहुत शिकार करता है अल्लाह के महबूब बंदों के पास खौफ़े खुदा और इश्के मुस्तफ़ा के ऐसे मज़बूत जाल हैं जिनसे वह लोगों को दरियाए ज़ुलमात से निकालते हैं। इनके हाथ में हाथ देने से दिल में अल्लाह का खौफ़, हुज़ूर की मुहब्बत पैदा होती है और बंदा सही मायनों में बंदा बन जाता है।

सवाल : बाज़ मुरीदीन अपने पीर के सिवा किसी बुजुर्ग को नहीं मानते, हर वक़्त अपने पीर ही का ज़िक्र करते हैं दूसरे के ज़िक्र को पसंद नहीं करते, क्या यह दुरुस्त है?

जवाब : मानना और बात है और क़िसी का हर वक्त तज़किरा करना और बात है। हर सच्चा मुरीद सारे बुजुर्गों को मानता है मगर हर दम अपने पीर का इसलिये दम भरता है कि उसे रूहानी नेमतें इसी से मिली हैं। कुत्ता अपने

मालिक के पीछे ही दुम हिलाता है क्योंकि उसके दर से ही टुकड़े खाता है। शागिर्द अपने ही उस्ताद के गुन गाता है मगर मानता सारे उलमा को। अगर बदबख़्त मुरीद दूसरे बुजुर्गों का मुन्किर हो तो वह अपने पीर के फ़ैज़ से भी महरूम रहेगा। सिलसिला मशायख़ जां के फंदे हैं। एक खुल गया, सब खुल गये। किसी नबी का मुन्किर शरई काफ़िर हैं किसी वली का मुन्किर तरीक़त का मुजरिम है खाकपाए गौसे आज़म सायए हर वली।

सवाल : बाज़ लोग किसी बुजुर्ग के जंगल में शिकार नहीं करते, या वहां के किसी जानवरों को नहीं मारते जैसे मख़दूम अशरफ़ जहांगीर कछौछवी रहमतुल्लाह अलैहि के तालाब की मछलियां कोई नहीं पकड़ता। क्या वह जानवर हराम हैं या शिकार हराम है और मुसलमानों का यह फेअल ख़िलाफ़े ईमान है कि नहीं?

जवाब : न ये जानवर हराम हैं न इनका शिकार हराम है। वह सब हलाल हैं। इनके शिकार से बचना हुरमत की वजह से नहीं बल्कि नुक़सान से बचने के लिये है जैसे बलगमी मिज़ाज का आदमी दही और लस्सी से बचता है, यह चीज़ें हराम नहीं, मुज़िर और नुक़सान हैं। बाज़ बुजुर्गों के जंगलों के शिकार से लोगों ने नुक़सान उठाया है इसलिये तर्जबा करके छोड़ दिया। बाज़ अतिब्बा बाज़ जमीन की बाज़ चीज़ों से भी परहेज़ करते हैं। हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कौम सालेह के कुंए पर एक सफ़र में गुज़रे तो सहाबा को इस कुंए के पानी से रोक दिया गया हत्ता कि बाज़ लोगों ने इस कुंए के पानी से आटा गूंध लिया था। आपने वह भी फेंकवा दिया। वह पानी हराम न था, इसका इस्तेमाल नुक़सानदह था।

सवाल : सूफियाए किराम और दुआ मांगने वाले दुआओं के अव्वल में अल्लाहुम्मा क्यों लगाते हैं, अल्लाह के साथ मीम कैसी और अगर कहा जाये कि ये लफ्ज़ असल में या अल्लाह था या कि बदले मीम लगायी है तो बजाए मीम के और कोई हर्फ़ क्यों न लगाया?

जवाब : इसलिये कि मीम रब के बीस नामों में आती है जैसे मोमिन, मुहैमिन, मालिक, मुल्क, मुकतदर, करीम, रहीम, रहमान, वग़ैरह। लिहाज़ा जो कोई अल्लाह के साथ लफ्ज़ मीम लगाकर पुकारे तो गोया उसने रब को बीस

नामों से याद किया और हर नाम के असरात मुख़्तलिफ़ हैं। लिहाज़ा तमाम असरात हासिल हुए, और हुज़ूर के नाम मुबारक में भी मीम आती है जैसे मुहम्मद, अहमद, मुस्तफ़ा, मुजतबा वग़ैरह। लिहाज़ा अल्लाह में अल्लाह का नाम और मुहम्मद की मीम आ गयी गोया दुआ में हुज़ूर का वसीला भी हासिल हो गया इसलिये दुआओं में अल्लाहुम्मा लगाते हैं।

सवाल : क्या तसव्वुरे शैख़ या तसव्वुरे रसूल नमाज़ में करना दुरुस्त है? (वहाबी, अक़ीदा)

जवाब : शैख़ पीर का तसव्वुर नमाज़ में बिल्कुल न लाये, कि यह खुशूअ व खुज़ूअ के ख़िलाफ़ है अलबत्ता अगर बिला क़सद आ जाये तो इस पर शरअ का गिरफ़्त नहीं मगर तसव्वुरे रसूल नमाज़ में रखना ज़रूरी है क्योंकि नमाज़ हुज़ूर की अदाओं का नाम है। जिनका अदाओं की नक़ल किया जा रहा हो उनका ख़्याल ज़रूरी है। मुहद्देसीन मुफ़स्सेरीन व आइम्मा फ़रमाते हैं कि तसव्वुर रसूल में डूबकर जो नमाज़ पढ़ी जाये वह नमाज़ खुदा को मक़बूल व महबूब है।

सवाल : सही अक़ायद को ईमान क्यों कहते हैं?

जवाब : ईमान अमन से बना है जिसके मायने सलामती के होते हैं। चूंकि सही अक़ायद आख़िरत के अज़ाब से अमन व सलामती में रहने का ज़रिया हैं लिहाज़ा इनका नाम ईमान हुआ।

सवाल : जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दोबारा दुनिया में आयेंगे तो नबी होंगे या नहीं? अगर नबी होंगे तो हुज़ूर ख़ातिमुन्नबीईन न रहे और अगर नुबूवत से मजूल होकर आयेंगे तो यह उनकी शान के ख़िलाफ़ है रब किसी को नुबूवत से मग़रूल नहीं किया करता।

जवाब : हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हमारे हुज़ूर के उम्मती बनकर आयेंगे मगर दर्जे के लिहाज़ से नबी होंगे। जैसे कि कचहरी या अदालत का हज दूसरे शहर की अदालत में गवाह बनकर पेश हो तो वह अपनी जगह पर जज है मगर यहां उस वक़्त गवाह की हैसियत से है। ख़ातिमुन्नबीईन के मायने यह हैं कि आपके बाद किसी को नुबूवत न मिले। ईसा अलैहिस्सलाम पहले के नबी हैं। आख़िरी बेटा वह जिसके बाद कोई बेटा पैदा न हो। इसलिये हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़िरी नबी हैं। खत्मे नुबूवत का मुन्किर

काफिर है।

सवाल : हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उम्मी क्यों कहते हैं?

जवाब : यह लफ्ज उम्मुल करा से बना है जिसमें मक्का मोअज्जमा की तरफ निसबत है यानी मक्का वाले रसूल, और मक्का को उम्मुल करा इसलिये कहते हैं कि यह तमाम ज़मीनों की असल (मां) है क्योंकि वहां ही से ज़मीन फैली और दूसरी वजह हुजूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उम्मी कहने की यह है कि आप ने किसी दुनिया के इंसान से तालीम हासिल नहीं की, बल्कि आप का उस्ताद खुद अल्लाह तआला है। ऐ मेरे महबूब! हमने आपको सब कुछ सिखा दिया है जो आप नहीं जानते थे। उम्मी लकब होना यह आपका ज़ाती वस्फ है और यह आपके मोजिज़ात में से एक अज़ीम मोजिज़ा है। उम्मी के मायने अनपढ़ के नहीं होते हैं जैसा कि बे अदब और गुस्ताख़ लोगों ने लिखा बल्कि उम्मी के मायने होते है। जिसका दुनिया में कोई उस्ताद न हो। और नबी का उस्ताद दुनिया का शख़्स हो, यह शाने नुबूवत के लायक नहीं। नबी का उस्ताद मखलूक का कोई फर्द नहीं होता बकि ख़ालिक खुद होता है। ज़ाहिर है जिस का उस्ताद रब्बे कायनात हो उसको किसी और उस्ताद से इल्म हासिल करने की क्या ज़रूरत होगी?

सवाल : दुनिया का कोई इंसान हुजूर का उस्ताद क्यों नहीं बना? इसमें क्या हिकमत है?

जवाब : इसमें बहुत सी हिकमतें हैं। अव्वल तो यह कि कल कोई इंसान यह न कह सके कि पैगम्बर तो मेरा पढ़ाया हो शागिर्द है। दूसरी वजह यह है कि कोई शख़्स कभी यह ख़्याल न कर सके कि फलां आदमी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उस्ताद था तो शायद वह हुजूर से ज़्यादा इल्म वाला होगा। तीसरी वजह यह कि हुजूर के बारे में कोई ये न सोचे कि चूंकि आप पढ़े लिखे आदमी थे इसलिये उन्होंने खुद ही कुरआन की आयतों को अपनी तरफ से बनाकर पेश किया है और कुरआन इन्हीं का बनाया हुआ कलाम है। चौथी वजह यह कि जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सारी दुनिया को इल्म व हिकमत की तालीम दें तो कोई यह न कह सके कि पहली और पुरानी किताबों को पढ़कर इस किस्म की अनमोल और इंकलाब आफरीं तालीमात दुनिया के सामने पेश

कर रहे हैं। पांचवीं वजह उम्मी होने की यह कि अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कोई उस्ताद होता तो आपको उसकी ताज़ीम करनी पड़ती हालांकि हुज़ूर को ख़ालिके कायनात ने इसलिये पैदा फ़रमाया था कि सारा आलम आपकी ताजीम करे। अल्लाह को गवारा न हुआ कि मेरा महबूब किसी की ताज़ीम करे, किसी का शागिर्द बने, और कोई इंसान महबूब का उस्ताद हो। मुख़्तसर यह कि हुज़ूर का उम्मी होना किसी इंसान से तालीम न लेना एक अज़ीमुश्शान मोजिज़ा है कि दुनिया में किसी ने भी आपका इल्म नहीं पढ़ाया मगर खुदा ने आपको इस क़दर इल्म अता फ़रमाया कि आपका सीना तमाम उलूम व मारिफ़ का ख़ज़ीना बन गया।

सवाल : हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिदैन मोमिन थे या नहीं?

जवाब : हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु तक हुज़ूर के सिलसिले नस्ब में कोई मुश्रिक नहीं आपके आबा व अजदाद सब मोमिन मोहिद हैं। आला मोती क़ीमती डिब्बे में रखा जाता है नूरे मुहम्मदी आला चीज़ थी इसके लिये कि पाक पीठ तैयब व ताहिर पेट लाज़िम व ज़रूरी है।

सवाल : हुज़ूर ने अपनी वालिदा के क़ब्र की ज़्यारत की इजाज़त रब से चाही तो दे दी गयी मगर दुआए मग़्फ़िरत करना चाही तो उससे रोक दिया गया। अगर वह मोमिना थीं तो उनके लिये दुआए मग़्फ़िरत से क्यों रोका गया?

जवाब : इसलिये कि वह बे गुनाह थीं, दुआए मग़्फ़िरत गुनाहगारों के लिये होती है, देखो बच्चे की नमाज़े जनाज़ा में मैयत को दुआ नहीं करते क्योंकि वह बेगुनाह है। अगर वह मोमिना न होतीं तो उनकी ज़्यारते क़ब्र भी मना होती और वह गुनाहगार होती भी कैसे? गुनाहगार वह होता है जो शरई हुक्म पाए और मुख़ालेफ़त करे वह तो इस्लाम के ज़हूर से पहले वफ़ात पा गयीं। उनका नाम ही उनके ईमान का पता देता है। आमना, ईमान वाली या अमन देने वाली या अमानते इलाही रखने वाली ख़ातून रज़ियल्लाहु तआला अन्हा।

सवाल : हज़रत आमना ख़ातून रज़ियल्लाहु तआला अन्हा और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा उस वक़्त किस नबी के दीन पर थे, दीन ईसवी या मौसवी?

जवाब : वह सिर्फ मोहिद मोमिन थे। दीने ईसवी और दीने मौसवी उस वक़्त अपने असली रंग में न रहे थे। तौरेत व इंजील में बहुत तबदीली हो गयी थी, उन पैग़म्बरों की लाई हुई शरीयत लोगों ने तबीयत में बदल दिया था। उनकी तालीमात मिट चुकी थी। इस मिटी हुई तालीम और बदली हुई शरीयत का मानना लाज़िम न था। ऐसे वक़्त में लोगों के लिये सिर्फ अक़ायद-ए-तौहीद ही निजात के लिये काफी था। इन्हीं को असहाबे फितरत कहते हैं। ख़्याल रहे दो नबियों के दर्मियान जो ज़माना है वह ज़माना फितरत है और ज़मानाए फितरत में अकीदए तौहीद ही काफी है।

सवाल : नबी और उम्मती दोनों ही इस्लाम के जहाज़ में सवार हैं तो यह फर्क क्यों है कि एक उम्मती और दूसरा नबी कहलाया?

जवाब : जहाज़ का कप्तान और सवारियां सभी एक ही जहाज़ में सवार हैं, मगर सवारियां पार उतरने के लिये सवार हैं और कप्तान सबको पार उतारने के लिये। इसलिये सवारियां किराया देकर सवार होती हैं मगर कप्तान तंख़्वाह लेकर हमारी नमाज़ें, और आमाले सालेहा नजात पाने के लिये है मगर हुज़ूर की इबादात हमको नजात दिलाने के लिये ताकि इनको इबादत करते देखें, हम भी ऐसा ही करें वरना वह तो पहले ही से मक़बूल बारगाहे इलाही हैं।

सवाल : नबी की गुस्ताख़ि और तौहीन कुफ्र क्यों है?

जवाब : इसलिये कि अलह तआला ने इनकी खुद तारीफ फरमाई है और जिसकी तारीफ रब करे और आप तौहीन करें यह कुफ्र है क्योंकि इनकी तौहीन रब की तरदीद और तौहीन है। अल्लाह तआला अपने नबी की तौहीन कभी बर्दाश्त नहीं करता। अहले मिस्र ने यूसुफ अलैहिस्सलाम को सिर्फ गुलाम कहकर तौहीन की तो अल्लाह तआला ने उनको यह सज़ा दी कि मिस्र पर बारह साल तक कहत मुसल्लत रखा। जब नबी की तौहीन रब को गवारा नहीं तो फिर अपने महबूब और तमाम नबियों के सरदार की तौहीन व गुस्ताख़ी रब तआला क्योंकर गवारा करेगा।

सवाल : कुरआन को कुरआन और फुरकान क्यों कहते हैं?

जवाब : कुरआन क़रन से बना है जिसके मायने हैं मिलाने वाला। इंसान ग़िज़ा, जुबान, लिबास, शक्ल व सूरत में अलग था मगर कुरआन ने सब को

मिलाकर मुसलमान बना दिया। एक उम्मत बना दिया। जैसे मुख़्तलिफ फूलों की रस शहद की मक्खी की वजह से शहद हो गये ऐसे कुरआन ने सब को जमा करके मुसलमान नाम रख दिया और कुरआन को फुरकान इसलिये कहते हैं कि यह कुफ्र और इस्लाम हक और बातिल के दर्मियान फर्क पैदा करता है, अबू बकर सिद्दीक और अबू जहल के दर्मियान ख़त इम्तेयाज़ खीचंता है ख़ुदा परस्ती और बुत परस्ती की निशानदेही करता है नूर व जुलमत का फर्क बताता है। इसलिये इस को फुरकान कहते हैं।

सवाल : कुरआन शरीफ की तौहीन कुफ्र क्यों है?

जवाब : कुरआन अल्लाह तआला का कलाम है, जो सलतनते इलाहिया में रहने वाले हर इंसान के लिये ख़ुदा का पैग़ाम है। इसलिये हुकूमत की किसी चीज़ की तौहीन हुकूमत ही की तौहीन है। अदालत में हाकिम के सामने ऊंची आवाज़ से बोलना जुर्म है कि यह तौहीने अदालत है और तौहीने अदालत हाकिम और हुकूमत की अहानत है।

सवाल : मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इसराईल की बुत परस्ती देखकर तौरेत ज़मीन पर पटक दी थी हालांकि इसकी तख़्तियां और तहरीर सब रब तआला की तरफ से थीं। जब वह कुफ्र न हुई तो कुरआन की तौहीन कुफ्र क्यों है? तौरेत भी तो कलामे इलाही है? (आरिया)

जवाब : किताबे इलाही के गिराने की तीन सूरते हैं। पहली सूरत गलती से गिर जाये, यह गुनाह नहीं। दूसरी सूरत गिरा दी जाये, यह गुनाह है। तीसरी सूरत किताबुल्लाह की तौहीन मकसूद हो, यह कुफ्र हैं मूसा अलैहिस्सलाम को अपनी कौ़म बुत परस्ती की वजह से गुस्सा आया और इस कदर आप जलाल में आ गये कि गुस्से की वजह से बदन कांपने लगा और तख़्तियां आप के हाथ से छूट कर गिर गयीं और जोश में तख़्तियां गिरा दीं तो उन्होंने रब से माफी मांगी।

सवाल : कुरआन में है कि लोग इसे पढ़कर हिदायत पाते हैं और इस को पढ़कर गुमराह भी हो जाते हैं तो जब कुरआन सरापा हिदायत है तो यह गुमराही कैसी? (आरिया)

जवाब : एक ही हारमोनियम का एक ही पर्दा दबाओ मोटी और भारी

आवाज़ निकलती है। दूसरा दबाओ तो सुरेली, बारीक व दिलकश आवाज़ निकलती है हालांकि हवा एक ही हारमोमिनयम में जाती है मगर आवाज़ों मे फ़र्क़ है। इसी तरह इंसान के क़ल्ब व दिमाग़ में रहमानी पर्दे भी हैं और शैतानी भी। अगर शैतानी पर्दा ग़ालिब है तो कुरआनी हवा से कुफ़्र की आवाज़ निकलती है और अगर रहमानी पर्दा ग़ालिब है तो कुरआनी हवा से ईमान बोलता है। यह कुरआन का क़सूर नहीं है अपने पर्दे का कसूर है बारिश से कहीं फूल उगता है तो कहीं कांटे, कहीं गुलाब उगता है कहीं धतूरा।

सवाल : तक़दीर के मायने क्या हैं और तक़दीर की हक़ीक़त क्या है?

जवाब : तक़दीर के मायने हैं मुक़र्रर करना। तक़दीर रब तआला के उस इल्म का नाम है जो दुनिया के अहवाल के मुताल्लिक़ है रब को इल्म है कि फलां बंदा अपनी जिन्दगी में फलां फलां काम करेगा। यह उसकी तक़दीर हुई। उसी इल्म को लोहे महफ़ूज़ में लिख दिया गया है यह उसकी तक़दीर की तहरीर हुई। फिर बंदे ने वैसे ही आमाल किये जो नामाए आमाल में लिख दिये गये थे। यह तक़दीर का नतीजा हुआ।

सवाल : जब इल्मे इलाही में सब कुछ आ चुका है और इसके ख़िलाफ होना ना मुमकिन है तो चाहिये कि बंदा गुनाहगार न हो कि उसने वही किया जो पहले तक़दीर में लिखा जा चुका था, बंदा मजबूर है। (जोहला)

जवाब : जैसे बंदा नेकी करके सवाब का मुस्तहिक़ है ऐसे ही बदी करके अज़ाब का भी मुस्तहिक़ है रब तआला के इल्म और तहरीर से बंदा मजबूर कैसे हो गया। मजबूर वह है जिससे बे इरादा कुछ हो जाये जैसे चलते चलते गिर पड़ना। जो काम इरादे से हो वह इख़्तेयारी कहलाता है। और बंदा मुख़्तार है रब के इल्म में यह पहले ही से था कि बंदा अपने इरादा व इख़्तेयार से यह काम करेगा इसलिये उसी को लिख दिया। लिख दिया है इसलिये नहीं कर रहा है बल्कि करने वाला है इसलिये लिख दिया गया। रब तआला ने न उसका हुक्म दिया न उससे राज़ी हुआ।

सवाल : कुरआन कहता है कि रब तआला के चाहे बग़ैर तुम कुछ भी नहीं कर सकते, फिर हम मुख़्तार कैसे? (आरिया)

जवाब : बेशक हम चाहने में ग़ैर मुख़्तार रहे मगर इस फेअल में तो मुख़्तार

हुए। मसलन ज़ैद कतल करेगा अब इरादा फरमा चुका तो यकीनन ज़ैद इरादा से ज़रूर कत्ल करेगा तो ज़ैद इरादए कत्ल में मजबूर हुआ मगर फेअले कत्ल में मुख़्तार रहा। क्योंकि वह इरादे से है और सज़ा कत्ल की है न कि इरादए कत्ल का।

सवाल : अल्लाह ने शैतान को पैदा ही क्यों किया? जो तमाम गुनाहों की जड़ है? (जोहला)

जवाब : शैतान दुनिया का मेअमार है अगर यह न होता तो दुनिया में कुछ न होता क्योंकि फिर पुलिस, फौज, अदालत, जेल, हत्ता कि बादशाह सब बेकार थे। जब कोई मुजरिम और फसादी न होता तो इन मुहकमों की ज़रूरत ही क्या थी। बल्कि अंबियाए किराम की तशरीफ आवरी और तबलीग़ की भी क्या ज़रूरत थी। दौजख़, फरिश्ते, और अजाब भी बेकार थे। खुदा की सिफात ग़फ्फारी सत्तारी जब्बारी कह्हारी का ज़हूर भी न होता। क्योंकि यह सिफात बंदों के गुनाहों से ज़ाहिर होते हैं बल्कि न आदम अलैहिस्सलाम गंदुम खाते, न ज़मीन पर आते, न दुनिया बस्ती। मालूम हुआ कि सर्द व गर्म, पाक नापाक, अच्छी बुरी चीज़ों से दुनिया का निज़ाम कायम है। शैतानियत से इंसानियत की पहचान होती है रात से दिन की कदर व कीमत होती है। जुहल से इल्म की पहचान होती है। अंधेरे से उजाले को समझा जाता है।

सवाल : तो फिर शैतान बड़ी अच्छी चीज़ है, उसे लानत क्यों करते हैं?

जवाब : नहीं शैतान तो बुरा है ही, अल्लाह ने उस पर लानत किया है इसलिये हम भी उस पर लानत करते हैं।

सवाल : अगर शैतान ने सबको बहकाया तो शैतान को किसने बहकाया? अगर कहो खुदा ने, तो खुदा नाआऊज़ूबिल्लाह कसूरवार ठहरा? (आरिया)

जवाब : शैतान को उसके नफ्स ने बहकाया। देखो रमज़ान के महीने में शैतान कैद होता है, मगर गुनाह फिर भी होते हैं। नफ्से अम्मारा की वजह से। नफ्से अम्मारा शैतान से ज़्यादा ख़तरनाक है हम को गुमराह नफ्स ही करता है। शैतान तो नफ्स को बुरी राह दिखाकर अलग हो जाता है मगर शैतान ही इंसान को बुराईयों का हुक्म देता हैं अल्लाह तआला ने शैतान को इसका हुक्म न दिया महज़ मौका दिया जिस में बहुत सी हिकमतें हैं, पंडित जी बताओ कि

गाय को क़साई ने काटा और क़साई को यह कुदरत किसने दी और बक़ौल तुम्हारे परमात्मा ने छुरी, तलवार, सांप, बिच्छू क्यों पैदा किये, अगर कहो कि यह चीज़ें खुद बखुद पैदा हुई तो परमात्मा हुई और अगर परमात्मा ने पैदा कीं तो क्यों पैदा कीं?

सवाल : शैतान बुरी बातों ही का हुक्म देता है हालांकि रिवायात से साबित है कि अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु को उसने नमाज़े फज्र के लिये उठाया। अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु को आयतुल कुर्सी का अमल बताया। बाज़ अंबियाए किराम से भी उसने अच्छी बातें कीं, फिर उसका क्या मतलब?

जवाब : शैतान कभी नेक और अच्छे बंदों को अच्छे काम में लगाकर बहुत अच्छे काम से रोक देता है ताकि वह ज़्यादा सवाब हासिल न कर सकें। इसका यह फेअल भी बुरी नीयत से ही होता है दुश्मन की नेकी में दुश्मनी है। अमीर मुआविया नमाज़ क़ज़ा हो जाने पर इस कदर रोए थे कि इन्हें पांच सौ नमाज़ों का सवाब मिल गया था। दूसरे दिन उसने इसलिये उठा दिया कि ज़्यादा सवाब न ले लें। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जूते के खौफ से यह अमल उन्हें बताया गया न कि नेक नीयती से। अंबियाए किराम से भी फंसकर कभी कुछ अच्छी और नेक बातें कर जाता है ग़र्ज़ कि इसकी फितरत तो बुरी है और यह हालात आरज़ी हैं।

सवाल : जब हर चीज़ तक़दीर में लिखी जा चुकी है तो दुआयें क्यों मांगी जाती हैं, जो होना है वह होकर रहेगा। (बाज़ मुसलमान)

जवाब : दुआ मांगना भी तक़दीर में आ चुका है कि बंदा यह दुआ करेगा तब यह नेमत पायेगा। इसलिये बीमारी की दवा, रिज़्क़ के लिये रोज़गार, बीमारी से शिफ़ा के लिये परहेज़ करवाये जाते हैं कि अगरचे रिज़्क़ तनदुरस्ती मुक़द्दर रहे मगर यह असबाब भी तक़दीर में लिखे हुए हैं।

सवाल : क्या तक़दीर में तबदीली हो सकती है अगर हो सकती है तो इस आयते करीमा के क्या मायने कि जब मौत आयेगी तो एक पल भी आगे पीछे नहीं हो सकता। अगर नहीं हो सकता है तो इस हदीस का क्या मतलब कि दुआ क़ज़ा को बदल देती है।

जवाब : तक़दीर जो इल्मे इलाही है इसमें तबदीली नामुमकिन है। इसको

तक़दीर मबरम भी कहते हैं जोकि दुआओं और सिफ़ारिश से भी नहीं टल सकती। न किसी मख़लूक़ में ताक़त है कि वह तक़दीर को बदल सके। अलबत्ता एक है तक़दीर मुअल्लक़ तक़दीर मुअल्लक़ में तबदीली हो सकती है। रोने गिड़ गिड़ाने से कज़ाए मुतल्लक़ बदल सकता है, बुज़ुर्गाने दीन की दुआओं से तक़दीर मुअल्लक़ में तबदीली मुमकिन है। यह जो कहा गया है कि निगाहे मर्द मोमिन से बदल जाती हैं तक़दीरें यहां तक़दीर मुअल्लक़ मुराद है न कि तक़दीर मुबरम।

सवाल : तक़दीर बदलना ग़ैर मुमकिन है जब मौत आने पर एक मिनट, एक सैकेंड भी आगे पीछे नहीं हो सकता तो उम्र कैसे बढ़ सकती है, इल्मे इलाही में तबदीली ना मुमकिन। (बाज़ जोहला)

जवाब : तक़दीर में तबदीली उम्र में ज़यादती कमी होती है और होती रहती है। तुम्हारी पेश कर्दा आयत का मतलब यह है कि मौत आने पर कोई शख़्स अपनी ताक़त व कुव्वत से आगे पीछे नहीं हो सकता लेकिन अगर रब ख़ुद ही तबदीली फ़रमा दे तो वह क़ादिर है। ख़्याल रहे कि इल्मे इलाही में तबदीली ना मुमकिन है मगर हुक्मे इलाही में तबदीली होती रहती है। छोटी उम्र भी रब के हुक्म से है और लंबी उम्र भी इसी के हुक्म से हमारी बीमारी भी इसी के हुक्म से है और दवा से सेहत भी इसी के हुक्म से है।

सवाल : जब ख़ुदा के इल्म में था कि आख़िरकार शैतान गुमराह हो जायेगा तो उसे पहले इतनी अज़मत क्यां दी कि इबादत और इल्म की वजह से उसे तमाम फ़रिश्तों का उस्ताद बनाया?

जवाब : इस सवाल का जवाब आगे आयेगा। यहां बस इतना ही समझ लो कि शैतान को आलिम, आबिद बनाकर इसलिये रांदए बारगाह किया गया ताकि क़यामत तक उलमा, आबिदीन जाहिदीन को इबरत हो कि इल्म व अमल जुहद व तक़वा सब मुख़ालेफ़ते अंबिया और तौहीने नबी से बरबाद हो जाता है।

सवाल : सबसे बदतरीन काफ़िर कौन है?

जवाब : सबसे बदतरीन काफ़िर पैग़म्बर की तौहीन करने वाला है। शैतान इसी क़िस्म का काफ़िर था। वह अल्लाह की ज़ात, वहदानियत हश्र व नशर और सिफ़ाते इलाहिया का मुन्किर न था, बल्कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की शान में गुस्ताख़ी व बे अदबी का मुरतकिब हुआ जिसकी वजह से वह मरदूदे

बारगाहे इलाही हुआ। शैतान के अंजाम से तमाम गुस्ताखाने रसूल को इबरत हासिल करना चाहिये।

सवाल : अंबियाए किराम की तौहीन या उनसे मंसूब चीज़ की तौहीन यह कुफ्र क्यों है?

जवाब : इसलिये कि अल्लाह तआला ने इन्हें तमाम मखलूक में चुन लिया और पसंद कर लिया है। इनकी हर चीज अल्लाह तआला की तजवीज व पसंद है तो उनकी किसी भी चीज पर एतेराज या उसकी तौहीन रब की तौहीन और रब पर एतेराज है। जैसे फोज की वर्दी और आईन पर एतेराज बादशाह पर एतेराज है। कि यह उसकी तजवीज इंतेखाब है।

सवाल : किसी पैगम्बर ने नुबूवत व तबलीग पर उजरत न ली और न ही खुलफाए राशिदीन ने खिलाफत पर ली मगर उलमा तालीम पर वाजेईन वअज़ पर, मुकर्रर तकरीर पर उजरत लेते हैं, हालां कि यह भी तबलीग ही करते हैं।

जवाब : जिसके इंतेखाब में बन्दों की राय को दखल न हो बल्कि उसका तकर्रर महज़ हुक्मे इलही से हो उसकी उजरत महज रब के करम से होगी बंदों से न ली जायेगी। और जहां तकर्रुर में बंदों को इख्तेयार हो वहां उजरत भी बंदे ही देगे। जैसे कोर्ट, कचहरी, का जज और वकील व मुंशी जज की तंख्वाह हुकूमत के जिम्मे है, क्योंकि उसने इसको मुकर्रर किया है। मगर वकील और मुंशी की उजरत रिआया के जिम्मा कि वह अपने मुकद्दमात व मामलात की पैरवी के लिये खुद इंतेखाब करती है इसलिये नुबूवत में बंदो की राय को दखल नहीं। कोई नबी इलेक्शन से नहीं बनता कि चार आदमी मिलकर वोट डालें और बोलें आज से तुम हमारे नबी हो। यह इलेक्शन वाला ग्रुप नहीं है बल्कि यह सलेक्शन वाला ग्रुप है। नबी इलेक्टड नहीं है नबी सेलेक्टड है अल्लाह फरमाता है बेशक अल्लाह ने चुन लिया, लिहाजा उनकी खिदमत का मुआवजा महज रब पर है। आलिम, उलमा, इमाम और वाईज को खुद बंदे इंतेखाब करके अपने यहां बुलाते हैं, रखते है। लिहाज़ा उनका मुआवज़ा खिदमत अवाम के जिम्मे है।

सवाल : हुक्काम रिश्वत लेकर काम करते हैं और आलिम उलमा नज़राना लेकर तकरीर करते हैं यह भी तो एक तरह का रिश्वत है कि पैसा लेकर तकरीर की जाये या मसला बताया जाये।

जवाब : खुद से कहीं जाकर दीन की बात बताने का मुआवज़ा लेना जायज है क्योंकि यह आने जाने और लिखने की उजरत है मसले की नहीं। जैसे कि कुरआन पाक की तिजारत करना इसको छपाकर बेचना ये कलामे इलाही के मसायल की कीमत नहीं है बल्कि कागज और प्रेस खर्च की कीमत है जिसके अेवज रकम लिया जाता है। यह रिश्वत नहीं और न ही अल्लाह का कलाम बेचना है। रिश्वत तो वह है जो फर्ज मनसबी के एवज लिया जाये, जो काम बगैर मुआवेजा जरूरी था वह मुआवेजा लेकर किया जाये जैसे काजी और हाकिम पर इंसाफ वाजिब है। अगर वह इस पर रुपया पैसा लें तो वह रिश्वत में शुमार किया जायेगा। इसलिये आलिम का नजराना, मां बाप की खिदमत एक दूसरे को हदिया यह रिश्वत नहीं। कि यह किसी वाजिब काम का बदला नहीं। इसलिये यह रिश्वत नहीं। वैसे तो शरअन काजी और हाकिम को अवाम से हदिया लेना भी दुरुस्त नही क्योंकि इससे अदल व इंसाफ में फर्क का इमकान है इसलिये एहतियात बहुत ही जरूरी है ताकि हक व इंसाफ का खून न हो।

सवाल : यह क्यों कहा जाता है कि हुजूर का मिस्ल ना मुमकिन है रब कादिर है? (गुस्ताखे रसूल)

जवाब : पूरी दुनिया हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नूर से बना अब हुजूर का मिस्ल कैसे हो कसता है जो मिस्ल होगा वह भी हुजूर ही के नूर से बना होगा फिर वह मिस्ल कहां रहा? जब एक शख्स अपने बाप के नुतफे से पैदा हो चुका तो अब कोई इसका दूसरा हकीकी बाप नहीं बन सकता जब दुनिया हुजूर के नूर से पैदा हो चुकी तो अब दूसरा मुस्तफा पैदा भी नही हो सकता।

ढूंढोगे अगर दहर में सानीए मुहम्मद
सानी तो बड़ी चीज है साया न मिलेगा

सवाल : इस्लाम में औरतों पर पर्दा क्यों रखा गया है, इससे औरतों को तपेदिक की बीमारी होती है। (गैर मुस्लिम हजरात)

जवाब : बुखार रोकने के लिये जुकाम और प्लेग रोकने के लिये चूहों की ज्यादती रोकते हैं। हदीस शरीफ में है कि तीन चीजों को पर्दा में रखो। दौलत, औरत और खाना। औरत नाजुक शीशा है और अजनबी की निगाह पत्थर है।

फूल गुलशन में अच्छा है। औरत फूल है, घर उसका गुलशन है। तपेदिक पचास साल से है और पर्दा चौदह सौ साल से है। अब भी बे पर्दा औरतों में जिस्मानी बीमारियां और तपेदिक ज़्यादा हैं ऐसी बेहूदा बातें करके लोग औरतों को गुमराह करते हैं ताकि वह पर्दे से बाहर आयें और उनकी हवसनाक निगाहें उनका पीछा करें।

सवाल : क्या मुसलमानों को अपनी औरतों पर भरोसा नहीं, क्या वह तमाम इंसानों को आवारा और बदमाश समझते हैं जो उन से अपनी औरतों को पर्दा कराते हैं? (आरिया, गैर मुस्लिम)

जवाब : क्या हुकूमतें अपनी रिआया को गुंडा, आवारा, बदमाश समझती हैं जो जेल खाना और पुलिस का महकमा क़ायम कर दिया हैं क्या कोई दुकानदार लोगों को चोर लुटेरा समझता है जो शाम होते ही अपने दुकानों को ताला लगा देता हैं पंडित जी जवाब दीजिये, शर्म व हया और पर्दा तो औरत की असल ज़ेवर है आज दुनिया में क़त्ल ग़ारतगरी ज़िना और अग़वा की जितनी वारदातें हो रही हैं उनका असल मुहररिक नंगापन और बे पर्दगी ही है।

सवाल : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई?

जवाब : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जब विसाल हुआ तो जिब्राईल, मिकाईल, इसराफील, इज़राईल, आये और दुरूद व सलाम पढ़ा। दुआए जनाज़ा नहीं पढ़ी क्योंकि वह गुनाहगार की मग्फिरत के लिये पढ़ी जाती है और नबी गुनाहों से मासूम होता है। इसलिये सब बारी बारी आकर आपके जनाज़े पर दुरूद व सलाम पढ़े। सबसे पहले हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, फिर हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फिर हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और बाद में तमाम सहाबा किराम ने पढ़ी। मगर जमाअत के साथ नहीं बल्कि फरदन फरदन आये और सलात व सलाम पेश किया।

सवाल : सूर: फातेहा की पहली आयत अलहम्दोलिल्लाह रब्बिल आलेमीन है जिसके मायने होते हैं तमाम तारीफ अल्लाह के लिये हैं जो सारे आलम का पालनहार हैं इस आयत से यह मालूम हुआ कि यह अल्लाह का कलाम नहीं बल्कि

किसी बंदे का बनाया हुआ है। अगर ख़ुदा का कलाम होता तो इस तरह होता अलहम्दु तमाम तारीफ़ मेरे लिये है। दूसरी आयत का मायने है कि हम तुझी को पूजते हैं रब किसको पूजता है तीसरा यह कि ख़ुदा अपनी तारीफ़ अपने आप करे यह गुरूर है और गुरूर करना, शैख़ी मारना बुरी बात है। (आरिया)

जवाब : यह कलाम अल्लाह का है, और अपने बंदों से कहलवाने के लिये इस तरह बोला गया है जैसे उस्ताद शार्गिद को सामने बिठाकर किताब ख़ुद पढ़ता है ताकि शागिर्द भी इसी तरह पढ़ें। नीज़ कभी हाकिम दूसरे की जुबान में बात करता है। मिम्बरी के फ़ार्म छपाये जाते हैं, या जब किसी से हल्फ़ नामा लिया जाता है तो फर्मा और हलफ़ नामे की इबारत इस तरह होती है कि मैं इक़रार करता हूं कि सारे क़वानीन की पाबंदी करूंगा हमेशा ख़ैर ख़्वाह रहूंगा वग़ैरह वग़ैरह। देखो इन फार्मो का मज़मून बनाने वाला कोई और है लेकिन चूंकि मिम्बरों से यह कहलवाना मक़सूद है इसलिये उसकी जुबान में यह अल्फ़ाज़ लिखे गये। तो इस आयत का मतलब यह है कि ऐ बंदो! हमारी बारगाह में आकर इस तरह कहा करो, रब तआला अगर अपनी ज़ात व सिफ़ात खुद हम से ब्यान न फ़रमाता तो हमें इसका पता कैसे चलता। यह शेख़ी और गुरूर नहीं है बल्कि बंदों को अपनी पहचान करानी है। एक बादशाह अपनी रिआया से कहता है कि मुझे तुम पर फलां फलां इख़्तेयारात हैं और मेरी यह शान है इससे मक़सूद यह होता है कि रिआया इन बातों से ख़बरदार होकर इसकी इताअत करे इस तरह यहां भी हैं यह एतेराज़ महज़ हिमाक़त है।

सवाल : अलहम्दु से मालूम हुवा कि हर हाल में बंदा अल्लाह की हम्द व तारीफ़ व ज़िक्र करे, उठते बैठते या रसूलुल्लाह या ग़ौस कहना किसी और का नाम जपना शिर्क है। (वहाबी)

जवाब : अल्लाह वालों की तारीफ़ और उनका ज़िक्र हक़ीक़त में खुदा ही की तारीफ़ और उसी का ज़िक्र है बल्कि कामिल हम्द अल्लाह तआला की वही है जो उसके ख़ास और महबूब बंदों के साथ हो। अगर उठते बैठते ग़ैरुल्लाह की तारीफ़ करना शिर्क है तो तुम भी उठते बैठते अपने मौलवियों की तारीफ़ करते रहते हो, तुम मुशिरक हुए कि नहीं?

सवाल : अगर अल्लाह तमाम जहान का पालने वाला है तो मुसलमानों के हाथों से कत्ल क्यों कराता है, जिहाद का हुक्म क्यों दिया? जिहाद से लोग मारे जाते हैं, रब का काम है पालना, न कि मारना? (आरिया)

जवाब : जो नाकिस मख़लूक़ अपने वजूद से दूसरी आला मख़लूक़ की परवरिश में रुकावट पैदा करे इसको अलहेदा कर देना ही परवरिश है, किसान के खेत में फसल के साथ में कुछ खूबसूरत नर्म घास भी उग आते हैं जो देखने में भली मालूम होती है मगर किसान जानता है कि उससे खेत की फसल तबाह व बर्बाद हो जायेगी इसलिये उसे जड़ से उखेड़ कर बाहर फेंकता है क्योंकि उसमें फसल की भलाई है इसी तरह कुफ्फार व मुश्रीकीन रब की ज़मीन पर खूब सूरत घास हैं कि अगर ज़ोर पकड़ जायें तो ख़ुदा के बंदों पर दुनिया तंग हो जाये इनको निकलवा देना ही ज़रूरी है और रबूबियत के लिये कुफ्फार व मुश्रेकीन आड़ भी हैं जिनका हटाना ज़रूरी है।

सवाल : रब का काम है परवरिश कराना और तकलीफ से बचाना फिर वह अपने ख़ास बंदों पर तकलीफ क्यों उतारता है जैसा कि बीमारी, ग़रीबी, तंगदस्ती अफलास वग़ैरह वग़ैरह। (आरिया)

जवाब : यहां किसी की बीमारी में गुरबत, अफलास, तंगदस्ती और परेशानी में मुबतला होना इस बात की दलील नहीं है कि अल्लाह तआला इस बंदे से नाराज़ है और किसी को तनदुरस्ती मिल जाना इज्ज़त व शोहरत दौलत व हुकूमत हासिल हो जाना इस बात की अलामत नहीं है कि अल्लाह उससे ख़ुश है इसलिये उसे सब दे रहा है। किसी को देकर आज़माता है और किसी को न देकर आज़माता है। गुरबत, अफलास, तंगदस्ती और बीमारी वग़ैरह देकर बंदे के शुक्र का इम्तेहान लेता है और दौलत न देकर सब्र का इम्तेहान लेता है। अल्लाह अपने नेक बंदों पर जो तकलीफें परेशानियां भेजता है यह तकलीफें, परेशानियां उसके गुनाहों का कफ्फारा बन जाती हैं और सब्र की वजह से अल्लाह उसके दरजात को बुलंद फरमा देता है। बाप अपने बेटे पर इल्म व हुनर सीखने की मेहनत डालता है बच्चा मदरसा की पाबंदियां, उस्ताद की सख़्तियां देखकर घबरा जाता है मगर जब उसका अच्छा नतीजा निकलता है तो समझता है कि वह सख़्तियां कड़वी दवा की तरह फायदा मंद थीं बाप की सख़्तियां बेटे

के हक़ में दर हक़ीक़त मुहब्बत ही की बिना पर हैं।

सवाल : रब के मायने हैं पालने वाला जब अल्लाह तआला सबका रब है तो चाहिये कि सब को पाला ही करे किसी को मौत न दिया करे, हलाक करना रबूबियत के ख़िलाफ़ है। (आरिया)

जवाब : जो लोग मौत से घबराते हैं वह मौत की हकीकत को समझते ही नहीं। मौत तो हबीब से मिलने का एक पुल है। मौत तमाम इंसानों के लिये रहमत है कि अगर सब ज़िन्दा ही रहें, कोई मरे नहीं तो फिर ज़मीन पर पैर रखने की जगह नहीं होगी। इस मौत के जरिये से इंसान दुनियावी मुसीबतों से छूट जाता है और अपने किये हुए नेक आमाल का जज़ा पाता है। हक़ तआला का कुर्ब हासिल होता है। हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़्यारत नसीब होती है गोया ज़िन्दगी की एक खेती है और मौत उसकी कटाई का दिन। खेत का काटना हक़ीक़त में किसान की परवरिश की तकमील और उसका असल मक़सद हैं ऐसे ही इंसान की ज़िन्दगी उसके कमाई करने का वक़्त है और मौत उसी का फल चखने का वक़्त है।

सवाल : जब अल्लाह रब्बुल आलेमीन है तो सारी ज़रूरतें और हाजतें उसी से मांगी जायें जो लोग ख़ुदा को छोड़कर नबियों, वलियों, से हाजतें मांगते है। उन्हें अपना मुश्किल कुशा और हाजतरवा समझते हैं वह ख़ुदा को रब्बुल आलेमीन नहीं मानते? (वहाबी, अहले हदीस)

जवाब : अल्लाह के मक़बूल और ख़ास बंदों से कोई चीज़ मांगना हक़ीक़त में अल्लाह तआला ही से मांगना है क्योंकि यह अल्लाह के बंदे उसकी सिफ्त रबूबियत के मज़हर हैं। बेशक अल्लाह रब्बुल आलेमीन है शाफी अलअमराज़ है लेकिन उसने इन तमाम कामों के लिये दरवाज़े मुक़र्रर कर दिये हैं इन दरवाज़ों पर जाकर मांगना हक़ीक़त में रब ही से मांगना है। शिफ़ा के लिये हकीम और डाक्टर के यहां जाते हैं। इंसाफ के लिये हाकिम के यहां जाते हैं। ख़ुदा का रिज़्क लेने के लिये मालदारों का दरवाज़ा तलाश करते हैं। बस यूं समझो कि पावर हाउस में बिजली बनती है लेकिन उसकी रौशनी वहां मिलती है जहां उसका बल्ब लगे हों, तो जो शख़्स बल्ब और कुमकुमों से रौशनी हासिल करे वह पावर हाउस का मुख़ालिफ़ नहीं।

सवाल : अल्लाह रहमान है रहीम है, बड़ा ही दयालू है तो दौज़ख़ और मूज़ी चीज़ों को क्यों पैदा फरमाया? (आरिया)

जवाब : अगर तकलीफदेह चीज़ें पैदा न होतीं तो हमारी रूह और जिस्म को पूरी तहारत हासिल न होती, नमाज, रोज़ा, ज़कात, हज, बजाहिर तकलीफ दह मालूम होती हैं लेकिन हकीकत में यह रूह को पाक करने वाली चीज़ें हैं जैसे कि जंग आलूदा लोहे को लुहार भटटी में रखकर कूटता पीटता है तो वह तकलीफ और मुसीबत पाकर जंग वगैरह से साफ हो जाता है। मशीन का पुर्ज़ा बनने के लायक हो जाता है जिससे उसकी कद्र व कीमत बढ़ जाती है। घड़ियों और मशीनों में थोड़ी कीमत का लोहा है लेकिन कारीगर के पास पहुंचकर पुर्ज़ा बना और बहुत कीमती हो गया। सोना निहायत अगरचे कीमती धात है लेकिन अगर वह सुनार की भटटी में न रखा जाये और सुनार के हाथ से चोट न खाये तो वह जेवर बनकर महबूब के गले में न जाये। यह तकलीफें हकीकत में इसकी कदर व कीमत बढ़ाने वाली हैं। इसी तरह गुनाहगारों पर जो तकलीफें और मुसीबतें आती हैं वह उन्हें जंग आलूदा लोहे की तरह गुनाहों के मेल से साफ कर जाती हैं और नेक लोगों पर जो आती हैं उनको सोने के जेवर या हार की तरह और ज्यादा कुर्बे इलाही के काबिल बना देती हैं। तो यह मुसीबतें दर हकीकत अल्लाह की रहमतें हैं। इसी तरह तकलीफदेह जहरीली चीजें बड़ी बड़ी मुसीबतों को दफा कर देती हैं। मसलन मच्छर और मक्खी जिस्मे इंसानी से बहुत से जहरीले माद्दों को चूस लेते हैं गल्ले के कीड़े घुन वगैरह गल्ले के बहुत से नुक्सान दह असरात को मिटा देते हैं। फिर यह कोई जरूरी नहीं कि अल्लाह सिर्फ इंसानों पर ही रहम फरमाये, वह भी तो उसकी मखलूक हैं वह भी उसके रहम के मुस्तहिक हैं।

सवाल : मुसलमान कहते हैं कि हम एक खुदा की इबादत करते हैं हालांकि वह काबा की तरफ सर झुकाते हैं। काबा तमाम पत्थरों से बना हुआ है, काबा की तरफ मुंह करके नमाज पढ़ना बुत परस्ती है, हम हिंदु एक पत्थर की तरफ झुकते हैं और उसको पूजते हैं मगर तुम तो हजारों पत्थरों की इमारत की तरफ झुकते हो। तुम तो हम से भी बढ़कर मुश्रिक हुए अगर मुसलमान कहें कि हम काबा को खुदा नहीं मानते तो हम हिंदु भी मूर्ती को खुदा नहीं मानते बल्कि अपना ध्यान यकसू करने के लिये मूर्ति को सामने रखते हैं। (आरिया)

जवाब : इस सवाल का जवाब नमाज़ की नीयत ही में मौजूद है क्योंकि नमाज़ की नीयत में यह कहा जाता है कि नमाज़ वास्ते अल्लाह के मेरा मुंह काबा शरीफ की तरफ। मालूम हुआ कि नमाज़ काबा के लिये नहीं बल्कि नमाज़ बंदगी अल्लाह के लिये हैं अगर नमाज़ काबा के लिये होती तो जिस तरफ काबा का पत्थर पहुंचता उधर ही मुसलमान झुक जाता मगर ऐसा नहीं होता। ग़िलाफ काबा हमारे पास है मगर कोई उसको सज्दा नहीं करता। अगर काबा का कोई पत्थर बल्कि पूरी इमारत उठाकर और जगह रख दे तब भी कोई मुसलमान उधर न झुकेगा जब कि हिंदु मुश्रिक का हाल यह है कि जिधर उसकी मूर्ति होती है उधर ही उसके पुजारी का सर होता है। मतलब ये कि बुत परस्त का ताबेदार होता है मगर मुसलमान का सर काबा शरीफ के पत्थरों का ताबेदार नहीं जिससे मालूम हुआ कि मुसलमान का सर रब के लिये झुका और मुश्रिक का सर मूर्ति के लिये। नीज़ बुत परस्त बुत को सामने रखकर सज्दा करता है। मुसलमान के लिये काबा का सामने होना ज़रूरी नहीं। यह भी याद रहे कि काबा इमारत का नाम नहीं है बल्कि ज़मीन से आसमान तक की फिज़ा का नाम है। अगर वहां कोई इमारत न भी हो तो भी नमाज़ में इसी तरफ ही मुंह किया जायेगा। यह इमारत तो उस जगह का निशान है जिस जगह की तरफ मुंह करके इबादत करने के लिये मुतय्यन कर दिया गया है। यह भी फिकह इस्लाम है कि सिम्त किब्ला न मालूम होने की सूरत में मुसलमान जिधर मुंह करके नमाज़ पढ़ेगा नमाज़ हो जायेगी। फिर फ़र्क़ यह है कि हिंदु पत्थर की मूर्ति किसी इंसान के नाम पर बनाता है और कहता है कि यह राम का बुत है यह महादेव का बुत है। यह काली का बुत है और उसको खुदा का शरीक और उसकी खुदाई का हिस्सादार मानता है और यह समझ कर उस पत्थर की तरफ सर झुकाता है जिसके नाम का पत्थर है मैं उसकी इबादत कर रहा हूं। उसकी पूजा करता हूं। महादेव की पूजा, काली की पूजा, हनुमान की पूजा, राम की पूजा वग़ैरह। हिंदु पूजा और इबादत को बुतों की तरफ निसबत करता है और हर एक का काम नाम ही से ज़ाहिर है। नीज़ मुश्रिक बुत परस्त बुतों के ज़रिये काली वग़ैरह ही को पूजता है न कि अल्लाह को। जब कि काबा अल्लाह ही के नाम का है उसे बैतुल्लाह कहा जाता है मगर मुसलमान हरगिज़ हरगिज़ काबा के पुजारी नहीं जैसा कि नियत ही से जाहिर है कि नमाज़ वास्ते अल्लाह के मुंह मेरा क़ाबा शरीफ की तरफ नीज़ बहुत

सी हालतों में मुंह काबा शरीफ़ की तरफ़ नहीं किया जाता है कि खौफ़ की नमाज़ जिधर मुंह हो उधर पढ़ लो। मगर पंडित जी की पूजा आग और पत्थर के बग़ैर नहीं हो सकती, मगर मुसलमान पहाड़ों और तहख़ानों में भी नमाज़ पढ़ते हैं। इस हालत में काबा की इमारत का कोई भी हिस्सा सामने नहीं होता।

सवाल : चाहिये कि तुम आरियों की इबादत को सही मानो क्योंकि यह किसी मूर्ति की पूजा नहीं करते, सिर्फ़ रब का नाम लेते हैं और तुम भी रब ही का नाम लेते हो मक़सद तो रब को याद करना है, जिस तरह चाहो कर लो। (आरिया)

जवाब : इबादत वही सच्ची है जिसकी तालीम अल्लाह की तरफ़ से नबियों और रसूलों के ज़रिये दी गयी हो। अपनी अक़्ल की तजवीज़ की हुई कोई इबादत नहीं। मुसलमान जो भी इबादत करता है वह अल्लाह की बताई हुई नबियों और रसूलों की बताई हुई है लिहाज़ा सही यही है। आरिया और दीगर क़ौमों की इबादत अक़्ल से सोची हुई है अपनी तरफ़ से बनाई हुई है लिहाज़ा वह कुछ भी करे ग़लती करता है शाही क़ानून की पाबंदी बहुत ही ज़रूरी है।

सवाल : हम भी नमाज़ में दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह हम को सीधे रास्ते पर चला और अंबिया औलिया भी यही दुआ करते हैं तो हम में और उनमें फ़र्क़ क्या है? (वहाबी)

जवाब : रास्ता सब का एक ही है मगर मंज़िले मक़सूद सबकी अलग अलग हैं हमारे रास्ता की इंतेहा आग से नजात है। अल्लाह के मक़बूल बंदों की जन्नत का गुल व गुलज़ार है। महबूबों के रास्ते की इंतेहा दीदार और विसाले यार है जैसे बारात में बाराती दुल्हा और उसके मां बाप सभी जाते हैं, एक ही रास्ता सब तय करते हैं मगर बारातियों की मक़सद की इंतेहा खाना और शिर्कत है। रिश्तेदारों की इंतेहा जोड़े, घोड़े, तोहफ़ा, तहायफ़ है मगर दुल्हा का मक़सदे इंतेहा व दुल्हन का हुसूल है देखो रास्ता एक है मगर मंज़िले मक़सूद अलग अलग है।

सवाल : इस्लाम और ईमान के बग़ैर खुदा कोई भी नेक अमल क़बूल नहीं करता। खुदा की यह बेजा तरफ़दारी है कि मुसलमानों के आमाल तो क़बूल करे और ग़ैर मुस्लिमों के रद कर दे। जब दोनों एक ही आमाल कर रहे हैं तो यह फ़र्क़ क्यों? एक ग़ैर मुस्लिम कुंआ खुदवाता है पुल बनवाता है और सदक़ा व

ख़ैरात करता है तो वह बिल्कुल कबूल न हुआ और एक मुसलमान इनमें से दसवां हिस्सा भी करे तो ख़ुदा का प्यारा बन जाये यह कैसे? (आरिया)

जवाब : एक शख़्स निहायत उम्दा और अच्छे क़िस्म का हलवा बनाता है लेकिन उसमें छटांक भर ज़हर भी मिला देता है। दूसरे आदमी ने हलवा तो मामूली बनाया लेकिन उसे ज़हर से महफ़ूज़ रखा। यकीनन उस बेवकूफ़ मालदार का हलवा भले ही कीमती और अच्छा क्यों न हो मगर वह हलाक कर देगा, और उस अक़्लमंद ग़रीब का मामूली हलवा फ़ायदेमंद होगा। यह नेक आमाल हलवे के अज्ज़ा हैं और कुफ़्र ज़हर है। काफ़िर जो नेक काम भी करता है उसमें कुफ़्र का ज़हर मौजूद होता है लिहाज़ा उसके आमाल बे कार हैं और मुसलमान अगरचे मामूली नेक काम करे लेकिन उसके आमाल कुफ़्र के ज़हर से महफ़ूज़ हैं इसलिये क़ाबिल क़बूल हैं, फ़ायदे मंद हैं, कारआमद हैं बाइसे नजात हैं।

सवाल : जब किसी काफ़िर व मुश्रिक की तक़दीर में यह आ चुका है कि वह ईमान न लायेगा तो चाहिये कि उन्हें कुफ़्र की सज़ा न मिले क्योंकि वह अपने इस कुफ़्र में मजबूर हैं? (आरिया)

जवाब : मालूम होता है कि मुअतरज़ तक़दीर की हक़ीक़त को नहीं समझा। तक़दीर इल्मे इलाही का नाम है उसके इल्म में जिस तरह मुजरिम का जुर्म दाख़िल है ऐसे ही उसका इख़्तेयार भी। यानी हक़ तआला को उसके मुताल्लिक़ यह इल्म हुआ कि इस शख़्स को ईमान लाने या न लाने का इख़्तेयार होगा मगर यह अपनी ख़्वाहिश से ईमान न लायेगा। जब यह कुफ़्र इख़्तेयारी हुआ तो उसकी सज़ा ज़रूर मिलनी चाहिये। दूसरी बात यह है कि यह लोग इसलिये मुजरिम हैं कि उन्होंने अपने ईमान के सारे रास्ते ख़ुद ही बंद कराये क्योंकि उसके असबाब उन्होंने जमा किये और हक़ तआला ने रास्ते बंद कर दिये। जैसे कोई आदमी किसी को जुलमन क़त्ल कर दे तो अगरचे मक़बूल की जान अल्लाह ने ही निकाली लेकिन जान निकालने के सारे असबाब (यानी क़त्ल वग़ैरह) उसने जमा किये, लिहाज़ा क़ातिल यकीनन मुजरिम है उसे सज़ा मिलेगी।

सवाल : जिस तरह कुरआन का मिस्ल किसी से न बन सका इसी तरह हमारे वेद का मिस्ल भी आज तक कोई न बना सका तो चाहिये कि इसको भी

कलामे इलाही मान लो? (आरिया)

जवाब : वेद ने किसी को कभी अपने मुक़ाबले का चैलेंज दिया ही नहीं तो उसका मुक़ाबला कौन करता, रुस्तम पहलवान तो कह सकता है कि मैंने अख़बारो में अपने मुक़ाबले के लिये चैंलेंज दिये मगर कोई सामने न आया मगर कमज़ोर लोग यह नहीं कह सकते कि मेरे मुक़ाबले में भी आज तक कोई नहीं आया क्योंकि उन्होने अपने मुक़ाबले के लिये किसी को बुलाया ही कब था? दूसरी बात यह कि वेद संस्कृत जुबान में आया है और यह जुबान किसी की मादरी जुबान नहीं और न ही इसका कोई माहिरा मुक़ाबले का चैलेंज उस फ़न के माहिरों को दिया जाता हैं कोई अरबी जानने वाला अंग्रेज़ी जानने वाले को चैलेंज दे तो यह ग़लत है। कुरआन करीम अरबी जुबान में आया और मुल्क अरब में आया और उस ज़माने में आया कि फ़साहत व बलाग़त पर नाज़ करने वाले लोग वहां पर मौजूद थे, और वह अपनी लिसानी बुनियाद पर पूरी दुनिया को अजमी (गूंगा) कहते थे। फिर कुरआन ने सबको ललकारा। अगर कुछ बलबूता है तो आओ हमारा मुक़ाबला करो तो जानूं। कुरआन का यह चैलेंज आज भी पूरी दुनिया के सामने है और दुनिया वाले बेबस हैं और सुबह क़यामत तक यह चैलेंज बर क़रार रहेगा। सोचो दुनिया जब कुरआन की मिस्ल न ला सकी तो साहबे कुरआन की मिस्ल कहां से लाये। बेचारा वेद किसको पुकारता, वह तो बक़ौल तुम्हारे ऐसी बे ढंगी जुबान में आया जिसका माहिर और बोलने वाले दुनिया में मौजूद नहीं।

सवाल : अल्लाह ने इंसान को गुमराह होने का इख़्तेयार भी क्यों दिया? गुमराही का इख़्तेयार देना भी बुरा है। (आरिया)

जवाब : बंदे में इख़्तेयार पैदा करना बुरा नहीं बल्कि उसका इस्तेमाल करना बुरा है। फौजी और सिपाही को हुकूमत हथियार देती है दुश्मन को मारने के लिये। जो सिपाही अपने ही आदमी को इस हथियार से मार दे तो सिपाही मुजरिम है न कि हुकूमत। अल्लाह ने हम को तमाम कुव्वतें, इख़्तेयारात नेकियां करने को दिये, अगर हम इन कुव्वतों को हराम में ख़र्च करें तो हम मुजरिम हैं।

सवाल : जो लोग क़ब्र में दफ़न नहीं होते, मसलन जला दिये जाते हैं या उनको शेर वग़ैरह खा जाता है या दरिया समुंद्र में डूबकर गल सड़ जाते हैं उनके

अजज़ा बदन पानी में गल कर पानी हो जाते हैं, या मछली उनको खा जाती है उन लोगों से हिसाबे क़ब्र क्यों कर होगा? (आरिया)

जवाब : क़ब्र ख़ास उस गड्ढे का नाम नहीं है जिसमें मुर्दे दफ़न किये जाते हैं बल्कि उस बरज़ख़ी हालत का नाम है जो मरने और क़यामत में उठने के दर्मियान है जिस्म से रूह निकलने के बाद इंसान कहीं भी हो, किसी हालत में हो वह उसकी क़ब्र है ख़्वाह शेर के पेट में हो या मछली के, दरिया के तह में हो या समुंद्र में, उसके रूह को जिस्म के असल अजज़ा से मुताल्लिक़ करके उससे सवाल व जवाब हो जाते हैं। लिहाज़ा अगर जिस्म इंसानी शेर या मछली के पेट में है या जलकर राख होकर मैदान में उड़ रहा है या दरिया में बह रहा है, ग़र्ज़ यह कि कहीं भी है, जिस हाल में है उसकी रूह को उससे मुताल्लिक़ करके वहां भी सवाल व जवाब कर लिये जाते हैं। अल्लाह इस बात पर क़ादिर है कि वह तमाम अज्ज़ा को यकजा करके जिस्म बना दे और उस पर अज़ाब दे। ख़ुदा की क़ुदरत से इंकार कौन कर सकता है। जब मां के पेट में बच्चा बनता है तो बाहुक्मे ख़ुदा फ़रिश्ता वहीं आकर नक्श व निगार (सूरत) भी कर जाता है और उसकी तक़दीर भी लिख जाता है मगर मां को ख़बर नहीं होती। इसी तरह शेर वग़ैरह के पेट में हिसाब व अज़ाब होगा मगर उसको ख़बर नहीं होगी।

सवाल : जब दुनिया में हर चीज़ इंसान ही के लिये अल्लाह तआला ने बनाया तो इस्लाम में बाज़ चीज़ें हराम क्यों? चाहिये था कि हर चीज़ को हम हर तरह इस्तेमाल कर सकते? (आरिया)

जवाब : हर चीज़ तुम्हारे नफ़ा ही के लिये बनी न कि तुम्हारे खाने के लिये। हर चीज़ का नफ़ा अलग अलग है। किसी को खाओ किसी को पियो, किसी को सूंघो, किसी से बचो। पंडित जी तुम्हारे घर में तुम्हारी बीवी, मां, बहन, बेटी ये सब तुम्हारे नफ़ा ही के लिये हैं लेकिन उन सबका नफ़ा यकसां नहीं। बीवी से हम बिस्तरी की जाती है और मां, बहन से इमदाद और शफ़क़त हासिल की जाती है। पानी और आग सब तुम्हारे नफ़ा के लिये हैं मगर पानी पिया जाता है और आग खाई नहीं जाती है। जिस तरह हर चीज़ का तरीक़ाए इस्तेमाल सिखाने वाले के मदद के बग़ैर हासिल हनीं होता इसी तरह अंबियाए किराम की तालीम के बग़ैर किसी चीज़ को इस्तेमाल करना फ़ायदेमंद न होगा। अंबियाए किराम ने फ़रमाया, हलाल और पाक चीज़ खाओ, पियो और हराम

चीजो से बचो।

सवाल : बाज जाहिल पीर और पीर परस्त कहते है कि सज्दए ताजीमी जायज है और कुरआन से साबित है कि हजरत आदम अलैहिस्सलाम को फरिश्तो ने सज्दए ताजीमी किया। (पीर परस्त)

जवाब : फरिश्तो का यह सज्दा हजरत आदम अलैहिस्सलाम की शरीयत का हुक्म न था क्योकि शरई हुक्म नबी के जरिये इंसान या जिन्नात पर जारी होता है। फरिश्तो पर हुक्मे शरई जारी नही होता। यहा यह हुक्म खुसूसी तौर पर सिर्फ फरिश्तो को ही दिया गया लिहाजा यह शरीयते आदम का हुक्म न था। नीज यह सज्दा सिर्फ एक ही बार हजरत आदम अलैहिस्सलाम को हुआ। हमेशा सज्दा करने का हुक्म न था। हजरत याकूब अलैहिस्सलाम के दीन में भी सज्दए ताजीमी का जायज होना कुरआन से साबित नही होता। याकूब अलैहिस्सलाम का यूसुफ अलैहिस्सलाम को सज्दा करना न ताजीमी था न हुकमे शरई। अगर ताजीमी होता तो हजरत यूसुफ अलैहिस्सलाम वालिद को सज्दा करते क्योंकि याकूब अलैहिस्सलाम आपके वालिद है और ताजीम वालिद की जाती है न कि वल्द की। मालूम हुआ कि यह सिर्फ ख्वाब की ताबीर पूरी करने के लिये था जैसे हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का फरजद के जिब्ह के लिये तैयार हो जाना ख्वाब की ताबीर के लिये था। इसी तरह उनका अपने बीवी, बच्चों को जंगल ब्याबा मे छोड आना, यह तमाम चीजे दीने इब्राहीम के शरई एहकाम न थे। गर्ज कि ताजीमी सज्दे का गुजिश्ता पैगम्बरो मे जायज होना और हमारे यहां हराम होना दोनो हदीस से साबित है। शरीयते मुहम्मदी मे सज्दए ताजीमी हराम हराम हराम है।

सवाल : हजरत हव्वा आदम अलैहिस्सलाम की बेटी थी, क्योंकि उनके जिस्म पाक से पैदा हुई तो उनके साथ निकाह का बर्ताव कैसे जायज हुआ?(आरिया)

जवाब : पंडित जी औलाद वह कहलाती है जो कि अपने नुतफे से पैदा हो। लिहाजा वह उनकी बेटी न हुई। हमारे जिस्म से बहुत सी जानदार चीजें बन जाती है। सर में पेट में बहुत से जानवर, कीडे जू, वगैरह पैदा हो जाते हैं वह हमारी औलाद नही कहलाते क्योंकि हमारे नुतफे से नही है। और अगर मान भी लिया जाये कि हजरत हव्वा हजरत आदम की बेटी ही थीं तो भी जिस तरह

उनकी शरीयत में बहन से निकाह जायज़ था इसी तरह मजबूरन इस बेटी से निकाह करना जायज़ क़रार दिया गया क्योंकि दूसरी औरत का मिलना ना मुमकिन था और ख़ुदा को दुनिया इंसानों से बसाना था। अगर ऐसा न होता तो नस्ल इंसानी की अफ़ज़ूदगी कैसे होती, और पंडित जी आप भी नहीं होते। और अगर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तरह हज़रत हव्वा को अलग मिटटी से बना दिया जाता तो यक़ीनन मर्द औरत में इतनी मुहब्बत न होती जो अब है।

सवाल : आदम को पैदा करके अल्लाह ने हुक्म दिया कि जन्नत में अपनी बीवी के साथ रहो, मुद्दतों तक वह जन्नत में रहे, जब गंदुम का दाना खा लिया तो हुक्म हुआ कि अब तुम ज़मीन पर जाओ। अगर वह ज़मीन पर न आते तो हम जन्नत में रहते और मज़ा करते। ख़ता उन्होंने की और उसे हम भुगत रहे हैं। (आम बे दीन लोग)

जवाब : यह बिल्कुल ग़लत है बल्कि तुम जैसे बे दीनों ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को जन्नत से बाहर निकलवाया क्योंकि तुम उनकी पुश्त में थे और जन्नत बे दीनों की जगह नहीं। इसलिये मर्ज़ीए इलाही यह हुई कि आदम उन बे दीनों को ज़मीन पर फेंक आयें फिर हमेशा के लिये जन्नत में तश्रीफ लायें। इंसान को पलीदी पाख़ाने में ले जाती है न कि पलीदी को इंसान। यानी जब हाजत होती है तब उसके निकालने के लिये पाख़ाना जाना पड़ता है।

सवाल : गंदुम खाने के बाद जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा क़बूल ही करनी थी तो उनको तीन सौ साल तक क्यों रुलाया गया?

जवाब : जो चीज़ मुश्किल से हासिल होती है उसकी क़दर भी होती है। दूसरों को इससे इबरत भी हासिल होती है। ज़रा सी लग़्ज़िश पर जब हमारे बाप (तमाम इंसानों के बाप) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम इतना रोए तो उनकी नाफ़रमान औलाद को भी अपनी भूल और ख़ताओं पर रोना चाहिये। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का रोना सबके लिये बाइसे इबरत है।

सवाल : इस्लाम कहता है कि जान बूझकर गुनाह करना बुरा है, इसका मतलब यह है कि नादान और अंजान बन कर जो चाहो सो करो। और उससे ये भी मालूम हुआ कि इल्म से जहालत बेहतर है क्योंकि जाहिल का गुनाह गुनाह है और आलिम का गुनाह कभी कुफ्र बन जाता है जैसा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि जाहिल बे इल्म पर एक वबाल है और आलिम बे अमल पर सात वबाल हैं। (बाज़ जाहिल)

जवाब : जानबूझ कर गुनाह करना यकीनन कुफ्र है मगर जहालत का वबाल इल्म के वबाल से ज़्यादा है इसलिये कि आलिम बे अमल फकत बे अमली का गुनाहार है और जाहिल बे अमल डबल गुनाहगार है। एक तो बे अमली की वजह से दूसरा बे इल्मी की वजह से। इल्म सीखना फर्ज़ था जाहिल इस फर्ज़ का तारिक है गुनाहगार है। एक शख्स अपने बाप को न पहचान कर उसको मार बैठे, अक्ल कहती है यह शख्स बड़ा बद नसीब है जाहिल का एक वबाल आलिम के सात वबालों से ज़्यादा सख्त होगा। गुनाहगार मोमिन को सदहा बद अमलियों की सजा मिलेगी और काफिर व मुश्रिक को सिर्फ कुफ्र की मगर एक कुफ्र की सज़ा दीगर सदहा जुर्मों की सज़ा से सख्त होगी। हदीस सही समझो। ख्याल रहे कि कुफ्रियात वगैरह में बे इल्मी उज्र नहीं। अगर कोई जाहिल भी कलिमा कुफ्र निकाल दे तो वह यकीनन मुजरिम है। कोई शख्स कानून से वाकिफ होकर चोरी करे या बे टिकट रेल में सफर करे और गिरफ्तार होने पर कहे कि मुझे खबर न थी कि यह काम जुर्म है वह भी ज़रूर सज़ा का मुस्तहिक होगा।

सवाल : बे अमल आलिम को वअज़ व तकरीर करना जायज़ नहीं इसलिये कि जिस बात पर वह खुद अमल न करे तो चाहिये कि किसी को गलती करते हुए देखकर भी न बताये।

जवाब : इसमें वअज या तकरीर की बुराई मालूम नहीं हुई बल्कि अमल न करने की आलिम वाइज को चाहिये कि वअज बंद न करे बल्कि अमल करना शुरू कर दे। अगर खुद अमल न भी करे तब भी दीन की तब्लीग व आवत किये जाये क्योंकि अभी तो एक गुनाह कर रहा है वअज़ बंद कर देने पर डबल गुनाह का मुरतकिब होगा एक बद अमली का दूसरे दीन को छिपाने का बे अमल आलम की मिसाल चिराग वाले अंधे की तरह है क्योंकि वह तो उससे फायदा हासिल नहीं करता मगर दूसरों को फायदा पहुंचा देता है और यह भी एक नेकी है।

सवाल : गरीब मौलवी को चाहिये कि जकात और हज के अहकाम ब्यान न करे क्योंकि वह अपनी गरीबी की वजह से खुद उनका आमिल नहीं लिहाजा वह बे अमल है। (बाज जाहिल)

जवाब : बे अमल वह कहलाता है जिस पर अमल करना ज़रूरी हो और न करे। और जिसको शरीयत में माफी दी हो वह बे अमल नहीं। एक डाक्टर या हकीम बीमार को दवा पिलाता है अगर बीमार कहे कि हकीम साहब पहले आप दवा पियो फिर मुझे पिलाओ तो वह बेवकूफ है क्योंकि उसको दवा की ज़रूरत ही नहीं है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ज़कात फर्ज़ नहीं थी लेकिन आपने औरों को इसका हुक्म दिया।

सवाल : बनी इसराईल पर फिरऔन की सख़्ती उनकी सरकशियों का अज़ाब था लेकिन उनके बच्चों ने क्या गुनाह किया था जो बच्चे ज़िब्ह किये गये?

जवाब : दुनिया में मुसीबतें आफ़तें सिर्फ गुनाहों से ही नहीं आतीं बल्कि बहुत वजह से आती हैं। अंबियाए किराम जो बिल्कुल बे गुनाह होते हैं सब पर तकालीफें आती हैं। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम १८ साल तक सख़्त बीमारी में मुबतला रहे। हज़रत ज़िक्रिया अलैहिस्सलाम के सर पर आरा चलाया गया। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उनके शीर ख़्वार बच्चे हज़रत अली असग़र किस गुनाह पर करबला की मुसीबत में मुबतला हुए। जिन क़ौमों पर आसमानी अज़ाब आये उनके बच्चे जानवर सभी हलाक हुए। हालांकि बच्चे मुजरिम न थे। बनी इसराईल के बच्चों को फिरओनियों के हाथों ज़िब्ह, बनी इसराईल के नेक कारों का इम्तेहान था। नेकियों के लिये दुनिया की मुसीबतें उनके दरजात व मरातिब की बुलंदी का बाइस बनती हैं। बदकारों की सज़ा कि बच्चों की सज़ा से इन्हें तकलीफ हो। हां आख़िरत के अज़ाब बग़ैर जुर्म न होंगे।

सवाल : क्या कोई दुनिया में हालते बेदारी में अल्लाह तआला को आंखों से देख सकता है?

जवाब : इस दुनिया में रहकर कोई शख़्स बहालते बेदारी आंखों से रब को नहीं देख सकता। दुनिया में उसकी दीदार का शर्फ सिर्फ हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़ास्सा है। अवाम तो अवाम नबियों को भी यह शर्फ हासिल नहीं। हमारे हुज़ूर ने मेराज की रात में रब को देखा। सारे मुसलमान अल्लाह का दीदार करेंगे मगर आख़िरत में न कि इस दुनिया में। इमाम आज़म अबू हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने रब को सौ बार देखा मगर ख़्वाब में न कि हालते बेदारी में।

सवाल : इस दुनिया में अल्लाह का दीदार न होने के क्या वजूहात और हिकमतें हैं?

जवाब : पहली हिकमत तो यह है कि अगर यहां मुसलमान रब तआला को देख लेते तो कुफ्फार कह सकते थे कि हम भी देखकर उसकी इबादत करेंगे और अगर कुफ्फार व मुश्रेकीन को भी दिखाया जाता तो मुसलमानों को उन पर कुछ फौकियत न रहती और ईमान का एक हिस्सा योमिनूना बिलग़ैब भी है। फिर ग़ैब ग़ैब न रहता। दूसरी हिकमत यह कि रब के नज़दीक ग़ायबाना मुहब्बत मक़बूल हैं यहां बग़ैर देखे उससे मुहब्बत करो ताकि यह मुहब्बत उसके दीदार का ज़रिया बने। तीसरी हिकमत यह कि अगर यहां दीदारे इलाही होता तो दुनियावी कारोबार सब ख़त्म हो जाते क्योंकि जो आंख उसे देखती है वह किसी और को नहीं देखती। चौथी हिकमत यह कि दुनिया ग़ैरत की जगह है यहां पर आशिक़ चाहता है कि न मैं महबूब के सिवा किसी को देखूं और न मेरे महबूब को कोई देखे और न वह खुद किसी को देखे। इसलिये सब को तकलीफ होती है। आख़िरत में चूंकि यह हाल न रहेगा। पांचवीं हिकमत यह कि दुनियावी आंख इतनी कमज़ोर है कि सूरज की रौशनी की भी ताब नहीं ला सकती तो ख़ालिक़ सूरज को क्या देख सकेगी। हां सूरज पर हल्के बादलों का ग़िलाफ आ जाये या उसका अक्स पानी में ले लिया जाये तो उसका दीदार हो जाता है। इसी तरह दुनिया में अगर रब तआला का जमाल देखना है तो मुस्तफा का जमाल देख क्योंकि यह जमाल आईना हक़ नुमा है। मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद गिरामी है- जिसने मुझे देखा उसने हक़ तआला को देख लिया।

सवाल : अपनी नफ़अ और फ़ायदे के लिये लिये बेक़सूर जानवर की जान लेना जुल्म है और ख़ुदाए तआला जुल्म नहीं कर सकता। (आरिया)

जवाब : जानवर वग़ैरह इंसान ही के नफा के लिये पैदा किये गये हैं। पंडित जी भी चमड़े के जूते और गाय भेंस के दूध दही इस्तेमाल करते हैं बल्कि अब तो साइंस ने बता दिया है कि हवा और पानी में सदहा जानवर हैं जो नाक और मुंह के रास्ते से इंसान के पेट में जाते रहते हैं। पंडित जी को चाहिये कि पानी पीना और सांस लेना छोड़ दें। नीज़ तमाम सब्जियों में भी जान है, वह भी न खानी चाहिये, पंडित जी दुनिया का निज़ाम ऐसे ही क़ायम है कि बाज़ जान बाज़

जान को खाकर ज़िन्दगी गुज़ारती हैं। शेर घास नहीं खाता, बड़ी मछली छोटी मछली को और शिकारी जानवर दूसरों को खाकर ही ज़िन्दा रहते हैं दवाओं में सदहा जानवरों के गोश्त और चर्बी काम आते हैं जिन्हें पंडित साहेबान बेचते और इस्तेमाल करते हैं। इस्लाम फितरी दीन है। इसके सारे अहकाम भी फितरत के मवाफिक हैं।

सवाल : काफिर और मुश्रिक को हमेशा जहन्नम में रखना जुल्म है सज़ा जुर्म के मुताबिक होनी चाहिये न कि हमेशा। (आरिया)

जवाब : कानून से ज़्यादा सज़ा देना वाकई जुल्म है और कानूनी सज़ायें इंसाफ। रब का कानून यह है कि हुकूमते इलाहिया के बागी यानी काफिर व मुश्रिक की सज़ा हमेशा जहन्नम है। लिहाजा यह हमेशगी जुल्म नहीं। चोर आधे घंटे में चोरी करता है और दो चार दिन में चोरी का माल खा पी लेता है। मगर इसको सात या दस साल की जेल होती है। डाकू को उम्र कैद होती है। वहां कोई नहीं कहता कि उसने एक घंटे में जुर्म किया उसको एक ही घंटे जेल में रखो बल्कि कानून ने चूंकि उसकी सज़ा यही रखी है लिहाज़ा यह ऐन इंसाफ है, जुल्म नहीं है। हां जो कम कानून से ज़्यादा सज़ा दे वह जुल्म है। दूसरे यह कि काफिर ने अल्लाह की बे इंतेहा नेमतें खाकर बे इंतेहा बग़ावत व नाफरमानी की इसलिये इसको बे इंतेहा सज़ा दी जाये। आज की मुल्की कानून में बाग़ी और मुल्क से ग़द्दारी करने की सज़ा उम्र कैद या फांसी है मगर चूंकि वहां मौत नहीं इसलिये इसकी सज़ा की इंतेहा नहीं और यहां दुनिया में मौत इस ज़िन्दगी की इंतेहा है इसलिये यह सज़ा उसकी इंतेहा है।

सवाल : रूह एक पाक चीज़ है, जिस्म के गुनाह से आरज़ी नापाकी इसमें आ गयी तो चाहिये कि मरने के बाद जब यह नापाकी जाती रहे तब उसकी निजात हो जाये। (नेचरी)

जवाब : कुफ्र व शिर्क ऐसी गंदगी है जिससे रूह असलन गंदी होकर नाकाबिले इस्लाह हो जाती है जैसे कि लोहा और साफ शीशा ज़ंग से नाकाबिले इस्लाह हो जाता है। अब भी बाज़ आदात व अख़लाक से इंसान काबिले इस्लाह नहीं रहता। लिहाज़ा ऐसी गंदी रूह का अज़ाबे दायमी ही ज़रूरी है कुफ्र ने रूह की असल बिगाड़ दी।

सवाल : चाहिये कि रूह का सज़ा न मिले क्योंकि जुर्म और गुनाह जिस्म न किया है। गुनाह आज़ा से हुए हैं इसलिये सिर्फ जिस्म ही को सज़ा होना चाहिये, रूह तो बे कसूर है। (बाज़ जाहिल)

जवाब : एक अंधा लंगड़े को लेकर बाग़ में चोरी करने गया। लंगड़े ने फल तोड़े, अंधे ने वहां तक पहुंचाया। मालिक ने इन दोनों को पकड़ लिया, और खूब पिटाई की क्योंकि दोनों मुजरिम हैं। जिस्म लंगड़ा है और रूह अंधी है इन दोनों ने मिलकर अल्लाह के अहकाम के बाग़ की चोरी की है लिहाज़ा दोनों अज़ाब के मुस्तहिक हैं। जिस्म रूह के बग़ैर कुछ नहीं कर सकता और रूह बग़ैर जिस्म के मजबूर थी। नीज़ जिस्म बग़ैर रूह अज़ाब नहीं पा सकता क्योंकि तकलीफ का एहसास रूह से होता है इसलिये रूह को अज़ाब ज़रूरी है।

सवाल : जिस तरह बे अमल बदकार मुसलमान को कुछ रोज़ जहन्नम में रखकर जन्नत में भेजा जायेगा इसी तरह चाहिये था कि नेकों कार काफिर व मुश्रिक को कुछ रोज़ जन्नत में रखकर जहन्नम में भेजा जाता। (आरिया)

जवाब : आप अपने उम्दा क़ालीन पर गंदे पांव वाले को नहीं आने देते। अल्लाह तआला भी अपने जन्नत के क़ालीन पर काफिर व मुश्रिक की गंदी रूह को क्यों आने दे।

सवाल : इसकी क्या वजह है कि बाज़ मुसलमान तो सज़ा पाकर जन्नत में जायेंगे मगर बाज़ की वैसे ही बख़्शिश हो जायेगी?

जवाब : मकसूद तो यह है कि कोई मैली रूह जन्नत में न जाये। पहले ही इसको पाक कर दिया जाये जिस तरह दुनिया में हम किसी चीज़ को पानी से पाक करते हैं किसी को आग में रखकर। इसी तरह अल्लाह तआला किसी गुनाहगार मुसलमान को रहमत के पानी से और किसी को दौज़ख़ की आग से पाक करके जन्नत में भेजेगा। ये वोह ख़ुद जानता है कि कौन किस लायक है।

सवाल : इस्लाम कहता है कि जुल्म पर मदद करना भी जुल्म है तो अल्लाह ने ज़ालिम को जुल्म पर कुदरत व ताक़त क्यों दी? यह भी एक तरह से जुल्म पर मदद है? (आरिया)

जवाब : अल्लाह ने ज़ालिम पर कुदरत देकर उससे मना भी फरमाया है

और बहुत डराया है मगर इंसान जब ज़ालिम की मदद करता है तो उसे जुल्म की रग़बत देता है और उससे जुल्म करवाता है। इसलिये अल्लाह तआला का कुदरत देना जुल्म पर इमदाद नहीं। कुदरत महज़ इसलिये दी गयी है कि बंदा उस पर क़ाबू पाकर बचे और सवाब का मुस्तहिक़ हो।

सवाल : इस्लाम में शिफ़ा हासिल करने के लिये या जान बचाने के लिये हराम चीज़ों का इस्तेमाल जायज़ है तो अगर दूसरी क़ौमें भी अपनी ज़िन्दगी के लिये हराम असबाब पर अमल करें तो वह गुनाहगार क्यों हैं? (आरिया)

जवाब : इस्लामी हुक्म यह है कि जो सख़्त जान लेवा बीमारी की मुसीबत में फंस जाये उसके लिये हराम दवायें वग़ैरह हलाल हैं। शरीयत ने मुसीबत से बचने के लिये हराम चीज़ों का इस्तेमाल करना उसके हक़ में हलाल कर दिया है। यह बिल्कुल जायज़ है लेकिन नफ़सानी ख़्वाहिशों के लिये हराम चीज़ों का इस्तेमाल करना अक्लन भी बुरा है। एक शख़्स कुव्वत बाह ज़्यादा करने के लिये मेढक का तेल या सांप का गोश्त या शराब इस्तेमाल करता है तो वह मुजरिम है। दूसरा शख़्स प्यास से मर रहा है, जान बचाने के लिये शराब का घूंट पीता है तो वह मुजरिम नहीं क्योंकि पहले शख़्स का मक़सूद शहवत है और उसका मक़सद मुसीबत से बचना, जान का बचाना फर्ज है, शरीयत इजाज़त देती है कि रम पीकर भी अपनी जान बचाई जा सकती है।

सवाल : बहुत से नेशनलिस्ट और आज़ाद ख़्याल मुसलमान कहते हैं कि दुनिया के सारे मज़ाहिब सच्चे हैं, हमें सबका एहतेराम करना चाहिये। किसी के मज़हब को बुरा न कहो। इस्लाम भी यही कहता है। देखो ईसाईयों और यहूदियों ने एक दूसरे को झुटलाया और काफिर कहा तो अल्लाह ने इन दोनों पर नाराज़गी फरमाई, नीज़ हदीस पाक में भी है कि किसी के मज़हब को बुरा न कहो।

जवाब : हदीस शरीफ में किसी के मज़हब को बुरा न कहने का मतलब यह नहीं है कि उसका मज़हब सच्चा है। बल्कि इसलिये मुसलमानों को रोका गया है कि जब तुम उसके बातिल और झूटे मज़हब को बुरा कहोगे तो वह जवाब में तुम्हारे सच्चे और अच्छे मज़हब को बुरा कहेगा। तो तुम अपने सच्चे और अच्छे मज़हब को बुरा कहलवाने का सबब बनोगे। जैसे तुमने किसी की मां को गाली दिया तो वह पलटकर कर तुम्हारी मां को गाली देगा। इस तरह अपनी मां को

गाली देने का सबब तुम बनोगे इसलिये इस्लाम कहता है कि किसी को भी गाली मत दो। यहां ईसाईयों और यहूदियों पर खुदा की नाराज़गी की वजह यह है कि उन्होंने जोश में आकर दूसरे दीन के सच्चे पैग़म्बर का इंकार कर दिया और उनकी असल किताब का इंकार कर डाला। ईसाईयों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और तौरेत का इंकार किया और यहूदियों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और इंजील का इंकार किया और एक दूसरे ने एक दूसरे को हिक़ारत व ज़िल्लत की निगाह से देखा और दूसरे को (यानी तुम कुछ भी नहीं) कहकर गलत कह दिया कि हज़रत ईसा कुछ नहीं, इंजील कुछ नहीं, हज़रत मूसा कुछ नहीं, तौरेत कुछ नहीं, हालांकि उनमें कोई न कोई बात तो अब भी अच्छी है जब कि मौजूदा तौरेत व इंजील उनके मानने वालों ने अपनी तबीयतों के मुताबिक़ बदल दिया है मगर जो असल तौरेत व इंजील है जिसको अल्लाह ने उतारी है उस पर हम मुसलमानों को इमान है मगर मौजूदा तौरेत व इंजील (बाईबल) पर नहीं क्योंकि यह तरीफ़ शुदा है। उलमाए यहूद व नसारा ने ईसा और मूसा अलैहिमुस्सलाम की लायी हुई शरीयत को अपनी गुमराह तबीयत के मुताबिक़ तबदील कर दिया। जिसका ऐलान अल्लाह तआला ने कुरआन में फ़रमा दिया है और अगर सारे दीन व मज़ाहिब सच्चे हैं तो फिर खंज़ीर हलाल भी होगा हराम भी। मां बहन से निकाह करना जायज़ भी होगा, नाजायज़ भी। क्योकि इन चीज़ों को बाज़ मज़ाहिब हलाल कहते हैं और बाज़ हराम। और बक़ौल तुम्हारे तमाम मज़ाहिब सच तो नतीजा यह निकला कि सब सही जब कि हक़ीक़त ये है कि इस्लाम अल्लाह का बनाया हुआ पसंदीदा मज़हब है। इस्लाम होते हुए अगर कोई शख़्स दूसरा मज़हब क़बूल करेगा तो वह अल्लाह के नज़दीक नाक़ाबिले क़बूल होगा।

सवाल : मस्जिदों को अल्लाह की तरफ निसबत क्यों किया गया? क्या और सारी चीज़ें अल्लाह की नहीं हैं, नीज़ इसे अल्लाह का घर क्यों कहते हैं? क्या वोह इसमें रहता है? (आरियां)

जवाब : इसलिये कि मस्जिदों पर किसी बंदे की ज़ाहिरी मलकियत व हुकूमत नहीं हो सकती। दीगर घरों पर बंदों की ज़ाहिरी मिलकियत व हुकूमत है जिन्हें वह फरोख़्त कर सकते हैं। मगर अल्लाह के घर का कोई हाकिम नहीं बल्कि ख़ादिम हैं। नीज़ और घरों में दुनियावी काम भी होते हैं मगर मस्जिदों में सिर्फ अल्लाह ही का काम होता है। मसलन नमाज़, तिलावते कुरआन, ज़िक्र व

इबादत, नअत ख्वानी, वअज़ व नसीहत वग़ैरह देखो सारा मुल्क बादशाह का है लेकिन सिर्फ कचहरियों, डाकख़ानों, अस्पतालों और अदालतों ही को सरकारी इमारतें कहा जाता है क्योंकि वहां सिर्फ सरकारी ही काम होते हैं और उन पर किसी रियाया का ज़ाहिरी दख़ल व क़ब्ज़ा नहीं।

सवाल : जो शख़्स मस्जिदों में अल्लाह के ज़िक्र व इबादत से लोगों को रोके, कुरआन कहता है वह शख़्स बड़ा ज़ालिम है। फिर सुन्नी बरैलवी अपनी मस्जिदों में वहाबी, देवबंदी, कादयानी, शिया और दीगर फ़िरक़े वालों को आने से क्यों रोकते हैं? हालांकि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नजरान के ईसाईयों को मस्जिदे नबवी में अपनी इबादत कर लेने की इजाज़त दी। किसी मस्जिद से रोकना और नमाज़ न पढ़ने देना ज़िकरुल्लाह से रोकना हुआ, यह तो बहुत बड़ा जुल्म है?

जवाब : इसलिये रोकते हैं कि इन गुमराह फ़िरक़ों का हमारी मस्जिदों में आने से खुसूसन अपनी जमाअतें करने से मुसलमानों में फ़ित्ना व फ़साद फैलता है और अहले मस्जिद को ईज़ा व तकलीफ होती हैं यहां इबादत से नहीं रोका जाता बल्कि फसाद से रोका जाता है। बदबूदार मुंह और लिबास वाले को मस्जिद से रोका जाता है ताकि नमाज़ियों को तकलीफ न हो। ऐसे ही गंदे अक़ीदे और बद मज़हबों को रोकना भी जायज़ है, कि नमाज़ियों को ईज़ा न हो। यह महज़ ग़लत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ईसाईयों को मस्जिदे नबवी शरीफ में अपनी मज़हबी इबादत की इजाज़त दी बल्कि हुआ यह था कि मुसलमान नमाज़ पढ़ने लगे तो उन्होंने दूसरी तरफ अपनी मज़हबी इबादत शुरू कर दी। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा को उनकी इबादत बंद करने का हुक्म न दिया बल्कि इन्हें अपनी इबादत पूरी कर लेने दी। जैसे एक बद्दू आया और मस्जिद में पेशाब करने लगा तो सहाबा से हुजूर ने फरमाया कि इसे न रोको। जब वह पेशाब कर चुका तो मस्जिद धुलवा दी। इसका मतलब यह नहीं कि मस्जिदों में पेशाब करना जायज़ है ऐसे ही यह है। क्या तुम मस्जिदों में हिदुओं को इजाज़त दोगे कि वह वहां मूर्तियां रखें और भजन कीर्तन करें?

सवाल : अल्लाह के लिये कोई सिम्त मुकय्यद और मुकर्रर नहीं। अल्लाह हर तरफ है तो मुसलमान नमाज़ में काबा की तरफ मुंह क्यों करते हैं? चाहिये

कि हर तरफ मुंह करके नमाज़ पढ़ लिया करें।

जवाब : ताकि मुस्लिम कौम में इज्तेमाई शान व शौकत पैदा हो। इसलिये नमाज़, रोज़ा, और हज के लिये वक़्त मुकर्रर कर दिये हैं और मस्जिदों में जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का सख़्त ताकीदी हुक्म भी दिया गया है और सिम्त मुकर्रर होने से दिल में सकून रहता है। इसलिये नमाज़ी की नज़र एक ही जगह रहनी चाहिये। हर तरफ देखने और फाफें मारने से दिल भटकता रहता है। नीज़ इस में रब की शाने कहारी नज़र आती है कि उसने लाखों करोड़ों इन्सानों को एक रुख़ पर जमा फरमा दिया और चूंकि खुद काबा को सज्दा करना मकसूद नहीं लिहाज़ा बाज सूरतों में जब कि किब्ला मालूम न हो जिधर दिल मुतमईन हो उस तरफ नमाज़ जायज़ कर दी गयी है।

सवाल : जब दुआ के लिये कोई सिम्त मुकर्रर नहीं तो मुसलमान आसमान की तरफ हाथ क्यों उठाते हैं? क्या वहां खुदा रहता है?

जवाब : आसमान की तरफ दुआ में चंद वजह से हाथ उठाते हैं पहली वजह यह कि यह तमाम नबियों की सुन्नत है उनकी इताअत से दुआ ज़्यादा कबूल होगी। दूसरी बात यह है कि आसमान तमाम नेमतों का खज़ाना है हम को बड़ी नेमतें आसमान ही से मिलती हैं। बारिश, धूप, मौसमों का तबादला और बीमारी आसमानी असरात से होती है तो गोया इस तरफ इशारा करके कहते हैं कि मौला तू हमें यहां से नेमतें दे, आफत बीमारी और बलायें न दे। जैसे शाही नौकर खज़ाने पर जमा होते हैं और वहां से हाथ फैलाकर तन्ख़्वाहें लेते हैं इसी तरह हम भी उधर ही से मांगते हैं। किब्ला नमाज़ है और आसमान किब्ला-ए-दुआ है। बैतुल मअमूर किब्लाए मलायका और हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते अकदस किब्लाए कल्ब और काबाए रूह है जिसके सदके व तुफैल यह सारे किब्ला पैदा हुए। इसी लिये सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ऐन नमाज़ पढ़ाने की हालत में जब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तशरीफ लाते हुए देखा तो खुद मुकतदी बन गये और उस वक़्त से हुज़ूर इमाम क्योंकि किब्ले को पीठ करके नमाज़ नहीं होती और इसलिये मस्जिदे नबवी शरीफ में सफ की बायें जानिब दायें तरफ से अफज़ल है क्योंकि अल्लाह ने दिल बायें तरफ रखा कि इल्मे इलाही में यह बात पहले से थी कि मेरे महबूब का रोज़ा मस्जिदे नबवी के बायें तरफ होगा। इसलिये दिल को जिस्मे इंसानी में

बायें तरफ रखा ताकि सर झुके अल्लाह की बारगाह में और दिल झुके मुस्तफा की बारगाह में। नीज़ दिल से जिस्म की बक़ा है और दिल बायें पहलू में है ऐसे ही हुज़ूर से नमाज़ की बक़ा है इसलिये वोह मस्जिदे नबवी के बायें तरफ आराम फरमा हैं। इमाम अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत अलीमुल बरकत इमाम अहमद रज़ा खां बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाते हैं कि-

ऐ जोशे दिल गर उनको यह सज्दा रवा नहीं
अच्छा वह सज्दा कीजिये कि सर को खबर न हो

दूसरी जगह इरशाद फरमाते हैं-

होते कहां ख़लील और काबा व मिना
लोलाक वाले साहबी सब तेरे घर की है

उलमा व मुहक्केकीन फरमाते हैं कि वह नमाज़ कबूल है जिसमें सर काबा की तरफ और दिल मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ हो।

सवाल : हज की क्या ज़रूरत है और दुनिया भर को वहां जमा करने से क्या फायदा? कि लोग अपने काम का नुक़सान करके और पैसा बरबाद करके वहां का चक्कर लगायें? (आरिया)

जवाब : इसके चंद जवाब हैं। एक यह कि कुदरत ने इंसान में दो कुव्वतें रखी हैं एक अक़्ल और दूसरा इश्क़। जो इसके लिये दो पांव की तरह हैं। न तो फकत अक़्ल काफी है न सिर्फ इश्क़ से कामयाबी। इसलिये इबादत दो किस्म की हैं। बाज़ में इताअत ग़ालिब है और बाज़ में इश्क़ ग़ालिब है। नमाज़, रोज़ा, ज़कात वग़ैरह में इताअत का ग़ल्बा है और हज वग़ैरह में इश्क़ का ग़ल्बा है। चुनांचे हज में दुआए इस्तिग़फार का ताल्लुक अक़्ल से है मगर अहराम बांधकर आशिक़ाना हालत पैदा करना, काबे के आसपास घूमना, अरफात वग़ैरह में लब्बैक पुकारना वग़ैरह वग़ैरह। यह सब हज़रते इश्क़ की जलवागरी हैं दूसरी यह कि दुनिया भर के मुसलमान कभी एक जगह जमा होकर एक दूसरे के हालात से खबरदार हों और उनमें इज्तेमाई शान पैदा हो। इसके लिये दुनिया के सेन्टर में खानाए काबा और मक्का मोअज़्ज़मा को मुन्तख़ब किया गया वहां पर हर साल इस्लामी कांफ्रेंस हुआ करे। आज दूसरी क़ौमें अपनी कांफ्रेंस करने में बहुत दुश्वारियां बर्दाश्त करती हैं। मुसलमानों की यह कांफ्रेंस बहुत आसानी

से हो जाती हैं। हज की हिकमत एक यह भी है कि वहां पर मुसलमान जमा हों और दुनिया में मुसलमानों पर क्या जुल्म व सितम होता है आलमे इस्लाम के हालात से बा खबर हों मगर आज ऐसा नहीं है वहां पर कोई कांफ्रेंस करके दुनिया के दीगर मुल्कों में रहने वाले मुसलमानों पर जो मज़ालिम होते हैं उस पर या उसकी तदारुक के लिये कोई लाहया अमल तैयार नहीं किया जाता है। अब तो मिसरी सऊदी कुवैती हुक्मरां वही करते हैं जो उनका आक़ा अमेरिका कहता है। तीसरी वजह हज की यह है कि इंसानी रूह शीशे की तरह साफ़ है जिसमें एक दूसरे का अक्स पड़ता है। जब बहुत सी रूहें एक जगह जमा होंगी तो उससे क़वी नूरानियत पैदा होगी। यही जुमा और नमाज़ में जमाअतों की हिकमत है।

सवाल : इस इज्तेमा और कांफ्रेंस के लिये अरब का खुश्क रेगिस्तान ही क्यों मुन्तख़ब किया गया? कोई जगह होनी चाहिये थी जो ज़र खैज़ और हरा भरा हो? (आरिया)

जवाब : चंद वजह से एक यह कि यह जगह जुगराफियाई एतेबार से तक़रीबन दुनिया के बीच में वाक़ेय है। तो गोया यह हुकूमते इलाहिया का दारुल ख़िलाफ़ा (राजधानी) है। दसूरी वजह यह कि इबादत में अपनी असल की तरफ़ रुजूअ करना बेहतर है। नमाज़ में ज़मीन पर सर रखा जाता है क्योंकि ज़मीन ही हमारी असल है। ऐसे ही काबा मोअज़्ज़मा ज़मीन की असल (मां) है। ज़रूरी था कि मुसलमान अपनी असल पर पहुंचकर हज के अरकान अदा करें। इसीलिये नमाज़ में उधर मुंह कर लेते हैं और हज में वहां पहुंच जाते हैं। तीसरे वजह यह कि अरब के इस मक़ाम पर जो भी आयेगा ख़ालिस इबादत ही की नीयत से आयेगा, सैर व तफरीह का बिल्कुल दख़ल न होगा क्योंकि वहां सब्ज़ाज़ार ही नहीं। अगर ऐसा होता तो लोग सैर व तफरीह की नीयत से भी जाते। मगर इस ख़ुश्क रेगिस्तान में सिवाए इबादत दूसरा मकसद हो सकता ही नहीं।

सवाल : हज में बुत परस्ती से मशाबहत है कि बुजुर्गों के तर्बरुकात का ताज़ीम करना, पथरीली इमारत के आसपास घूमना, (तवाफ़ काबा करना) कहीं पत्थर फेंकना, दौड़ना, इन तमाम बातों से फायदा क्या है? (आरिया)

जवाब : इसमें बहुत सी हिकमतें हैं। एक यह कि इन कामों से गुज़िश्ता

मकबूल बंदों की याद ताज़ा होती है जिससे उनकी इत्तेबा का जज़्बा पैदा होता है। मसलन सफा व मरवा के दर्मियान दौड़ने में हज़रत हाजरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की बेबसी याद आती है। शैतान को कंकरी मारने में हज़रत ख़लील की शैतान से नफरत और कुरबानी का जज़्बा याद आता है। कुरबानी करने में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का राहे मौला में इकलौते बेटे को ज़िब्ह करना याद आता है जिस से हर शख़्स में शौके इबादत व इताअत की आग भड़कती है कि हम भी इन्हीं की तरह इताअते इलाही करें।

सवाल : काबा से पहले अल्लाह ने कोई पाक मकान बनाया था या नहीं? अगर बनाया था तो काबा की क्या ज़रूरत थी, और अगर नहीं तो अगले लोग इस पाकी से महरूम रहे?

जवाब : काबा इंसानों की पैदाईश के वक़्त से नहीं बल्कि ज़मीन के बनने की वक़्त से पाक और मुकद्दस जगह है कि हमेशा इंसानों ने वहां से बरकत हासिल की। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तो इस पर इमारत बनाई ताकि इसकी पहचान रहे। लिहाज़ा यह सवाल ही हिमाकत है। और अगर काबा बाद में भी बनता तो भी इसमें कोई ख़राबी न थी। हो सकता था कि अगलों के लिये पाक जगह दूसरी हो और पिछलों के लिये ये काबा।

दुनिया के बुत कदे में पहला वोह घर खुदा का
हम पासबां हैं उसके वह पासबां हमारा

सवाल : किसी ख़ास जगह को इज्ज़त देने में ख़ुदा बाज़ों का तरफ़दार ठहरता है कि वहां के रहने वाले बे तकल्लुफ फायदा उठायें। मगर दूर के रहने वाले लोग बहुत दुश्वारी से अल्लाह को तो सब बंदों के साथ यकसां बर्ताव करना चाहिये? (आरिया)

जवाब : पंडित जी तुम्हारा खुदा भी ग़ैर जानिबदार नहीं। उसने भी मथुरा, अयोध्या, बृदावन, द्वारका, सोमनाथ वग़ैरह तीर्थ के मकाम बनाकर अपनी तरफदारी का सबूत दे दिया कि गंगावासी तो बे तकल्लुफ रोज़ वहां स्नान किया करें मगर दूर वालों को दुश्वारी हो। पंडित जी दुनिया का निज़ाम ऐसे ही कायम है। कोई अमीर कोई फकीर, कहीं जंगल ब्याबां कहीं खेती बाड़ी कहीं आबादी।

सवाल : हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सारा के कहने पर अपनी दूसरी बीवी हाजरा और बच्चे पर यह जुल्म क्यों किया कि उनको हलाकत वाली जगह रेगिस्तान में छोड़ दिया और उनसे इतने अर्से तक ताल्लुक न रखा और हुकूके ज़ौजियत न अदा किये। यह तो ज़ालिमाना और नाजायज़ मुआहेदा है। ऐसे ज़ालिमाना मुआहेदे की पाबंदी नहीं करना चाहिये? (आरिया)

जवाब : गुनाह वह होता है जो खुदा के मर्जी के ख़िलाफ हो यह तमाम काम जब रब की मर्ज़ी और उसके हुक्म से हो रहे थे तो गुनाह कैसे? हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तो ख़ुदा की मर्ज़ी और हुक्म पाकर बे कसूर फरज़ंद को ज़िब्ह करने के लिये तैयार हो गये। यह मामलात तो उससे कहीं हल्के हैं। जनाब इसमें हज़रत हाजरा का सख़्त इम्तेहान और मक्का की आबादी का इंतज़ाम और ख़ानाए काबा की तामीर का एहतेमाम और हुजूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तशरीफ आवरी की धूम-धाम थी। फूल के लिये दरख़्त लगाते वक़्त माली और बाग़ वाले को ज़मीन और बीज को तकलीफ ही होती है। यह चमन ख़लीली के आख़िरी बीज काश्त का वक़्त था। इन सबको तकलीफ होनी ही चाहिये। (आरिया)

सवाल : मुसलमान सबसे आख़िर मे आये फिर इन्हें बीच की उम्मत क्यों कहा गया?

जवाब : यहां बीच से मुराद दर्मियानी अकायद व आमाल या आदिल या बेहतर मुराद हैं न कि ज़माने के लिहाज़ से।

सवाल : अल्लाह को तो मालूम था कि इस उम्मत में बड़े बड़े गुनाहगार बदकार भी होंगे, देखो आज मुसलमान ऐसे ऐसे जुर्म कर रहे हैं जो पिछली उम्मतें न कर सकें। फिर इस उम्मत को तमाम उम्मतों से अफज़ल व बेहतरीन उम्मत क्यों कहा गया?

जवाब : इसलिये कि इस उम्मत में कयामत तक औलिया हक़्क़ानी व उलमा रब्बानी होते रहेंगे और इस उम्मत जैसे औलिया किसी उम्मत में न हुए। अगली उम्मतों में गौस व ख़्वाजा अजमेरी, मख़दूम समनानी, वारिसे पाक, महबूबे इलाही, साबिर कलियरी, मुजद्दिदे अल्फ़ेसानी, मुहद्दिस, मुहक्किक, मुजद्दिद इमाम अहमद रज़ा, मुफ्ती आज़म जैसे फकीह औलिया कहां हुए। अशरफे

अफ़राद की वजह से कौ़म अशरफ़ हो जाती है। अगरचे कौ़म में बुरे अफ़राद भी क्यों न हों। इंसान को अल्लाह ने अशरफुल मख़लूक़ात बनाया है। करामत और बुजुर्गी का ताज पहनाया है। हालांकि बाज़ इंसान वह जुर्म करते हैं जो इबलीस से भी न हो सका। सारा मक्का काबा शरीफ़ की वजह से अफ़ज़ल हो गया। ख़्याल रहे कि अगरचे बनी इसराईल में हज़रत मरयम, असहाबे कहफ़, आसिफ़ बिन बरख़्या जैसे औलिया अल्लाह पैदा हुए मगर उनसे वह फ़ैज़ जारी न हुए जो सरकार ग़रीब नवाज़ और सरकार ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से जारी हुए। उनकी विलायतें वक़्ती थीं क्योंकि विलायत दीवार नुबूवत का साया होती हैं। दीवार गिर गयी साया भी गया। औलिया अल्लाह आफ़ताब नुबूवत के ज़र्रे होते हैं। जब सूरज गुरूब हो गया तो ज़र्रों की चमक भी जाती रहीं चूंकि हमारा मदीने वाला सूरज कभी गुरूब होने वाला नहीं लिहाज़ा दीने मुहम्मदी के औलिया की चमक कभी ख़त्म होने वाली नहीं।

सवाल : कुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद करूंगा जिससे मालूम हुआ कि जो भी खुदा को याद करेगा खुदा उसे याद करता है। तो अगर चोर चोरी करते वक़्त या शराबी शराब पीते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ ले या बुत परस्त बुत परस्ती करते वक़्त अल्लाह का नाम ले ले क्या ख़ुदा उसे भी याद करता है? (आरिया)

जवाब : हां ज़रूर याद करता है मगर लानत और अज़ाब के साथ। जैसे पुलिस मुजरिम को याद करती है और वह अपने फ़रमां बरदार वफ़ादार बंदों को भी याद करता है मगर मुहब्बत और शफ़क़त के साथ। उलमा फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला रोज़ाना तीन सौ साठ बार अपने बंदों की तरफ़ देखता है लेकिन मोमिन बंदे की तरफ़ शफ़कत और मुहब्बत से देखता है। यही सवाल अब्दुल्लाह बिन उमर और अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हुआ और आप ने जवाब यही दिया। लिहाज़ा ख़ुदा की नाशुकरी करने वाला या उसकी शिकायत करने वाला भी ख़ुदा का नाम तो लेता है मगर यह ज़िक्र और नाम लेना उस पर लानत का बाइस है।

सवाल : ख़ुदा की राह में मरने मारने की क्या ज़रूरत है? इन बातों से मुसलमानों को इश्तेआल दिलाकर लड़ाना और दूसरों का माल लूटना मकसूद

है? (रामचन्द्र आरिया)

जवाब : जिहाद की ज़रूरत तो पहले भी बतायी गयी है यहां बस इतना ही समझ लो कि कोई पापी तो बात से मानता है कोई लात से। बात से मानने वालों के लिये कुरआन व अहादीस में वअज़ व नसीहतें मौजूद हैं और सरकश बागियों के लिये जिहाद है। बग़ैर जिहाद दुनिया में अमन व अमान क़ायम नहीं रह सकता और कोई कौम इसके बग़ैर तरक्की नहीं कर सकती। अगर गर्वमेंट और हुकूमत के पास फौज व तोप ख़ाना न हो तो दूसरी हुकूमतें उसे फना कर डालती हैं। और अगर जेल व सज़ायें न हों तो शरीफों को बदमाश ज़िन्दा न रहने दें। अगर सड़े हुए आज़ा को न काटा जाये तो सारा जिस्म सड़ जाये। अगर खेत की घास न उखेड़ी जाये तो फसल दब कर तबाह व बरबाद हो जायेंगी। पंडित जी आप भी तो मंदिर की आराज़ी में धान गेहू बोते हो और जब उसमें कीड़े लग जाते हैं तो फसलों को कीड़ों से बचाने के लिये कीड़े मारने का पाउडर छिड़ककर करोड़ों जानवरों का जान ले लेते हो। अपने आराम के लिये बिच्छू, खटमल, जूं वग़ैरह को मार डालते हो। जब शख़्सी ज़िन्दगी के लिये इतनी जानें कुरबान की जा सकती हैं तो कौमी जिन्दगी के लिये भी मूज़ी लोगों को मारा और दबाया जा सकता हैं जब जानी दुश्मनों को मारना दुरुस्त है तो दीनी और इंसानियत के दुश्मनों को भी मारना दुरुस्त है। मगर यह राज़ वह जाने जिसके सर में दिमाग़ हो और दिमाग़ में अक़्ल। पंडित जी। इस्लाम की तलवार ऐसे लोगों की गर्दनें काटने के लिये तो ज़रूर तेज़ है जो इस्लाम और मुसलमानों को मिटाने के लिये कोशिश करते हैं या अल्लाह की ज़मीन पर फित्ना फसाद फैलाते हैं, लेकिन जो लोग ज़ालिम नहीं हैं, जो दीने हक़ और मुसलमानों को मिटाने और दबाने की कोशिश नहीं करते, जो ख़ल्के खुदा के अमन व अमान को ग़ारत नहीं करते वह ख़्वाह किसी कौम व मज़हब से ताल्लुक रखते हों और उनके मज़हबी अक़ायद ख़्वाह कितने ही बातिल क्यों न हो इस्लाम उनके जान व माल से कुछ तार्रुज़ नहीं करता। उनके लिये उसकी तलवार कंद है और उसकी नज़रों में उन का ख़ून हराम है। मगर जो ज़ालिम हैं, मुफसिद हैं, अमन व अमान और इंसानियत के दुश्मन हैं वह लायक़े गर्दन ज़दनी हैं। जिहाद का मक़सद यही है कि दुनिया से फितना फसाद ज़ुल्म ख़ूरेज़ी और उन ज़ालिम हुकूमतों का ख़ात्मा हो जो अपने सियासी मफाद के लिये ज़ुल्म का बाज़ार गर्म किये हुए हैं आज

दुनियाए कुफ्र इस्लामी जिहाद की ग़लत तसवीरें पेश कर रहा है और मुसलमानों को लड़ने वालों के ख़ानों में फिट करके उन्हें जंगजू बदअमन और दहशतगर्द का प्रोपेगंडा किया जाता है। इसलिये इस्लामी नज़रिया जिहाद को समझने की कोशिश करो। जिहाद जुल्म करने का नाम नहीं जिहाद दशहतगर्दी का नाम नहीं, खौफ व हरास फैलाने का नाम नहीं बल्कि अमन व अमान कायम करने का नाम है।

सवाल : कुरआन में है कि मुश्रिकों और काफ़िरों को जहां पाओ कत्ल कर दो तो यह दहशत की तालीम नहीं तो और क्या है? (आरिया)

जवाब : यह हुक्म हमेशा के लिए नहीं बल्कि वक़्ती तौर के लिए था जब मुश्रेकीने मक्का बादे हिजरत मदीना शरीफ पर हमला करने आये थे और बदर जंगे बदर में शिकस्त खाकर भाग रहे थे और छुप छुपकर मुसलमानों पे दोबारा हमला करने के लिए प्लान बना रहे थे उस वक़्त के लिए रब ने यह हुक्म दिया था और अगर यह हुक्मे आम होता तो दुनिया में आज कोई काफिर नज़र न आता।

सवाल : अबू तालिब पर लानत व मलामत जायज़ है कि नहीं?

जवाब : अबू तालिब पर लानत व मलामत हरगिज़ जायज़ नहीं। इसलिये कि उनके कुफ्र पर मरने की कोई दलील नहीं बल्कि शैख़ अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि ने मदारिजुल नुबूवत में उनकी ईमान पर मौत की हिदायत नकल की है। नीज़ तफसीरे रूहुल ब्यान में हज़रत इस्माईल हक़्की रहमतुल्लाह अलैहि ने एक जगह उनका बाद मौत ज़िन्दा होना और ईमान लाना साबित किया और अगर बफर्ज़ मुहाल उनकी मौत कुफ्र पर कोई भी हो तब भी चूंकि उन्होंने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बहुत ख़िदमत की। जब सब ने आपका साथ छोड़ दिया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तने तन्हा हो गये तो ऐसे वक़्त में आपने हुज़ूर को संभाला और उनका साथ दिया। इसलिये हुज़ूर को भी उनसे बड़ी मुहब्बत थी। लिहाज़ा उनको बुरा कहना हुज़ूर की ईज़ा का बाइस होगा। उनका ज़िक्र ख़ैर से ही करो या ख़ामोश रहो।

सवाल : तुम भी मुश्रिकों की तरह नबियों वलियों और पीरों से मुहब्बत करते हो और उन्हें हाजत रवा मानते हो लिहाज़ा तुम में और उनमें क्या फर्क

है? (आरिया)

जवाब : हम उन हज़रात से अल्लाह की तरह मुहब्बत नहीं करते अल्लाह से ख़ालिक होन की मुहब्बत करते हैं और उनसे वसीलाए ख़ालिक होने की मुहब्बत। और हम उन्हें ऐसे ही हाजत रवा जानते हैं जैसे कि देवबंदी वहाबी मालदारों को अपना हाजतरवा, उनके पैसे को अपना मुश्किल कुशा और हकीमों को दाफेअ बला समझते हैं।

सवाल : ख़ुदाए तआला क्या सिर्फ़ कुफ्फार व मुश्रेकीन ही को सख़्त अज़ाब देने वाला है, या हर मज़हब के लिये बे अमल और बदकारों को। और सिर्फ़ मुसलमानों पर ही रहम करने वाला है, या हर मज़हब के नेक कारों पर। पहली सूरत में तो ख़ुदा मुसलमानों का तरफ़दार ठहरता है और दूसरी सूरत में इस्लाम कबूल करने की ज़रूरत न रही। हर दीन मज़हब में रहकर नेक आमाल के ज़रिये जन्नत हासिल की जा सकती है। (आरिया)

जवाब : इस्लाम लाए बग़ैर कोई भी नेक काम काबिले कबूल नहीं। नेकी कबूल होने की शर्त ईमान है बग़ैर जड़ कायम हुए फल नहीं लग सकते। पंडित जी यह सवाल ही तुमसे है कि सिर्फ़ आरिया की नजात होगी या हर नेक की। अगर हर नेक की निजात होगी तो आरिया बनना बेकार है। तुम लोगों को शुद्धी क्यों करते हो और अगर सिर्फ़ आरिया ही की नजात है तो तुम्हारा परमात्मा तरफ़दार है।

सवाल : हदीस शरीफ़ में है कि हराम में शिफ़ा नहीं। फिर हालत मजबूरी में हराम दवायें या चीज़ें क्यों इस्तेमाल की गयीं। (आरिया)

जवाब : हकीमे हाज़िक के फ़रमाने पर हराम चीज़ हराम ही हनीं बल्कि हलाल बन जाती है। हलाल में शिफ़ा है ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अरनिया वालों को ईलाज के लिये ऊंट का पेशाब पीने का हुक्म दिया। जब हलाल दवा मुमकिन हो तो हराम में शिफ़ा नहीं क्योंकि अब वह हराम है।

सवाल : कुरआन में है कि सायल को झिड़को नहीं जिससे मालूम हुआ कि भिकारियों को ख़ैरात देनी चाहिये। मगर अहादीस से मालूम होता है कि भीक मांगना हराम है लिहाज़ा कुरआन व अहादीस में तारुज़ है।

जवाब : इस सवाल के दो जवाब हैं एक यह कि यहां सायलीन से मुराद

तलबा हैं यानी अपनी उस्तादों से इल्मे दीन हासिल करने वाले कि उन पर सदकात व ख़ैरात खर्च करना फ़र्ज़ है ताकि उलमा पैदा हों और उलमा के बक़ा से इस्लाम बाकी रहे कि इल्मे दीन मुकम्मल सीखना और आलिम बनना फर्ज़े किफाया है जैसे हकीम डाक्टर होना हर शहर में लाज़मी है ऐसे ही हर शहर में एक आलिम का होना ज़रूरी है। दूसरे यह कि सायल से मुराद भिकारी हैं मगर भिकारी दो क़िस्म के होते हैं। एक पेशावर भिकारी और दूसरा ज़रूरतमंद या किसी ख़ास आफत में इत्तेफाकन मांगने वाले। हदीस शरीफ में पेशावर भिकारियों को देने के मुमानेअत फरमाई है और कुरआन शरीफ ने ज़रूरतमंद हादसे का शिकार, बालाए नागहानी में मुबतला होने वाला मुसीबत का मारा भिकारी को देने का हुक्म दिया है। लिहाज़ा कुरआन व अहादीस में कोई तारुज़ व टकराव नहीं, अगर मुसलमान सोच समझकर भीक देते हैं तो आज मुसलमानों में भांड, कव्वाल, गवैये, भिकारी, न होते जो मुस्लिम कौ़म की पेशानी पर बदनुमा दाग़ है। यह गिरोह मुसलमानों के सिवा किसी कौ़म में नहीं और अगर हैं भी तो मुसलमानों से कम।

सवाल : दुआ में अल्लाह को अपनी हाजतें सुनाने की क्या ज़रूरत है? क्या वह हमारी हाजतें नहीं जानता?

जवाब : यह अर्ज़ व मअरूज़ उसे बताने के लिये नहीं है बल्कि अपनी नियाज़मंदी के इज़हार के लिये है ताकि उसका दरियाए करम जोश में आये।

सवाल : भला यह भी कोई रोज़ा है कि दिन भर कुछ न खाओ और रात को मजामअत भी कर लिया करो और जितनी दफ़ा चाहो रात में खा पी लिया करो, यह क़ानून तो क़ानूने सेहत के ख़िलाफ़ है।

जवाब : दिन में न खाने और रात में खाने पीने की इजाज़त में बहुत सी हिकमतें हैं यहां बस इतना ही समझ लो कि इस्लाम दीने फितरत है उसने सब के लिये क़ानून बनाये हैं लिहाज़ा ऐसी आसानियां भी रखी हैं जिससे हर एक अमल कर सके। माहे रमज़ान इबादतों का महीना है। अगर नफस फ़ारिग़ न हो तो कोई इबादत इत्मीनान से नहीं हो सकती। कभी ग़ल्बए शहवत से न तो नमाज़ में दिल लगता है न ही तिलावत में, ख़्यालात परागंदा रहते हैं। जिमअ से यकसूई हासिल होती है और इत्मीनान से इबादतें अदा होती हैं। इसलिये इस की इजाज़त

दी गयी है अब हर शख्स रोजा इत्मीनान से हर तरह से फारिग़ होकर रख सकता है। इस्लाम आरिया धर्म की तरह बे उसूली मज़हब नहीं कि मर्दों को ब्रहमचारी बनाकर औरतों से अलग रखें और औरतों को साधवी बनाकर दुनिया में बदकारी फैलायें जैसा कि मुशाहेदा हुआ। इस्लाम ने इंसान की फितरत और हालत का सही अंदाज़ा लगाकर मुनासिब अहकाम दिये। यह हुक्म उसूले सेहत के ख़िलाफ नहीं बल्कि ऐन इंसानी फितरत के मुताबिक़ है। हम ने बड़े बड़े ब्रहमचारियों को देखा है कि वह नफ्स के हाथों मग़लूब हो कर मज़हब और इंसानियत की सारी हदों को फलांग गये। बड़ी बड़ी मंदिरों, गिरजाघरों, कलिसाओं और मठों में इस कदर तअफ्फ़न पैदा हुआ कि इसमें सांस लेना दूभर हो गया।

सवाल : रोज़ा दिन में है रात में नहीं, तो जिस जगह कई-कई महीने का दिन होता है वहां रोज़ा की क्या सूरत है?

जवाब : इसके चंद जवाब है। एक ये कि ऐसी जगह आबादी ही नहीं क्योंकि वहां सर्दी सख़्त है और दूसरी वजह यह है कि वहां आबादी भी हो तो वहां के बाशिंदे माहे रमज़ान पायेंगे ही नहीं। लिहाज़ा उन पर रोज़ा फर्ज़ नहीं। जिस शख़्स के हाथ पांव ही न हों उस पर वुजू के फर्ज़ फकत दो हैं, मुंह धोना और सर का मसह करना क्योंकि उसके पास बाकी फर्ज़ों का महल ही नहीं।

सवाल : मक्का मोअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा में कुफ्फार व मुश्रेकीन के रहने की इजाज़त क्यों नहीं? यह तो एक किस्म का जुल्म है? (आरिया)

जवाब : जैसे की शाही महल में सिर्फ नौकर चाकर और ख़ुद्दाम रहते हैं किसी और को रहने की इजाज़त नहीं बाकी ज़मीन में जो चाहे रहे। ऐसे ही वोह ज़मीन और जगह अल्लाह तआला की ख़ास ज़मीन है वहां ख़ालिस बंदे मुसलमान ही रह सकते हैं। गिरजा और मंदिर के हुदूद में ग़ैरों को नहीं रखा जाता क्योंकि ईसाईयों और हिंदुओं की अकीदों मे वह ख़ास जगह है। ऐसे ही यह शहर और मुल्क ख़ास उसी का है। अब तो दुनिया की हुकूमतों ने भी अफ्रीका वग़ैरह मुमालिक के लिये यह कानून बना दिये हैं कि वहां दूसरे मुल्क के बाशिंदे वतन बनाकर नहीं रह सकते है।। ऐसे ही यहां भी किया गया। नीज़ ज़मीन अरब सिर्फ इबादत के लिये है क्योंकि वहां ख़ानाए काबा अल्लाह का घर है। चाहिये

कि वह जगह सियासी अड्डा और जंगी अखाड़ा न बने और ये जब ही हो सकता है कि जब वहां सिर्फ मुसलमान आबाद हों। मुख़्तलिफ कौमों की वजह से फ़िला फसाद होना यकीनी है इसलिये कुदरत ने वह ज़मीन दुनियावी रंगीनियों और दिलफरेबियों से पाक व साफ रखी ताकि वहां दुनियादारों को जाने की ज़रूरत ही न पड़े।

सवाल : मज़हबी आज़ादी चाहिये, जिहाद हकीकत में गैर मज़हब वालों पर जुल्म है। ब्रिटिश गर्वमेंट ने मज़हबी आज़ादी, आपसी मुहब्बत, बंदों पर मेहरबानी अच्छी चीज़ है। इंजील ने उसका अच्छा सबक दिया। हिंदु मज़हब तो बड़ा या लो मज़हब है जिसमें आदमी तो क्या किसी जानवर का भी कत्ल जायज़ नहीं।

जवाब : अख़लाक और चीज़ है और मुल्की सियासत दूसरी चीज़ है। अपनी ज़ाती मामलात में मुहब्बत, मेहरबानी, हुस्ने सलूक बेहतर है जिसकी कुरआन व अहादीस में जगह जगह तालीम दी गयी है मगर अदल व इंसाफ के कानून शरकशों और गुमराहों को सज़ा बदमाशों और नालायकों पर सख़्ती मुल्की कानून है अगर हर जगह माफी और मेहरबानी इस्तेमाल की जाये तो दुनिया में अमन व आमान उठ जायेगा। पिछले पैगम्बरों ने भी कुफ्फार व मुश्रेकीन से जंगी कीं। ईसाई बादशाहों ने इंसानी आज़ादी को मिटाकर सब को अपना गुलाम बनाने के लिये बड़ी बड़ी खूंरेज़ियां कीं और आज भी कर रहे हैं। स्पेन में मुसलमानों पर बड़े बड़े जुल्म हुए उन्हें वहशियाना सज़ायें दी गयीं। आठ सौ सालह इस्लामी हुकूमत का ख़ात्मा हुआ। हिंदुओं में भी ब्रहमणों और बुद्धों में सालहा साल कत्ल आम हुए। हिंदुओं की महाभारत कौरवों और पांडवों की लड़ाईयां अब तक मशहूर हैं और धर्म ग्रंथ में मौजूद हैं। हिंदुओं और ईसाईयों के यह माफी के कानून फकत जबानी हैं। इन पर अमल नामुमकिन। मगर इस्लाम चूंकि अमली मज़हब है इस में अख़लाक की भी तालीम है और सियासत की भी। मुसलमानों की लड़ाईयां उन जंगों के मुकाबले में सरापा रहमत थीं। इस्लाम ने तलवार ज़रूर उठाई है मगर किसी पर जुल्म करने के लिये नहीं बल्कि ज़ालिम का सर काट कर मज़लूम की मदद करने के लिये बे नियाम हुई हैं हुजूर की जंगी ज़िन्दगी में कुल सात या आठ आदमी मारे गये। औरतें, बच्चे, बूढ़े, बीमार, पुजारी, मज़हबी पेशवा हमेशा कत्ल से महफूज़ रहे मगर अब वहशियाना बमबारी

मे पहले औरतों, बच्चों पर ही हाथ साफ होता है और हजारों आदमी एक मिनट मे मर जाते है। आज जबर जंग शुरू होती है तो इबादत खानों, अस्पतालों और दर्सगाहो के एहतेराम को भी पसे पुश्त डाल दिया जाता है। ईराक, अफगानिस्तान, और फिलीस्तीन मे गाजा पटटी पर अमेरिका और इसराईल की जबरदस्त बमबारी और यहा हिंदुस्तान मे मुस्लिम कुश फसादात इसके शाहिद हैं। पंडित जी को अपनी आखों का शहतीर नजर नहीं आता, मुसलमानों की आंख में तिनका ढूढा जाता है।

सवाल : हज बुत परस्ती से मुशाबा है जैसे हिंदु गंगा पर, ईसाई सलीब पर, मेले लगाते है ऐसे ही मुसलमान काबा पर। नीज जैसे हिंदु गंगा स्नान करते है, सर मुंडवाते है पत्थरो को चूमते है मुसलमान भी संगे असवद और रुक्ने यमानी गिलाफ काबा को चूमते है। हज में सर मुंडवाते हैं आबे ज़मज़म से नहाते है। बगैर सिला कपड़ा पहनते है, यह सब हिंदुओं के मुशाबा है और बुत परस्ती है। (आरिया)

जवाब : कहीं जमा होना यह बुत परस्ती नहीं शादी ब्याह, आम जल्से जुलूस और बाजारों में कारोबार के लिये हज़ारों मेले होते हैं। हज भी इबादते इलाही का मेला हैं। नीज चूमने और पूजने में फर्क हैं मां-बाप के हाथ भी चूमे जाते है, उस्तादों पीरों के पांव भी, औलाद की पेशानी भी, बीवी का रुखसार भी, बुजुर्गों की यादगारें भी, इन सब बोसों का हाल यकसा नहीं। संगे असवद का बोसा सिर्फ इसलिये है कि बुजुर्गों ने उसे छुवा या चूमा है और उसको अल्लाह के मकबूल बंदों से निसबत हासिल है। अगर मुसलमान पत्थरों के पुजारी होते तो काबा शरीफ को तीन सौ साठ बुतों से पाक व साफ न करते। मकामाते हज में न तो कहीं बुत है न कहीं देवी देवता की मूर्ति न किसी का स्थान न किसी पानी का स्नान, खानाए काबा में न कोई नबी पैदा हुआ और न कोई दफन है यह तो मुसलमानों क कौमी व मजहबी इज्तेमा का ज़रिया है। चूंकि यह जगह ज़मीन का मर्कज़ है (नाफ, दर्मियाना हिस्सा) है। उस जगह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा कबूल हुई। उसी जगह नबियों के वालिद माजिद हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह अलैहिस्सलाम का खानदान आबाद हुआ। लिहाज़ा उस बड़ी इबादत के लिये यह मुकाम मुकर्रर हुआ। अफसोस ईसाईयों को अपनी सलीब परस्ती और हिंदुओं को अपनी रूह व माद्दा परस्ती नहीं सूझती। मुसलमानों के

ख़ालिसे तौहीदी अफ़आल पर बेहूदा एतेराज़ करते हैं।

जवाब : यहूदी, ईसाई, जो अहले किताब हैं उनकी औरतों से निकाह जायज़ है कि नहीं? (मुसलमान)

जवाब : अहले किताब मुसलमानों से क़रीब हैं, तौहीदे, रिसालत, वही, आसमानी किताब के मानने में तक़रीबन मुत्तफ़िक़ और औरत मर्द के मातेहत है। बहुत मुमकिन है कि मुसलमान ख़ाविंद की सोहबत से वोह इस्लाम क़बूल कर ले। इसलिये अहले किताब की औरतों से निकाह जायज़ होने का अक्सर उलेमा सहीह क़रार दिया है और किसी मुसलमान औरत को कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन से निकाह हराम है। अलबत्ता अगर वह इस्लाम क़बूल कर लें तो दुरुस्त है। ख़्याल रहे कि जिसको अपने ईमान का ख़तरा हो वह ईसाई या यहूदी औरत से भी निकाह न करे। यहूदी और ईसाई औरत से निकाह अगरचे जायज़ है मगर बेहतर नहीं। ख़तरनाक है। क्योंकि मर्द की सबसे बड़ी कमज़ोरी औरत है। अलबब्ता क़बूले इस्लाम की सूरत में जायज़ है। तफ़सीर इब्ने कसीर में है कि हज़रत हुजैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ईसाई औरत से निकाह किया था, जब ख़लीफ़तुल मुस्लेमीन अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मालूम हुआ तो आपने लिखा कि फ़ौरन उसे तलाक़ दे दो। आप ने पूछा कि क्या यह हराम है? फ़रमाया हराम तो नहीं मगर सख़्त ख़तरनाक है इससे ईमान ख़तरे में पड़ जायेगा और वाक़ई हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह क़ौल सही है। ईसाई यहूदी औरतों ने मुसलमानों को क़ौमी और सख़्त दीनी नुक़सान पहुंचाया। मुसलमान बीवियां बनकर मुसलमानों के अहम राज़ों को अपनी क़ौम तक पहुंचाती रहीं। जिससे पूरी क़ौम को सख़्त नुक़सानात उठाना पड़ा। १९६५ ई० में जब मिस्र, इसराईल के ख़िलाफ़ खुफ़िया जंग की तैयारियों में मसरूफ़ था तो मिस्र के एक मुसलमान करनल की बीवी जो यहूदन थी, रातों रात मिस्र से इसराईल आयी और उसने तमाम यहूदियों को बता दिया कि सुबह होते ही तुम्हारे ऊपर अरब बमबारी करेंगे और उनके जंगी तैयारी फलां फलां जगह से उड़ान भरेंगे। बस इतना सुनना था कि इसराईल ने सुबह होने से पहले ही मिस्र के उन फ़ौजी अड्डों पर बमबारी शुरू कर दी और इस तरह उनके सारे मंसूबों को ख़ाक में मिला दिया। बाद में उस यहूदन औरत ने अपने मुसलमान ख़ाविंद को फ़ोन किया कि मैं पहले यहूदन हूं बाद में तुम्हारी बीवी। मैं अपने

ख़ाविंद से ग़द्दारी कर सकती हूं मगर अपनी क़ौम से नहीं। इस वाक़िये में अक़्ल मंदों के लिये इबरत है।

सवाल : कुरआन में है कि औरतें तुम्हारी खेतियां हैं इस तरह औरतों को खेत से मुशाबेहत देना और यह हुक्म देना कि जिस तरह चाहो अपनी खेती को जोतो, बोओ, यह तो इंसान की शहवत को भड़काना है? (आरिया)

जवाब : जैसे मां-बाप ना समझ बच्चों को हर काम सिखाते हैं और भलाई बुराई समझाते हैं ऐसे ही कुरआन ने हर दीनी और दुनियावी काम सिखाया है ताकि मुसलमान दूसरी क़ौम के मोहताज न रहेंगे। अगर यह मसायल न बताये जाते तो यह कहां से सीखते। मगर कुरआन ऐसी तहज़ीब से ब्यान फ़रमाता है कि कुरबान जाईये। कुरआन के अंदाज़े ब्यान और तहज़ीब पे अरबी ज़ुबान खुद ऐसी मुहज़्ज़ब ज़ुबान है कि इसमें तलवार के चालीस, नाम खुरमे, के अस्सी नाम, ऊंट के बीस नाम, मगर अंदामे नहानी और सोहबत करने का सरीही नाम कोई नहीं। किनाया और इशारात ही से काम चलाया गया है जिस से इसकी तहज़ीब व साइस्तगी का पता चलता है जबकि हिन्दी ज़ुबान में अंदामे नहानी के बीसो फ़रश और मुगल्कज नाम हैं जो बाजारी गलियों में सुने जाते हैं हम पंडित दयानन्द सरस्वती की तहज़ीब दिखाने के लिये उनकी किताब सत्यारथ पर काश की कुछ इबारतें नक़्ल करते हैं ताकि कुरआन करीम की तहज़ीब पर एतेराज़ करने वाले आरिया उसे पढ़े और ख़ूब ग़ौर से पढ़ें नीज़ शर्म से सर झुका लें। सत्या प्रकाश गरभान चौथा बाब संकार सफ़ा १२२ में सोहबत (औरत के साथ हम बिस्तरी) का तरीक़ा बताते हुए लिखते हैं कि-

> ''जब वीर्या (मनी) का रहम में गिरने का वक़्त हो उस वक़्त मर्द औरत दोनों बेहिस व हरकत रहें और आंख के सामने आंख और नाक के सामने नाक यानी सीधा जिस्म और निहायत ही दिल खुश रहें और बे हौसला न हों, मर्द अपने जिस्म को ढीला छोड़ दे, औरत को ऊपर खीचें, अंदामे नहानी सेक्टर वीर्य आर्कषण करके रहम में क़ायम करे।

यह है आरियों की तहज़ीब और मज़हबी किताब का हाल। मज़हब आदमी उन गंदी इबारतों को पढ़ना तो क्या देखना भी गवारा नहीं करेगा। इसी तहज़ीब पर कुरआन पाक पर एतेराज़ करने का शौक़ हैं शर्म शर्म जहां पंडित जी न

यानी बारह मर्दों से ज़िना कराने का तरीका लिखते हैं जो कि आरिया धर्म में बड़े सवाब का काम है।

सवाल : कुरआन में है कि औरतें तुम्हारी खेतियां हैं जैसे चाहो या जिस तरह चाहो या जब चाहो उन से मिलो, जिससे मालूम हुआ कि औरत के साथ दुबर (पीछे का मकाम) में भी मजामअत जायज़ है। (आरिया)

जवाब : बीवी के साथ सिर्फ फरज (आगे का मकाम) में सोहबत जायज़ है, दुबर में हराम है। चंद दलायल से यह बात ज़ेहन में रखिये। एक यह कि यहां फरमाया गया है कि अपनी खेतों में आओ और फरज ही खेती है न कि दुब्र। दूसरे यह कि यह मसला मसलाए हैज़ के बाद ब्यान किया गया है। वहां फरमाया गया था कि चूंकि हैज़ पलीदी है लिहाज़ा इसमें औरतों से बचो और ज़ाहिर है कि दुब्र हैज़ से बढ़कर पलीद हैं लिहाज़ा वहां मजामअत क्योंकर हलाल होगी। दोनों जगह जब इल्लत एक ही है तो हुक्म भी एक ही होना चाहिये। जिस तरह चाहो जैसे चाहो से मुराद यहां तरीका मजामअत है न कि मकामे मजामअत है। यानी जैसे चाहो मजामअत करो ख़्वाह उल्टा के चित करके, पट करके, झुका के, या लिटा के। किसी भी तरह करो लेकिन मकामे फरज ही में जिमअ करो। हदीस पाक में है जो मकाम दुब्र में जिमअ करता है वह शैतान मलऊन है। कौमे लूत पर इसी वजह से अज़ाबे इलाही आया। यह फेअ़ल ख़्वाह लड़के के साथ हो या औरत के साथ यकसां बाइसे अज़ाब है। कोई इमाम इसका कायल नहीं।

सवाल : मर्द को औरत पर फज़ीलत क्यों दिया गया, दोनों को बराबर क्यों न रखा गया, जब औरत नसली और ज़िन्दगी के कामों में मर्द के बराबर की शरीक है तो उसका दर्जा भी इसके बराबर होना चाहिये। (आरिया)

जवाब : इसलिये कि हाकिमे आला एक ही होना चाहिये। आसमान पर सूरज एक एक दरख़्त की जड़ एक मुल्क का बदशाह एक फौज का कमांडर जनरल एक तो चाहिये कि घर का हाकिम आला भी एक ही रहे। एक ख़ाविंद चार बीवियां कर सकता है मगर एक औरत चार ख़ाविंद नहीं कर सकती। एक बादशाह के चार वज़ीर हो सकते हैं मगर एक वज़ीर के चार बादशाह नहीं हो सकते। हाथ में उंगलियां चार हैं मगर अंगूठा एक ही हैं मर्द को फज़ीलत देने का मतलब यह नहीं है कि औरत कमतर है या मर्द से मुख़्तलिफ है बल्कि यह बताना

मकसूद है कि औरत सिनफ नाजुक है मर्द के मुकाबले में जिस्मानी तौर पर कमज़ोर है। जैसे कोई डाक्टर यह कहे देखा जी, तुम अपने आंखों के साथ वह सलूक नहीं कर सकते जो अपने नाखून के साथ करते हो। तो डाक्टर के कहने का मतलब यह नहीं होता कि आंख नाखून से कमतर है, बल्कि उसके कहने का मतलब यह है कि आंख नाखून के मुकाबले में कमज़ोर और नाजुक शय है। इसके साथ वह सलूक न करना जो तुम अपने नाखून के साथ करते हो वरना बीनाई से महरूम हो जाओगे, इसलिये इसकी हिफाज़त करो।

सवाल : तलाक का इख़्तेयार सिर्फ मर्द ही को क्यों दिया गया? औरत को भी यह इख़्तेयार देना चाहिये, यह तो खिलाफे इंसाफ है। (आरिया)

जवाब : इसके दो जवाब है। एक तो यह कि औरत का गुस्सा उसके अक्ल पर ग़ालिब है वह जोश में आकर बहुत जल्द सब कुछ कर गुज़रती है और बाद में पछताती है मर्द के गुस्से पर कुदरती तौर पर अक्ल ग़ालिब है। वह जोश में आकर भी होश में रहता है और कुछ कहने से पहले सोचता है गौर व फिक्र करता है। अक्ल व तदब्बुर औरत के मुकाबिल मर्द में ९९ फीसद ज़्यादा है। इसलिये तलाक का इख़्तेयार मर्द को दिया गया है न कि औरत को। यानी औरत शौहर को तलाक नहीं दे सकती क्योंकि औरतें बे अकली से बहुत जल्द गुस्से में आकर कुछ का कुछ कर बैठती हैं। इनको तलाक का इख़्तेयार देना गोया दीवाने के हाथ में तलवार देना है। दूसरे यह कि मर्द औरत का हाकिम है क्योंकि उसके जिम्मे औरत के सारे अख़राजात हैं इसलिये तलाक हाकिम ही के कब्ज़े में चाहिये। हां अगर कभी मर्द औरत पर जुल्म करे और तलाक न दे तो हाकिम इससे जबरन तलाक दिलवा दे। पंडित जी फिर तो तुम यह भी कह सकते हो कि सिर्फ औरत ही बच्चे क्यों देती है और उसको ही हैज़ व निफास क्यों आता है, या तो किसी को यह अवारज़ात न होते या मर्द औरत दोनों को होते।

सवाल : तलाक बुरी चीज़ है, इससे घर बिगड़ते हैं। इस्लाम ने इसकी इजाज़त ही क्यों दी?

जवाब : तलाक हलाल और जायज़ है मगर अल्लाह तआला को बहुत ही नापसंद है कभी ज़रूरत के वक़्त बुरी चीज़ से भी मामला तय करना पड़ता हैं बाज़ सूरतों में मियां बीवी के हालात बहुत ही बिगड़ जाते हैं हत्ता कि मर्द और

औरत दोनों की ज़िन्दगी जहन्नम बन जाती है और वह खुदकुशी करने पर मजबूर हो जाते हैं। इस्लाम दोनों की जिन्दगी को बचाना चाहता है और वह रास्ता यही है कि दोनों को एक दूसरे से तलाक के जरिये आज़ाद कर दिया जाये ताकि दोनों की ज़िन्दगियां सलामत रहें और वह खुदकुशी न करें। इसलिये ज़रूरतन इसकी इजाज़त दी गयी। पंडित जी यह एतेराज़ तो ऐसा है कि कोई कहे पाख़ाना बुरी और गंदी जगह है फिर वहां जाने की इजाज़त ही क्यों दी गयी? पंडित जी अगर वहां न जाओगे तो सारा घर गंदा करोगे।

सवाल : तलाक की कितनी कसमें हैं? ज़रा तफ़सील से बता दीजिये?

जवाब : तलाके तीन तरह की हैं। (१) रजई (२) बायना (३) मुगल्लज़ा। एक या दो तलाकें रजई हैं कि इद्दत में शौहर को रुजूअ करने का हक हैं ख़्वाह औरत राज़ी हो या न हो। दोबारा निकाह की ज़रूरत नहीं। और तलाके बायना में रुजूअ जायज़ नहीं। दोबारा निकाह लाज़िम व ज़रूरी हैं इसमें हलाला की शर्त नहीं। तीन तलाकें मुगल्लज़ा हैं कि इसमें हलाला की शर्त है। यानी तीन तलाकें देने के बाद अगर अपनी औरत को दोबारा अपनी ज़ौजियत में लाना चाहता है तो हलाला की ज़रूरत है। हलाला की सूरत यह है कि औरत इद्दत गुज़ार कर दूसरे मर्द से निकाह करे, फिर वह भी सोहबत करके तलाक दे। ख़्याल रहे कि हलाला में सोहबत यानी कि औरत के साथ हम बिस्तरी शर्त हैं बग़ैर इसके हलाला नहीं होगा। फिर औरत इस तलाक की इद्दत गुज़ार कर पहले शौहर के पास आने के लिये दोबारा निकाह पढ़ाये।

सवाल : हलाला, यह तो बड़ी बे ग़ैरती है फिर इस्लाम ने इसकी इजाज़त क्यों दी?

जवाब : ताकि औरत को मामूली समझकर कोई उसे तलाक न दे। वह कोई नौकरानी नहीं बल्कि घर की मलका है। औरत मर्द के पैर की जूती नहीं कि जब चाहा पहना और जब चाहा निकाल दिया तलाक दे दी। तलाक रोकने के लिये यह कदम इस्लाम ने उठाया ताकि मर्द की खुद्दारी और ग़ैरत को ठेस पहुंचे और आइंदा कोई ऐसी हरकत न करे। कोई शरीफ ग़ैरत मंद और खुददार आदमी यह गवारा नहीं करेगा कि मेरी औरत दूसरे के पास जाये। इसलिये हलाला में दूसरे शौहर की वती की शर्त और कैद लगा दी गयी ताकि न दूसरा

तलाक़ देने पर राज़ी हो और न पहला उसे अपने पास रखने पर। पंडित जी अपने न्युग पर गौर करो कि आपके ऋग्वेद में सत्यारथ प्रकाश बाब चार में है कि शौहर खुद अपनी बीवी से कहे कि तू मेरे अलावा दूसरे से औलाद हासिल कर इससे बढ़कर बे ग़ैरती और क्या होगी कि अपनी बीवी को दूसरे के हवाले कर दिया जाये। इस्लाम में तलाक़ के बाद हलाला है जबकि वह इसकी बीवी ही नहीं रहती।

सवाल : निकाह मुतअ क्या है और क्या यह जायज़ है?

जवाब : इस सवाल का जवाब आगे आ रहा है। यहां बस इतना ही समझ लो कि वक़्ती निकाह मुद्दती निकाह को निकाहे मुतअ कहते हैं जो इस्लाम में हराम है अैर यह ज़माना जाहलियत की एक ज़िना है जिसकी इजाज़त किसी पैग़म्बर ने नहीं दी। निकाहे मुतअ का जवाज़ इस्लाम में कतई नहीं क्योंकि यह औरत के इज़्ज़त के साथ खेलना हैं इस्लाम ने हर औरत को बहुत ही ऊंचा मक़ाम दिया है। इतना ऊंचा मक़ाम किसी और मज़हब ने नहीं दिया है। बड़े बड़े वलियों और पैग़म्बरों को इसने जन्म दिया। बाहैसियत मां इसके क़दमों में जन्नत है। बाहैसियत बहन बाप के जायदाद में हिस्सेदार बनाया। बाहैसियत बीवी इसे आधा ईमान कहा गया जबकि दूसरे मज़ाहिब ने हमेशा औरत की तज़लील व तहक़ीर की।

सवाल : हलाला और मुतअ में क्या फर्क़ है? मुतअ भी तो चंद रोज़ के लिये होता है और हलाला भी। फिर तुम मुतअ को हराम क्यों कहते हो और हलाला को जायज़ क्यों?

जवाब : हलाला और मुतअ में बहुत बड़ा फर्क़ है मुतअ वक़्ती निकाह है इसमें यह कहा जाता है कि मैं एक महीना पंद्रह दिन के लिये निकाह करता हूं कि इस मुद्दत के पूरा होने के बाद ख़ुद बख़ुद अलहेदगी हो जाती है। तलाक़ की ज़रूरत नहीं रहती। यह निकाह महज़ बातिल और ज़िना है। हलाला में यह नहीं है यहां निकाह दायमी होता है फिर अगर शौहर राज़ी खुशी से तलाक़ दे दे तो ही अलहेदगी होती है।

सवाल : तलाक़ बीवी की रज़ामंदी से होना चाहिये जैसे निकाह में बीवी की रज़ा व इजाज़त शर्त होती है तलाक़ निकाह की तरह क्यों नहीं? (आरिया)

जवाब : तलाक और निकाह में बड़ा फर्क है निकाह में मर्द औरत दोनों के हक एक दूसरे पर लाजिम होते है। तो अपने किसी का हक लाजिम कर लेने का हर शख्स को इख्तेयार है कि लाज़िम करे या न करे। इसलिये वहा मर्द औरत दोनों की रज़ामंदी ज़रूरी हैं इसलिये निकाह में तो फरीकैन की रज़ा लाज़िम है। देखो सामान खरीदते वक्त दुकानदार के इजाज़त की ज़रूरत नहीं और तलाक में एक दूसरे का हक लाज़िम करने के बजाए हक का उठाना हैं रफअ हक में फरीकैन के रज़ा की ज़रूरत नहीं होती। कर्ज़ लेने देने में फरीकैन के रज़ा की ज़रूरत है और ज़रूरी भी है मगर कर्ज़ माफ करने में फरीके आखिर की रज़ा ज़रूरी नहीं।

सवाल : जिस औरत का ख़ाविंद मर जाये उस पर इद्दत है तो जिस की बीवी मर जाये उस मर्द पर इद्दत क्यों नहीं? इद्दत सिर्फ औरत पर ही क्यों वाजिब है मर्द पर क्यों नहीं और सोग की वजह क्या है? (आरिया)

जवाब : मर्द की मौत औरत के लिये मुसीबत का बाइस है कि उसका वाली और इज़्ज़त व आबरू का मुहाफिज़ सर से उठ गया। वह औरत निकाह की नेमत से महरूम हो गयी। शौहर से बे साया हो गयी। अगरचे मर्द को भी औरत की मौत से मुसीबतें और तकलीफें आती हैं मगर औरत उसकी वाली या मुहाफिज़ न थी और न शौहर का ख़र्चा औरत के ज़िम्मा था। नीज़ औरत में हमल का एहतमाल है मर्द में नहीं। लिहाज़ा उसे कुछ दिन निकाह से रोक देने से यह मामला भी साफ हो जायेगा कि हमल किस का है। और अगर इद्दत बग़ैर औरत दूसरी शादी करे तो उसकी औलाद मजहूलुन नस्ब होगी। दूसरा शौहर कह सकताहै कि यह मेरे नुत्फे से नहीं बल्कि पहले के नुतफे से है। इस तरह यह सब झगड़े और फित्ने का बाइस होगा। इसलिये इसलाम ने औरतों के लिये इद्दत की मुद्दत रखी है ताकि समाज और मुआशरा फित्नों से महफूज़ रहे और औलाद मजहुलुन नस्ब न रहे ख़्याल रहे कि इद्दत की मुद्दत तीन हैज़ यानी चार माह दस दिन या तेरह दिन है। इन अय्याम में हमल ज़ाहिर हो जाता हैं अगर हमल ज़ाहिर हो जाये तो वजअे हमल (बच्चा पैदा होने के) बाद वह दूसरी शादी करे।

सवाल : निकाह तोड़ने का हक तो औरत को भी है अगर वह अपने सुसर वग़ैरह से ज़िना करा ले तो निकाह जाता रहे। फिर निकाह का मालिक शौहर

कहां रहा? (आरिया)

जवाब : तलाक़ का हक़ सिर्फ़ और सिर्फ़ मर्द ही को है न कि औरत को। औरत की बाज़ नाजायज़ हरकतों पर निकाह टूटता नहीं बल्कि फ़िस्ख़ हो जाता है और फिर भी औरत निकाह फिस्ख़ नहीं करती, वह तो एक जुर्म करती है जिसे निकाह ख़ुद बख़ुद फिस्ख़ हो जाता है लिहाज़ा मालिक शौहर ही हुआ।

सवाल : एक औरत अगर चार मर्द से बयक वक़्त निकाह नहीं कर सकती तो चाहिये कि एक मर्द भी बयक वक़्त चार औरतों से निकाह न कर सके, मगर कुरआन ने मर्दों को बयक वकत चार औरतें रखने की इजाज़त दी है। यह तो एक तरह से औरतों के साथ जुल्म व नाइंसाफी है? (आरिया)

जवाब : इस्लाम में मुसलमान मर्दों को बयक वक़्त चार औरतों को रखने की इजाज़त है मगर यह हुक्म नहीं बल्कि छूट है, बतर्शेकि वह चारों के साथ अदल व इंसाफ़ कर सके वरना एक ही काफी है। चार बीवियां रखना जायज़ है। यह शरीयत का हुक्म नहीं बल्कि रियायत दी गयी है कि तुम चार तक रख सकते हो। इसलिये कि कुदरती तौर पर औरतों की पैदाईश ज़्यादा है और मर्दों की कम। नीज़ अमूमन जंगों में मर्द ज़्यादा मारे जाते हैं, औरतें कम क्योंकि लड़ने वाली फौजें मर्दों ही की होती हैं न कि औरतों की। अगर मर्दों पर एक बीवी की पाबंदी हो तो ज़्यादा औरतें जो बेवा हो चुकी हैं जिनके शौहर मैदाने जंग में मारे जा चुके हैं, वह कहां जायेंगी? आर्यों के यहां मर्द एक ही औरत से निकाह कर सकता है मगर साथ में न्यूग के ज़रिये बहुत सी औरतों को इस्तेमाल कर सकता है और कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक ही औरत को कई-कई मर्द रखते हैं। कौरवों, पांडवों की लड़ाई इसी सिलसिले की एक कड़ी है। ईसाईयों के यहां भी चंद निकाह ममनूअ है मगर उनके यहां ज़िना पर कोई पाबंदी नहीं जैसा कि आज देखा जा रहा है। यूरोप, अमेरिका और ईसाई समाज इस तरह की इंसानियत सोज़ हरकतें खुले आम कर रहे हैं। वहां औरत आवारा गाय की तरह जिधर मुंह उठाये चली जाये और मर्द भी शुतर बे महार की तरह किसी के भी चरागाह में मुंह डाल दे। इस्लाम ने बयक वक़्त चार औरतों की इजाज़त देकर औरतों की ज़्यादती को ठिकाने लगा दिया और बदकारी से इंसान को रोक दिया।

सवाल : कुरआन में है कि कौन है जो अल्लाह को कर्ज़े हुस्ना दे? ख़ुदा

ने पूरी दुनिया को बनाया उसे कर्ज़ मांगने की क्या ज़रूरत है? क्या खुदा मुफलिस व कंगाल है या उसके खज़ाने में कमी हो गयी थी कि कर्ज़ मांगने की नोबत पहुंची? (यहूदी, ईसाई, ग़ैर मुस्लिम)

जवाब : यहां कर्ज़ से बंदे की नेकी मुराद है जो सवाब की नीयत से की जाये। नमाज़, रोज़ा, ज़कात सदका व खैरात सब इसमें दाखिल हैं या कर्ज़े हस्ना से मुराद वह माल है जो रब को राज़ी रखने के लिये खर्च किया जाये। इस कर्ज़ से उधार मुराद नहीं क्योंकि उधार तो मोहताज लेते हैं और रब मोहताजी से पाक है। खुदा और रसूल पर इस तरह की एतेराज़ दीवाना की बड़ हैं पंडित जी! कर्ज़ की बहुत सी किस्में हैं हुकूमतें अपने मुलाज़ेमीन की तंख़्वाह का कुछ हिस्सा बतौर फंड जमा करती रहती हैं जो रिटायर्ड होने पर मअ सूद दिया जाता है। बैंक पब्लिक का रुपया लेकर मअ सूद वापस करती हैं। बीमा कंपनियां रुपया लेकर बवक्त ज़रूरत मअ नफा के वापस कर देती है।। इन सब स्कीमों से अवाम को नफा पहुंचाना और अपनी तरफ राग़िब करना मंजूर होता है हुकूमत या बैंक उनके पैसे की मोहताज नहीं। ऐसे ही अल्लाह हमसे हमारे ही भाई बिरादरों को दिलवाकर फरमाता है कि यह हम पर कर्ज़ की तरह वाजिबुल अदा है। किसी मोहताज, ग़रीब, मोहताज मजबूर गरीब यतीम की अगर तुमने मदद की तो उसका बदला हम देंगे। इस कर्ज़ को मोहताजी की दलील बनाना पंडित जी जैसे बेवकूफों का काम है।

सवाल : इतनी नेकियों का बंदा क्या करेगा जब एक का बदला बीस लाख मिला और उसने लाखों नेकियां कीं तो उसका अज्र शुमार से बाहर हुआ, कहां रखेगा?

जवाब : यह सोचो कि इसके पास हिसाब के बाद बचेगा क्या? जैसे कि बेशुमार नेकियां मिलती हैं, ऐसे ही बेशुमार बंदा जुल्म व गुनाह भी कर लेता है और कयामत में तमाम हुकूक के एवज़ मकरूज़ की सात सौ नमाज़ें जमाअत वाली कर्ज़ ख़्वह को दिलवाई जायेंगी। अब हिसाब लगा लो कि ग़ीबत, कत्ल, जुल्म, मारपीट हक तलफी के एवज़ कितनी नेकियां छिन जायेगी। अगर यह ज्यादती न हो तो टोटल कैसे पूरा हुआ। ग़नीमत जानो कि असल नेकियां ही बच जायें। नेकियों की हरी भरी खेती पर हज़ारों आफतें आती रहती हैं, न मालूम कटाई के वक्त क्या बचे?

सवाल : कव्वाली सुनना जायज़ है, या नहीं? बहुत से लोग इसे सिलसिला चिश्तिया के बुजुर्गों का मामूल बताते हैं और कहते हैं कि अजमेर शरीफ में होती है। (जाहिल अवाम)

जवाब : आज कल जो कव्वाली होती है उनमें नये नये बाजे हारमोनियम प्यानो, संगीत, वग़ैरह के साथ होती हैं और जिनमें जवान लड़कों, लड़कियों औरतों, मर्दों की ख़लत मलत होती है जिससे बुराईयों का इमकान है और बाजा संगीन वग़ैरह से जज़्बा शहवानी पैदा होती हैं इसीलिये यह इस्लाम में हराम है लिहाज़ा मुरौवजा कव्वाली को तमाम उलमा ने हराम करार दिया हैं इसमें शरीक होने वाले इसमें किसी तरह का ताव्वुन करने वाले, इसके करने कराने वाले सभी गुनाहगार हैं। अलबत्ता अगर कव्वाली दफ़ के साथ हो तो जायज़ है। कलाम मोरफत के साथ सुन सकता है जिसे अर्फ आम में सिमअ कहते हैं। कुछ बुजुर्गों को यही मामूल रहा। मज़ामीर के साथ कव्वाली की निसबत सिलसिला चिश्तिया के बुजुर्गों की तरफ़ करना उन पर बोहताने अज़ीम है। हज़रत महबूबे इलाही ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी मशहूर किताब फवायदुल फवायद में लिखा है ''मज़ामीर हराम अस्त'' रहा किसी बुजुर्ग के आस्ताने पर ख़िलाफ़े शरअ काम होना, यह इस बात की दलील नहीं है कि उन्होंने इस की इजाज़त दी है नीज़ हलाल व हराम के सिलसिले में जगह का हवाला नहीं बल्कि कुरआन व अहादीस का हवाला काबिले कबूल है।

सवाल : कब्र पर अगरबत्ती जलाना जायज़ है कि नहीं?

जवाब : कब्र पर अगरबत्ती नहीं जलाना चाहिये। कब्र से थोड़ी दूर रख सकते हैं। अगरबत्ती आग की एक किस्म है और आग को कब्र से दूर रखना चाहिये और अगरबत्ती जलाने का मकसूद ख़ुश्बू है तो इसके इत्र वग़ैरह सबसे बेहतर है। लिहाज़ा अगरबत्ती के इस्तेमाल के बजाए इत्र वग़ैरह इस्तेमाल किया जाये तो यह बेहतरीन और मुनासिब है।

सवाल : गुलाब का फूल कहां से पैदा हुआ?

जवाब : उलमा, फुकहा मुफस्सेरीन व मुहद्देसीन ने यही लिखा और फरमाया कि गुलाब का फूल हमारे पैग़म्बर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पसीना मुबारक से पैदा किया गया है। इसलिये अल्लाह तआला ने

तमाम फूलों में गुलाब को सबसे ज़्यादा इज्जत बख़्शी और उसे तमाम फूलों का सरदार कहा कि यह सरदार अंबिया कि जिस्म पाक के अर्क से निसबत रखता है। हर मुसलमान पर लाज़िम है कि वह जब भी गुलाब का फूल सूघें तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद शरीफ पढ़ लिया करें। ख्याल रहे कि पसीना जिस्म का निचोड़ होता है और यह मेरे नबी की पसीना मुबारक से पैदा किया गया हैं इसलिये फरमाने आलीशान है कि जो शख़्स मेरे जिस्म की खुश्बू को सूंघना चाहे वह गुलाब को फूल सूंघे। और इसी निसबत की वजह से हम सुन्नी मुसलमान अपने मरहूमों की क़ब्रों पर फूल डालते हैं क्योंकि जो चीज़ नबी से मंसूब होती हैं वह बाइसे बरकत होती है।

सवाल : कुरआन के तीसरे पारे में है कि बाज़ रसूलों को हमने बाज़ पर फज़ीलत दी जिससे मालूम हुआ कि अंबियाए किराम के दर्जे मुख़्तलिफ हैं मगर दूसरी आयत में है कि सारे नबी यकसां हैं इनमें कोई फर्क नहीं। नीज़ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि मुझे युनुस अलैहिस्सलाम पर भी फजीलत मत दो या मूसा अलैहिस्सलाम से अफ़ज़ल न कहो। इनमें मुताबक़त क्योंकर हो?

जवाब : सूर: बक़रह के आख़िरी रुकूअ की आयत चंद मतलब हैं। एक यह कि हम ईसाईयों पर यहूदियों की तरह अंबियाए किराम पर ईमान लाने में फर्क़ करते कि बाज़ को मानें और बाज़ का इंकार करें। बल्कि सब पर ईमान लाते हैं। दूसरे यह कि हम नफ़से नुबूवत में फर्क़ नहीं करते कि देवबंदियों, क़ादयानियों की तरह बाज़ की नुबूवत असली और बाज़ की आरजी मानें बल्कि उनमें सबको यकसां मानते हैं। तीसरे यह कि हम अंबिया में इस तरह की तफ़रीक़ नहीं करते कि बाज़ की तौहीन हो जाये बल्कि सब का एहतेराम करते हैं। चौथे यह कि हम अंबियाए किराम में अपनी राय से फर्क़ नहीं करते रब के दिये हुए दरजात मानते हैं। यही इस हदीस का मतलब है कि तुम हमें यूनुस अलैहिस्सलाम या मूसा अलैहिस्सलाम पर इस तरह फज़ीलत न दो कि इन की तौहीन हो जाये। इसलिये आयतें और अहादीस मुताबिक़ हैं कोई तज़ाद नहीं। इमाम अहले सुन्नत पेशवाए उम्मत सरकार आला हज़रत मुहद्दिस बरैलवी के सामने किसी नअत ख़्वां ने पढ़ा कि शाने यूसूफ जो दबी वह भी यहीं आके दबी। फ़रमाया यूं न कहो बल्कि यूं कहो कि शाने यूसुफ जो बढ़ी वह भी इसी दर से

बढ़ी। हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बुलंदियां मिलती हैं तमाम अंबिया नुबूवत में यकसां हैं कोई नबी आरज़ी नहीं।

सवाल : बाज़ अंबियाए किराम के मोजिज़ात हुजूर के मोजिज़ात से कहीं बढ़कर हैं मसलन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को फरिश्तों ने सज्दा किया न हुजूर को। इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर आग गुल व गुलज़ार हुई न कि हुजूर पर। मूसा अलैहिस्सलाम को मोजिज़ा वाला असा और यदेबैज़ा (जब आप बग़ल में हाथ दबाकर निकालते थे तो वह सूरज से भी ज़्यादा चमकता था इसी को यदेबैज़ा कहते हैं) मिला न हुजूर को। दाऊद अलैहिस्सलाम के हाथ में लोहा नरम हुआ न कि हुजूर के हाथ में। सुलेमान अलैहिस्सलाम के कब्ज़े में दुनिया की तमाम मख़लूक़ थी न कि हुजूर के क़ब्ज़े में। ईसा अलैहिस्सलाम बग़ैर बाप के पैदा हुए न कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। ईसा अलैहिस्सलाम ने मुर्दे ज़िन्दा किये, बीमारों को शिफा बख़्शी न कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लिहाज़ा यह हज़रात हुजूर से अफज़ल हुए। (ईसाई, यहूदी)

जवाब : इस किस्म के एतेराज़ात के दो जवाब हैं। एक इजमाली, दूसरा तफसीली, इजमाली तो यह है कि खुसूसी और जज़वी फज़ीलतें हैं और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फज़ीलत कुल्ली हासिल है। अगर बादशाह किसी कमांडर जनरल को कोई ख़ास तमग़ा इनायत फरमाये तो अगरचे यह तमगा वज़ीरे आज़म को न मिला मगर दर्जा उसी का बड़ा है और बादशाह का कुर्ब उसी को ज़्यादा हासिल है। तफसीली जवाब यह है कि आदम अलैहिस्सलाम मस्जूदे मलायक होने की वजह से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अफज़ल न हुए क्योंकि कयामत में हुजूर ही के झंडे के नीचे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और तमाम अंबियाए किराम भी होंगे। नीज़ हुजूर उस वक़्त नबी थे जब आदम अलैहिस्सलाम की खमीर गूंधी जा रही थी। देखो मेराज की रात में जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने बुराके मुस्तफा की रकाब थामी। तमाम फरिश्तों को हुजूर की झुरमुट में लेकर दुल्हा बनाकर ले गये। यह सजदा से कही बढ़कर, बैयतुल मकदिस में एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बरों की मौजूदगी में सरकार को इमामते अंबिया सुपुर्द की गयी ताकि सब पर आप की फज़ीलत ज़ाहिर हो जाये क्योंकि अफज़ल ही को इमाम बनाना हुक्मे शरअ है। इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर आग का बाग बनना इसी लिये हुआ कि उनकी पेशानी में नूरे मुहम्मदी था। इंशाअल्लाह

कल क़यामत के दिन हुजूर के सदके में हुजूर के गुलामों पर दौजख की आग गुलज़ार हो जायेगी बल्कि पुकारेगी। खुदाया उन को जल्द यहां से निकाल। हुजूर अलैहिस्सलाम के क़दमों में पत्थर मोम बन गये। खुदा की सारी मखलूक हुजूर के कब्ज़े में इसलिये दरख़्त झुक गये। पत्थरों ने सलामी दी, जानवरों ने आकर आपके कदमों पर अपना सर रख दिया इशारा पाकर चांद फट गया, डूबा हुआ सूरज पलट आया, बादल इशारा पाकर बरसा। मालूम हुआ कि जिन्नात व इंसान तो क्या मेरे हुजूर के कब्ज़े में खुदा की सारी खुदाई है जैसा कि हदीस शरीफ में है कि बेजान कंकरियों में जान आ गयी और उन्होंने आपके रिसालत की गवाही दी। वालिदैन माजिदीन को इनकी वफ़ात के बाद कलिमा पढ़ाकर अपना सहाबी बनाया। हज़रत जाबिर के ज़िब्ह शुदा बच्चों को ज़िन्दा फरमाकर अपने साथ खाना खिलाया। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अंधेरी रात में एक लकड़ी अता फरमाई जिसने अंधेरें में गेस का काम दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी लकड़ी इसमें मस की तो इसमें भी रौशनी पैदा हो गयी। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपनी नुबूवत वाला हाथ अंधों पर फेरते थे तो रौशनी आ जाती थी। बेशक ईसा अलैहिस्सलाम का यह अजीम मोजिज़ा है मगर मेरे हुजूर के नअलैन मुक़द्दस के तलवे में जो मिट्टी या धूल लग जाती इसमें इतनी तासीर होती कि अगर अंधी आंखों में डाल दिया जाये तो रौशनी आ जाती थी। बिला शक तमाम अंबियाए किराम का मोजिज़ा अज़ीम है मगर मेरे हुजूर का मोजिजा अज़ीम तर है। अगर ईसा अलैहिस्सलाम इस दुनिया में बगैर बाप के पैदा हुए तो नूरे मुहम्मदी आलमे अनवार में बिला वास्ता पैदा हुआ और तमाम मख़लूक़ आपके नूर से पैदा हुई। अल्लाह ने हुजूर की महबूबियत तमाम महबूबों से आला अता फरमाई। तमाम हसीनों पर इंसान आशिक़ व फरेफ़ता हुए मगर हुजूर पर जिन्न व इन्स जानवर, मलायका और खुद ख़ालिके कायनात भी फ़िदा। लकड़ियां और जानवर भी हुजूर के फिराक में रोए। दुनिया के तमाम महबूबों की महबूबियत को फना है मगर हुजूर की महबूबियत अब्दुल अबाद तक बाकी है। आज हुस्ने यूसुफी का आशिक़ कोई नहीं मिलता मगर हुस्ने मुहम्मदी के आशिकों की इंतेहा नहीं। महबूबियत तमाम दरजात में से एक अजीमुश्शान दर्जा है। आशिकों के इमाम इमामे अहले सुन्नत पेशवाए उम्मत सरकार आला हज़रत मुहद्दिस बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

फरमाते हैं-

हुस्न यूसुफ पे कटी मिस्र में अंगुश्त ज़नां
सर कटाते हैं तेरे नाम पे मरदाने अरब

सवाल : मसला शफ़ाअत अक़्ल के ख़िलाफ़ है क्योंकि जो लोग शफ़ाअत से बख़्शे जायें, रब इन्हें बख़्शना चाहता था या नहीं? अगर चाहता था तो शफ़ाअत बेकार हुई। वह तो वैसे ही बख़्शे जाते और अगर ना चाहता था तो रब की मजबूरी लाज़िम आयी कि रब बख़्शना तो चाहता न था शफ़ीअ की वजह से उसे बख़्शना पड़ा। (वहाबी)

जवाब : इस एतेराज़ के दो जवाब हैं। एक इल्ज़ामी दूसरा तहक़ीकी। इल्ज़ामी जवाब यह है कि फिर तो दवायें, दुआयें बल्कि आलम के तमाम असबाब बेकार हुए। बीमार ने, दवा खायी शिफ़ा पायी, बताओ रब ने उसको शिफ़ा चाही थी या नहीं। अगर चाही थी तो दवा की क्या ज़रूरत थी खुद ही आराम हो जाता और अगर नहीं चाही थी तो खुदा के इरादे के ख़िलाफ़ कैसे हो गया। तहक़ीकी जवाब यह है कि रब तआला इन्हें शफ़ाअत के ज़रिये बख़्शना चाहता था यानी बख़्श भी उसके हुक्म से और शफ़ाअत भी उसके हुक्म से है। रब ने बीमार की शिफ़ा भी चाही और दवा भी। यह मायने है। असबाब के। यह दुनिया भी आलमे असबाब ही है। यहां मुकद्देमात के सिलसिले में हाकिमे आला तक पहुंचने के लिये वकीलों को वसीला लेना ही होता है। (आरिया)

सवाल : आयतुल कुर्सी से मालूम हुआ कि खुदा की कुर्सी है तो लाज़िम आया कि वह एक जगह रहने वाला है और जो एक जगह ही रहने वाला हो। वह महदूद है और जो महदूद हो वह खुदा नहीं हो सकता।

जवाब : पंडित जी! एक मन इल्म के लिये दस मन अक़्ल की ज़रूरत है। कुरआनी उलूम को समझने के लिये अक़्ल चाहिये। आयतुल कुर्सी में यह कहां है कि ख़ुदा इस कुर्सी पर बैठता हैं यहां तो यह इरशाद हुआ कि उसकी कुर्सी ज़मीन व आसमान को घेरे हुए है। उसके कुर्सी के यह मायने है। कि उसकी पैदा की हुई उसकी ममलूक कुर्सी जिसे कहा जाता है अल्लाह का आसमान और उसकी बिछाई हुई ज़मीन इसका मतलब यह नहीं है कि वह इनमें रहता है और कुर्सी से मुराद यह मेज़ कुर्सी नही है बल्कि इससे रब का इल्म मुराद है या उसकी

कुदरत व मिलकियत। यह सिर्फ समझाने के लिये एक मिसाल है।

सवाल : अल्लाह के हुक्म से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शफाअत का हक दिया जाये और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म से अंबियाए, औलिया, उलमा, छोटे बच्चे, कुरआन रोज़ा, हज वग़ैरह भी शफाअत करेगे तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही को शफीउल मुजनबीन क्यों कहते हैं? अंबिया औलिया और उलमा को क्यों नहीं? (बाज़ जोहला)

जवाब : इसलिये कि इन तमाम हज़रात की शफाअत शफाअत सुग़रा होगी और हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफाअत शफाअते कुबरा होगी। शफाअते कुबरा सिर्फ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही फरमायेंगे। शफाअते कुबरा में चंद ख़ुसूसियात हैं। एक यह कि जब कयामत में अदले इलाही कायम होगा, हुजूर के सिवा कोई शफाअत न करेगा। हुजूर के दस्ते अकदस से दरवाज़ए शफाअत खुल जाने के बाद दूसरे हज़रात शफाअते सुग़रा करेंगे। दूसरे यह कि तमाम शफाअत करने वालों की शफाअत मख़सूस तरह और महदूद दायरे में होगी। चुनांचे कुरआन अपने तिलावत करने वालों की, रोज़ा रोज़ादारों की बच्चे अपने मां बाप की, औलिया और उलमा अपने कराबत वाले दोस्तों की हत्ता की दुनिया में जिस किसी ने आलिमे दीन की थोड़ी भी ख़िदमत की होगी तो वह उसे तलाश करेगा और उसकी शफाअत करेगा। मगर हुजूर की शफाअत तमाम मुसलमानों के लिये होगी। इसलिये उसे शफाअते कुबरा कहते हैं और हुजूर को शफीउल मुज़नबीन।

सवाल : जब दीन में ज़बरदस्ती नहीं तो मुसलमानों ने जिहाद क्यों किये?(आरिया)

जवाब : इस सवाल का जवाब दे दिया गया है। यहां बस इतना ही समझ लो कि दुनिया में अमन व शान्ति करने के लिये कुफ्र का ज़ोर मिटाने और इस्लामी आज़ादी के लिये जिहाद है ताकि नेक लोगों को अल्लाह अल्लाह करने में रुकावट न हो। जिहाद का मकसद यह नहीं होता कि जबरन काफिरों को मुसलमान किया जाये। यहूदियों ईसाईयों और आर्यों की वहशत व बरबियत का नमूना देखना है तो हीरोशिमा, नागासाकी, वियतनाम ईराक अफग़ानिस्तान, फिलीस्तीन बोसनिया और हिंदुस्तान में मुस्लिम कुश फसादात का जायज़ा लो

तो पता चलेगा कि तरक्की याफ्ता दुनिया ने हुसूले इक़्तेदार के लिये इंसानियत को भूक प्यास, गुरबत, व इफ्लास, तबाही व बरबादी के सिवा कुछ नहीं दिया। पहली और दूसरी जंगे अज़ीम में होने वाली जानी नुक़सानात की लिस्ट पढ़िये और इस्लामी जिहाद को जबरन मुसलमान बनाने का प्रोपेगंडा करने वालो का असली चेहरा देखिये। इस्लाम की तारीख़ से कोई ऐसा वाक़िया नहीं पेश किया जा सकता जिससे यह साबित हो कि मुसलमानों ने किसी क़ौम या फ़र्द को जबरन दख़ले इस्लाम किया हो। अगर यह बात होती तो करूने ऊला में काफ़िर व मुश्रिक का वजूद न होता। मगर इस्लाम के क़ानून ही ऐसे हैं कि किसी को जबरन दाख़िले इस्लाम नहीं किया जा सकता। कुरआन में है दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं। दीने इस्लाम लोगों के दिलों तक पहुंचने के लिये अपना रास्ता ख़ुद आप बनाता हैं इस्लाम की इसी मकबूलियत ने यूरोप और अमेरिका के हुक्मरानों की नींदें हराम कर दी हैं इसलिये वह अपने शैतानी मीडिया के ज़रिये कभी इस्लाम और बानी इस्लाम के ख़िलाफ़ मज़ामीन शाया करते हैं ताकि लोग इस्लाम से बदज़न हो जायें और उसे क़बूल न करें।

साहिल है मेरा नाम मिटाओगे क्या मुझे
तूफ़ान मुझसे सैकड़ों टकरा के रह गये

सवाल : अगर एहसान जताना हराम है तो रब ने क्यों जताया? उसका नाम ही मन्नान है, यानी बहुत एहसान जताने वाला।

जवाब : रब के मन्नान होने का मायने यह है बहुत एहसान करने वाला न कि एहसान जताने वाला। अरबी जुबान में एक ही लफ्ज के मख़लूक़ के लिये कुछ और मायने होते हैं और ख़ालिक़ के लिये कुछ और। बंदा भी शाकिर है और रब भी शाकिर। बंदा भी मोमिन है और रब भी मोमिन। बंदा भी तव्वाब है और रब भी तौवाब यहां मुख़्तलिफ़ मायने हैं।

सवाल : रब तआला ने एहसान जताए जैसा कि कुरआन में है कि हमने मोमिनों पर एहसान किया कि उनमें अपना रसूल भेजा, यह तो एक तरह एहसान जताना हुआ फिर हमें इससे क्यों मना फरमाया?

जवाब : रब के एहसान जताने से बंदा को शुक्र का जज़्बा पैदा होता है और इंसान के एहसान जताने से फकीर को सदमा पहुचंता है और यह भी जान

लो कि रब का एहसान बिला ग़र्ज़ है और बंदा का सदक़ा ख़ैरात सवाब की गर्ज़ से है। जब वह सबाब चाहता है तो एहसान क्यों जतलाता है। नीज़ रब तआला हक़ीक़ी मोहसिन है और बंदा मजाज़ी। इसलिये उसका एहसान जताना हक़ है और बंदा का बातिल।

सवाल : एहसान जताने से सदक़ा व ख़ैरात का सवाब क्यों जाता रहता है, ताज्जुब है कि इतना क़ीमती माल व दौलत सिर्फ दो बातों में बरबाद?

जवाब : इसलिये कि सदक़ा व ख़ैरात से फक़ीर को राहत देना और रब तआला को राज़ी करना मक़सूद है। एहसान जताने से यह दोनों बातें जाती रहती हैं। यह तो हक़ीर सा माल है। बात से तो जान भी जाती रहती है। कुफ्र की बात मुंह से बके क़त्ल के मुस्तहिक़ हो गये। बादशाह को गाली दी फांसी पर लटका दिये गये, बात बड़ी चीज़ है इसलिये मुंह से कोई बात निकालने से पहले खूब अच्छी तरह सोच समझ लो कि मैं जो बोल रहा हूं कुफ्र तो नहीं है। इसलिये हमेशा सोच कर बोलो। बोल कर सोचना दानिशमंदी के ख़िलाफ है।

सवाल : कुरआन व अहादीस से मालूम हुआ कि सदक़े का सवाब सिर्फ सदक़ा देने वाले को मिलता है न कि दूसरों को। लिहाज़ा ईसाले सवाब दुरुस्त न हुआ कि ख़ैरात तो हम करें और सवाब दूसरों को बख़्श दें। (जाहिल हज़रात)

जवाब : असल में सवाब का मालिक सदक़ा देने वाला ही है। अगर वह चाहे तो किसी को बख़्शे चाहे न बख़्शे। नीज़ सवाब से खुद सदक़ा देने वाला, सवाब से महरूम नहीं हो जाता, उसे पूरा सवाब मिल जाता है। दूसरा भी इसमें शरीक हो जाता है। जैसे हमारी शमअ से अगर दूसरा आदमी भी रौशनी हासिल कर ले तो हम रौशनी से महरूम नहीं हो जाते। अगर तुम किसी को इल्म सिखाओ तो अपना पढ़ा नहीं भूल जाते। उलमाए किराम तो फरमाते हैं कि ईसाले सवाब करने वालों को उन तमाम के बराबर सवाब मिलता है जिन्हें सवाब बख़्शा गया। मसलन अगर एक कुरआने पाक का सवाब सारी उम्मते रसूल को बख़्शा तो तमाम उम्मत को एक कुरआन का सवाब मिला। किसी को कट कर न मिला। मगर इस बख़्शने वाले को तमाम अफराद उम्मत के बराबर सवाब मिला। अल्लाहु अक्बर! जब रब देता है तो फिर लेते क्यों नहीं?

सवाल : कुरआन के चौथे पारे में है कि तुम खुदा की राह में वह चीज़ दो

जो तुम्हें पसंद हो। महबूब हो तो चाहिये कि हुक्का पीने वाला तंबाकू को खैरात करे, भाग चरस पीने वाला चरस और भाग से सदका करे और शराबी कबाबी इसी से खैरात करे क्योंकि यह चीजें इन्हें पसंद हैं। (बाज जोहला)

जवाब : इस सवाल के दो जवाब है। एक यह कि मजकूरा चीज मोमिन के दिल को पसंद नहीं बल्कि नफ्स को पसंद है। दिल उनका भी उससे नफरत ही करत है बड़े से बड़े नशा आवर को जब नसीहत की जाती है तो वह यही कहता है कि मेरी आदत ही पड़ गयी है अब छूटती ही नहीं, क्या करें? भाई तुम बहुत अच्छे हो जो चरस भाग वगैरह से बचे हो। खुदा सब को बचाये। आमीन

सवाल : मौजूदा बैंक और डाकखाने के सूद का क्या हुक्म है? (मुसलमान)

जवाब : कुफ्फार से नफा लेना सूद नहीं बल्कि हलाल है। लिहाजा आज कल पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, स्टेट बैंक, बैंक आफ इंडिया वगैरह कुफ्फार व मुश्रेकीन के हैं इनसे नफा लेना हलाल है। अगरचे वह लोग उसे सूद कहते हैं मगर यह शरअन सूद नहीं। अलबत्ता मुसलमानों के बैंक से नफा लेना हराम होगा मगर नोट और करंसी के लेन देन में सबसे नफा लिया जा सकता है मज़ीद मालूमात के लिये सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और दीगर उलमाए अहले सुन्नत की किताबों का मुताला कीजिये।

सवाल : लाइफ इंश्योरेंस यानी बीमा कराना कैसा है? (अवाम)

जवाब : बैंक के मसले से ज़िन्दगी या माल का बीमा कराने का हुक्म भी मालूम हो गया कि अगर बीमा कंपनी ख़ालिस कुफ्फार की है तो बीमा हलाल वरना हराम कि बीमा में भी रुपये पर नफा हासिल किया जा सकता है।

सवाल : सूद में बहुत से फायदे हैं, फिर उसे हराम क्यों किया गया? आज बग़ैर सूद कोई तिजारत या बैंक नहीं चल सकता। (अवाम)

जवाब : सूद में कुछ ज़ाहिरी फायदे भी हैं और नुक़सानात भी, मगर नुक़सान फायदों से ज़्यादा हैं। सूद में हज़ारों को ग़रीब बनाकर एक को अमीर बनाया जाता है। कौमों की तबाही सूद ही की बदौलत हैं। सूद में इंसान से दरिन्दगी पैदा होती है और कायदा यह है कि जिस का नुक़सान नफा से ज़्यादा हो वह हराम है। हां फी ज़माना बहुत मुनाफा हलाल है मगर मुसलमान सूद समझ कर उनसे बचते हैं। यह मुसलमानों की ग़लती है न कि मसले की। क्या ग़ज़ब

है कि मुसलमान कुफ्फार को सूद देते हैं मगर लेना हराम समझते हैं हालांकि मामला बरअक्स था।

सवाल : सूद के अलावा रिश्वतख़ोरी, चोरी, डकेती, वग़ैरह भी बड़े बड़े गुनाह हैं इस्लाम में इन पर इतना ज़ोर क्यों नहीं दिया सिर्फ सूद पर इस कदर ज़ोर क्यों दिया?

जवाब : दो वजह से। एक यह कि रिश्वत, चोरी वग़ैरह बीमारियां हैं और सूद वबाई बीमारी जिसमें बहुत से लोग गिरफ्तार हैं। हुकूमतें वबाई अमराज़ रोकने पर बहुत ज़ोर देती हैं। दूसरे यह कि रिश्वत, चोरी वग़ैरह को लोग खुद भी बुरा समझते हैं हुकूमतें सूद की सर परस्ती करती हैं। खुद भी सूद देती हैं, आज महकमा इन्सेदादे रिश्वत सतानी (एंटी करप्शन) बने हुए हैं चोरियां रोकने के लिये महकमा पुलिस मौजूद है मगर सूद रोकने के लिये कोई महकमा नहीं इसलिये इस मसले पर कुरआन ने बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया है।

ख़्याल रहे कि कभी तो इंसान बुराई की तरफ जाता है और कभी बुराई उसके पास खुद पहुंचती है। चोरी करने चोर निकला यह गुनाह के पास गया। रिश्वत का पैसा घर बैठा आया, यह गुनाह उसके पास आया। रब तआला दोनों से बचाये न बकरी भेड़िये के पास जाये न भेड़िया या बकरी के पास आये। जन्नत तमाम दुश्वारियों से घेर दी गयी है। दौज़ख़ ज़ाहिरी टीप टाप से आरस्ता है। हर दिन गुनाह और बुराईयां रंग व रूप बदल कर नये नये नाम से हमारे सामने आ रही हैं। इन बुराईयों का ख़ूबसूरत मार्डन नाम दे दिया गया है गोया शराब वही है पैमाना बदल गया है। गुनाह और बुराईयों को शैतान हमेशा खूबसूरत शक्ल में ही पेश करता है। हमें इससे बचना चाहिये।

सवाल : इस्लाम कहता है कि सूद का अंजाम बरबादी है मगर तर्जबा यह है कि सूद ख़ोर ख़ूब फलते फूलते हैं अंग्रेज़ हिंदु, महाजन, यहूदी, सभी सूद खोर हैं, मगर उनमें कोई बरबाद नहीं हुआ बल्कि सब आबाद हैं बड़े मज़े मे हैं। ऐश व अराम में हैं।

जवाब : इस सवाल के चंद जवाब हैं, एक यह कि सूदख़ोर की माली इबादात कयामत में बरबाद होगी जैसे कि सदके की ज़्यादती आख़िरत में महसूस होगी। दूसरे यह कि तर्जबा बताता है कि मुसलमानों को सूद फलता ही नहीं।

बेशक पाखाने का कीड़ा पाखाने को खाकर ही जीता है, बुलबुल इससे जिन्दगी नहीं गुज़ार सकती। सूद पाखाना है और कुफ्फार व मुश्रेकीन नीज़ खाने वाले इसके कीड़े। मुसलमान बुलबुल हैं इन्हें सूद फलता ही नहीं। हमारी ग़िज़ा हलाल फूल हैं जैसे हर जानवर की ग़िज़ा जुदागाना है और वह अपनी ग़िज़ा खाकर जी सकता है। बकरी गोश्त नहीं खा सकती, शेर घास नहीं खा सकता। अगर ऐसा करेंगे तो जान गंवा देंगे। ऐसे ही मोमिन व काफिर की गिज़ायें मुख्तलिफ हैं। मोमिनों की ग़िज़ा हलाल उसे हलाल और पाकीज़ा गिज़ायें दो इससे फूलेगा काफिर हराम ग़िज़ा से पलेगा। डाक्टर इक़बाल कहते हैं-

अपनी मिल्लत को क़यास अक़वाम मिल्लत पर न कर
है जुदा तामीर में कौमे रसूले हाशमी

यहां सूद से बरबादी का अंजाम कौमी हलाकत मुराद है न कि शख़्सी। अगर सूद का आम रिवाज हो जाये तो मालदार नहीं होंगे तो फुकरा बरबाद हो जायेंगे और फुकरा और मसाकीन की बरबादी कौम की बरबादी है। नीज़ सूद खोर तिजारती खतरात और मशक़्क़तें बर्दाश्त नहीं कर सकता। जब आराम से माल मिले तो मेहनत क्यों करे कौन करे? लिहाज़ा सूद का रिवाज तिजारतों की तबाही व बरबादी और बाज़ारों के बे रौनकी का ज़रिया है जिससे आलम की बरबादी हैं यह सारी सूद ख़ोर कौमें तिजारतें भी करती हैं उनका बक़ा तिजारत से है ना कि महज़ सूद से।

सवाल : आज कल बग़ैर सूद तिजारत चल नहीं सकती। अब सूद की मुमानेअत ताक़त से ज़्यादा तकलीफ देह है। मुसलमान की पस्ती का सबब सूद की मुमानेअत और ज़कात की फरज़ियत है। (नेचरी)

जवाब : यह महज़ शैतानी ख़्याल और धोका है हमेशा से मुसलमानों ने करोड़ों रुपये के व्यापार किये और सूद बिल्कुल न लिया। हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैहि, और हुज़ूर गौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तिजारतें और उनके कारोबार की वुसअतें व सख़ावतें पूरी दुनिया में मशहूर हैं। यह हज़रात सूद के करीब भी न गये। अब भी दुनिया में बड़े बड़े मुसलमान ताजिर सूदी लेन देन से बिल्कुल दूर हैं और बड़े मज़े में हैं। आज कल मुसलमानों की पस्ती ज़कात की फरज़ियत

और सूद की मुमानेअत से नहीं है। यह दोनों मसले तो हमेशा से मौजूद थे मगर मुसलमानों की परस्ती एक सदी से हुई। इसका असल सबब नौजवानों की बेकारी, दुनियावी व दीनी तालीमात से दूरी, आराम तलबी, सुस्ती, काहिली कर्ज़ की आदत, शादी ब्याह में फजूल ख़र्ची और नौजवानों की आवारगी है की न अहकामे शरीया। और बरबादी की असल वजह दीन इस्लाम से दूरी और ख़ुदा बेज़ारी है।

सवाल : कुरआने पाक की खुसूसी सिफ्त ब्यान फरमायी गयी है कि यह किताब पिछली किताबों की तसदीक़ करता हैं इसमें कुरआन ही की क्या खुसूसियत है हर आसमानी किताब ने अपने से पहले किताबों की तसदीक़ की? (यहूदी, ईसाई)

जवाब : पिछली किताबों और कलामों की ताईद को तसदीक कहते हैं और आने वाले कलाम की तारीफ को बशारत। सारी आसमानी किताबें अपने से पहलों की तसदीक करती थीं और आइंदा की बशारत देती थीं। कुरआन पाक की यह ख़ुसूसियत है कि वह मसद्दक़ (तसदीक़ करने वाला) तो हर किताब का है मगर मुबश्शिर (बशारत देने वाला) किसी किताब का नहीं क्योंकि इसके बाद न कोई नया नबी आयेगा और न कोई आसमानी किताब। यह हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफत व ख़ुसूसियत है।

सवाल : जब कुरआन ने तमाम पिछली किताबों को मंसूख़ (मुस्तरद) कर दिया तो उनकी तसदीक़ कहां की? (यहूदी, ईसाई)

जवाब : यह नुस्ख़ ही उनकी तसदीक़ है उन किताबों ने जो खबर दी थी कि हम कुरआन से मंसूख़ होंगे, अगर कुरआन आकर इन्हें मंसूख़ न करता तो उनकी यह खबर झूटी हो जाती। नीज़ नस्ख़ तसदीक़ के ख़िलाफ नहीं, कुरआन ने यह फरमा दिया कि वह सारी आसमानी किताबें सच्ची हैं मगर उनके अहकाम अब जारी और काबिले अमल नहीं। जैसे बच्चे की उम्र वैसे उसकी ग़िज़ा जैसी दुनिया की उम्र वैसे उसके लिये अहकाम।

सवाल : कुरआन में है कि अल्लाह तआला रहमे मादर में खुद बच्चों की सूरतें बनाता है और हदीस शरीफ में है कि यह काम फरिश्ते के सुपुर्द है। तो कुरआन व अहादीस में मताबकत क्यों कर हो? (आरिया)

जवाब : रब के हुक्म से फरिश्ता रहम मादर में सूरतें बनाता है और यह

भी कहा जाता है कि फरिश्ते ने सूरत बनाई। रब तआला हाकिम है और ख़ालिक है। तमाम मख़लूक उसकी गुलाम। गुलाम का फेअल मालिक का फेअल होता है जैसे कि कहा जाता है कि बादशाह ने मुल्क जीत लिया। हालांकि लश्कर ने जीता है। उसमें उस जानिब इशारा हो गया कि जैसे इस फरिश्ते को खुदा नहीं कह सकते जो रहम में सूतरें बनाकर उनमें रूह फूंकता है। ऐसे ही हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को मिटटी के परिन्दों में रूह फूंकने और मुर्दों को ज़िन्दा करने और बीमारों को अच्छा करने से खुदा नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह दर असल खुलदा के फेअल हैं। यह हज़रात इस का मज़हर हैं। हज़रत इसराफील अलैहिस्सलाम सूर फूंक कर सारे ही मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे तो क्या वह खुदा हैं? हरगिज़ हरगिज़ नहीं। ऐसे ही हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम भी खुदा नहीं। ईसा अलैहिस्सलाम की इबनियत (खुदा का बेटा होना) खुदा होना सिर्फ कुरआन से ही नहीं बल्कि इंजील से भी बातिल हैं जो उनके पोप पादरियों ने गढ़ लिया है।

सवाल : अल्लाह तआला फरमाता है कि हमने सारे कुरआन को आसान कर दिया है। अगर इसकी बाज़ आयतें समझ में न आ सकें तो सारा कुरआन आसान कहां रहा? जैसा कि आयत मक़्तआत वग़ैरह वग़ैरह। यह आयाते कुरआनिया है। जिनके मायने मुफस्सेरीने किराम ने भी नहीं बताया। (चकरालवी)

जवाब : सारा कुरआन ज़िक्र के लिये आसान है न कि समझने के लिये। यहां ज़िक्र से मुराद या तो याद करना है या नसीहत पकड़ना है और वाक़ई मुतशा बेहात का याद करना भी आसान कि बच्चे रट लेते हैं पूरा कुरआन हिफ्ज़ कर लेते हैं। दूसरी आसमानी किताबों में यह वसफ नहीं था। एक मर्तबा मुफस्सिरे कुरआन सदरुल अफाज़िल रहमतुल्लाह अलैहि से राम चंद आर्या ने कहा कि मौलाना मुझे आपके कुरआन के चौदह पारे याद हैं, बताईये आपको मेरा वेद कितना याद है? फरमाया, पंडित जी यह तो मेरे कुरआन का कमाल और मोजिज़ा है कि दोस्त तो दोस्त दुश्मनों के सीनो में भी पहुंच गया और यह तुम्हारे वेद की कमज़ोरी है कि दोस्तों के सीने में घर न कर सका। बताओ है तुम से कोई जिसका चारों वेद मुंह पे लफ्ज़-ब-लफ्ज़ याद हों? है कोई जो तौरेत, ज़बूर और इंजील का हाफिज़ हो? मगर अलहम्दोलिल्लाह कुरआन के हाफिज़ आपको करोड़ों मिलेंगे और इन किताबों को दुनिया में आये हुए हज़ारों साल हो चुके हैं

लेकिन हिंदुस्तान की सरहदों से आगे न निकल सके मगर हमारे कुरआन का यह कमाल और मोजिजा देखो कि थोड़े ही अर्से में पूरी दुनिया पे छा गया। दुनियाए कुफ्र कुरआन की नशर व इशाअत पर हजार हा पाबंदियां लगवाई। अपने मुल्क के सरहदों को भी सील कर दिया ताकि कुरआन हमारे मुल्क में घुसने न पाये। मगर उनकी यह सारी नापाक कोशिशें बेकार साबित हुईं। कुरआन उनके मुल्क के सरहदों को पार करके लोगों के दिलों में उतर गया। यह कुरआन का जबरदस्त मोजिजा और कमाल नहीं तो फिर और क्या है? कुरआन मेरे नबी के मोजिजों में से एक अजीम मोजिजा है जिसे दुनिया कयामत तक सर के आंखों से देखती रहेगी। जिसे मेरे हुजूर का मोजिज़ा देखना हो वह कुरआन देख ले। आज तक दुनिया कुरआन की मिसाल न ला सकी तो साहबे कुरआन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिस्ल कहा से लायेगी?

सवाल : कुरआन में है कि सिर्फ कुफ्फार व मुश्रेकीन ही जहन्नम के ईंधन हैं और वही जहन्नम में जायेंगे, हालांकि हदीस शरीफ से साबित है कि गुनाहगार मुसलमान भी कुछ दिन जहन्नम में रहेंगें। उनमें मताबक़त क्यों हो?

जवाब : जहन्नम सिर्फ कुफ्फार व मुश्रेकीन ही के लिये बनी है। मुसलमानों का जाना उनके गुनाहों के तुफैल है या जो काफिरों जैसे आमाल करें, या मुसलमानों के मुकाबिल उनसे मुहब्बत व उलफत रखें उनकी जय जयकार मनायें, मुसलमानों के साथ ग़द्दारी करें, मुसलमानों के ख़िलाफ़ उनसे साज़ बाज़ करें वह मुसलमान उन्हीं के साथ जहन्नम में जायेंगे। जैसे लकड़ी के साथ कीड़ा भी आग में पहुंच जाता है। वह कीड़ा आग का ईंधन नहीं। दूसरे यह कि आग में जलाना दो तरह है। लुहार की भट्टी में लोहा भी जाता है और कोयला भी रखा जाता हैं यूं कुफ्फार व मुश्रेकीन वहां के ईंधन हैं और मुसलमान गुनाहों का मैल उतारने जायेंगे।

सवाल : कुरआन में है कि जन्नत में जन्नतियों का दिल बहलाने के लिये औरतें भी हैं तो यह जन्नत हुआ या रंडी ख़ाना? (आरिया)

जवाब : न मालूम पंडित जी के दिमाग़ में मग़ज़ है या कूड़ा जो हमेशा बे ढंगी ही बातें करते हैं। पंडित जी रंडी ख़ाना वह होता है जहां हराम कारी होती है जहां शुरफ़ा अपनी बीवियों के साथ ज़िन्दगी बसर करें वह रंडी खाना नहीं

कहलाता। अगर तुम्हारे घर में तुम्हारे बेटे, पोते, शादी शुदा आबाद हैं हर एक अपने अपने बीवी बच्चों के साथ ज़िन्दगी बसर करता है तो शायद अपने घर को रंडीख़ाना ही कहते होगें। कुरआन में है कि जन्नतियों के लिये पाक व साफ़ उनकी बीवियां होंगी। वह अपने शौहरों के सिवा किसी पर नज़र भी नहीं उठायेंगी। ऐसे पाक व सुथरे घर को रन्डी ख़ाना कहना पंडित जी के लायक़ है। गंदगी का कीड़ा गुलाब के फूलों से घिन करता है। पंडित जी न्यूग के आदी हैं इनके धर्म में एक औरत का एक वक़्त में द्रोपदी बनकर पांच ग्यारह खाविंदों के पास रहना इबादत है। वह ऐसी मुक़द्दस जगह को रंडीख़ाना न कहें तो क्या कहें?

सवाल : यह हूरें दुनिया से बुलाई गयी हैं या जन्नत ही में पैदा होकर वहां रहती हैं? अगर दुनिया से बुलाई गयी हैं तो मर्दों को क्यों नहीं बुलाया गया और अगर वहां ही पैदा हुई तो क़यामत तक उनका कैसे गुज़ार होगा, उनके लिये कौन से मर्द हैं? (सत्यारथ प्रकाश)

जवाब : हूरें जन्नत ही में पैदा की गयी हैं और जैसे इन्हें खाने पीने की ज़रूरत नहीं ऐसे ही वह मर्द की हाजत से पाक हैं। वह जन्नतियों के आराम के लिये पैदा की गयी हैं। दुनिया में भी औरत पर कई हाल आते हैं, बचपन में उसे मर्द की कोई ज़रूरत नहीं होती फिर जवानी में भी कभी मर्द के लायक़ होती है कभी नहीं। फिर बुढ़ापे में मर्द से बिल्कुल बे परवाह। जब यहां यह कैफ़ियत है तो वह जन्नत है वहां के हालात अक़्ल से दूर हैं।

सवाल : अगर खुदा को इस्लाम ही दीन पसंद है तो क्या इस्लाम से पहले कोई दीन पसंद न था? सब बुरे लोग थे क्या? (आरिया)

जवाब : इस सवाल के दो जवाब हैं एक यह कि यह हुक्म इस्लाम आ जाने के बाद का है यानी इस्लाम के होते हुए कोई दीन खुदा को प्यारा नहीं। पिछले पैग़म्बरों के दीन अपने अपने वक़्त में हिदायत थे मगर कुरआन आने के बाद अब सिर्फ़ इस्लाम ही हिदायत हैं रात में चिरागों की ज़रूरत थी। सूरज निकलने पर सब को गुल कर दिया गया। दूसरे यह कि यहां इस्लाम से हर आसमानी दीन मुराद है। यानी हमेशा रब तआला को इस्लाम ही पसंद रहा। तमाम पैग़म्बरों के दीन अपने अपने वक़्त में इस्लाम ही थे मगर हुज़ूर के तशरीफ़ लाने के बाद [illegible] इस्लाम है।

सवाल : भला मुसलमानों के खुदा की तरफदारी तो देखो कि जो दीन इस्लाम में न हों उन्हें काफिर कह दिया। गैर मजहब के नेक लोगों से भी ताल्लुक न रखना और बुरे मुसलमानों से रिफाकत की तालीम देना खुदा के लायक नहीं। कुरआन का खुदा और मुसलमान तास्सुब परस्त हैं। (आरिया)

जवाब : पंडित जी ने इसमें दो एतेराज़ किये। एक गैर मुस्लिमों को काफिर कहना। दूसरे कुफ्फार से अलग रहने का हुक्म कि यह तास्सुब है। पंडित जी, क्या काफिर कोई गाली है? काफिर के मायने हैं छिपाने वाला, इंकार करने वाला, पंडित जी क्या तुम कुरआन, तौहीद, रिसालत और इसलामी कवानीन के मुन्किर नहीं हो? अगर हो तो इस लफ्ज़ से चिढ़ते क्यों हो? अगर नहीं यह लफ्ज़ बुरा लगता है तो इस्लाम को मान लो और मुसलमान हो जाओ, तुम्हें कोई काफिर नहीं कहेगा। तुमने काफिर के लफ्ज़ का इतना बुरा माना अपनी गिरेबान में मुंह डालकर देखो कि तुम ने अपने गैर मज़हबों को क्या खिताब दिये। मुसलमानों को मलिछ कहते हो, किसी को अछूत कहते हो और अगर किसी अछूत की परछायीं पड़ जाये तो सात मर्तबा गंगा स्नान करते हो। मुसलमान जो ईमान लाये उसे कुफ्र व शिर्क की तरफ दोबारा लाने के लिये शिद्धी करते हो। दूसरी कौमों से कुत्तों से ज़्यादा हकीर व ज़लील जानते हो। अपनी किताब सत्यारथ प्रकाश दूसरा हिस्सा, ग्यारहवां बाब पढ़ो फिर मुसलमानों पर तास्सुब कर इल्ज़ाम लगाना, मुसलमानों पर तास्सुब का इल्ज़ाम ग़लत है। जिस कदर मुसलमान कौम फराख़ दिल है कोई कौम ऐसी नहीं। मुसलमान मुल्क, कौम, कबीला, ज़ात, बिरादरी और हस्ब नस्ब की कैदों से आज़ाद हैं हर मुल्क और हर कौम का मुसलमान इसका भाई है, न किसी इंसान को गंदा और अछूत समझता है, न ही किसी को हकीर व ज़लील और न ही बिला वजह किसी सक लड़ता है मगर तुम्हारे तास्सुब का हाल यह है कि इस्लाम और मुसलमानों की सूरत से बेज़ार हो। रहा कुफ्फार व मुश्रेकीन से अलग रहने का हुक्म तो यह बिल्कुल सही है। दौलतमंद को चाहिये कि चोर से अलग रहे। कुफ्र अड़कर लगने वाली बीमारी है। तंदरुस्त और सेहतमंद लोगों को इससे दूर रहना बेहतर है। कुफ्र का ज़हर सांप के ज़हर से बदतर है। यारे बद (बुरा साथी) से मारे बद (ज़हरीला सांप) अच्छा है क्योंकि बद मारे से जान का ख़तरा है मगर बुरे दोस्त और साथी से दीन व ईमान का ख़तरा है। हमने बहुत से लोगों को देखा जो अपने

सियासी मफाद के लिये दीन व ईमान सब कुछ बेच डाला। इस्लाम कहता है कि कुफ्फार व मुश्रेकीन से ऐसी दोस्ती जो मुसलमान के इस्लामी तहज़ीब व ख्यालात पर असर अंदाज़ हो वह हराम है। इससे बचने के लिये कहा गया है। इस्लाम को किसी काफिर व मुश्रिक से कोई बेर या दुश्मनी नहीं बल्कि जो कुछ है वह कुफ्र से है शिर्क से है बुराई से है जुल्म से है।

सवाल : हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुदा तक पहुचंने का वसीला हैं और मंज़िल मकसूद पर पहुंचकर वसीला छोड़ दिया जाता है अपना स्टेशन आ जाने पर ट्रेन गाड़ी छोड़ दी जाती है तो चाहिये कि जो कोई खुदा तक पहुंच जाये वह हुजूर को छोड़ दे?

जवाब : महज़ वसीला छूट जाता है मगर जिस वसीला से मकसद वाबस्ता हो वह कभी नहीं छूटता। बिजली रौशनी का वसीला हैं मगर रौशनी हासिल करने के बाद इन्हें छोड़ नही सकते वरना फिर अंधेरा ही अंधेरा है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दूसरी किस्म के वसीला है। इसलिये हर वली गौस कलिमे में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नमा ज़रूर लेगा। नमाज़ में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद व सलाम ज़रूर पढ़ेगा, गर्ज यह कि उनसे ताल्लुक और वसीला दुनिया में भी ज़रूरी है और आख़िरत में भी।

सवाल : कुरआन से मालूम हुआ कि आले इब्राहीम का तमाम जहानों से अफज़ल किया गया मगर औलादे इब्राहीम में बड़े बड़े कुफ्फार व मुश्रेकीन हुए।

जवाब : कुछ अफराद के ख़राब होने से पूरी कौम व जमाअत खराब नही हो जाती। चूंकि इस कौम में आला हस्तियां थीं कि खुद उन ही की वजा से कौम अशरफ हो गयी। नीज़ निसबत की अज़मत उन्हीं की वजह से जाती रही। बैतुल्ललाह (काबा शरीफ) में बुत रहे। सफा व मरवा पर बुत रहे मगर चूंकि उनकी निसबत कवी थी लिहाज़ा उनकी अज़मत में फर्क न आया। बुतों से भरे हुए काबा में हुजूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ें पढीं। इस बुत वाले काबा का तवाफ किया। निसबत इब्राहीमी से काबा और सफा व मरवा की हुरमत में कोई फर्क न आया तो बाज़ अफराद की खराबी से मिल्लते इब्राहीमी की अज़मत में फर्क कैसे आ सकता है। रब तआला ने फरमाया, ऐ मेरे महबूब! शहर मक्का की कसम हालांकि इस मक्का मोअज़्ज़मा में अबू जहल, अबू लहब,

और उमैया बिन खलफ जैसे नामवर काफिर भी थे मगर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निसबत ने उसे जो शर्फ बख्शा वह उन खबीसों की वजह से टल नहीं सकता।

सवाल : जब खुदा और फरिश्ते आज किसी से बातें नहीं करते तो पहले कैसे करते होंगे? अगर कहो कि पहले ज़माने के आदमी बे गुनाह थे अब नहीं तो यह भी गलत है क्योंकि जब ईसाईयों और मुसलमानों को मज़हब जारी हुआ उस वक़्त वहशी और नासमझ आदमी ज़्यादा थे। अब लोग ज़्यादा समझदार हैं?

जवाब : पंडित जी! आज भी नेक बंदों से खुदा और उसके फरिश्ते कलाम करते है। अलहाम, सच्ची ख़्वाबें दिल में नेक बात का पड़ जाना अच्छे पकीज़ा ख़्यलाात यह सब ख़ुदा ही के तरफ़ से हैं ना उस वक़्त रब सबसे कलाम करता था और न अब मगर उस वक़्त तक चूंकि दीन की खेती कच्ची थी इसलिये बाज़ इंसान पैग़म्बर भी होते थी जिन पर वही (अल्लाह का पैग़ाम) आती थी। इंसानों के नाम उन पर अल्लाह तआला का पैग़ाम आता था और बाज़ लोगों से फ़रिश्ते मुलाकात भी करते थे। अब जब कि खेती पक गयी लिहाजा ज़ाहिरी वही की कोई ज़रूरत नहीं रही और नुबूवत का सिलसिला ख़त्म हो गया जैसे कि खेत पकने के बाद बारिश न होनी चाहिये। ऐसे ही उस खेती के पक जाने के बाद नई वही की ज़रूरत नहीं। पंडित जी तुम ने यह भी खूब कहा कि पहले लोग वहशी ज़्यादा थे और अब ज़्यादा समझदार हैं। आरिया भी मानते हैं कि पहले दुनिया में इल्म, ज्ञान भक्ति ज़्यादा थी, अब पाप ज़्यादा हैं। इस लिये इस ज़माने को कलयुग कहा जाता है। अगर पिछले ज़माने से यह ज़माना अच्छा है तो चाहिये था कि वेद उस ज़माने में आता। पहले रूहानियत का ज़ोर था और अब माद्दा परस्ती का शोर है। चूकि तुम्हारा धर्म माद्दा परस्ती पर कायम है इसलिये तुम उस ज़माने को तरक़्क़ी का ज़माना कह सकते हो।

सवाल : अगर रब के अहकाम नबी मंसूख़ कर दें तो नबी रब से ज़्यादा इख़्तेयार वाले हुए कि उसके अहकाम को तोड़ दिया; कुरआन का नस्ख़ हदीस से हरगिज़ न होना चाहिये। (आरिया)

जवाब : नस्ख़ में न तो तोड़ फोड़ है न गुजिश्ता को झुटलाना बल्कि नस्ख़ मख़लूक के लिये तबदीलीए ये हुक्म है और ख़ालिक के यहां ख़त्म हुक्म। यानी

गुजिश्ता हुक्म को इतेहा पर पहुंचा देना नबी के हुक्म से किताब के अहकाम मसूख फरमाना दर हकीकत रब तआला ही का काम है क्योंकि नबी अपनी तरफ से कुछ नही कहते बल्कि वह जो कहते है वह वही इलाही होता है। नबी का एजाज है। तो गोया कि मसूख होना भी हुक्मे इलाही से है जैसे रब के हुक्म से बुखार आया दवा से उतर गया। यह हुवा बुखार का नुस्खा। दवा ने बहुक्मे परविर्दगार ही बुखार उतारा है मगर दवा का वास्ता दर्मियान में जरूर है। ऐसे ही पैगम्बरो का दर्मियान मे वास्ता होता है। दर हकीकत रब तआला ही मंसूख फरमाता है।

सवाल : कुरआन में है कि काफिरो ने मक्र किया और अल्लाह ने भी उनके साथ मक्र और अल्लाह बेहतरीन मक्र करने वाला है, जो आदमी मक्र करता है वह नेक आदमी नही कहलाया जा सकता चे जाये कि उसे खुदा कहा जाये, भला खुदा भी कही मक्र व फरेब कर सकता है? (आरिया)

जवाब : पंडित जी भी अजीब दिमाग के आदमी हैं। उर्दू का लफ्ज़ लेकर अरबी कुरआन पाक पर एतेराज़ कर रहे हैं। अरबी जुबान में मक्र के वह मायने नहीं है जो पडित जी कह रहे हैं। बल्कि वह मायने हैं जो आला हजरत इमाम अहमद रजा ने अपने तर्जमा कंजुल अमान में किया है कि काफिरों ने फरेब किया तो अल्लाह तआला ने उनके हलाक की खुफिया तदबीर फरमाई। यहां मकर के मायने अरबी में होते हैं खुफिया तदबीर और उर्दू में मकर फरेब को कहते हैं। और कुरआन उर्दू में नहीं अरबी में है। अग्रेजी में बुक के मायने हैं किताब उर्दू में इसके मायने हैं घूंसा मुक्का अगर किसी अंग्रेज़ी किताब में लिखा हो कि सिपाही ने बादशाह को बुक दिया तो उसके मायने यह नहीं कि घूंसा मार दिया। फारसी जुबान में मेहतर के मायने हैं सरदार, उर्दू में भंगी को मेहतर कहते हैं। अगर किसी फारसी किताब में बादशाह को मेहतर लिखा हो तो शायद आप जैसे अक्लमंद इसके मायने भंगी करेंगे। संस्कृत जुबान में सूर सूरज को भी कहते हैं और बहादुर को भी मगर हिंदी में सूर अंधे को कहते हैं लिहाज़ा यह एतेराज़ जुबान से नादानी पर मबनी है।

सवाल : कुरआन कहता है कि चौथे आसमान पर ईसा अलैहिस्सलाम ज़िन्दा हैं, तो वहां उनके खाने पीने का इंतज़ाम क्या है? और पेशाब पाखाना कहां जाते हैं?

जवाब : जब आप अपनी मां के पेट में थे वहां बावरची ख़ाना कहां था और संडास किस जगह बना था। जो रब आपको मां के पेट में बग़ैर बावरची ख़ाना और पाख़ाना के नौ माह ज़िन्दा रख सकता है वह ईसा अलैहिस्सलाम को आसमान पर बग़ैर इन जरूरतों के ज़िन्दा रख सकता है। इनकी ज़िन्दगी फ़रिश्तों सी है। बाज़ औलिया ने बरों ग़िज़ा न खायी, वह ज़िक्रे खुदा से ज़िन्दा रहे, ऐसे ही हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ज़िक्रे अल्लाह से ज़िन्दा हैं। अंबियाए किराम नूरानी बशर होते हैं, ज़हूरे बशरियत के वक़्त वह खाते पीते हैं और दुनिया से ताल्लुकात भी कायम रखते हैं मगर जब नूरानियत का ज़हूर होता है तो इन्हें ख़ाने पीने की क़तई ज़रूरत नहीं रहती। ईसा अलैहिस्सलाम ज़मीन पर बशरी हैसियत से रहे इसलिये इन्हें खाने पनी सांस लेने और बशरी तमाम तक़ाज़ों की ज़रूरत रही, मगर अब जब कि आसमान पर नूरानियत के साथ हैं तो वहां न हवा कि मोहताज न ही खाने पीने की ज़रूरत। हमारे सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कभी मुसलसल रात दिन कुछ नहीं खाते और रोज़ा रखते। यह नूरानियत की जलवागरी है।

सवाल : किसी शख़्स का दूसरे के हम शक्ल होना यह ग़ैर मुमकिन है यह कैसे हो सकता है कि बादशाह ततया नूस ईसा अलैहिस्लसाम की हम शक्ल होकर फांसी पा जाये? (बाज़ जोहला)

जवाब : शक्लें बदलना और किसी का दूसरे के हम शक्ल होना मुमकिन ही नहीं बल्कि वाक़ेय है। गोरे आदमी बीमारी से काले हो जाते हैं, काले गोरे बन जाते हैं। मूसा अलैहिस्सलाम का असा सांप बन जाता है। दुनिया में बहुत लोग आपस में हम शक्ल होते हैं। हां हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह खुसूसियत है कि कोई आपका हमशक्ल नहीं हो सकता। यहां तक कि शैतान भी ख़्वाब में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शक्ल बनकर नहीं आ सकता। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम सहाबा किराम की शक्ल बन कर आते हैं। जिन्नात मुख़्तलिफ जानवरों की शक्ल बन सकते हैं, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहुत से लोगों की शक्लें बदल दीं। हबशी को गूरा बना दिया, बद सूरत को खूबसूरत बना दिया। इस तरह की बहुत सी मिसालें सीरत की किताबों में मौजूद हैं।

सवाल : ईसाई हक पर हैं और मुसलमान काफिर। क्योंकि अल्लाह तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम से वादा किया था कि मैं तुम्हारे मानने वालों को कयामत तक कुफ्फार पर ग़ालिब रखूंगा। देखो आज हर जगह ईसाई ही ग़ालिब हैं। यूरोप व अमेरिका वालों को देखो, वह ईसा अलैहिस्सलाम ही की पैरोकार हैं।

जवाब : ईसा अलैहिस्लाम के सच्चे पैरोकार सिर्फ और सिर्फ मुसलमान हैं क्योंकि वह हुजूर अलैहिस्सलाम के फरमांबरदार हैं और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फरमाबरदारी तमाम पैग़म्बरों की इताअत व फरमा बरदारी है। क्योंकि तमाम नबियों ने खुसूसन हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने सबको नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने और आपकी इताअत फरमा बरदारी करने का हुक्म दिया। इंजील के सौलहवें बाब में आया है कि एक मर्तबा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम के सामने बड़े ही निराले अंदाज़ में वअज़ फरमाया। आप की वअज़ सुनकर लोगों की आंखें अश्क बार हो गयीं। मजमा में से एक औरत खुशी में झूम कर खड़ी हो गयी और कहने लगी मुबारक है वह मां ऐ ईसा मसीह जिसका दूध तूने पिया। मुबारक है वह गोद जिस में तुम झूले और खेले। आप ने फरमाया बेशक वाकई मेरी मां बड़ी मुबारक है, मगर मेरी मां से भी ज़्यादा और बढ़कर एक और मां इस दुनिया में आने वाली ह जिसकी गोद में तमाम नबियों का सरदार, रसूलों का ताजदार, अल्लाह का आख़िरी पैग़म्बर खेलेगा। अल्लाह ने सारी कायनात से पहले उन्हें अपने नूर से पैदा किया है। उनका ज़हूर मेरे बाद होगा। उनका नाम ज़मीन पर मुहम्मद और आसमान पर अहमद होगा। जिसने उनकी पैरवी की और उन पर ईमान लाया वह कामयाब हो गया और जिसने उनकी नुबूवत व रिसालत से इंकार किया उनकी नाफरमानी की वह दोनों जहां में ज़लील व रुसवा हो गया। (इंजील सौलहवां बाब) मालूम हुआ कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तेबा व फरमा बरदारी तमाम नबियों की फरमा बरदारी है। अगर बाप अपने बेटे को वसीयत कर जाये कि मेरे बाद फलां शख़्स का कहना माना करना तो यकीनी बात है कि बेटे का उस फलां का कहना मानना बाप की वसीयत पर ही अमल है जिससे बाप की रूह खुश होगी। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तेबा में सारे नबियों का फैज़ान है जिसके पास सौ हैं उसके पास सारी इकाइयां और

दहाईयां हैं। सारे अंबिया जमा के अदद हैं और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हासिले जमअ हैं। जैसे हासिल जमअ में सारे आदाद आ जाते हैं ऐसे ही हुजूर की गुलामी में तमाम नबीयों की गुलामी आ जाती है रहा फौकियत और गल्बा तो उससे दीन ग़ल्बा मुराद है न कि दुनियावी सलतनत और वह हमेशा मुसलमानों ही को हासिल है। हज मुसलमानों ही के लिये काबे का होता है न कि बैतुल मकदिस का। धूम धाम से तिलावते कुरआन पाक की जाती है न कि तौरेत इंजील की। बैतुल मुकद्दस में हज़ारों पैगम्बर आराम फरमा हैं और मदीना पाक में तमाम पैगम्बरों के सरदार जलवा फरमा हैं। मालूम हुआ कि शहंशाह मदीने में रहते हैं और हुक्काम बैतुल मुकद्दस में। खुलासा यह है कि दीनी फौकियत व बरतरी हमेशा मुसलमानों ही को हासिल है और रहेगी। रही कौमी फौकियत और सियासी ग़ल्बा तो वह भी अक्सर मुसलमानों ही को हासिल रही। अब अगर मुसलमान कौमी व सियासी लिहाज़ से गिर जायें तो उसमें उनका अपना कसूर है। इस गये गुज़रे जमाने में भी मुसलमानों की दुनिया में पैंसठ से ज़्यादा मुस्लिम मुमालिक हैं। इतनी सलतनत और मुल्क किसी कौम की नहीं। पाकिस्तान से लेकर मक्का मुकर्रमा तक एक इंच ज़मीन किसी काफिर की नहीं है। पाकिस्तान से निकलकर ईरान में, ईरान से निकलकर ईराक में, ईराक से निकलकर कुवैत में, कुवैत से हिजाज़े में और यह सब ममालिक मुस्लिम हैं। अगर आज भी मुस्लिम ममालिक सर जोड़ लें तो दुनिया में बहुत बड़ी ताकत बन जायें। मगर इस्लाम दुश्मन ताकतें मुस्लिम ममालिक को एक नहीं होने देती। मुसलमान मुल्कों को मुसलमान मुल्कों से लड़ाती हैं। अफसोस कि इनके नसीब में इत्तेहाद व इत्तेफाक नहीं। मौजूदा मुस्लिम ममालिक के हुक्मरां यूरोप, अमेरिका और इस्लाम दुश्मनों की कठपुतली बने हुए हैं। उनके इशारों पर नाच रहे हैं। यह सब अपने कुर्सी व इक़्तेदार की भीक अमेरिका और यूरोप से मांगते हैं। तारीख़ शाहिद है कि मुसलमान कभी भी कुफ्फार व मुश्रेकीन से डरे न मरे बल्कि यह आपस में ना इत्तेफाकी व ख़ाना जंगी का शिकार हुए। हमेशा अपनों ने ही अपनों को कुचला और ईसाईयों, यहूदियों ने आपस में मुसलमानों को और मुस्लिम हुकूमतों को एक दूसरे से लड़वाकर कमज़ोर किया।

एक हों मुस्लिम हरम की पासबानी के लिये
हिंद के साहिल से ले कर ता ब खाके कारागर

सवाल : हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को चौथे आसमान पर रखा गया और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़मीन पर। मालूम हुआ कि ईसा अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अफज़ल हैं, क्योंकि अल्लाह तआला से जो कुर्ब उन्हें है वह हुज़ूर अलैहिस्सलाम को नहीं। (इसाई)

जवाब : इस सवाल के बहुत जवाब हैं। निहायत आसान जवाब इस मिसाल से समझो कि किसी बादशाह ने किसी अफसर को अमन कायम करने के लिये कहीं भेजा मगर उससे रियाया न दबी और न ही वह कंट्रोल कर सका। बागियों ने अफसर को कत्ल करना चाहा, बादशाह ने उस अफसर को अपने पास बुला लिया ताकि उसे कोई नुक्सान न पहुंच सके। इसके बाद दूसरा अफसर भेजा गया जिसने तमाम बागियों और सरकशों पर कंट्रोल कर लिया और उन्हें अपना ताबेदार बना लिया। बादशाह ने हुक्म दिया कि चूंकि तुम से अमन व अमान कायम हुआ और तुम ने बागियों को कंट्रोल कर लिया लिहाज़ा तुम वहां ही रहो, और हुकूमत किये जाओ। फिर कभी उस अफसर को मेहमान बनाकर अपने यहां बुलाया, उसका जुलूस निकाला, खिलअत और तमगे इनायत फरमाये। यकीनन इस अफसर का यहां रहना पहले अफसर के बादशाह के पास रहने से अफज़ल है हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का चौथे आसमान पर जाकर फिर अहदे मुस्तफा में हुज़ूर की अमन में ज़मीन पर तशरीफ लाना और हुज़ूर का मेराज की रात में खुदा का मेहमान बनकर जाना और कौनेन में धूम धाम का होना, फिर सरकशों की सर कूबी के लिये दुनिया में तशरीफ लाना और फर्श पर जलवागर रहना इन दोनों में बड़ा फर्क है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ज़मीन पर इसी वास्ते रखे गये हैं कि हुज़ूर से यहां का निज़ाम कायम है। मर्कज़ दायरे ही में रहना चाहिये क्योंकि उसके हटने से सारा दायरा बिगड़ जाता है।

किसी ईसाई ने हज़रत शाह अब्दुल अजीज़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि से कहा कि ईसा अलैहिस्सलाम चौथे आसमान पर हैं और तुम्हारे पैग़म्बर ज़मीन पर दफन। लिहाज़ा हमारे पैग़म्बर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तुम्हारे पैग़म्बर से अफज़ल हुए? आपने फौरन उस ईसाई को जवाब दिया कि ऐ ईसाई सुन! तेरी यह दलील कवी नहीं, देखो बुलबुला पानी के ऊपर है और मोती पानी के नीचे, मगर मोती बुलबुले से अफज़ल और कीमती है इसी तरह एक मुशायरे में किसी ईसाई शायर ने मिसरा दिया कि-

दीने मुहम्मदी घटे दीन मसीहा बढ़ जाये

यह सुनकर एक सुन्नी शायर खड़ा हुआ और कहने लगा कि-

गर बराके नबवी से खरे ईसा बढ़ जाये

तो दीने मुहम्म्दी घटे दीन मसीहा बढ़ जाये

और ज़ाहिर है कि बराके नबी से खरे ईसा बढ़ नहीं सकता इसलिये दीने मुहम्मदी के घटने का सवाल ही नहीं। इमाम अहले सुन्नत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी मुहद्दिस बरैलवी रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते हैं-

तो घटाये से किसी के न घटा है न घटे

जब बढ़ाये तुझे अल्लाह तआला तेरा

सवाल : हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रहमते आलम हैं। आपने कभी किसी के लिये बद दुआ नहीं फरमाई, हत्ता कि तायफ वाले जिन्होंने आप पर बहुत जुल्म किया था उनके लिये भी बददुआ नहीं की फिर नजरान के ईसाईयों के मुकाबिल बद्दुआ की तैयारी क्यों फरमाई?

जवाब : हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़ाती मामलात में किसी पर बददुआ न की। जुल्म सहे, कुछ न फरमाया, मगर दीनी मामलात में किसी की रियायत भी न की। वह चूंकि दीन के दुश्मन थे इसलिये बद दुआ की तैयारी फरमाई। कुफ्फार से तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिहाद भी फरमाया और मूज़ी को हलाक करना ऐन रहमत है।

सवाल : सुन्नी बरैलवियों का अकीदा है कि हुजूर गुनाहों से पाक व साफ फरमा सकते हैं। ऐसा अकीदा रखना भी कुफ्र व शिर्क है। जिस तरह ईसाई अपने गुनाह पादरियों से माफ कराते हैं ऐसे ही सुन्नी बरैलवी मुसलमान नबियों से यह अकीदा रखते हैं। (वहाबी नजदी)

जवाब : बेशक हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम को गुनाहों से पाक व साफ करते हैं। हमारी ज़ाहिरी बातिनी गंदगी को दूर करते हैं और रब तआला फरमाता है कि ऐ मेरे महबूब आप उनके मालों से सदका लेकर उसके जरिये इन्हें पाक व साफ करो। दूसरी जगह इरशादे बारी तआला है कि जो लोग अपनी जानों पर जुल्म करें वह आप की बारगाहे आलिया में अगर माफी मांगे तो अल्लाह आपके सदके व तुफैल में इन्हे माफ कर देगा। इमाम अहले सुन्नत

पेशवाए उम्मत सरकार आला हज़रत शाह इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं कि गुनाहों की मग्फिरत और बख़्शिश के लिये दरे रसूल की हाज़िरी तिरयाक है। ईसाई अपने काले करतूतों और गुनाहों को अपने पादरियों और राहिबों से माफ कराते थे। यह यकीनन कुफ़्र है। लेकिन अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की करम नवाज़ी और आपके दुआओं से अल्लाह तआला गुनाहों को माफ फरमा दे तो यह कुफ़्र व शिर्क नहीं। नीज़ हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस माफी का इख़्तेयार अल्लाह तआला ने ही दिया है तो हुज़ूर की माफी रब तआला की माफी है। पादरियों पर अंबियाए किराम को कयास करना सख़्त ग़लती है। ईसाईयों ने ग़ैर मुख़्तार पादरियों को मुस्तकिल मुख़्तार माना इसलिये यह बे ईमान और काफिर हुए मगर सुन्नी बरैलवी मुसलमानों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जिनका नाम ही अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है, अल्लाह के हुक्म और उसकी अता से मालिक व मुख़्तार माना। यह ख़िलाफ तौहीद नहीं हुआ बल्कि तौहीद की जान है। सरकार आला हज़रत मुहद्दिस बरैलवी रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते हैं -

मैं तो मालिक ही कहूंगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब में नहीं मेरा तेरा

सवाल : कुफ्फार व मुश्रेकीन अपनी ज़िन्दगी में ज़मीन बराबर सोना ख़ैरात करें तो भी कबूल नहीं और न उन्हें आख़िरत में इसका सवाब मिलेगा हालांकि नो शैरवां आदिल को अदल की वजह से और हातिम ताई को सख़ावत की वजह से अबू लहब को हुज़ूर की विलादत की खुशी मनाने और अबू तालिब को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत की वजह से हल्का अज़ाब होगा। लिहाज़ा यह नजरिया ग़लत है कि काफिर के ख़ैरात से उसे कुछ फायदा नहीं पहुंचता? (रामचन्द्र आरिया)

जवाब : कुफ्फार व मुश्रेकीन के अज़ाब से बच जाने और जन्नत में जाने की इस्लाम की नफी की है और अहादीस शरीफ में अज़ाब में कमी का सबूत हैं मुल्ज़िम को जेल से रिहा कर देना और है और सी क्लास से निकालकर बी क्लास में मुन्तकिल कर देना कुछ और हैं बाज़ कुफ्फार का अज़ाब बाज़ नेकियों की वजह से हल्का ज़रूर हो जायेगा मगर ख़त्म न होगा।

सवाल : कुरआन में है कि कयामत के दिन काफिर ज़मीन भर सोना फ़िदया में दे देंगे मगर कबूल न होगा, तो उस दिन कुफ्फार के पास माल कहां होगा, कि वह पेश करेंगे और वह रद्द किया जावेगा? (आरिया)

जवाब : इस सवाल के दो जवाब हैं। अव्वलीन यह कि यह फर्ज़ी सूरत है कि अगर फर्ज़ करो कि काफिर के पास इतना सोना और वह इससे कुफ्र व शिर्क का फिदया अदा करना चाहे तो मंजूर न हो। चुनांचे हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला हल्के अज़ाब वाले काफिर से फरमायेगा कि अगर आज तेरे पास दुनिया भर की दौलत होती तो वह सब अजाब के फिदया में दे देता? वह अर्ज़ करेगा हां मैं सब कुछ देकर अज़ाब से छुटकारा पा लूं तो यह मेरे लिये मंहगा सौदा न होगा। अल्लाह तआला फरमायेगा कि दुनिया में हम ने तुझसे बहुत आसान और सहल चीज़ तलब फरमाई थी कि शिर्क न कर मगर तूने न माना, मेरी वहदानियत रसूलों की रिसालत पर ईमान न लाया।

सवाल : अगर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम इसलिये यहूदी या ईसाई नहीं हो सकते कि वह तौरेत व इंजील हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से पहले गुज़रे हैं इसी तरह वह मुसलमान भी नहीं हो सकते क्योंकि वह कुरआन से भी पहले गुज़रे, फिर उन्हें कुरआन ने मुसलमान क्यों कहा? अगर कहा जाये कि दीन इस्लाम के उसूल उनके मुताबिक हैं तो ईसाई यहूदी भी कह सकते हैं कि हमारे उसूले दीन मिल्लते इब्राहीम के मवाफिक हैं। इसका क्या जवाब होगा? (यहूदी, इसाई)

जवाब : इस सवाल के चंद जवाब हैं। एक यह कि तौरेत, इंजील ने कहीं दावा न किया कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम के उसूले दीने यही हैं या वह यहूदी या नसरानी थे। मगर कुरआन ने ऐलान फरमाया कि वह न यहूदी थे, न ईसाई बल्कि वह पक्के और सच्चे मुसलमान थे। लिहाज़ा यहूदी या ईसाई यह दावा नहीं कर सकते, मुसलमान कर सकते हैं कि एक सच्चे मुसलमान थे। दूसरे यह कि यहूदियत और ईसाईयत हरगिज़ मिल्लते इब्राहीमी के मवाफिक नहीं हो सकती क्योंकि उसकी असले अव्वल उलुवहियते मसीह और इबादते मसीह है। और ज़ाहिर है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़मासने में न ईसा मसीह तशरीफ लाये न उनकी उलुवहियते का कोई मोतकिद था। न उनकी पूजा पाट होती थी। जब माबूदे में फर्क हो गया तो दीन में इत्तेहाद कैसा? नीज़ हज हज़रत

ख़लील अलैहिस्सलाम की मिल्लत की आला इबादत थी जो न यहूद के दीन में है न ईसाईयों की मिल्लत में। तीसरे यह कि दरख़्त का पता फल से लगता है और उसूले दीन का पता आमाल से। इस्लाम के आमाल मिल्लते इब्राहीमी के मवाफिक हैं और दीगर मज़ाहिब इसके ख़िलाफ। हज, ख़त्ना, दाढ़ी, यह सब मिल्लते इब्राहीमी के मसायल हैं। जो सिर्फ और सिर्फ इस्लाम में रायज हैं। तुम्हारे दीन इन तमाम चीज़ों से ख़ाली हैं। मालूम हुआ कि सिर्फ दीने इस्लाम मिल्लते इब्राहीमी के मवाफिक है न कि यहूदियत और नसरानियत। यह तो हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की तालीमात के बिगाड़ का नाम है। चौथे यह कि सारे पैग़म्बर हमारे हुजूर के उम्मती हैं लिहाज़ा सिर्फ इब्राहीम ही को नहीं बल्कि सारे पैग़म्बरों को मुसलमान कहा जा सकता है न कि यहूदी व ईसाई। मुख़्तसर यह कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मुसलमान हैं यहूदी या ईसाई किसी भी तरह नहीं।

सवाल : हदीस शरीफ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़कात वसूल करने वाले आमिलों को भेजते तो उन्हें सख़्त ताकीद करते थे कि लोगों का बेहतरीन माल न लेना, दर्मियाना लेना और कुरआन में है कि बेहतरीन माल अल्लाह की राह में दिया जाये। तो यहां आयत और हदीस में तारुज़ हो रहा है?(नेचरी)

जवाब : कुरआन में देने वालों से कहा गया है और हदीस में लेने वालों से ताकीद यानी ज़कात वसूल करने वाला अफसर जबरन बेहतरीन माल न ले हां अगर माल वाला खुशी से बेहतरीन माल दे तो उसमें कोई हर्ज़ नहीं।

सवाल : कौम यहूद के गुनाहों की वज हसे जो पाक और हलाल चीज़ें उन पर हराम की गयी थीं वह सिर्फ गुनाहगारों पर की गयी थीं, या सब पर? अगर सिर्फ गुनाहगारों पर हराम हुई थीं तो नेकों पर ज़ुल्म हुआ कि करे कोई भरे कोई?

जवाब : सब पर ही हराम थीं। कभी मुजरिमों की वजह से नेकों पर भी मुसीबत आ जाती है अगर एक शख़्स कश्ती का तख़्ता तोड़ दे तो सारे ही डूबते हैं जो उस कश्ती में सवार हैं। इस से भी बाज़ गुनाहगारां की वजह से बारिशें बंद हो जाती हैं वबायें फैल जाती हैं जिससे तमाम को ही तकलीफ होती है।

मुजरिम या बाग़ी को पकड़ने या हलाक करने के लिये शहर पर बमबारी की जाती है तो बे क़सूर लोग भी हलाक हो जाते हैं। हां इसके एवज़ अल्लाह बे क़सूरों के दरजात व मरातिब बढ़ा देता है।

सवाल : हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने चांद, सूरज, सितारों का देखकर फरमाया, हाज़ा रब्बी यह मेरा रब है, यह तो शिर्क हुआ जो बहुत बड़ा गुनाह है। और पैग़म्बर तमाम गुनाहों से मासूम व महफ़ूज़ होता है। मालूम हुआ कि आप पहले मुश्रिक थे बाद में मोमिन मोहिद हुए। (बाज़ नादान)

जवाब : नाऊज़ूबिल्लाह आपकी ज़ात तो बहुत आला और बुलंद है। आप अबुल अंबिया हैं। कोई नबी किसी वक़्त शिर्क नहीं करते। यह हज़रात पैदाईशी आरिफ़ बिल्लाह होते हैं। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का उस वक़्त चांद सूरज और सितारों को रब फरमाना कुफ्फार को इल्ज़ाम देने के लिये था कि क्या तुम इसे मेरा रब बताते हो जो डूब जाये। क्या यह मेरा रब हो सकता है? यह एक सवालिया जुमला है। यह मेरा रब है? नहीं हरगिज़ नहीं, यह मेरा रब नहीं। हर नबी शिर्क से बे ज़ार और दूर है।

सवाल : हदीस में है कि मक्का में एक नेकी का सवाब एक लाख है और एक गुनाह का वबाल भी एक लाख है तो यह हरम में अमन कहां हुई? हरम तो पूरी मुसीबत बन गया। इसलिये अब्दुल्लाह बिन अब्बास मक्का में न रहे, तायफ में रहे।

जवाब : यह गुनाह की ज़्यादती हरम की वजह से नहीं बल्कि उसकी बे अदबी की वजह से है। कचहरी में हाकिम के सामने जुर्म करना दीगर मकामात पर जुर्म करने से बदतर है कि इसमें अदालत की तौहीन, बेहुरमती और हाकिम की बे अदबी भी है। कुरआन शरीफ का मंशा यह है कि जो मुजरिम रब तआला की पनाह लेने के लिये हरम शरीफ में आ जायें उसे दौज़ख से अमन होगी। यहां रहकर जुर्म करने वाला पनाह कब ले रहा है। वह तो ढटाई कर रहा है। पनाह लेने वाला कसूर से बचा करता है।

सवाल : तुम कहते हो कि काफिरों से दोस्ती न करो, तो क्या हम उनसे [illegible] रहें? अकेले मुसलमान सब काफिरों से कहां तक लड़ेंगे? फिर तो हम [illegible]जारत, धंधा, कारोबार, लेनदेन, कुछ भी नहीं कर सकते तो जियों क्यों [illegible]
([illegible]ाज मुस्लेमीन)

जवाब : मुहब्बत और चीज़ है, इत्तेफाक सुलह और मामलात कुछ और। अदाए हुकूक कुछ और अख़लाकी बर्ताव कुछ और। कुफ्फार से ऐसी मुहब्बत हराम है जो तुम्हें ईमान व इस्लाम से हटा दे। उनकी तरफ मैलाने कलबी हराम। बाकी दुनियावी मामलात अख़लाकी बर्ताव सब जायज़ बल्कि सुन्नत है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काफिरों और मुश्रिकों से चीज़ें खरीदी हैं। दुनियावी मामलात तय किये हैं बल्कि उनसे कर्ज़ की लेन देन भी किया है। लिहाज़ा कुफ्फार से ऐसी दिली मुहब्बत जो तुम्हें दीन व ईमान से फेर दे वह हराम है।

सवाल : कुरआन में है कि तुम अल्लाह से डरो और मुसलमान बन कर मरो। जिसे मालूम हुआ कि इस्लाम सिर्फ मौत के वक़्त ज़रूरी है इससे पहले इंसान के साथ कैसा भी रहे ख़्वाह वह काफिर बन कर रहे या मुश्रिक? (आरिया)

जवाब : इसका मतलब यह है कि मरते वक़्त तक मुसलमान ही रहो यानी तुम्हें मौत सिर्फ इस हाल में आये कि तुम पहले ही से मुसलमान हो। जैसा कि कहा जाये कि ज़ैद मेरे पास न आया गर इस हाल में कि वह सवार था। यानी सवार पहले से था, आया अब। दूसरे यह कि मरते वक़्त मुसलमान हो मगर यह किसे मालूम कि मौत कब है और कौन सा दिन है। हर सांस में एहतेमाल है कि यही आख़िरी वक़्त हो क्या खबर कि अंदर गयी हुई सांस वापस आये या न आये। बहरहाल हर वक़्त बेदारी ज़रूरी है पेशवाए उम्मत इमाम अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत शाह इमाम अहमद रज़ा कादरी मुहद्दिस बरैलवी फरमाते हैं-

सूना जंगल रात अंधेरी, छाई बदली काली है
सोने वालो जागते रहना चोरों की रखवाली है

सवाल : कुरआन में है कि तिफरका बाज़ी और इख़्तेलाफ बुरी चीज़ है और हदीस शरीफ में है कि मेरी उम्मत का इख़्तेलाफ रहमत है। लिहाज़ा यह हदीस कुरआन के ख़िलाफ है।

जवाब : हदीस मज़कूरा हरगिज़ कुरआन के ख़िलाफ नहीं क्योंकि कुरआन में नफसानी झगड़ा और दीनी फिरका बंदी से मुमानेअत है जो फित्ना फसाद की जड़ है और हदीस शरीफ में तहकीक का इख़्तेलाफ मुराद है जिसकी वजह से कुरआन व अहादीस की खूब छान बीन हो जाती है। उलमाए मुजतहेदीन

के इख्तेलाफ की बरकत से कुरआन और अहादीस के असरार व रमूज़ ऐसे वाजेह और साफ हो गये कि सुबहानाल्लाह। जिन दीनियों में इख्तेलाफ न हुए वहां तहकीक न हुई।

सवाल : कुरआन में है कि सारे मुसलमान तमाम नबियों की उम्मतों से अफ़ज़ल हैं हालांकि जितने गुनाह और बदकारियां मुसलमानों में हैं दूसरी क़ौमों में नहीं और जितने बुरे पेशे व काम मुसलमान करते हैं दूसरी क़ौमें नहीं करतीं। यह अजीब तमाशा है कि सबसे बदतर काम मुसलमान करें और तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल रहें? (यहूदी, इसाई, ग़ैर मुस्लिम)

जवाब : तमाम उम्मतों से अफ़ज़लियत का ताज क़ौम मुस्लिम के सर पर हैं यह बशारत क़ौमे मुस्लिम को है। रहे अफ़राद तो वह इस बशारत के जब मुस्तहिक होंगे जब वह अपने में तीन सिफतें पैदा करेंगे। यानी भलाई का हुक्म देना, दूसरी बुरी बातों से रोकना और तीसरा रब तअला पर सही मायनों में ईमान रखना। जो इन सिफात से महरूम हुआ वह मिन हैसुल फर्द (फर्द की हैसियत से) अपनी हरकतों की वजह से अफ़ज़लियत से निकल गया। रही मुस्लिम क़ौम में औलिया उलमा सुलहा तहज्जुद गुज़ार हमेशा रहेंगे। दूसरे यह कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निसबत और बुजुर्गाने दीन से ताल्लुक वह अल्लाह की रहमत है, जिससे हम जैसे गुनाहगार भी ख़ैरुल उमम हैं। और कुफ्फार के ज़ाहिरी परहेज़गारी भी खैरुलउमम नहीं। फर्स्ट क्लास का डिब्बा भी इंजन से कट जाये तो उसकी कोई क़दर व मंज़िलत नहीं और थर्ड क्लास का पुरना डिब्बा जिसकी कड़ी इंजन से मिली है काबिले क़दर है। वही मंज़िले मकसूद तक पहुंचेगा। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दम मुबारक की बरकत से मक्का व मदीना शरीफ मुकद्दस बन गया। हालांकि वहां कुफ्फार व मुशरेकीन भी थे, [illegible] बरकत से चमन के कांटे और घास भी अज़मत पा जाते कि लोग उनकी [illegible] आते हैं। लिहाज़ा गुनाहगार बद अमल बदकार मुसलमान इस निसबत [illegible] ख़ैरुल उमम के लकब से सरफराज़ किये गये।

[illegible] मैं गुनाहगार वह मेरे शाफेअ

[illegible] क्या कम है तू समझा क्या है

सवाल : फ़िलीस्तीन में यहूदियों की सलतनत क़ायम हो गयी। हालांकि कुरआन व अहादीस ने ख़बर दी कि क़यामत उन पर (क़ौम यहूद) ज़िल्लत व रुसवाई लाज़िम कर दी गयी है और अब तक हम सुना करते थे कि उनकी बादशाहत व सलतनत कभी क़ायम न होगी।

जवाब : उनकी सलतनत मुस्तक़िल अपनी नहीं बल्कि फ़्रांस, बर्तानिया और अमेरिका के ज़रिये से अरबां की सरज़मीन पर ग़ासेबाना क़ब्ज़ा है। अगर आज भी यह तीनों शैतानी मुमालिक दस्त बरदार हो जायें तो इसराईल अपनी मौत खुद आप मर जायें। इन्हें कहीं रहने का ठिकाना भी न मिले। अब तक यह जगह जगह से निकाले गये हैं, इन्हें कोई मुल्क भी क़बूल नहीं करता था, पुर्तगाल, जर्मनी पौलंड और रूस हर जगह से यह बड़ी बे आबरू होकर निकले। जब हिटलर ने इन्हें जर्मनी से निकाला तो उनके जहाज़ समुंद्र में मारे मारे फिरते थे। कोई मुल्क अपने यहां उतरने की इन्हें इजाज़त न देता था। १९४७ में बर्तानिया फ़्रांस और अमेरिका ने इनको ज़बरदस्ती अरबों की मुक़द्दस पाक सरज़मीन पर बसा दिया। यहूद की सलतनत का क़याम और उनसे मुसलमानों की जंग की ख़बर हदीस पाक में भी दी गयी है। यह सलतनत का क़याम उस जंग की तमहीद है जिस दिन आलमे इस्लाम में ख़ालिद का कोई जांनशीन पैदा हुआ उस दिन यहूदी ऐसे मारे जायेंगे कि इन्हें कोई पत्थर भी पनाह न देगा। वह भी पुकारेगा कि ऐ मुसलमान! मेरे पीछे यहूदी छिपा हुआ है, इसे मार। तीन सौ सत्तर अंबियाए किराम के क़त्ल का इल्ज़ाम इसकी गर्दन पर है। यह ऐसी क़ौम है कि इनसे अंबियाए किराम भी बेज़ार थे।

सवाल : मुसलमान संग दिल और बड़ी बे मुरव्वत क़ौम है, कुफ़्फ़ार की हलाकत पर खुशियां मनाती हैं फ़िरओन के ग़रक़ाबी पर अब तक खुशी मनाई जाती है कि उस दिन आशूरा (दसवीं मुहर्रम) का रोज़ा सुन्नत है। अबू जहल के क़त्ल की खबर पाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सज्दए शुक्र अदा किया यह तो मुरव्वत के ख़िलाफ़ बात है? (आरिया)

जवाब : यह कुफ़्फ़ार के हलाकत पर खुशी न थी बल्कि इस्लाम के उनकी आफ़त से बच जाने पर ख़ुशी थी। जैसे सांप के मर जाने या चोर पकड़े जाने पर खुशी मनाई जाती है, वरना जब कुफ़्फ़ारे मक्का क़ौमी हैसियत से मुसीबत

में गिरफ्तार हुए और सख़्त कहत में घिर गये, तो हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना पाक से वहां गंदुम जौ और दीगर अशियाए खुर्द नोश भेजे। ख्याल रहे कि मूज़ी और ज़ालिम शख़्स के मारे जाने की खुशी कुछ और है और कौमी मुसीबत पर खुशी मनाना कुछ और। पहली खुशी अच्छी है। दूसरी खुशी बुरी ११ दिसंबर वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर जब कुछ इस्लाम पसंदों ने हवाई जहाज़ों से हमला करके १३० मंजिला फलक बोस इमारत को ज़मीं बोस कर दिया जिसमें कुछ जानें भी गयीं। इस वाकिये के बाद दुनिया की टेलीवीजनों की स्क्रीन पर यह मंज़र भी दिखाया गया कि फिलीस्तीनी मुसलमान लड्डू बांटकर खुशियां मना रहे हैं। जश्न हो रहा है। यह न्यूज़ फिल्म में दिखाई गयी है ताकि दुनिया मुसलमानों को संग दिल, बे रहम, बे मुरव्वत कहे। हालांकि यह जश्न का मंज़र जो न्यूज़ फिल्म में दिखाई गयी वह अमेरिका के न्यूयार्क वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमले की खुशी का नहीं बल्कि फिलीस्तीनियों के खुद अपने किसी तकरीब का था। मगर इसको न्यूज फिल्म में दिखाकर दुनिया को यह तास्सुर कर दिया कि मुसलमान कौम बे मुरव्वत और संग दिल है। खैर दुनिया कुछ भी कहे, मुसलमान कौम को शराफत, मुरव्वत इंसानी दोस्ती की सनद किसी से लेने की जरूरत नहीं।

सवाल : अगर जंगे उहद में मुसलमानों की इमदाद के लिये फरिश्ते आये थे तो इन्हें शिकस्त क्यों हो गयी, क्या फरिश्ते भी कुफ्फार से हार गये? (आरिया)

जवाब : मुसलमानों को जंगे उहद में इसी इमदाद की बरकत से फतह हो गयी थी बाद में उनकी शिकस्त उनकी अपनी जंगी ग़लती से हुई कि अहम मोर्चा यानी वह दर्रा खाली कर दिया जब कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस दर्रे पर पचास तीर अंदाज़ों की एक जमीयत को तैनात कर दिया था और उनसे कह दिया था कि ख़्वाह हमारी फतह हो या शिकस्त मगर तुम मोर्चे से न हटना। मगर जब देखा फतह मुसलमानों की हो गयी तो उस जमीयत ने अपना मोर्चा छोड़ दिया और काफिरों का शिकस्त खुर्दा लश्कर उसी दर्रा से आकर मुसलमानों पर हमला कर दिया जिससे मुसलमान एक जीती हुई जंग हार गये। यहां खुदा को बताना मकसूद था कि मेरे महबूब की एक बात न मानने का यह अंजाम कि तुम्हारे फतह शिकस्त में बदल सकती है। नीज यह शिकस्त भी आइंदा नस्लों को जंगी कानून सिखाने के लिये थी कि कभी अहम मोर्चा न छोड़ें

और अपने कमांडर की इताअत करें। बल्कि हक़ तो यह है कि हज़ीमत व शिकस्त के बाद भी अल्लाह तआला ने मदद की वरना कुफ्फ़ारे मक्का उस वक़्त सारे मदीना पर टूट पड़ते और उसे बरबाद कर डालते। हत्ता के कुछ दूर पहुंचकर अबू सुफ़यान इस इरादे से फिर लौटे और ज़ख़्मी मुसलमान यह ख़बर पाकर फिर तैयार हुए मगर अबू सुफ़यान आगे बढ़ने की हिम्मत न कर सके।

सवाल : कुफ्फ़ार की हलाकत के लिये तो एक ही फ़रिश्ता काफ़ी है। तीन हज़ार फ़रिश्तों की क्या ज़रूरत है? क़ौमे लूत के बस्तियों को एक ही फ़रिश्ते ने उलट कर रख दिया था। (जोहला)

जवाब : यहां कुफ्फ़ार का हलाक करना मक़सूद न था बल्कि फ़क़त मुसलमानों की हिम्मत अफ़ज़ाई और उनका हौसला बढ़ाना मंजूर था। बेशक हलाकत के लिये एक ही फ़रिश्ता काफ़ी है। मगर इज़्ज़त अफ़ज़ाई के लिये लाखों फ़रिश्ते बराती बनकर आये थे हालांकि ले जाने के लिये एक ही बुराक़ काफ़ी था। उन कुफ्फ़ार को हलाक भी भला क्यों किया जाता उनमें से अक्सर तो वह थे जो आइंदा मुसलमान होकर इस्लाम की ख़िदमत करने वाले थे।

सवाल : कुरआन में है कि इंसान से अगर कोई ख़ता या ग़लती हो जाये तो माफ़ कर देना चाहिये, तो क्या ग़ैर इंसान को माफ़ी न देना चाहिये? (आरिया)

जवाब : इंसान को माफ़ी देना खूबी है, सांप, शैर, ख़ूंख़्वार जानवरों को माफ़ी देना इंसानों पर जुल्म है। हलाल जानवरों का ज़िब्ह करना और मूज़ी जानवरों का क़त्ल सवाब है। क्या तुम्हें मालूम नही कि एक ईराक़ी हाजी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा कि अहराम की हालत में मच्छर या मक्खी मारना कैसा है? आपने फ़रमाया कि ताज्जुब है कि तुम लोगों ने हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को क़त्ल कर दिया और आज मुझसे मक्खी मारने का मसला पूछ रहे हो? वाक़िया करबला के वक़्त यह मसला क्यों न पूछा? तुम लोग परहेज़गार कब से हुए? बहरहाल इंसानों पर जुल्म करके जानवरों पर रहम करना अहले हुनूद का तरीक़ा है। उनके यहां चूंटी को मारना हत्या और पाप है मगर बे गुनाह मुसलमानों का क़त्ल सवाब।

सवाल : हर जगह जन्नतों की तारीफ़ में यही आता है कि इसके नीचे नहरें बह रहीं हैं यह क्यों नहीं कि दरिया बह रहे हैं? दरिया में पानी नहर से ज़्यादा

होता है? (आरिया)

जवाब : नहर इसलिये कहा गया है कि नहर में हुस्न है, दरिया में हुस्न नहीं। नहर सीधी और खुशनुमा होती है और दरिया टेढ़ा, बे रौनक होता है। नहर फ़ायदेमंद होती है। मगर दरिया नुक्सानदेह कि वह सैलाब में शहरों को बहा ले जाती हैं नहर का पानी अपने क़ब्ज़े में होता है जितना चाहो छोड़ो, मगर दरिया का पानी क़ब्ज़े से बाहर। नीज़ बाग़ों कोठियों और महल्लात में नहरें जाती हैं दरिया नहीं। जैसा कि देहली के लाल किला और लाहोर के शालीमार बाग़ में देखा गया लिहाज़ा जन्नतों में नहरें ही चाहिये।

सवाल : नबी तो अल्लाह की तरफ़ से बड़ी ताक़तों के मालिक होते हैं फिर उन्हें जिहादे कुफ्फ़ार में फौजों की क्या ज़रूरत है? जब नबी यूशअ अलैहिस्सलाम डूबते हुए सूरज को रोक सकते हैं, क्या वह कुफ्फ़ार के यलग़ार को नहीं रोक सकते थे? (बाज़ बे दीन)

जवाब : तबलीग़ व जिहाद असबाब के मातेहत होते हैं ताकि नबी की पर्दा फ़रमाने के बाद भी जारी रहे। अगर वह हज़रात मोजिज़े के तौर पर कुफ्फ़ारको शिकस्त दे दिया करते तो बाद के लोग जिहाद की हरगिज़ हिम्मत न करते बल्कि कहते कि जिस हथियार से जिहाद होता था यानी मोजिज़ा वह तो चला गया अब जिहाद की क्या ज़रूरत? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कंकरों, पत्थरों से कलिमा पढ़ाया मगर अबू जहल से बतौर मोजिज़ा कलिमा न पढ़ाया कि इस तरह कलिमा पढ़वाने में अबू जहल का ईमान शरई न होता। मोजिज़ा का इज़हार अपनी हक़्क़ानियत को दिखाने के लिये होता है न कि किसी को जबरन मुसलमान बनाने के लिये। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काबा मोअज़्ज़मा से बुत मोजिज़ा से न निकाले बल्कि फौजी ताक़त से फतह मक्का के दिन निकाला ताकि क़यामत तक जिहाद पर अमल होता रहे।

सवाल : कुरआन में है कि कुफ्फ़ार के दिलों में मोमिनों का कुदरती रोब होगा मगर अब मामला बिल्कुल बर अक्स हैं अब तो मुसलमानों के दिलों में काफ़िरों का रोब है और काफ़िर मुसलमानों पर दिलेर हैं। तो यह बात क्यों कर सही हुई? (ग़ैर मुस्लिम हज़रात)

जवाब : दर असल यह वादा ग़ाज़याने उहद के लिये था जो पूरा हो चुका

कि अल्लाह तआला ने कुफ्फार के दिलों में उस वक़्त उन मुसलमानों का ऐसा रोब डाला कि वह वापस लौटने का इरादा करके न आ सके और मुसलमानों पर दोबारा हमला न कर सके। दूसरे यह कि वादा ता क़यामत मुसलमानों के लिये है मगर जब मुसलमान सही तौर पर मुसलमान रहें और अख़लास के साथ जिहाद करें, लेकिन अगर मुसलमान ख़ुद ही अपना जौहर खो दें कि न दिल में तक़वा हो न नीयत में अख़लास तो यह उनका अपना क़सूर है। अल्लाह तआला की रहमत अब भी तैयार है हम लेने वाले तो बनें। हदीस शरीफ में है कि एक ज़माना आयेगा कि मुसलमानों को मिटाने के लिये कुफ्फार एक दूसरे को ऐसी दावत देगे जैसे दस्तरख़्वान पर खाने वाले को बुलाया जाता है। सहाबा ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या उस वक़्त हमारी तादाद कम होगी? फरमाया तुम्हारी तादाद कम नहीं होगी बल्कि तादाद में तुम बहुत होगे लेकिन कूड़े करकट की तरह रहोगे। तुम में इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक नहीं होगा और आपसी फूट की वजह से तुम्हारी कोई हैसियत नहीं होगी, जैसे पानी के ऊपर कूड़ा और तिनका बह जाता है खुदा तुम्हारे दुश्मनों के दिलों से तुम्हारा रोब व खौफ ख़त्म कर देगा और तुम्हारे दिलों में दुनिया की मुहब्बत और मौत से नफरत डाल देगा।

कुव्वते फिक्र व अमल पहले फना होती है
तब किसी कौम की शौकत पे ज़वाल आता है

सवाल : ख़रीद व फरोख़्त में खरीदार, दुकानदार की चीज़ ले लेता है और दुकानदार खरीदार की चीज़ पर कब्ज़ा करता है अगर यह कुफ्फार कुफ्र के ख़रीदार है तो किस दुकानदार से उन्होंने कुफ्र लिया और उस दुकानदार ने जो उनसे ईमान लिया वह मोमिन हो गया या नहीं? अगर नहीं हुआ तो यह तिजारत क्यों कर दुरुस्त है? जब यह उससे कुफ्र ले कर काफिर हो चुके हैं तो चाहिये कि वह दुकानदार उनसे ईमान लेकर मोमिन हो जाये?

जवाब : इस सवाल के चंद जवाब हैं। एक यह कि उस चीज़ को खरीद व फरोख़्त फरमाना मजाज़न है। एक शय को छोड़कर दूसरी चीज़ इख़्तेयार कर लेने को ख़रीद व फरोख़्त फरमा दिया गया है। देखा अल्लाह तआला फरमाता है कि अल्लाह ने जन्नत के एवज़ मुसलमानों के जान व माल को खरीद लिया हैं हालांकि जन्नत भी अल्लाह ही की है और मोमिनीन का जान व माल

भी उसी के हैं। दूसरे यह कि शैतान ने उनका ईमान लेकर इस्तेमाल न किया, बरबाद किया, बहुत दफा ताजिर अपनी चीज़ दे देता है मगर दूसरे की चीज़ नहीं लेता। जैसे कोई शख़्स अपने गुलाम बाप या बेटे को ख़रीदे। वह फरोशिन्दा को कीमत का मालिक कर देता है मगर खुद अपने का मालिक नहीं होता।

सवाल : हज़रत हव्वा को आदम अलैहिस्सलाम की पसली से पैदा फरमाने में फायदा क्या? इन्हें भी मिटटी से क्यों न बनाया?

जवाब : इसमें बहुत सी हिकमतें हैं जिसे अल्लाह तआला खूब अच्छी तरह जानता है बजाहिर जो फायदे हैं वह यह हैं। अव्वल तो यह कि हव्वा को आदम अलैहिस्सलाम की बायीं पसली से पैदा फरमाकर अपनी कुदरत का इज़हार करना मकसूद है कि ऐ दुनिया वालो! देख लो मैं हूं तुम्हारा रब जो ज़िन्दा को ज़िन्दा से पैदा फरमा सकता है और इस बात पर क़ादिर हूं कि बग़ैर मां बाप के भी तुम को पैदा कर सकता हूं। वरना कानूने कुदरत यह है कि बेजान नुत्फे और अंडे से जानदार इंसान या जानवर बने। वहां ज़िन्दा को ज़िन्दा से बना कर दिखाया। दूसरे यह कि इस तरह की पैदाईश मे मर्द व औरत में मुहब्बत व उलफत कायम रही कि औरत मर्द का जुज़ हुई और जुज़ से मुहब्बत होती है। अगर हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा भी आदम अलैहिस्सलाम की तरह मिटटी से बनती तो आप के बराबर होतीं न कि आपके मातेहत।

सवाल : जन्नत में तो बहुत सी हूरें थीं क्या वह आदम अलैहिस्सलाम के लिये हलाल न थीं, अगर हलाल न थीं तो क्यों? वह तो बनी ही थीं इंसान के लिये? अगर हलाल थीं तो आपका दिल वहां क्यों घबराया और हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की ज़रूरत क्यों पेश आयी?

जवाब : उस वक़्त वहां हूरें थीं, मगर आपके लिये हलाल न थीं कि हूरें सिर्फ जज़ा के लिये बतौर सवाब हलाल होंगी। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को वहां सिर्फ रहने, खाने, पीने, की इजाज़त थी। हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेराज में जन्नत में तशरीफ ले गये। हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम जन्नत ही में रहते हैं। वहां की नेमतें खाते हैं। शोहदा की रूहें जन्नत ही में रहती हैं वहीं से उनको रिज़्क मिलता है। मगर किसी को हूरें हलाल नहीं कि उनकी हलाल होने का वक़्त कयामत है।

सवाल : आख़िर इसमें हिकमत क्या थी कि उस वक़्त हूरें होने के बावजूद हज़रत हव्वा पैदा की गयीं और हूरें अलहेदा रखी गयीं?

जवाब : उस की हिकमत बिल्कुल ज़ाहिर है कि हूरें सिर्फ़ ख़िदमत और राहत के लिये हैं न कि नस्ल की पैदाईश के लिये क्योंकि नस्ल की पैदाईश अपनी हम जिन्स बीवी से ही हो सकती है और हूरें बशर या इंसान नहीं। वह जन्नत के जाफ़रान से पैदा हुई हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ में है इसलिये जन्नत में नस्ल न होगी, सिर्फ़ जज़ा होगी। और उस वक़्त नस्ल की ज़रूरत थी कि दुनिया हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के नस्ल ही से आबाद होने वाली थी। उसी नस्ल के लिये इन्हें की हम जिन्स बीवी हज़रत हव्वा पैदा हुईं। आज भी इंसान का निकाह जिन्नात गाय भैंस जानवर से नहीं हो सकता कि उस निकाह से नस्ल हासिल नहीं हो सकती।

सवाल : कम उम्री में निकाह तंदरुस्ती के लिये भी मुज़िर है और अज़दवाजी ताल्लुकात के लिये भी नुक़्सानदेह है। जब कम उम्री से मजामअत शुरू कर देंगे तो उनमें ताकत व तवानाई कैसे आयेगी? नीज़ कम उम्री के ज़माने में उनके अख़लाक़ का पता नहीं चलता कि यह जवान होकर बदमाश होंगे या नेक। आज कल आम तौर से नौजवानों की कमज़ोरी घरों की ना इत्तेफ़ाकियां इस बचपन और कम उम्री की शादियों की वजह से है।

जवाब : शरीयत ने बचपन और कम उम्री की शादी को वाजिब नही कहा बल्कि जायज़ करार दिया। कम उम्री में शादी का हुक्म नहीं दिया है, सिर्फ़ छूट दी है क्योंकि बसा औकात इसकी ज़रूरत पड़ जाती है। मां बाप बूढ़े हैं, औलाद नाबालिग़ है वह चाहते हैं कि हम अपने मरने से पहले उनका कहीं निकाह कर दें, ताकि हमारे बाद उनके सास सुसराल उनकी अच्छी तरह तरबियत करें और इन्हें एक पूरे खानदान का सहारा मिल जाये। अगर यह नाजायज़ होता तो यह बूढ़े मां बाप यह फ़िक्र लेकर कब्रों में जाते। जवानों की कमज़ोरी बचपन और कम उम्री की निकाह से नहीं बल्कि सेनिमा बीनी तंबाकू का इस्तेमाल कालेज की आज़ादियों औरतों की बे पर्दगी लड़के और लड़कियों के मिलने जुलने इशक़िया नाविलों, फ़िल्मी गानों फहश किताबें, गंदी कहानियों, ब्लू फ़िल्मों, उरयां तसवीरों वग़ैरह वग़ैरह को देखने की वजह से है। अगर उन बच्चे बच्चियों की शहवतें इन ज़रियों से भड़का दी जायें और निकाह पर १८ साल की पाबंदी लगा दी जाये

निकाह पाबंद रहे और ज़िना आज़ाद तो ज़ाहिर है कि यह भड़की हुई शहवत हराम जगह ही सर्फ होगी और इसके नतायज जो होंगे वह हम और आप सब देख रहे हैं। छत का पानी परनाला के ज़रिये निकाल दो वरना छत फाड़ देगा। मकान ढा देगा, रही घर की ना इत्तेफाक़ी इसकी वजह मियां बीवी का हर एक के दूसरे के हुकूक़ से बेख़बरी है। सब की ज़िन्दगियां इस्लामी बना दो, देखो फिर कैसा चैन होगा। बहुत जवान लड़के भी अव्वलन नेक होते हैं। बाद में बदमाश हो जाते हैं। इसलिये जवानों का माहोल दुरुस्त करो। इन्हें अच्छी सोहबत दो। जि मुआशरे में रहने वाले नौजवान बिगड़ जाते है। वह मुआशरा बिगड़ जाता है और जब नौजवान सुधर जाता है तो समाज व मुआशरा सुधर और संवर जाता है।

सवाल : इस्लाम ने कुफ्फार व मुश्रेकीन को इस्लामिस्तान में मज़हबी आज़ादी दी है तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यहूदी ज़ानी का संगसार कराया? उन्हें मज़हबी आज़ादी क्यों न दी? हालांकि यहूदी मरतकिब ज़िना को मुंह काला करके शहर मे फिराते थे मगर इस्लाम ने संगसार का हुक्म दिया तो मज़हबी आज़ादी कहां हुई? (यहूदी इसाई)

जवाब : इसलिये कि ख़ुद तौरेत में भी ज़िना की सज़ा जुर्म थी। यहूद ने तबदील करके यह सज़ा घड़ी थी। हुजूर ने उन पर कुरआनी व इसलामी सज़ायें जारी ना कीं बल्कि खुद उन पर खुद उनके दीन की सज़ायें जारी फरमाईं। इसलिये इन्हें कुरआन न दिखाया बल्कि उनके पादरियों को जमा फरमाकर तौरैत शरीफ की आयत, रजम बज़रिये सैयदना अब्दुल्लाह बिन सलाम (जो कौम यहूद के सबसे बड़े आलिम थे और ऐलाने नुबूवत के बाद हुजूर पर ईमान ले आये) उनको दिखाकर रज्म फरमाया। अब भी इस्लामी हाकिम कुफ्फार पर उनके दीनी अहकाम जारी करेगा। उनके मुकद्देमात उनके मज़हब के मुताबिक तय करेगा। लिहाज़ा हदीस बिल्कुल साफ और वाज़ेह है।

सवाल : इस्लाम ने तौबा का कानून रखकर इंसान को गुनाह पर दिलेर कर दिया। जब मुजरिम को ख़बर है कि तौबा से गुनाह माफ हो जायें गे तो वह खूब गुनाह करेगा। सोचेगा कि ख़ूब गुनाह कर लो, मरते वक़्त तौबा कर लेंगे।

जवाब : तौबा की उम्मीद ही इंसान को गुनाहों से रोकती है। जब पकड़ का अंदेशा और माफी की उम्मीद हो तो इंसान बहुत एहतियात से ज़िन्दगी

गुज़ारता है। अगर माफी से न उम्मीद कर दिया जाये तो और ज़्यादा गुनाह करता है। सोचता है कि माफी तो होने की नहीं, चलो दस बीस गुनाह और कर लो। जब तक कत्ल के मुलज़िम को फांसी की सज़ा नहीं मिलती, इसे जेल में आज़ाद रखा जाता है क्योंकि इसे छूट जाने की उम्मीद होती है मगर फांसी का हुक्म होने पर उसे अलहेदा काल कोठरी में रखते हैं, और इसकी बहुत निगरानी करते हैं कि यह अब अपनी ज़िन्दगी से मायूस हो चुका है। मुमकिन है दो चार और भी कत्ल कर दे, गर्ज़ कि मायूसी गुनाह पर दिलेर करती है। यूं ही माफी का यकीन गुनाह पर उभारता है मगर उम्मीद और ख़ौफ इंसानों को गुनाह से बचाता है। ख़्याल रहे कि आर्या और हिंदुओं के यहां तौबा कोई चीज़ नहीं, गुनाह की सज़ा बंदे को ज़रूर भुगतनी पड़ती है और ईसाईयों के यहां तो तौबा की कोई ज़रूरत नहीं। ईसा अलैहिस्सलाम की सूली तमाम ईसाईयों के गुनाहों का कुफ्फारा हो चुकी। लिहाज़ा जो गुनाह चाहो करो यह ईसाईयों का नज़रिया और अकीदा है। जो लोग इस्लाम के नज़रिये तौबा पर एतेराज़ करते हैं वह अपने अकीदे पर गौर फिक्र करें। आपके पास जख़्म अच्छा करने वाला मरहम मौजूद हो तो उसका मतलब यह नहीं कि आप अपना जख़्म चाकू मार मारकर और बढ़ा लें और यह कहें कि जख़्म अच्छा करने वाला मरहम मेरे पास मौजूद है। अगर आप ऐसा करेंगे तो हर शख़्स आपको पागल कहेगा। मरहम जख़्म को मिटाने के लिये है, बढ़ाने के लिये नहीं। इसी तरह तौबा इसलिये है कि अगर कोई गुनाह हो जाये तो उसके ज़रिये अल्लाह से माफ करा लिया जाये न कि तौबा के भरोसे पर गुनाह करते रहें। अगर कोई शख़्स ऐसा करता है तो उसकी बहुत बड़ी ग़लती है। तौबा गुनाह करने के लिये नहीं बल्कि गुनाहों की माफी और शिफा के लिये है।

सवाल : इस्लाम ने मुसलमानों को तरक़्की से रोक दिया है और कहा कि तुम दूसरों की नेमत की तमन्ना न करो हालांकि इंसान को चाहिये कि दूसरों के बराबर बल्कि उनसे आगे बढ़ने की कोशिश करे? (आरिया और बाज़ बे दीन)

जवाब : इस्लाम ने दूसरों पर हसद करने से रोका है न कि तरक़्की करने से। इस्लाम कहता है कि नेकी भलाई की कामों में एक दूसरे की मदद करो और एक दूसरे पर सबकत करो मगर हसद न करो, हसद बुरी चीज़ है। तरक़्की की कोशिशें अच्छी हैं। सहाबा किराम आपस में नेकियों में एक दूसरे पर आगे निकलना चाहते थे। खुसूसन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर हज़रत

अबू बकर सिद्दीक पर बढ़ जाने की हमेशा कोशिश फरमाते थे मगर बढ़ न सकते थे। हुजूर फरमाते हैं कि जो किसी को नेकियां करते देखा और तमन्ना करे कि मैं भी ऐसी नेकी करता तो हश्र में दोनों साथ उठेंगे। यहां इन सिफात की तमन्ना करना मुराद है जो अल्लाह ने दूसरों के साथ खास कर दी हों, जैसे नुबूवत विलायत, कुतबियत या मीरास में दो गुना हिस्सा, गैर अहले को इसकी तमन्ना करना हराम, यह मुमकिन तमन्ना है न कि तरक्की से रुकने या रोकने की।

सवाल : मर्दों को हाकिम और औरतों को महकूम करार देना जुल्म है मर्द, औरत दोनों अल्लाह के बंदे हैं, बराबर होना चाहिये। (मौजूदा आजाद ख्याल)

जवाब : इस सवाल का जवाब दे दिया गया है, यहां बस इतना ही समझ लो कि जिस्म के आज़ा बराबर नहीं। आसमान के तारे यकसां नहीं। दरख्त में जड़ शाखें बराबर नहीं। मुल्क में बादशाह और रियाया बराबर नहीं। अमीर व ग़रीब बराबर नहीं। फिर मर्द व औरत बराबर कैसे हो सकते है? फर्क मरातिब पर दुनिया कायम है। औरत को मर्द का वजीर बनाया गया है, इसमें इसकी इज़्ज़त है। उसे ज़लील नहीं किया गया। इस्लाम ने दुनिया के हर मजाहिब से ज्यादा औरत को इज्ज़त दी है। इस्लाम के आने से पहले औरत बे वकार थी। बाज़ारों में जानवरों की तरह इसकी खरीद व फरोख्त होती थी। उसे जिन्दा जमीन में दफन किया जाता था। हैज़ व निफास के अय्याम में उसे अछूत समझा जाता था। मर्द की चिता पर उसे ज़िन्दा जालकर राख कर देना एक मजहबी फरीज़ा समझा जाता था वग़ैरह वग़ैरह। इस्लाम ने उसे मुआशरा में इज़्ज़त का मकाम दिया। औरत अगर मां है तो उसके कदमों में जन्नत है बहन है तो बाप की जायदाद में उसे हिस्सादार बनाया, बीवी है तो उसके साथ मुहब्बत प्यार का सलूक करने का हुक्म दिया, बेटी है तो इस्लाम ने फरमाया जब तुम खाने पीने की कोई चीज़ लाओ तो सब से पहले बेटी को दो बाद में बेटे को। जो लोग इस्लाम की तालीमात से बेखबर हैं वह ऐसे ही बकवासें करते रहते हैं।

सवाल : इस्लाम में मर्द औरतों से अफज़ल है तो क्या हम जैसे गुनाहगार मर्द हज़रत आयशा सिद्दीका और हज़रत फातिमा ज़ोहरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा जैसी औरतों से अफज़ल हैं?

जवाब : यहां मर्दों से मुराद खाविंद हैं। औरतों से मुराद बीवियां हैं। हज़रत

आयशा सिद्दीका व ख़ातून जन्नत हज़रत फ़ातिमा जैसी हस्तियों का तकाबुल अपनी ज़ात से न करो बल्कि कहो कि फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से बाबुल उलूम हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा अफ़ज़ल हैं कि उनके ख़ाविंद है और हज़रत सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अनहा से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अफ़ज़ल हैं।

सवाल : हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु तआला अनहा मोमिना थीं, और उनका ख़ाविंद फ़िरओन काफ़िर था तो कहा जा सकता है कि फ़िरओन काफ़िर हज़रत बीबी आसिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से अफ़ज़ल था। अब भी बाज़ बीविया नेक होती हैं और ख़ाविंद फासिक़ व बदकार तो क्या नेक बीवियां अपने फासिक़ व फाजिर बदकार का ख़ाविद से अफ़ज़ल हैं?

जवाब : ख़ाविंद अगरचे फासिक़ बल्कि काफ़िर हो, बीवी अगरचे मोमिना सालेहा नेक मुत्तक़ी परहेज़गार हो मगर दुनियावी अहकाम में ख़ाविंद हाकिम है। बीवी पर ख़ाविंद की हर जायज़ अहकाम मानना लाज़िम है। शरीयते इस्लामिया में तो काफ़िर मर्द की औरत मोमिना हो सकती नहीं अगर मर्द काफ़िर हो जाये तो उसकी मोमिना बीवी उसकी निकाह से ख़ुद बख़ुद ख़ारिज हो जायेगी। जिन शरीयतों में काफ़िर मोमिन के निकाह दुरुस्त थे उनमें भी ख़ाविंद हाकिम था और बीवी महकूमा थी। रही उख़रवी फजीलत तो यह मुसलमान बीवी ही को हासिल है न कि काफ़िर ख़ाविंद को। इसीलिये इस्लाम ने दुनियावी बरतरी का जिक्र फरमाया है।

सवाल : अल्लाह तआला ने ख़ाविंद को बीवी पर फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी क्यों दी? इसके बरअक्स बीवी को ख़ाविंद पर अज़मत व फजीलत दी होती और ख़ाविंद का ख़र्चा बीवी के ज़िम्मा रखा होता। (बाज़ लोग)

जवाब : इसलिये कि मर्द असल है औरत शाख़ है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की बायें पसली से हज़रत हव्वा पैदा हुईं। असल अपनी फरअ से अफ़ज़ल होना चाहिये। नीज़ औरतों पर माहवारी और साल में ऐसे अवारिज़ वारिद होते हैं कि उस वक़्त वह किसी मेहनत व कारोबार के लायक नहीं होतीं। माहवारी बच्चे की पैदाईश पर निफ़ास फिर बच्चे की परवरिश, इसे दूध पिलाना वग़ैरह औरत को दूसरे कामों के लायक नहीं रहने देते। अगर मर्द का खर्च बीवी

के जिम्मे होता तो बहुत सी दुश्वारियां हो जातीं। नीज़ बच्चे की परवरिश मां के जिम्मे होती है अगर माल व दौलत कमाना बीवी के जिम्मे होता तो बाप बिल्कुल आज़ाद रहता। यह भी औरत पर जुल्म होता। इसलिये अल्लाह ने जानी परवरिश मां पर माली परवरिश बाप पर रखी।

सवाल : बीवी को मारना उस पर जुल्म है उसकी इजाज़त क्यों दी गयी?

जवाब : जुल्म नहीं बल्कि उसकी इस्लाह है जैसे कभी अपने बच्चों और शार्गिदों को मारना इस्लाह है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमाया है कि अगर वह इताअत करने लग जावें तो उन पर मारपीट की राह न ढूंढों। इस्लाम ने ग़लत हरकत पर बीवी को मारने का हुक्म ज़रूर दिया है मगर साथ ही साथ यह भी कहा है कि तकलीफ़ दे मार न मारो। नाफ़रमान औरत को एक दम तलाक़ देने से बेहतर तो यह है कि आहिस्तगी से उसकी इस्लाह कर दी जाये घर न टूटने दिया जाये उस पर जुल्म व सितम न करो कि वह ख़ुदकुशी पर मजबूर हो। इस्लाम औरतों के साथ होने वाली तमाम ज़्यादतियों से सख़्ती से रोकता है और कहता है कि जिस घर में औरत पर जुल्म व सितम ज़्यादती होती है उस घर से ख़ैर व बरकत चली जाती है और उस घर का दौरे ज़वाल शुरू हो जाता है। आज यूरोप, अमेरिका में बात बात में तलाक़ें हो रही हैं। इसकी वजह यह भी है कि उनके मुल्क में खाविंदों को औरतों की इस्लाह की इजाज़त नहीं। औरत आज़ाद है, मर्द भी आज़ाद।

सवाल : आजकल मुसलमान वलियों, नबियों को पूजते हैं। उनकी क़ब्रों पर चढ़ावे, क़ब्रें, चूमना, क़ब्रों पर चादरें चढ़ाना, उनका एहतेराम करना, यह सब उनकी इबादत है कुफ्फार व मुश्रेकीन बुतों को पूजते थे, और यह क़ब्रों को अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि सिर्फ अल्लाह को पूजो। (वहाबी नजदी)

जवाब : इस सवाल के दो जवाब हैं एक इल्ज़ामी दूसरा तहक़ीक़ी। इल्ज़ामी जवाब तो यह है कि अगर चढ़ावा चढ़ाना अदब करना इबादत है तो काबा शरीफ पर ग़िलाफ चढ़ाना काबा की इबादत हुई। मकामे इब्राहीम पर बोसा देना उस पत्थर की इबादत हुई। संगे असवद और उलमाए देवबंद के हाथ चूमना, यह सब इबादतें हुईं और सब ग़ैर अल्लाह के पुजारी हुए? तहक़ीक़ी जवाब यह है कि इबादत हर वक़्त वह ताज़ीम है जो किसी को ख़ुदा की मिस्ल [illegible] अक़ीदा न हो कोई ताज़ीम इबादत नहीं होती।

इबादत में अपनी अबदियत और दूसरे की माबूदियत का अकीदा ज़रूरी है।

सवाल : तो फिर मुश्रेकीन अरब भी मुश्रिक न रहे क्योंकि वह अपने बुतों और झूटे माबूदों को रब का बन्दा ही मानते थे और कहते थे खुदाया तेरा कोई शरीक नहीं, सिवाए एक शरीक के जो वह भी तेरा बंदा ही है। कुरआन मजीद में है कि अगर तुम इन मुश्रिकों से पूछो कि आसमान व ज़मीन किसने पैदा किये तो वह कहेंगे कि अल्लाह ने। अगर तुम पूछो कि बारिश कौन बरसाता है, रोज़ी कौन देता है, तो कहेंगे अल्लाह। जब वह लोग आसमान व ज़मीन का ख़ालिक व मालिक और रोज़ी रसां सिर्फ़ खुदा को मानते थे तो फिर मुश्रिक क्यों हुए? इस वजह से कि वह अपने बुतों को गैबदां फरियाद रस वगैरह वगैरह मानते थे? यही अकीदा तुम सुन्नी अंबिया औलिया के लिये रखते हो लिहाज़ा तुम भी इन्हीं की तरह मुश्रिक हो? (वहाबी, अहले हदीस)

जवाब : मुश्रेकीन अरब अपने बुतों को खुदा की मिस्ल मानते थे। चुनांचे फरिश्तों को खुदा की बेटियां कहते थे। बाज़ बुतों को मुस्तकिल बिज़्ज़ात ख़ालिक बे नियाज़ मानते थे जैसे मजूसी, अहरमन और यज़दां को खैर व शर का ख़ालिक मानते हैं। बाज़ मुश्रेकीन अपने बुतों को खुदा का बन्दा, ममलूक मकबूज़ मान कर फिर उन्हें खुदा की तरह मानते थे कि पैदा होने में यह बुत खुदा के मोहताज हैं और दुनियावी इंतज़ाम में खुदा उनका मोहताज। हाजतमंदी और मुश्किल कुशाई में यह बुत और खुदा बराबर हैं। खुदा से बराबरी की दो सूरतें हैं एक यह कि बंदा को ऊंचा करके खुदा तक पहुंचा दिया जाये दूसरे यह कि खुदा को नीचा करके बंदों की सफ में दाखिल कर दिया जाये। यह मुश्रिक बुतों को खुदा का मोहताज मानकर उसे बंदों के बराबर कर देते हैं। लिहाज़ा मुश्रिक हैं बहरहाल शाने बे नियाज़ी खुदा की सिफत है नियाज़मंदी बंदे की सिफत फर्क उलूहियत और बंदगी इसी से है।

सवाल : जब अल्लाह तआला ज़र्रा भर ज़ुल्म नहीं करता तो कुफ्फार की नेकियां बरबाद क्यों कर देता है? उन्हें इनका सवाब क्यों देगा? (आरिया)

जवाब : कुफ्फार की नेकियां दर असल नेकियां ही नहीं क्योंकि कबूलियत नेकी के लिये ईमान शर्त हैं बगैर ईमान कोई अमल या नेकी खुदा के यहां काबिले कबूल नहीं। फिर उन्हें सवाब किस चीज़ का दिया जाये। बगैर वुज़ू नमाज़ नहीं

होती, बगैर ईमान नेकी कबूल नहीं होती। घुना हुआ दाना पौधा नहीं उगाता, ज़हरीली खाना नफा नहीं पहुंचाता, बद मजा आटा रोटी पुकाने के लायक नहीं। कुफ्फार की नेकियों का बदला दुनिया की नेमतें हैं वह यहां अल्लाह की नेमत खा पी लेते हैं दुनिया में ऐश व अराम कर लेते हैं यह उन्हें दुनिया ही में बदला मिल गया। आख़िरत में उनका कोई हिस्सा नहीं। मोमिन के लिये मामला बरअक्स है।

सवाल : दुनिया में जिन कौमों पर अज़ाब आया उस अज़ाब में छोटे, बच्चे जानवर भी हलाक कर दिये गये, उन्होंने क्या कसूर किया था? उनको बगैर जुर्म हलाक करना जुल्म है हालांकि कुरआन में है बेशक अल्लाह तआला अपने बंदों पर ज़र्रा भर जुल्म नहीं करता। (आरिया)

जवाब : दुनियावी अज़ाब कुफ्फार के लिये अजाब होते हैं, और बे कसूर इंसानों के लिये रहमते इलाही का ज़रिया इसके एवज उन्हें आख़िरत में अच्छे बदले दिये जायेंगे। रहे जानवर, तो उनका वजूद इंसानों के लिये था। जब इंसान ही न रहे तो इन सामानों की क्या ज़रूरत थी इसलिये वह खत्म कर दिये जाते हैं, लिहाज़ा यह हलाकत उनके लिये अज़ाब नहीं।

सवाल : दुनिया में छोटे, ना समझ बच्चों और दीवानों पर बीमारियां, तकलीफें क्यों आती हैं उन्होंने कौन सा कसूर किया है? बगैर कसूर इन्हें तकलीफ देना जुल्म है और खुदा कभी जुल्म नहीं करता? (आरिया)

जवाब : दुनिया की तकलीफें अज़ाब नहीं यह मुल्की इंतज़ाम है। निज़ामे आलम इसी से कायम है कि बाज़ अमीर हों, बाज़ गरीब हों। बाज़ आराम में हों, बाज़ तकलीफ में। मुफस्सेरीन किराम फरमाते हैं कि जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को कयामत तक पैदा होने वाली उनकी जरयात को दिखाया गया तो आपने देखा कि कोई अंधा है, कोई लंगड़ा है कोई बहरा कोई लूला, कोई तंदुरुस्त है कोई बीमार, कोई रो रहा है तो कोई हंस रहा है। यह देखकर आप ने बारगाहे खुदावंदी में अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! तेरे खज़ाने में किसी चीज की कमी नहीं है तूने सबको तंदरुस्ती क्यों नहीं दी? सबको माल व दौलत से नवाज़ा होता, तो तेरे ख़ज़ाने में कुछ कमी नही होती। फरमाया ऐ आदम! अगर मैं सब को तंदरुस्ती ही दूं, बीमारी किसी को न दूं तो मेरा नाम कौन लेगा।

सब को यकसां कर दूं कोई ग़रीब न रहे तो मेरा शुक्र अदा कौन करेगा? और मज़दूरी कौन करेगा? इसलिये हमने अमीरी, गरीबी सेहत और बीमारी पैदा की है ताकि दुनिया का यह निज़ाम चलता रहे। पंडित जी अगर आप खज़ानों के मालिक होते तो घर बाड़ छोड़ते। मुसीबतें और बीमारियां आना यह सब निज़ामे कुदरत में से हैं। पंडित जी तुम जो अपने बच्चों को स्कूल भेजते हो उन पर सख़्ती पाबंदी की कैद लगाते हो उन्होंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? यह पाबंदियां सख़्तियां अज़ाब नहीं, आइंदा तरक़्की का ज़रिया हैं। दुनिया की हर तकलीफ को अज़ाब समझना बहुत बड़ी ग़लती है।

सवाल : इसकी क्या वजह है कि किसी नबी पर सारे ईमान न लाये, बाज़ अंबियाए किराम के दो चार ही उम्मती हुए हर नबी के मुकाबले में कुफ्फार ज़रूरी हैं?

जवाब : इसमें नबी की ताकत दिखाना मकसूद है। अगर पहलवान का मुकाबिल ही कोई न हो तो उसकी ताकत का पता कैसे चलेगा। जुलमत से नूर, जहालत से इल्म, कुफ्र से ईमान, बातिल से हक, मुखालेफीन से नुबूवत की शान नज़र आती है। आज हुजूर का चर्चा ज़्यादा इस वजह से भी है कि आप के मुख़ालिफ और आपका ज़िक्र रोकने वाले, शाने नुबूवत घटाने वाले बहुत हैं। किसी पैग़म्बर पर तमाम लोग ईमान न लाये हर नबी के बाज़ मुन्किर ज़रूर रहे। आज भी किसी आलिम या शैखे तरीकत को सब नहीं मान सकते दुनिया में मुख़ालेफीन का होना भी ज़रूरी है। इससे बेदारी रहती हैं आमाल में निखार होता है। ग़फलतें दूर होती हैं।

तुंदीए बादे मुख़ालिफ से न घबराना ऐ उकाब
यह तो चलती है तुझे ऊंचा उड़ाने के लिये

जिस आलिम या शैख़ को सब लोग मानें और उसका कोई मुख़ालिफ न हो तो समझो कि ऐसा आदमी मुनाफिक है जैसा कि एक रिवायत में आया है कि सहाबए किराम ने एक आदमी की बहुत ही तारीफ की और कहा कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फलां शख़्स इतना अच्छा है कि आज तक उसका कोई मुख़ालिफ नहीं, फरमाया ऐसा शख़्स जहन्नमी है। अगर वह हक बात कहता तो ज़रूर लोग उसकी मुख़ालेफत करते। उसने सच्चाई और हक को छुपाया होगा। लोगों के हां में हां मिलाया होगा, इसलिये उसका कोई

मुख़ालिफ नहीं। यह हदीस हम सबके लिये बाइसे इबरत हैं नबियों, वलियों सालेहीन और उलमाए हक के मुख़ालिफ और दुश्मन हमेशा रहे हैं। जिस आलिम कोई बेदीन मुख़ालिफ और दुश्मन न हो वह आलिम खुद बे दीन और मुनाफिक है कि अपने मुनाफिकत और पिलपिले पन से तमाम दीनियों को राज़ी रखने की कोशिश करता हैं ऐ लोगो सिर्फ और सिर्फ अल्लाह से डरो और हक बात कहो ख़्वाह उस से तुम्हारा अज़ीज़ व अकाबिर रिश्तेदार को तकलीफ ही क्यों न हो।

सवाल : अल्लाह और रसूल की इताअत सिर्फ मुसलमानों पर ही जरूरी है तो इस्लामी हुकूमत में कुफ्फार को खुली इजाज़त है कि वह चोरियां डकेतियां करते रहें और उनसे कुछ कहा न जाये और वह कह दिया करें कि हम मुसलमान ही नहीं, इसलिये हम पर कुरआन व अहादीस के अहकाम जारी ही नहीं। इस दुनिया में फिर अमन व अमान कैसे कायम हो?

जवाब : इस्लामी इबादात के मुकल्लिफ सिर्फ मुसलमान ही हैं। रहे मामलात और मुल्की कवानीन तो वह सारे इंसानों पर जारी होंगे ख्वाह मोमिन हो या काफिर जिन की ख़िलाफवर्ज़ी करने पर सब को सज़ा मिलेगी। मगर इन कवानीन पर पाबंदी करने में आख़िरत का सवाब सिर्फ मुसलमान ही को है कुफ्फार को नहीं?

सवाल : कुरआन में है कि अल्लाह की इताअत करो, रसूल की इताअत करो और हाकिमों की जिसे पता चला कि अल्लाह और रसूल की इताअत के साथ सुलतान हुक्काम और हुक्मराने वक़्त की इताअत वाजिब है तो जनाब इमाम हुसैन ने यज़ीद की इताअत क्यों न की और अपनी जान क्यों दे दी? यज़ीद ने इन्हें नमाज़ रोज़ा से नहीं रोका था सिर्फ अपनी बैयत का उन्हें हुक्म दिया था? (खवारिज)

जवाब : एक है किसी को अपना हाकिम और सुल्तान बनाना। और एक है बने हुए हाकिम व सुलतान की इताअत करना। इन दोनों में बड़ा फर्क है। हमें बने हुए सुलतान हुक्काम की इताअत का हुक्म दिया गया है बशर्ते कि वह ख़िलाफे शरअ न हो न कि बदकारों और फासिकों को अपना बादशाह या हाकिम बनाने का। वहां यज़ीद पलीद बे दीन बे शरअ फासिक व फाजिर ख़लीफा बनाने

का सवाल था और आपकी बैयत पर उसका ख़लीफा और हाकिम बनना मौकूफ़ था। इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि फ़ासिक़ व फ़ाजिर बे शरअ बद अमल बद किरदार को हाकिम बनाना शरई कानून के ख़िलाफ़ है।

इस्तेक़ामत पे फ़िदा हैं तेरी ऐ दस्ते हुसैन
न गया हाथ में बे दीन के बैयत के लिये

सवाल : अगर हर गुनाहगार को हर जुर्म और गुनाह के बदले हुज़ूर के दरबार में हाज़िर होना ज़रूरी होता तो यह तकलीफ ताक़त से बाहर होती क्योंकि मदीना हज़ारों मील हम से दूर है हर गुनाह के बाद हम वहां कैसे पहुंचे?

जवाब : यहां हाज़िरी से आम हाज़िरी मुराद है। ख़्वाह जिस्मानी हो या दिली या रूहानी। जवाज़े नमाज़ के लिये काबा शरीफ तक पहुंच जाना ज़रूरी नहीं यहां रहते हुए भी रुख़ उधर कर देने से नमाज़ हो जाती है। हुज़ूर क़िब्लए दुआ हैं काबा तौबा हैं। दिल का रुख़ जहां से उस तरफ कर दोगे काम बन जायेगा। सूरज का नूर लेने के लिये चौथे आसमान पर जाना लाज़िम नहीं। जहां भी उसके साया रौशनी में आ जाओ रौशनी मिल जायेगी। हुज़ूर आसमाने कबूलियत के सूरज हैं। रब ने आपको फरमाया यानी चमकने वाला सूरज। जहां भी रहो उनके निगाहे इनायत में रहो बेड़ा पार हो जायेगा। उनसे तवस्सुल उनके दरबार की हाज़िरी ही तसव्वुर किया जायेगा।

अल्लाह की रहमत हर जगह है मगर हर जगह नहीं मिलती। रेलगाड़ी सारी लाइन से गुज़रती है मगर मिलती स्टेशन पर हैं हुज़ूर का आस्ताना आलिया रब की रहमत पाने का स्टेशन हैं इमाम अहले सुन्नत सरकारे आला हज़रत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत मुहद्दिस बरैलवी रहमतुल्लाह फरमाते हैं-

वही है रब जिसने तुझको हमा तन करम बनाया
हमें भीक मांगने को तेरा आस्ताना बताया

अल्लाह तआला ने बनी इसराईल से एक बार फरमाया था कि इस दरवाज़ए शहर (बैतुल मुकद्दस) में सज्दा करते हुए दाख़िल हो जाओ और वहां जाकर अर्ज़ करो कि मौला हमको बख़्श दे तो हम तुम्हारी ख़तायें बख़्श देंगे। देखो वहां स्टेशन (बैतुल मुकद्दस) ही पर भेजा गया था।

तू जो चाहे तो अभी मेल मरे दिल के धुलें
कि खुदा दिल नहीं करता कभी मेला तेरा

सवाल : कुरआन में है कि मौत के डर से बचने के लिये लोहे के एक महफूज़ किले में बंद हो जाओ तो भी मौत से तुम नहीं बच सकते। मालूम हुआ कि मौत हर जगह पहुंच जाती है। उससे कहीं अमान नहीं। तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और इदरीस अलैहिस्सलाम मौत से कैसे बच गये कि वह तो चौथे आसमान पर पहुंच गये और इदरीस अलैहिस्सलाम जन्नत में ज़िन्दा ही दाख़िल हो गये और मौत से बच गये यह अक़ीदा कुरआन के ख़िलाफ है? (बाज नादान)

जवाब : यह दोनों हज़रात भी मौत से नहीं बचे। इदरीस अलैहिस्सलाम तो मौत पाकर फिर ज़िन्दा होकर जन्नत में गये और ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से तशरीफ लाकर ज़मीन पर चालीस साल रहकर वफात पायेंगे और हमारे हुजूर के रौज़े में दफन होंगे। वह जगह आज भी रौज़ए मुत्तहेरा में महफूज़ व बर करार हैं मुसलमान का इन दोनों बुजुर्गों के मुताल्लिक यह अक़ीदा नहीं कि इन्हें मौत नहीं जैसे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत में रहे फिर वहां से आकर दुनिया में रहकर उन्होंने वफात पायी। कुछ तफसीर के हवालों से कब्र आदम का पता चलता है। बाज़ कहते हैं कि बूकुबैस के पहाड़ियों में है। बाज़ कहते हैं कि मैदाने मिना में मस्जिद ख़ेफ के पास है।

सवाल : जिसे खुदा गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता। लिहाज़ा उनका ईमान लाना ना मुमकिन है। फिर उन्हें तबलीग़े अहकाम तबलीग़े इस्लाम क्यों दी जाती है? (आरिया)

जवाब : इस सवाल का जवाब यह है कि जिसे अल्लाह तआला गुमराह रखना चाहे तो तुम रब तआला का मुकाबला करके उसे हिदायत नहीं दे सकते लेकिन अगर किसी गुमराह को रब तआला हमारी तबलीग़ से हिदायत दे दे तो हिदायत तो रब तआला देगा मगर सवाब हम को भी मिल जायेगा। मुबल्लिग़ को तबलीग़ का सवाब ज़रूर मिलता है। सामने वाला हिदायत पाये या न पाये। हकीम मरीज़ का ईलाज मरते दम तक करता है मरीज़ अगर मर भी गया तो हकीम की दवा की क़ीमत और फीस ज़रूर मिलेगी।

सवाल : हज़रत अली शेरे खुदा सिद्दीके अकबर और फारूके आज़म से अफज़ल हैं क्योंकि मुजाहिद गैर मुजाहिद से अफज़ल होता है और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बा मुकाबला सिद्दीके अकबर ज़्यादा जिहाद किये हैं तो वह हज़रत सिद्दीक अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अफज़ल हुए। (शिया)

जवाब : फिर तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी अफज़ल होना चाहिये कि हज़रत अली ने हुज़ूर से ज़्यादा जिहाद किये कि हुज़ूर के साथ भी जिहादों में जाते थे और बहुत दफा हुज़ूर आपको जिहाद में भेज देते थे, खुद न जाते थे। दूसरे यह कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उन जिहादों में सिर्फ शरीक हुए जिनमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ ले गये और जिनमें हुज़ूर तशरीफ ना ले गये उनमें खुद हुज़ूर ने जनाब अबू बकर सिद्दीक को अपनी सोहत व खिदमत में रखा। यह सोहबत व खिदमत उनके लिये जिहाद की शिरकत से कहीं अफज़ल व आला थी। अफज़लियत तो हुज़ूर की रज़ाजोई से मिलती है। तीसरे यह कि खिलाफते सिद्दीकी व फारूकी के ज़माने में बहुत जिहाद हुए और हज़रत अली के ज़माने में कुफ्फार से कोई जिहाद न हुआ जैसा कि तारीख़ दां हज़रात पर ज़ाहिर है। लिहाज़ा फिर भी वह दोनों हज़रात रहे। चौथे कि हज़रत सिद्दीके अकबर मदीना पाक में रहकर भी मुजाहिद रहते थे। तबलीग़ दीन की खिदमात बररब करते रहते थे। आपकी तबलीग़ से हज़रत उसमान, हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत सअद बिन अबी वकास, हज़रत उसमान बिन मअज़ून रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमाईन जैसे जलीलुकद्र सहाबा ईमान लाये। यह हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की कोशिशों ही से इस्लम कबूल किये। ख्याल रहे अशरए मुबश्शरा (वह दस अफराद का मुकद्दस गरोह जिनको अल्लाह के रसूल ने दुनिया में जन्नत की बशारत दी) यह हज़रात कतई जन्नती हैं। इस मुबारक जमाअत के अक्सर व बेश्तर हज़रात अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तबलीग़ से इस्लाम लाये। बेशक तमाम सहाबा का उम्मत में ऊंचा मकाम है। कोई वली गौस कुतुब इनके दरजात व मरातिब को नहीं पहुंच सकता मगर हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वह शाने अज़ीम है कि सहाबा में सबसे अफज़ल ऊंचा इन्हीं का

मकाम है। अफ़ज़ल बशर बादे अंबिया इन्हीं की शान में हुज़ूर ने फ़रमाया है।

काबा की ज़्यारत करने से हकदार जन्नत बनते हैं
भला इनको हम क्या समझें जो यार के घर में रहते हैं

सवाल : नमाज़ अपने वक़्त में फ़र्ज़ है तो हुज्जाजे किराम हज के दिन अस्र की नमाज़ जुहर की वक़्त में क्यों पढ़ते हैं?

जवाब : इस तारीख़ में हाजी के लिये नमाज़ जुहर पढ़ते ही अस्र का वक़्त आ जाता है। आज इसके लिये वक़्ते अस्र यही है जैसे नमाज़ ईशा पढ़ते ही नमाज़े वित्र का वक़्त हो जाता है और जिसने अभी ईशा न पढ़ी हो उसके लिये अभी वित्र का वक़्त नहीं हुआ। यूं ही ईशा पढ़कर सोने के बाद जब आंख खुल जाये तो वक़्त तहज्जुद उसके लिये हो जाता है मगर जिसने अभी ईशा न पढ़ी हो वह अभी सोया न हो उसके लिये यह वक़्त तहज्जुद नहीं। इसी तरह ग़ैर हुज्जाज के लिये जो हाजी जुहर बग़ैर जमाअत अदा करे उसके लिये भी वक़्त अस्र नहीं हुआ। मगर जो हाजी जमाअत जुहर से पढ़ ले उसके लिये वक़्त असर जुहर पढ़ते ही आ गया। यह कायदा ख़ूब अच्छी तरह याद रखना चाहिये।

सवाल : नाक, कान मर्दों को छिदवाने में क्या हर्ज है? हम जानवरों के नाक, कान छेदकर उसमें नाथ डालते हैं औरतों के नाक कान छेदकर उसमें ज़ेवर पहनाते हैं क्या यह अल्लाह की तख़लीक़ में तबदीली है और क्या यह हराम है? (बाज़ फ़ैशन परस्त)

जवाब : यहां वह कान छेदना मुराद है जो बुतों के नाम पर छोड़े जाने की अलामत हो। कुफ़्र की अलामत भी कुफ़्र है। जुन्नार एक धागा है मगर उसका बांधना कुफ़्र है कि यह कुफ़्र की अलामत है। जानवरों की नाक में सुराख़ करना यह ज़रूरत की अलामत है। इससे जानवरों की रस्सी डालकर काबू में किया जाता है। औरतों की नाक कान छेदना ज़ीनत के लिये उसे कुफ़्र से कोई निसबत नहीं। रहा आज कल हमारे कुछ नौजवान मार्डन बनने के शौक़ में नाक कान छिदवाकर सोने चांदी की बालियां पहनते हैं, औरतों की तरह ज़ैब व ज़ीनत करते हैं। ऐसे मर्दों पर अल्लाह की लानत है जो मर्द होकर औरतों की वज़अ इख़्तेयार करते हैं। और इन औरतों पर भी अल्लाह व रसूल ने लानत बरसाई है। जो औरत होकर मर्दों की वज़अ कतअ इख़्तेयार करती हैं। ख़्याल रहे कि हमारे बाज़

नौजवान हाथों में कड़े या धागे वग़ैरह बांधते हैं और इसी को किसी मज़हबी मुकाम से मंसूब करते हैं। यह भी ग़लत है। हर वह चीज़ जिसे एक मुसलमान की पहचान ख़त्म हो जाये इसका इस्तेमाल जायज़ नहीं।

हाए नाकामी मताओे कारवां जाता रहा
कारवां के दिल से एहसासे ज़ियां जाता रहा

सवाल : अगर अल्लाह की तख़लीक को तबदील करना ममनूअ है तो चाहिये कि हजामत कराना, ख़त्ना कराना, बकरे या बेल की ख़स्सी करना, मेंहदी वग़ैरह का ख़िज़ाब लगाना सभी हराम हो जाये कि उन सबमें अल्लाह की तख़लीक को बदलना हुआ जिस तरह अल्लाह ने पैदा किया है इसी तरह रहना चाहिये। (जोहला)

जवाब : हम हुक्म के बंदे हैं, जिन तबदीलियों का रब ने हुक्म दिया है वह तबदीलियां करना इबादत है। जिन तबदीलियों से मना फरमाया वह तबदीली हराम है। दाढ़ी के बाल मुंडवाना हराम, ज़ेरे नाफ के बाल न मूंडना हराम, हालांकि बज़ाहिर यह दोनों बाल ही हैं। हलाल जानवरों को खस्सी करना गोश्त अच्छा होने का ज़रिया है हत्ता कि ख़स्सी जानवरों की कुरबानी जायज़ ही नहीं बल्कि अफज़ल है। बेल, भैंसे को ख़स्सी करना इन्हें फरबा और ताकतवर करने का ज़रिया है। कुत्ते वग़ैरह हराम जानवरों की ख़स्सी करना बिला वजह है लिहाज़ा हराम है। गर्ज़ यह कि तग़य्युर ख़ल्कुल्लाह में अक़्ल को दख़ल कम है। इबादत, आदत, कुफ्र व इस्लाम में फर्क करने वाली चीज़ जुबाने पाक मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है इस जुबाने पाक ने जिसे इबादत कह दिया वह इबादत बन गया, जिसे कुफ्र फरमा दिया वह कुफ्र हो गया। दाढ़ी रखना सुन्नत और शिआरे इस्लाम है और सर पर चोटी रखना कुफ्र है और अहले हनूद की मज़हबी अलामत है। आबे ज़मज़म की ताज़ीम इबादत व सवाब है गंगा के पानी की ताज़ीम कुफ्र और अज़ाब है। यह फर्क ज़रूर ख़्याल रखना चाहिये।

सवाल : जब अल्लाह तआला ने ही कुफ्फार व मुश्रेकीन के दिलों पर मुहर लगा दी जिससे वह ईमान ला सकते ही नहीं तो फिर वह सज़ा के मुस्तहिक क्यों हुए वह तो काफिर रहे उस मुहर की वजह से जो रब ने उनके दिलों पर लगा दी। (आरिया)

जवाब : वह उसके मुजरिम हैं कि उन्होंने कुफ्र व शिर्क करके अपने दिलों

पर मुहर लगवा ली। मुहर लगने के असबाब उन्होंने ही जमा किये जैसे हम किसी को तलवार मारें और रब तआला उसे मौत दे दे तो मौत तो रब ने दी मगर असबाबे मौत हमने जमा किये। लिहाज़ा हम मुजरिम हैं ऐसे ही यहां है।

सवाल : किसी इंसान का दूसरे के हम शक्ल होना कानूने कुदरत के ख़िलाफ है नीज़ बिला कसूर किसी को जनावे ईसा के हम शक्ल करके सूली दिलवा देना जुल्म है और अल्लाह तआला इन दोनों ऐबों से पाक है। (मिरज़ाई)

जवाब : इस सवाल का जवाब दिया जा चुका है। यहां सिर्फ इतना ही समझ लो कि रब तआला कानून का पाबंद नहीं। वह कादिर मुतलक भी है। बहुत जगह हम शक्ल और तबदीली शक्ल होती रहती है। ततया नोस मुनाफिक था और ईसा अलैहिस्सलाम का छुपा दुश्मन। यह दो जुर्म उस सज़ा के लायक थे इसलिये अल्लाह ने इसे ईसा अलैहिस्सलाम का ही हमशक्लबना दिया जिसे लोग ईसा मसीह समझकर सूली पे ले जाकर चढ़ा दिया।

सवाल : अल्लाह तआला ने सारे नबियों के किस्से कुरआन मजीद में क्यों ब्यान न फरमाये? जब यह किताब कामिल है तो यह काम भी कामिल ही होना चाहिये? (यहूदी, इसाई)

जवाब : इसमें हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मोजिज़ा का इजलहार है कि जिन नबियों को हुजूर ने चमका दिया वह चमक गये, जिनका ज़िक्र न फरमाया उनके नाम व निशान दुनिया से ग़ायब हो गये। आज हज़रत मूसा व ईसा के नाम व काम इसलिये मशहूर हैं कि इन्हें हुजूर ने मशहूर फरमा दिया।

चमक तुझसे पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

सवाल : अगर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सारी खुदाई के नबी हैं तो कुरआन में सिर्फ इंसानों ही से ख़िताब क्यों है और सिर्फ इन्हीं को ईमान का हुक्म क्यों है?

जवाब : जिसके मतलब की बात कही जाये उसका पुकारा जाता है। हकीम व तबीब बीमार से कहता है ऐ बीमारो! यह दवा बड़ी मुफीद है। कोई आलिम किसी किताब का ऐलान करता है, ऐ तालिबे इल्मो! यह किताब बड़ी शानदार है। चूंकि रब तआला ऐ लोगो! कह कर हुजूर के मीलादे पाक का ऐलान

फरमा रहा है और आपकी विलादते पाक तो सारे जहान के सारे इंसानों के लिये मुफीद है लिहाज़ा किसी ख़ास जमाअत को नहीं पुकारा बल्कि ऐ लोगो! कहकर सारे इंसानों को पुकारा। यह निदा हुज़ूर की नुबूवत आम्मा की दलील है। जिस तरह रब की रबूबियत तमाम मख़लूक़ के लिये आम है इसी तरह नबी की नुबूवत तमाम मख़लूक़ के लिये आम है। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सारी मख़लूक़, जिन्न व इन्स, हैवानात नबातात चरिन्द व परिन्द मलायका, फ़रिश्तों वग़ैरह के नबी हैं। हत्ता कि तमाम अंबियाए किराम के भी आप इमाम और नबी हैं। आप अस्ल बिज़्ज़ात नबी हैं और तमाम अंबियाए किराम आपके सदका व तुफ़ैल में मगर चूंकि इंसान आप के असल मक़सूद हैं, मुख़ातिब हैं और तमाम मख़लूक़ इंसान के ताबेअ है इसलिये क़यामत तक के लिये सारे इंसानों से ख़िताब हैं क्योंकि हुज़ूर पर ईमान लाना सारे इंसानों पर लाज़िम व ज़रूरी है। नीज़ इंसान अशरफुल मख़लूक़ात है। जब इंसान पर हुज़ूर की इताअत वाजिब हो गई तो दूसरी मख़लूक़ पर भी वाजिब हो गई। नीज़ तमाम मख़लूक़ात में बड़े बड़े गुनाह और जरायम इंसान ही करता है। कभी ख़ुदाई का दावा करता है कभी रब के लिये बीवी बच्चे तसलीम करता है, कभी उसकी ज़ात में मख़लूक़ को शरीक करके बुत परस्ती करता है। जानवर यह हरकतें नहीं करते। रब की मर्ज़ी यह थी कि इस मुजरिम जमाअत को एक ऐसी नेमत दे दी जाये जिससे वह मलायका का मख़दूम बन जाये और अशरफुल मख़लूक़ात होना उसे सज जाये। जैसे रब ने भैंस को दूध शहद की मक्खी को शहद हिरन को मुश्क, सेप को मोती बख़्शा जिस से यह चीज़ें क़ाबिले क़दर हो गयीं। इसी तरह इंसान की इज़्ज़त व वक़ार हुज़ूर की बरकत से हुई। इंसानियत को जो बुलंदी मिली वह आप के तुफ़ैल मिली। इंसान अगर अशरफ हुआ तो इस वजह से कि मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इंसाने कामिल बन कर आये इसलिये पूरी नस्ल इंसानियत बावकार हो गया।

जब से देखा है लिबासे बशरी में तुझको
हर फरिश्ते की तमन्ना है कि इंसान हो जाये

सवाल : यह कैसे हो सकता है कि एक नबी अरब में रहकर हर जगह हर मोमिन के पास मौजूद हो एक चीज़ का बयक वक़्त हर जगह होना अक़लन ना मुमकिन है। लिहाज़ा हाजिर व नाज़िर का अक़ीदा क्योंकर दुरुस्त

हुआ? (वहाबी)

जवाब : माद्दी चीजों पर नूरी चीजों का कयास करना दुरुस्त नहीं। नूर बयक वक्त हजार जगह हो सकता है और हमारी आंखों का नूर जब आसमान की सेर करता होता है तो आखों में भी होता है। सूरज आसमान पर रहकर जमीन के हर जर्रे में तजल्ली फगन होता है। हुजूर ने मस्जिदे नबवी में खड़े होकर हाथ बढ़ाया तो जन्नत के खोशे तक पहुंच गया। हर मुर्दा को कब्र में हुजूर का दीदार कराकर आपके मुताल्लिक सवाल होता है और आप ही की जात इसके लिये बाइसे निजात होती है। कब्र में नमाज नहीं पूछी जाती, रोजा के बारे में सवाल नहीं होता, आमाल के मुताल्लिक पूछ-पाछ नहीं की जाती बल्कि अकीदा के बारे में सवाल होता है, और इसी खुश अकीदगी पर निजात मौकूफ है हर मोमिन का अकीदा है कि हुजूर हाजिर व नाजिर हैं और कब्र में बनफ्से नफीस तशरीफ लाते हैं। लिहाजा एक वक्त में हर जगह हाजिर होना यह अकीदा दुरुस्त है। नबी की जात तो बड़ी आला है यह तसर्रुफात व इख्तेयारात नबी के तुफैल इनके गुलामों को हासिल है। सरकारे गौसे आजम बयक वक्त चालीस घरों में दावत खाते हुए दिखाई दिये। मेरे पीर व मुरशिद सरकार मुफ्ती आजम अय्यामे हज में बरेली शरीफ में भी मौजूद हैं और अरफात मिना मुजदलफा और खाना काबा का तवाफ भी कर रहे हैं। बरेली शरीफ में भी मौजूद हैं और मदीना पाक में हुजूर के रौजे की जाली मुबाकर के पास खड़े खड़े सलाम भी पेश कर रहे हैं। सरकार मखदूम शाह मीना लखनवी रहमतुल्लाह अलैहि जिनका मजार लखनऊ मेडिकल कालेज रोड पर है, एक ही वक्त में नीम के हर पत्ते पर बैठे हुए तिलावते कुरआन पाक कर रहे हैं। जब नबी के गुलामों का यह आलम है तो सरकार का क्या आलम होगा, अंदाजा लगाओ टेलीवीजन के सेट पर एक ही आदमी खबरें देता है मगर दुनिया और मुल्क के हर टीवी के स्क्रीन पर वह दिखाई और सुनाई देता है। जब इंसान के हाथों की बनाई हुई आलात व सिस्टम का यह कमाल है तो फिर जिसको खुदा ने अपने नूर से बनाया हो वह अज़ीम कमालात का मालिक क्यों कर न होगा?

आंख वाला तेरी जलवों का तमाशा देखे
दीदए कूर से क्या आये नजर क्या देखे

सवाल : अगर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर मुसलमान के पास मौजूद हैं तो कोई मुसलमान नमाज़ में ईमाम नहीं बन सकता क्योंकि हुजूर की मौजूदगी में किसी को इमामत का हक नहीं। (वहाबी)

जवाब : यह आपने कैसे कह दिया कि हुजूर की मौजूदगी में उम्मती नमाज़ नहीं पढ़ा सकता। हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हुजूर की मौजूदगी में चालीस नमाज़ें पढ़ाई हैं और मेरे हुजूर ने अपनी मौजूदगी में सिद्दीक अकबर का हाथ पकड़कर मुसल्ले पर खड़ा करके अपने उम्मतियों का मकाम बता दिया। दूसरी यह बात कि इमामत के लिये तीन शर्तें हैं। इमाम का मौजूद होना, इमाम का महसूस होना ताकि मुकतदी उसकी पैरवी करे। इसके कयाम पर कयाम करे। रुकूअ सजूद पर रुकूअ सजूद करें। और इमाम का अपनी फर्ज़ नमाज़ अदा न कर चुकना। जो इमाम फर्ज पढ़ा चुका हो वह दोबारा इमामत नहीं कर सकता वरना दो चार मस्जिदों के लिये एक ही इमाम काफी होता मगर ऐसा नहीं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर मोमिन के पास मौजूद तो हैं मगर हमको महसूस नहीं। नीज़ सरकार अपने फरायज़ अदा फरमा चुके हैं। लिहाज़ा यह सवाल महज़ लग़व और बातिल है। इस सिलसिले में की मज़ीद तफसीर पढ़िये-

सुना है रहते हैं दुल्हा फकत मदीने में
ग़लत है रहते हैं वह आशिकों के सीने में

सवाल : अगर हुजूर की हर अदा हक है तो आपकी नमाज़ें कज़ा भी हुई हैं क्या वह भी हक है? (बाज़ जोहला बे अदब)

जवाब : बेशक वह भी हक हैं। नमाज़ तो हुजूर की प्यारी प्यारी अदाओं का नाम है। हमारी ग़लतियां भूल वग़ैरह नफसानी व शैतानी होती हैं मगर अंबियाए किराम की ख़तायें रहमानी होती हैं जिनसे हज़ार हा हिकमतें वाबस्ता होती हैं। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की सिर्फ एक लग्ज़िश यानी गंदुम खाने पर सारे आलम का ज़हूर हुआ। नबी का कौल व फेल तालीम उम्मत के लिये होता है और कौल व फेअल में अगर तार्रुज़ पैदा हो तो फेअल पर नहीं बल्कि कौल पर अमल किया जायेगा। कज़ा नमाज़ भी हुजूर की हक है ताकि अगर कभी हमारी कज़ा हो जाये तो हम उसे पढ लिया करें।

मुझे क्या ग़र्ज़ है क़याम से मुझे क्या ग़र्ज़ है सजूद से
तरे नक़्शे पाकी तलाश थी जो झुका रहा है नमाज़ में

सवाल : हज्जतुल विदाअ (हुज़ूर की ज़िन्दगी पाक का आख़िरी हज) के मौक़े पर हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम अल्लाह का पैग़ाम यानी आख़िरी वही लेकर आये जिसमें कहा गया है कि मैनें तुम्हारा दीन आज मुकम्मल कर दिया तो क्या हज्जतुल विदा से पहले दीन नाक़िस और था। अगर नाक़िस था तो जो सहाबा उस ज़माने में वफ़ात पा गये वह दीन नाक़िस पर गये? (आरिया)

जवाब : उस वक़्त के लिहाज़ से इस्लाम कामिल था ओर जो अहकाम उस व़क्त थे ज़रियए निजात थे मगर आज क़यामत तक के लिये दीन कामिल और मुकम्मल हो गया कि अब कोई हुक्म मंसूख़ न होगा। मसलन जिस ज़माने में नमाज़, रोजा हज फर्ज़ नहीं हुए थे उस वक़्त कलिमा पढ़ लेना ही कामिल था। इस पर नजात थी और अब उन अहकाम के आ जाने पर उन पर अमल करना कामिल हुआ। शीर ख़्वार बच्चे के लिये मां का दूध कामिल ग़िज़ा है जवान होने पर रोटी चावल वग़ैरह कामिल ग़िज़ा है। बीमार के लिये साबुतदाना कामिल ग़िज़ा है तंदरुस्त के लिये दूसरी ग़िज़ायें कामिल हैं।

सवाल : जब दीने इस्लाम कामिल हो चुका तो इमामों की तक़लीद और चंद मज़ाहिब (हनफी, शाफई, मालकी, हंबली) की क्या ज़रूरत है? और बाद में इल्म फिकह क्यों बनाया गया? इस्लाम में कौन सी कमी थी जो इन इमामों ने पूरी की? और क़ुरआन व अहादीस में क्या नुक़सान था जो फिक़ह से दूर किया गया? (वहाबी)

जवाब : दीन अक़ीदों कुल्ली कानून और उसूल का नाम है और यह मुकम्ल हो चुके। रहे जुज़वी मसायल और ज़रूरियात ज़माना के लिहाज़ से फरोई अहकाम वह हमेशा निकाले जाते रहेंगे। मगर इन्हीं कवायद व उसूल पर जो हुज़ूर के ज़माने में मुकम्मल हो चुके थे। आज रेडियो, लाउडस्पीकर, फोटू ग्राफ से सज्दे की आयत सुनी जो तो सुनने वाले पर सज्दा वाजिब है कि नहीं? यह वह मसला है जो सहाबा के ज़माने में पेश न आया था। मगर शरई कायदे ऐसे मुकर्रर रहें कि यह अहकाम उनसे निकल सकते हैं। हवाई जहाज़ चलती ट्रेन में नमाज़ का हुक्मे शरई कवायद से निकाला जा सकता है। मुजद्दिदे दीन

आइम्मए मुजतहेदीन ने जो भी मसायल इस्तिंबात किया वह कुरआन व अहादीस की रौशन में किया। यह गैर मुकल्लिदों वहाबियों की ख़्बासत है जो वह इमामे आज़म पर करते रहते हैं।

सवाल : कुरआन में निकाह से मुताल्लिक सिर्फ मर्दों से ख़िताब क्यों होता है कि तुम पर फलां फलां औरतें हराम हैं, फलां फलां हलाल, औरतों से ख़िताब क्यों नहीं होता कि तुम पर फलां फलां मर्द हलाल हैं, फलां फलां हराम। निकाह का ताल्लुक तो औरतों मर्दों दोनों से है।

जवाब : इसलिये कि यह औरत नेमत है, दौलत है, मर्द नेमत वाला, दौलत वाला हैं इसलिये अल्लाह तआला ने जन्नत की नेमतों में वहां के फल, फूल, दूध शहद के साथ साथ पाक बीबियों का भी ज़िक्र फरमाया और हलाल व हराम नेमत की सिफत है। नेमत हलाल या हराम होती है और नेमत वाले पर हलाल या हराम होती है। गाय बकरी हम पर हलाल है, हम गाय बकरी पर हलाल नहीं।

सवाल : हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तौरेत के नासख़ हैं फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तौरेत का मुसद्दिक (तसदीक करने वाला) क्यों फरमाया? तसदीक तनसीख़ के ख़िलाफ है।

जवाब : तनसीख़ तसदीक के ख़िलाफ नहीं। आपने तौरेत को मंसूख भी किया और उस की तसदीक भी की। आपका यह फरमाना कि तौरेत सच्ची किताब है। यह उसकी तसदीक है और यह फरमाना कि तौरेत के अहकाम अब काबिले अमल नहीं यह उस की तनसीख़ है। देखो हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गुज़िश्ता तमाम कुतुब आसमानी के मुसद्दिक भी हैं, और नासिख़ भी हैं। तसदीक नस्ख़ के ख़िलाफ नहीं। यहां पर एक बात की और वज़ाहत कर दूं कि बाज़ बेवकूफों ने यह समझ रखा कि दुनिया के तमाम मज़ाहिब हक हैं। जो भी अपने मज़हब में रहकर अच्छा काम करेगा निजात पायेगा। यह ख़्याल फासिद बातिल और कुफ्र है वरना अंबियाए किराम ख़ुसूसन हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुफ्फार व मुश्रेकीन को इस्लाम की दावत क्यों देते बल्कि फरमा देते कि तुम सब अपने अपने दीन व मज़ाहिब पर कायम रहकर अच्छे काम करते जाओ। अल्लाह का मन्शा यह है कि गुज़िश्ता ज़मानों में हर नबी की उम्मत के लिये शरीयत हमने बनाई थी जो अपने वक़्त में हक थी मगर अब तमाम

शरीयतें मंसूख़ हैं। अब काबिले अमल शरीयत शरीयत मुहम्मदी है। हर शख़्स को इस शरीयत की पैरवी करनी पड़ेगी। बग़ैर शरीयत मुहम्मदी कोई भी अब मेरी रज़ा और कुरबियत हासिल नहीं कर सकता।

सवाल : कुरआन में है कि अल्लाह ही का टोला ग़ालिब है, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के टोले में थे फिर यज़ीद से मग़लूब क्यों हो गये?

जवाब : हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हरगिज़ मग़लूब नहीं हुए। करबला में जीत आपकी ही हुई हारा यज़ीद। मुसलमान मारे तो भी जीत उसी की है और मरे तो भी वही जीता है। चंद आदमियों को मार डालना, बे तहाशा बमबारी करके शहरों को मलबे का ढेर बना देना यह जीत नहीं है बल्कि जीत तो यह है कि दुश्मन अपने मक़सद में कामयाब न हो जाये। जीत होती है मक़सद जंग हासिल होने से। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जंग का मक़सद बादशाहत हासिल करना न था बल्कि यज़ीदी बद उनवानियों के टुकड़े टुकड़े कर देना मक़सूद था। जागीरदाराना निजाम का ख़ात्मा मक़सूद था वह आपने शहीद होकर हासिल कर लिया।

सवाल : हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम में खुदाई सिफ़ात हैं यानी मुर्दों को ज़िन्दा करना, बीमारों को अच्छा करना, अंधों को नूर देना, इल्म ग़ैब जानना, वग़ैरह वग़ैरह। इन तमाम सिफ़ात से पता चलता है कि आप ख़ुदा हैं। (ईसाई)

जवाब : किसी बंदे में इन तमाम ख़ूबियों का होना अगर ख़ुदा होने की दलील है तो फिर सांप भी ख़ुदा हो कि वह दूर से क़दमों की आवाज़ सुनता और देखता है। ज़िन्दे को मुर्दा कर देता है। हज़रत इसराफ़ील भी ख़ुदा हुए वह अपनी सूर से सबको ज़िन्दा और मुर्दा कर देंगे। जवाब तहक़ीक़ी यह है कि ईसा अलैहिस्सलाम जो कुछ करते थे अल्लाह के हुक्म से और उसकी दी हुई ताक़त व क़ुदरत से करते थे। वह उन कामों में मुस्तक़िल न थे यह सारी ख़ूबियां उनकी ज़ाती नहीं बल्कि अताई हैं। ख़ुदा की दी हुई हैं। जो रब का मोहताज हो वह बंदा है अगरचे ख़ुदाई काम कर दिखाये जो ग़नी बेनियाज़ है। वह सिर्फ़ और सिर्फ़ ख़ुदा की ज़ात है जो दौड़ाए वह इंजन है और जो दौड़े वह रेल का डिब्बा।

सवाल : अल्लाह सतारुल अय्यूब (गुनाहों, ऐबों पर पर्दा डालने वाला) है सब के ऐब छुपाता है। तो फिर वलीद बिन मुग़ीरा के दस अयूब क्यों ब्यान फरमाये हत्ता कि उसे फरमाया कि वह हराम की औलाद है यह तो शाने सतारियत के ख़िलाफ है। (जोहला)

जवाब : अल्लाह उसके उयूब छिपाता है जो उसके महबूब की इज़्ज़त व नामूस के पीछे न पड़ें और जो उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त व नामूस पर हाथ डालें, शाने रिसालत में गुस्ताख़ियां करें अल्लाह इन्हें ज़लील व ख़्वार कर देता हैं वलीद बिन मुग़ीरा हुजूर के पीछे पड़ा रहता था। शाने रिसालत में गुस्ताख़ी के अलफाज़ बोलता था इसलिये अल्लाह ने उसको ज़लील करने के लिये इसके अयूब ब्यान फरमाये। अल्लाह ही इज़्ज़त भी देता है और वही ज़िल्लत भी देता हैं सबसे ज़लील तरीन इस रूए ज़मीन पर वह लोग हैं जो पैग़म्बर के शान में बे अदबी किये और गुस्ताख़ी के मरतकिब हुए। आज इस्लाम की बढ़ते हुए असरात और उसकी मक़बूलियत को देखकर यूरोप अमेरिका और दुनिया की तमाम इस्लाम दुश्मन कुव्वतें ख़ौफज़दा हैं। वह इस बात को अच्छी तरह जानते और समझते हैं कि हमारे बताए हुए सड़े गले फार्मूले और शैतानी निज़ाम के लिये इस्लाम ही सबसे बड़ा ख़तरा और रुकावट है। इसलिये वह पूरी दुनिया में अपने इस्तिन्जाई अख़बार और शैतानी मीडिया के ज़रिये इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ ग़लत प्रोपगंडा करते हैं। कभी तौहीन, आमेज़ मज़ामीन अख़बारों में शाया करते हैं कभी पैग़म्बरे इस्लाम के कारटून बनाते हैं, कभी किताबें लिखवाते हैं और तौहीन आमेज़ किताब लिखने वाले कारटून बनाने वाले ज़मीन के तह खानों में छिप जाते हैं। पूरा आलमे कुफ्र उनको पनाह देता है। ऐसे लोग सामने आवें तो पता चले कि पैग़म्बर का कारटून बनाकर या तौहीन आमेज़ किताब लिखकर गुस्ताख़ी करने का क्या अंजाम होता है। जो लोग मेरे हुजूर की शान में गुस्ताख़ी करते हैं उन गुस्ताख़ी करने वालों का सिर्फ ज़ेहन ही बिगड़ा हुआ नहीं है बल्कि उनका नुत्फा भी बिगड़ा हुआ है। यह किसी आलिम की तहकीक नहीं बल्कि अल्लाह की तहकीक है। अल्लाह तआला सूरः नून वल कलम में फरमाता है कि मेरे महबूब की तौहीन वही कर कसता है जो हराम की औलाद होगा। हर गुस्ताखे रसूल को अपने अपने नुत्फे की तहकीक करना

चाहिये ख़्वाह यूरोप के इस्लाम दुश्मन हों या दुनिया के अख़बार के एडीटरान, कारटूनिस्ट हो या दुनिया का कोई गुस्ताख़। अगर वह सब अपने अपने नुत्फ़ों की तहकीक कराये तो मैं दावा के साथ कहता हूं कि वह सबके सब हराम की औलाद हैं जो मेरे पैग़म्बर की शान में गुस्ताख़ियां करते हैं। अल्लाह ने आज से चौदह सौ साल पहले अपने महबूब की शान में गुस्ताख़ी करने वाले उन हरामियों को बे नकाब कर दिया है। उनकी असलियत को बता दिया है लिहाज़ा किसी गुस्ताख़ रसूल की ऐब को या उसके बातिल अकीदे की निशानदेही करना ग़ीबत नहीं है बल्कि यह सुन्नते इलाहिया है।

याद रखो! गुस्ताख़े रसूल का अंजाम बुरा होता है। जिस कौम या जिस मुल्क में किसी भी पैग़म्बर की तौहीन की गयी तो अल्लाह ने इस कौम और इस मुल्क पर किसी न किसी शक्ल में अपना अज़ाब नाज़िल किया। अल्लाह फरमाता है कि जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की शान में नाज़ेबा कलिमात कहकर अल्लाह और रसूल को तकलीफ देते हैं उनके लिये दुनिया व आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब है। लोगो अल्लाह के कहर व ग़ज़ब से डरो, हुजूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत उन्हीं की तालीम पर अमल है। तमाम मुश्किलात का हल उन्हीं की नज़र करम पर मौकूफ है। अगर नजात चाहते हो इज़्ज़त चाहते हो अल्लाह की रज़ा चाहते हो, जहन्नम से आज़ादी का परवाना चाहते हो तो ऐ दुनिया के कुफ्फार व मुश्रेकीन कलिमा पढ़कर मेरे नबी की गुलामी का पट्टा अपने गले में डाल लो, और ऐ मुसलमानो! तुम अपने नबी के सच्चे फरमा बरदार उम्मती बन जाओ। कामयाबी तुम्हारे कदमों का बोसा लेगी।

सवाल : कुरआन में है कि अल्लाह ज़ालिम और फासिक लोगों को हिदायत नहीं देता हांलांकि हिदायत की ज़रूरत तो उसी को है नेक मुत्तकी तो पहले ही से हिदायत पर हैं, इन्हें हिदायत की क्या ज़रूरत है? (आरिया)

जवाब : इस सवाल के दो जवाब हैं। एक यह कि जो शख़्स काफिर होकर मरा उसे अल्लाह कब्र व हश्र में सही जवाब देने की हिदायत न देगा। वह या तो जवाब देगा ही नहीं या उल्टा जवाब देगा। मसलन यह कि मैं बदकार था ही नहीं, फरिश्तों ने मेरे नामए आमाल में ग़लत लिख दिया है। मोमिन को जवाब देने की हिदायत मिलेगी। या दुनिया में अल्लाह तआला काफिर को नेक आमाल की हिदायत नहीं देता कोई शख़्स रब को अपनी अक़्ल से राज़ी करने की हिदायत

नहीं पा सकता। यह हिदायत अंबिया ही से मिलती है अक्ल हवाई जहाज बना सकती है ईमान नहीं बना सकती। वह नबी की इत्तेबा से बनता है कोई बड़े से बड़ा फलसफी भी अजनबी शहर में जाकर वहां के गली कूचे मालूम नहीं करसकता। किसी से पूछने ही पड़ेगे जो वहां का वाकिफ हो। अंबियाए किराम से ही रब के यहां की हिदायतें मिल सकती हैं। बाज उलमा ने इसका जवाब यह दिया है कि जब तक फासिक फासिक रहे हिदायत नहीं पाता। जब फिस्क से तौबा करे फिर हिदायत पाता है। काफिर काफिर रहते हुए मुसलमान नहीं रहता, कुफ्र छोड़कर मुसलमान होता है या बद मज़हब और फासिक एतेकादी को आमाल की हिदायत नहीं देता, पहले मोमिन हो फिर आमाल की हिदायत देगा। या काफिर को पुल सिरात से गुज़रकर जन्नत की हिदायत नहीं देगा। मोमिन को यह हिदायतें मिलेंगी कि हर मुसलमान किसी से पूछे बग़ैर अपने जन्नती घर में पहुंच जायेगा।

सवाल : जानदार की तसवीर और मुजस्समा बनाना हराम है फिर ईसा अलैहिस्सलाम ने मिटटी की चिड़िया क्यों बनाते थे? बुतसाज़ी भी तो बुरी चीज़ है? (बाज़ जोहला)

जवाब : तसवीर बनाना, मुजस्समा बनाना, हमारी शरीयत में हराम है। उन शरीयतों में हराम न थी। देखो हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिये जिन्नात मुजस्समा और तसवीरें बनाते थे मगर आपका यह मुजस्समा बनवाना बुत परस्ती कराने के लिये न था बल्कि अपना मोजिज़ा दिखाने के लिये था जैसे हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम ने अपना हुस्न मिस्र की औरतों को दिखाया जिससे उन्होंने अपने हाथ काट लिये यह हुस्न दिखाना मोजिज़ा दिखाने तबलीग़ दीन के लिये था न कि बुरे इरादे से।

सवाल : ईसा अलैहिस्सलाम के हवारी (साथी) नबी न थे फिर उन पर वही क्यों आयी वही (अल्लाह का पैग़ाम) तो सिर्फ अंबियाए किराम पर आती है?

जवाब : वही के लग़वी मायने हैं इलहाम या दिल में डालना या हुक्म करना। इस सवाल में वही मायने मुराद हैं। शरई वही मुराद नहीं। शरई वही पैग़ामे इलाही, अहकामे ख़ुदावंदी को कहते हैं जो अल्लाह अपने नबियों और रसूलों के ज़रिये बंदों तक पहुंचाता है। लफ्ज़ वही का इस्तेमाल हज़रत मूसा

अलैहिस्सलाम की वालिदा बल्कि शहद की मक्खियों के लिये भी कुरआन में इरशाद हुआ है। हक यह है कि ईसा अलैहिस्सलाम से पहले बयक वक्त बहुत से नबी हुए थे। मूसा अलैहिस्सलाम के साथ हज़रत हारून, इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ हज़रत लूत और सुलेमान अलैहिस्सलाम के साथ एक हज़ार नबी हुए मगर ईसा अलैहिस्सलाम के हम ज़माना कोई नबी नहीं क्योंकि ईसा अलैहिस्सलाम बनी इसराईल के खातिमुल अंबिया हैं। यानी बनी इसराईल के आख़िरी नबी ईसा अलैहिस्सलाम के बाद बनी इसराईल में कोई नबी नही आया। ख़ातिम वह जो सबके बाद हो। उसके बाद कोई बनी न हो। देखो हमारे हुजूर ख़ातिमुन्नबीईन हैं तो न आपके ज़माने में कोई नबी था न बाद में। हम सुन्नी मुसलमानों का अकीदा है कि सुबह कयामत तक कोई नबी नहीं आयेगा। हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातिमुन्नबीईन हैं। हज़रत खिज़्र और हज़रत इलयास अलैहिमुस्सलाम हुजूर के जमाने में थे मगर उनकी नुबूवत हुजूर की नुबूवत से मंसूख़ हो गयी थी और वह उम्मती होकर रहे। ईसा अलैहिस्सलाम कुर्ब कयामत आयेंगे मगर नबी की हैसियत से नहीं बल्कि उम्मती की हैसियत से आयेंगे और दीने इस्लाम की तबलीग़ फरमायेंगे।

सवाल : हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने दस्तरख़्वान के उतरने के दिन को अगलों पिछलों के लिये ईद क्यों करार दिया? जिसे नेमत मिले वही उसकी खुशी करे बाद वाले क्यों करें?

जवाब : दस्तरख़्वान उतरना तमाम अगले पिछले ईसाईयों के लिये नेमत था कि यह उनके नबी का आसमानी मोजिज़ा था। नबी पर करम सारी उम्मत पर मेहरबानी होती है और नेमत पर खुशी मनाना उस नेमत का शुक्रिया है। शुक्रिया से रब तआला राज़ी होता है जैसे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत सिर्फ सहाबा के लिये नेमत नहीं बल्कि कयामत तक तमाम मुसलमानों के लिये नेमत है। इसलिये अल्लाह तआला ने कुरआन पाक में अपने महबूब की विलादत पर खुशियां मनाने का हुक्म दिया और इरशाद फरमाया, आप फरमा दीजिये कि ऐ लोगो! अल्लाह की फज़्ल और उसकी रहमत पर ख़ूब ख़ुशियां मनाओ। तमाम मुहद्देसीन और मुफस्सेरीन फरमाते हैं कि फज़्ल और नेमत से मुराद हुजूर की ज़ात है। फतावा नईमिया जिल्द सोम, सफा १८ पर मुफस्सिर कुरआन हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते हैं कि यह अमर

का सीग़ा है और अमर में वजूब का मायने पाया जाता है जिससे पता चला कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मीलाद मनाना, खुशी करना वाजिब है और यह अमर जमअ ग़ायब है कि इसलिये कयामत तक के लिये हर मुसलमान पर ईद मिलाद मनाना वाजिब है।

सवाल : यह ग़ैबी दस्तरख़्वान जन्नती ख़्वान था। जिसमें मछलियां और गोश्त घी वग़ैरह थे मगर जन्नत में गोश्त मछली घी वग़ैरह नहीं। वहां तो फल फ्रूट वग़ैरह हैं। फिर इस दस्तरख़्वान में यह ग़िज़ायें कहां से आ गयीं। गिज़ा भूक दफ़ा करने पेट भरने के लिये खायी जाती है, मेवे लज़्ज़त के लिये। जब जन्नत में भूक नहीं तो वहां भूक दफ़ा करने की गिज़ायें कैसी? (बाज़ नादान)

जवाब : यह दस्तरख़्वान जन्नत से नहीं आया बल्कि आसमान से आया या आसमान की तरफ़ से आया था। मछली अमरे इलाही से बनी और हुक्मे इलाही से वह पुख़्ता हुई जैसे बनी इसराईल पर मन व सलवा जन्नत से नहीं बल्कि आसमान की तरफ़ से आता था। अब भी बारिश ओला, शबनम वग़ैरह हवा में बनकर बरसते हैं उसकी कुदरत का इंकार कैसे किया जा सकता है। ख़्याल रहे कि जन्नत में दरख़्त गंदुम का होना यकीनी नहीं। अव्वलन तो इसमें मुहक्केकीन व उलमा का इख़्तेलाफ़ है कि हज़रत आदम ने जन्नत में क्या चीज़ खायी थी, बाज़ कहते हैं कि गंदुम, बाज़ फ़रमाते हैं इंजीर, बाज़ कोई और फल बताते हैं। और अगर मान लिया जाये कि दरख़्त गंदुम वहां ही था और वही आप ने खाया तो यह उस वक़्त हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के इम्तेहान के लिये था। फिर वहां न गंदुम रहा न होगा जैसे शैतान पहले जन्नत में था मगर शैतान बनने के बाद फिर वहां रहा न रहेगा। जन्नत में तबदीली वग़ैरह होती हैं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि जन्नत का बहुत सा इलाका ख़ाली है। वहां मुसलमानों के नेक आमाल से बाग़ लगाये जायेंगे, और फरमाते हैं कि जो शख़्स ख़ालिस अल्लाह की रज़ा के लिये इस दुनिया में मस्जिद बनायेगा उसके लिये अल्लाह तआला जन्नत में एक घर बनायेगा।

सवाल : कोई ईसाई हज़रत मरयम को न तो खुदा मानता है और न ही उनकी परस्तिश करता है। तसलीस वाले ईसाई भी बाप, बेटा रूहुल कुद्स की उलूहियत के कायल नहीं फिर यह सवाल क्योंकर दुरुस्त हुआ कि ईसा और उनकी मां मरयम को हम खुदा मानते हैं? (इसाई)

जवाब : ईसाईयों के बहुत फिरके हैं। इनमें एक फिरका जनाब मरयम को खुदा मानता है बाकी ईसाई फिरके अमलन इन्हें खुदा भी मानते हैं और उनकी परस्तिश भी करते हैं। मैंने खुद गिरजा घरों में जाकर देखा है कि सामने वाली दीवार में हज़रत मसीह की तसवीर के साथ कद आदम तसवीर मरयम भी होती हैं। इधर ही यह लोग दुआ के वक़्त झुकते हैं। नीज़ जब उन्होंने जनाबे मरयम को खुदा की बीवी मान लिया तो इन्हें ख़ुदा मान लिया। लिहाजा यह सवाल बिल्कुल दुरुस्त है। सूरह इख़्लास में है कि फरमा दीजिये कि अल्लाह एक है वह बे नियाज़ है। ना उससे कोई पैदा हुआ और न ही वह किसी से पैदा हुआ। वह बीवी बच्चों से पाक व साफ है।

सवाल : मौत का वक़्त मुक़र्रर है। आगे पीछे नहीं हो सकता तो ईसा अलैहिस्सलाम मुर्दे ज़िन्दा कैसे करते थे? वह मुर्दे अपनी उम्र पूरी करके मर चुके थे। यूं हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम की पुकार पर ज़िब्ह शुदा जानवर और हज़रत हिज़कील अलैहिस्सलाम की दुआ से फौत शुदा बस्ती वाले, हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम के समाने मरा हुआ गधा यह तमाम ज़िन्दा क्यों कर हुए? हालांकि इन सब वाकियात का सबूत कुरआन मजीद से है। (मुलहिद)

जवाब : इन वाकियात में उस रब की कुदरत का ज़हूर है। अल्लाह तआला ने उन नबियों की दुआ या मोजिज़े से उन मुर्दों को दोबारा उम्र बख़्शी वह रब बुझे चिराग़ में दोबारा उम्र का तेल बत्ती डाल सकता है। वहां कोई शख़्स रब का मुकाबला करके किसी मुर्दे को ज़िन्दा नहीं कर सकता। मकबूलों की दुआ से तकदीर बदल जाती हैं। मगर मुबरक नहीं।

सवाल : कुतुबे तफासीर में है कि जिन बस्तियों पर अज़ाबे इलाही आया वहां रहना, बसना, बल्कि ठहरना भी ममनूअ है। क़ौमे नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने में सारी रूए ज़मीन पर अज़ाबे इलाही पानी की तूफान और सैलाब की शक्ल में आया तो चाहिये कि ज़मीन के किसी हिस्से पर रहना जायज़ न हो।

जवाब : तूफाने नूह कुफ्फार व मुश्रेकीन के लिये अज़ाब था मगर हज़रत नूह और उनकी कश्ती में सवार मोमिनों के लिये रहमत। वह तूफान हर तरफ से अज़ाब न था इसलिये हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ज़मीन पर रहे और तूफान आ गया। अगर हर तरह अज़ाब होता तो हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और मोमिनों

को वहां से पहले निकाला जाता फिर अज़ाब आता क्योंकि अज़ाब वाली गह से पहले मोमिनीन को निकाला जाता है फिर अज़ाब आता है। देखो गज़वए अहज़ाब में मदीना मुनव्वरा में हवा का तूफान आया जिससे कुफ्फार भगा दिये गये मगर यह तूफान कुफ्फार के लिये अज़ाब था और मुसलमानों के लिये रहमत। लिहाज़ा मदीना मुनव्वरा में रहना दुरुस्त रहा।

सवाल : देखा गया है कि मुश्रेकीन हिंद यानी हिंदु आर्या क़यामत के इंकारी हैं मगर सदक़ा व ख़ैरात बहुत करते हैं तो यह कैसे कहा जा सकता है कि मुन्केरीन क़यामत नेकियां नहीं करते?

जवाब : हां करते हैं मगर आख़िरत के सवाब के लिये नहीं कि वह न आख़िरत के क़ायल हैं न वहां के सवाब के लिये। बल्कि अपनी नाम व नमूद व शोहरत के लिये ख़िदमते ख़ल्क़ व ख़िदमते दीन के लिये नहीं, बल्कि ख़िदमत मुल्क व ख़िदमत के लिये करते हैं। लिहाज़ा उनका यह सब कुछ करना भी न करना है। करना तो वह क़बूल है जो रब को राज़ी रखने के लिये किया जावे न कि सब को। नीज़ क़बूलियते आलम के लिये ईमान शर्त अव्वल है और कोई भी ईमान वाला उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक कि खुदा की वहदानियत और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत को सच्चे दिल से तसदीक़ ज़ुबान से इक़रार और दिल से मान न ले।

सवाल : कुरआन मजीद में दुनिया को कभी ''दार'' (यानी घर) नहीं कहा गया। आख़िरत या बरज़ख़ ही को दार कहा जाता है इसकी वजह क्या है?

जवाब : इसलिये कि कुरआन मजीद दुनिया को इंसान का घर नहीं मानता, यह तो मुसाफिर की मंज़िल या रेलगाड़ी के सीट की तरह एक आरज़ी क़यामगाह है जैसे परदेस में किराया या रेत का घर और आख़िरत यानी क़यामत जन्नत या दौज़ख़ उसका अपना असली घर है, जहां हमेशा रहना है। इसलिये दुनियावी जिस्म निहायत कमज़ोर बनाया गया कि इसमें एक कांटा, बल्कि एक फांस भी बर्दाश्त नहीं। हज़ार हा बीमरियों का मर्कज़। जैसे मुसाफिर का चंद रोज़ा ख़ेमा निहायत कमज़ोर होता है। बरज़ख़ और आख़िरत में जो जिस्म मिलेगा वह मज़बूत, तवाना, तंदरुस्त और तमाम बीमारियों से महफ़ूज़ होगा।

सवाल : कानूने कुदरत यह क्यों मुकर्रर हुआ कि हजरात अंबियाए किराम के इंकारी और झुटलाने वाले पैदा किये गये जिससे उन्हें सदमा और ईजायें पहुची। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कंकड़ो, पत्थरों को कलिमा पढ़ा सकते हैं तो अबू जहल और अबू लहब को कलिमा क्यों न पढ़ाया?

जवाब : इसमें बहुत सी हिकमतें हैं। अगर हुज़ूर मोजिज़ाना तरीके से कुफ्फार को मुसलमान कर लेते तो आइंदा औलिया और उलमा की तबलीग के लिये मिसाल कायम न होती। वह लोग कह सकते थे कि हुज़ूर साहबे मोजिजात थे मोजिजाना तरीके पर लोगों को मुसलमान कर लिया। हमारे पास मोजिजा नहीं हम तबलीग कैसे करें? नीज़ इस सूरत में मुसलमानों को इस्लाम कबूल करने का सवाब न मिलता। इख्तेयारी ईमान पर सवाब होता है न कि मजबूरी ईमान पर।

सवाल : हदीस शरीफ में है कि कुब्रे कयामत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़हूर पर सारी दुनिया में मोमिन ही होंगे, काफिर कोई न रहेगा, तो क्या ईसा अलैहिस्सलाम की शान हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बड़ी है कि हुज़ूर ने सबको हिदायत न दी और हज़रत ईसा सबको हिदायत दे देंगे।(मिरज़ाई)

जवाब : उस ज़माने में सबको हिदायत न मिलेगी बल्कि कुफ्फार और वह जो दज्जाल को ख़ुदा मान चुके होंगे, हलाक कर दिये जायेंगे, सिर्फ मोमिन ही बाकी रखे जायेंगे जैसे नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने में सारे कुफ्फार गर्क कर दिये गये। सिर्फ वही मोमिन रहे जो आपके कश्ती में सवार थे। नीज़ हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में तमाम कुफ्फार व मुश्रेकीन के लिये सिर्फ दो ही रास्ता होगा, या तो वह इस्लाम कबूल करें या कत्ल हों। किसी भी फर्द को जज़िया देकर रहने की इजाज़त न होगी। कुफ्फार को हलाक कर देना और है हिदायत देना कुछ और है।

सवाल : आख़िर इसमें क्या हिकमत है कि दुनिया में कुफ्फार ज़रूर रहें अगर सारे इंसान मुसलमान हो जावें तो बहुत ही अच्छा हो कि ज़मीन अल्लाह की इताअत से भर जावे? (बाज़ लोग)

जवाब : इसके दो जहवाब हैं। एक इल्ज़ामी दूसरा तहकीकी। इल्ज़ामी जवाब तो यह है कि आखिर इसमें क्या हिकमत है कि बाग़ में फूल भीं हो कांटे

भी। ज़मीन में दूध वाले जानवर भी हों और सांप बिच्छू भी। हम में भूक प्यास बीमारियां भी हों और तंदरुस्ती वग़ैरह भी। अगर सारे ही फूल होते सारी अच्छी चीज़ें ही होतीं तो कितना अच्छा होता। तहक़ीक़ी जवाब यह है कि शैतान को पैदा करने की बहुत सी हिकमतें हैं। मुसलमानों की बहुत सी इबादत कुफ्फार की वजह से हैं जिहाद, शहादत, तबलीग़, कुफ्फार की ईज़ा और तकलीफों पर सब्र, यह सब इबादतें हैं जो कुफ्फार की वजह से अदा हो सकती हैं। नीज़ रौशनी की कदर अंधेरे से तंदरुस्ती की क़द्र बीमारी से, पानी और गिज़ा की क़द्र भूक और प्यास से मालूम होती है, ईमान, तक़वा, हिदायत की क़द्र बल्कि हुज़ूर की शान कुफ्फार वग़ैरह से मालूम होती है।

सवाल : तुमने कहा कि ''कुल'' में खिताब ता क़यामत हर जगह के लोगों से है यह दुरुस्त नहीं क्योंकि ख़िताब और कलाम के लिये दो शर्तें हैं एक मुतकल्लीम (कलाम करने वाले) के ज़माने में मुख़ातिब का मौजूद होना, दूसरा उसके सामने होना। यह कैसे हो सकता है कि मुतकल्लीम वफात पा जाये और कलाम मौजूद रहे। लिहाज़ा कुल में ख़िताब सिर्फ मक्का मुकर्रमा के उन लोगें से है जो हुज़ूर के सामने थे। (आरिया)

जवाब : लफ्ज़ कुल में ख़िताब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है और रुए सुख़न काफिर इंसानों की तरफ है। ख़्वाह वह ज़मानए नबवी में मौजूद हों या ता क़यामत होंगे। कभी कभी यह फरमाना डराने धमकाने या उन पर इतमाम हुज्जत के लिये हैं यह फरमान है तो रब का मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वास्ता दर्मियान में रखा गया है इसलिये कि-

कुल कह के अपनी बात भी मुंह से तेरी सुनी
इतनी है गुफ्तगू तेरी अल्लाह को पसंद
(आला हज़रत मुहद्दिस बरैलवी)

वैसे कुल में रुए सुखन कभी अल्लाह की तरफ भी होता है जैसे कुलआऊज़ु बिरब्बिलनास वग़ैरह। कभी रुए सुखन मोमिन बंदों की तरफ होता है ताकि बताया जाये कि तुम हमारे और हमारे बंदों के दर्मियान बरज़ख़े कुबरा (हिजाब पर्दा) हो। हम बंदों से तुम्हारी मारेफत कलाम करते हैं तो बंदे भी हमसे तुम्हारी मारेफत कलाम करें। कभी रुए सुख़न कुफ्फर की तरफ होता है ताकि बताया

जाये कि कुफ्फार तुमसे सुनकर हमारी तरफ आवें तो उनका आना कबूल होगा वरना नहीं। नीज़ यह दोनों शर्तें उस कलाम के लिये हैं जो महदूद और फानी हो आर ग़ैर फानी कलाम के लिये इनमें से कोई शर्त नहीं। देखो हज़रत इब्राहीम ने काबा बनाकर सिर्फ एक बार पुकारा था कि अल्लाह के बंदो अल्लाह के घर का तवाफ व ज़्यारत के लिये आओ आज तक बल्कि ता कयामत उसके जवाब में लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक का ईमान अफरोज़ नग़मा गूंज रहा है। मालूम हुआ कि वह निदा कयामत तक बाकी है। आज रेडियो और फोन ने बता दिया कि दूर वाले से भी कलाम होता है। टेप रिकार्ड ने बता दिया कि मुत्कल्लीम के फना होने से कलाम फना नहीं होताकलाम महफूज़ हैं जिन्हें लोगों के दिल अल्लाह वालों के कान सुन रहे हैं। टेलीवीजन के ज़रिये एक शख़्स बयक वक्त हर जगह मौजूद है। हर मोमिन का दिल और हर शख़्स की कब्र टेलीवीजन की पेटी है जिसमें जल्वए महबूब नज़र आ रहा है। जब नार की कुव्वत का यह हाल है तो नूर की कुव्वत तो उससे कहीं ज़्यादा है कि एक आन में तख़्त बिलकीस मुल्के यमन से फिलीस्तीन ले आये। लिहाज़ा कुल में ख़िताब सब लोगों से है हुज़ूर का कलाम हर जगह हर वक़्त अपना काम कर रहा है।

सवाल : अल्लाह तआला ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़ाहिरी तौर पर ख़ज़ाने क्यों न दिये और सहाबए किराम को अमीर व कबीर क्यों न बनाया कि यह अमीरी उन लोगों की हिदायत का ज़रिया बन जाती?

जवाब : इस सूरत में इस्लाम की हक्कानियत ज़ाहिर न होती। माल व दौलत के लिये इस्लाम कबूल करते। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को दुनिया के ख़ज़ाने दिये, आप पूरी दुनिया के बादशाह थे मगर दौलत से अपना दीन न फैलाया बल्कि उनका दीन चला ही नहीं। जब मुसलमानों के पास यह ज़ाहिरी सामान न था फिर इस्लाम फैलया तो पता लगा कि इस्लाम में खुद इतनी कशिश है जिससे लोग इधर खिंचे हुए चले आये। मकनातीस खुद लोहे को खीचंता है। इस्लाम वह रूहानी मकनातीसी ताकत है जो लोगों के दिलों को अपनी तरफ खींचता है और अपना रास्ता लोगों के दिलों तक जाने के लिये खुद आप बनाता है।

सवाल : आमाल लिखने वाले फरिश्ते दो क्यों हैं? हिफाज़त करने वाले तकरीबन साठ क्यों हैं? सिर्फ एक फरिश्ता ही काम कर सकता है?

जवाब : आमाल लिखने वाले फरिश्ते कातिब भी हैं और उन आमाल पर गवाह भी। गवाही कम अज कम दो की चाहिये। कयामत में यह दोनों उसकी गवाही भी देंगे और मुहाफिज़ीन फरिश्तों की कसरत इंसान के एहतेराम के लिये है कि एक आदमी के साथ फरिश्तों की जमाअत रहे जो हर मोड़ पर उसकी हिफाज़त करे। देखो जंग बदर में अल्लाह ने पांच हजार फरिश्तों से मदद भेजी हालांकि कुफ्फार को हलाक करने के लिये एक ही फरिश्ता काफी था मगर सहाबा की अज़मत व तौकीर के लिये फरिश्तों की जमाअत आयी।

सवाल : जब अल्लाह तआला हर चीज पर गालिब और कादिर है तो उसने रूह निकालने के लिये फरिश्तों को क्यों मुकर्रर फरमाये? क्या वह खुद जान नहीं निकाल सकता? (बाज़ लोग)

जवाब : अल्लाह की कुदरत पर भी ईमान चाहिये और उसके कानून पर भी। कानूने कुदरत यह है कि तमाम काम वसीलों से हो। रब तआला कादिर है कि आसमान से गंदुम बरसा दे मगर बरसाता नहीं, ज़मीन, किसान, बीज, पानी वग़ैरह का वास्ता दर्मियान में रखा गया है।

सवाल : अगर बद मज़हबों बे दीनियों काफिरों क साथ उठना बैठना हराम है तो मूसा अलैहिस्सलाम फिरओन के घर में और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अबू तालिब के घर में क्या रहे थे? वह हज़रात बरसों कुफ्फार के घरों में रहे? (सुलह कुल्ली)

जवाब : इन मुकद्दस हस्तियों का वहां रहना, बसना इस हुक्म के आने से पहले था। नीज़ अब भी काफिर के पास रहना, सहना, उनके पास उठना बैठना दुनियावी ज़रूरत के लिये जायज है। यहां तो यह मतलब है कि वह दीन का मज़ाक उड़ा रहे हैं कुफ्र बक रहे हों तब उनके पास न बैठो। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक तो रब ने अपनी शान दिखा दी कि जिस बच्चे की रोकथाम के लिये फिरओन ने बनी इसराईल के अस्सी हज़ार बच्चे ज़िब्ह करा दिये उस फरज़ंद को उसकी गोद में परवरिश करा दिया। फिर मूसा ने बातिल की कभी भी ताईद नहीं की और हक के मामले में फिरऔन के साथ कोई रियायत नहीं की। बचपन में उसकी दाढ़ी पकड़कर उसके मुंह पर ज़ोरदार तमांचा मार दिया और बता दिया कि हक के मकाबिल किसी को बख़्शा नहीं जायेगा।

सवाल : हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम आज़र है और वह मुश्रिक व बुत परस्त था लिहाज़ा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नस्ब पाक नहीं। शिर्क व कुफ्र से महफूज़ नहीं। क्योंकि इस सूरत में आज़र हुजूर की नस्ल शरीफ में दाखिल है और वह मुश्रिक बुत परस्त है। (बाज़ नादान)

जवाब : हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का चचा है न कि बाप। अरबी में अब सबको कहते हैं बाप चचा दादा और परवरिश करने वाला वग़ैरह। यहां चाचा को अब कहा गया है क्योंकि चचा बाप की तरह होता है। आपके वालिद माजिद तारुख़ हैं जो मोमिन मोहिद थे। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक कुल ५१ नाम हैं जिनमें से कोई मुश्रिक व काफिर नहीं बल्कि सब मोमिन मोहिद मत्तकी हैं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद पाक है कि मैं हमेशा पाक पुश्तों से पाक रहमतों की तरफ मुन्तकिल होता रहा हूं।

इस हदीस पाक से मालूम हुआ कि हुजूर के वालिद गिरामी हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से लेकर हज़रत आदम तक सरकार के तमाम आबा व अजदाद पाक हैं और फरमाने इलाही के तहत मुश्रिक नापाक हैं तो अब आप ख़ुद ही फैसला कीजिये कि आज़र जैसे बुत परस्त व बुत गर को पाक लोगों में कैसे जगह मिल सकती है? कुरआन व अहादीस से यह बात साबित है कि कोई भी नबी किसी मुश्रिक व काफ़िर से नहीं हो सकता।

सवाल : तुमने यह कहा कि नबी के मां-बाप मुश्रिक नहीं होते, हालांकि हज़रत लूत अलैहिस्सलाम का दादा आज़र मुश्रिक है हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिद अब्दुल्लाह मुश्रिक थे यह क़ायदा ग़लत है। (वहाबी, अहले हदीस)

जवाब : हमने यह क़ायदा सिर्फ नबी के वलिद के लिये अर्ज़ किया है कि नबी के मां बाप मुश्रिक नहीं हो सकते। लूत अलैहिस्सलाम के वालिद हारान मोहिद मोमिन थे जैस कि मैंने अभी अर्ज़ किया कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु तक आपके नस्ल शरीफ में कोई मर्द औरत को मुश्रिक या काफिर न हुए, सब मोमिन मोहिद थे। जो हज़रत अब्दुल्लाह या हज़रत आमना रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को मुश्रिक या काफिर

कहे वह कुरआन व अहादीस का मुन्किर है और काफ़िर है।

सवाल : हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह ऐलान क्यों कराया गया कि हम इस तबलीग़ व दावत पर तुमसे उजरत नहीं मांगते? क्या तबलीग़ पर उजरत लेना गुनाह है? अगर गुनाह और बुरी है तो ख़ुलफ़ाए राशिदीन ने खिलाफत पर तंख़्वाहें क्यों लीं और ता क़यामत उलमा तबलीग़ व तदरीस पर तंख़्वाहें और वअज़ तक़रीर पर नज़राने क्यों लेते हैं?

जवाब : तबलीग़ पर उजरत लेना बुरा नहीं मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान इससे मावरा है चंद वजहों से। एक यह कि हुज़ूर अनवर मज़हरे ज़ाते इलाही हैं और रब तआला अपनी रबूबियत पर हमसे उजरत नहीं मांगता। तमाम नेमतें बग़ैर मुआवज़ा देता है तो हुज़ूर भी अपनी नुबूवत पर उजरत नहीं मांगते। तमाम रहमतें बग़ैर मुआवज़ा अता फरमाते हैं। वह रब्बुल आलेमीन है हुज़ूर रहमतुलिल आलेमीन हैं, दूसरे यह कि मख़लूक़ हुज़ूर को उजरत नहीं दे सकती। हमारी सारी उम्र की इबादत उनके सिर्फ़ कलिमा, पढ़ाने की उजरत नहीं बन सकती लिहाज़ा हम दुआयें दे सकते हैं। हम भिकारी उन्हें उजरत क्या दे सकते हैं? उनका नाम ही हमारे सारे कामों से भारी है कि उनका एक नाम हमारे करोड़ों गुनाहों पर ग़ालिब आ जायेगा तो उनके कामों का क्या पूछना? तीसरे यह कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया में देने आये लेने न आये। देने वाला लेने वाले से उजरत क्या मांगे? सूरज बादल ज़मीन से अपना हक फ़ैज़ नहीं मांगते कि वह देने के लिये है। हुज़ूर उम्मत से उजरत तलब नहीं फरमाते कि हुज़ूर देने के लिये हैं। हमारे पास दस्ते सवाल है हुज़ूर के पास दस्ते अता। हमारे हाथ फैलाने के लिये हैं हुज़ूर के हाथ भरने के लिये हैं-

मंगते खाली हाथ न लूटे ऐसी मिली ख़ैरात न पूछो
उनका करम बस उनका करम है उनके करम की बात न पूछो

सवाल : हदीसे नबवी है कि चंद मुश्रिक जिन्न और इंसानों के सिवा सब मुझे अल्लाह का रसूल मानते हैं और सब मेरे फरमां बरदार हैं कोई मख़लूक़ मेरी दुश्मन नहीं। मगर दूसरी हदीस पाक मे है कि ईर पहाड़ मुझ से दुश्मनी रखता है। देखो ईर पहाड़ जो पत्थर है हुज़ूर अनवर का दुश्मन फिर यह दोनों हदीसें कैसे दुरुस्त हुईं?

जवाब : इस हदीस शरीफ में ईर पहाड़ के पत्थर मुराद नहीं बल्कि वहां के बाशिंदे यहूदी मुराद हैं। मुहक्केकीन मुहददेसीन मुफस्सेरीन का यही कौल है कि ईर से मुराद यहूदी इंसान थे लिहाज़ा अकवाल दुरुस्त है।

सवाल : कुरआन में है कि जो अल्लाह के फैसले हैं उनमें कोई तबदीली नहीं हो सकती मगर हदीस शरीफ में है कि दुआ मौत को रोक देती है। हज़रत आदम की दुआ पर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की उम्र ६० साल के बजाए १०० साल की हो गयी। मूसा अलैहिस्सलाम की अर्ज़ पर उम्मते मुहम्मदिया पर पचास नमाज़ें पांच हो गयीं। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मरे हुए को ज़िन्दा कर देते थे यह तबदीलियां फैसला इलाही में क्यों हुई। इसका मतलब क्या है?

जवाब : कोई दूसरा शख़्स अल्लाह के कलिमात और उसके फैसले को नहीं बदल सकता लेकिन अगर किसी की दुआ या खुद रब तआला के करम से आप ही बदल दे तो यह हो सकता है बल्कि होता है। लिहाज़ा कुरआन व अहादीस में कोई तारुज़ नहीं न मज़कूरा वाकियात इस आयत के ख़िलाफ हैं। बीमारी दवा के ज़रिये दफा हो गयी यह रब के हुक्म में। दवा ने तबदीली नहीं की ख़ुद रब तआला ने रंग बदल दिया। हर चीज़ पर अल्लाह का हुक्म ग़ालिब है। दवा भी हुक्मे इलाही की पाबंद है कि मौला असर करूं या न करूं? जब हुकमे इलाही होता है तो दवा काम करती है वरना नहीं।

सवाल : कुरआन कहता है कि कोई गुनाह किसी हाल में किसी मुसलमान को दुरुस्त नहीं हालांकि शरीयत यह कहती है कि हालते मजबूरी में मुसलमान हराम खाकर भी जान बचा सकता है। हकीम के मशवरे पर हराम दवा इस्तेमाल कर सकता है। देखो मजबूर होकर यह दोनों गुनाह करना दुरुस्त हो गये।

जवाब : अगर जान जा रही हो तो इन हालात में यह चीज़ें मजबूर के लिये न हराम रहती हैं न इनका इस्तेमाल करना गुनाह होता है। गुनाह वह है जिसका शरअ मना करे जब शरीयत ने ही इसकी इजाज़त दे दी फिर गुनाह कैसे हुए?

सवाल : हदीस शरीफ में है कि बंदा जब अल्लाह तआला का मकबूल बन जाता है तो उसे कोई गुनाह नुक़सान नहीं देता। देखो ऐसे बंदे के लिये गुनाह की इजाज़त दे दी गयी। (बाज़ जाहिल पीर)

जवाब : इस हदीस का भी मतलब यही है कि अल्लाह तआला उसे गुनाह

से बचाता है जब वह बंदा गुनाह तक और गुनाह उस तक पहुंचता ही नहीं तो नुक़सान कैसे?

सवाल : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसमाने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया कि उसमान तुम जो चाहो करो तुम जन्नती हो चुके, देखो हुज़ूर ने इन्हें गुनाह की इजाज़त दे दी?

जवाब : इस सवाल का जवाब दे दिया गया है यहां बस इतना ही समझ लो कि इस फरमाने आली में गुनाह की इजाज़त नहीं बल्कि गुनाह से हिफाज़त है कि अब उसमान का मैलाने तबअ गुनाह की तरफ होगा ही नहीं। जब बत्ती की हिफाज़त चिमनी से कर दी गयी तो उसे हवा किधर से पहुंचेगी। जब चिड़िया के पर काट दिये गये तो वह मालिक के पास से कैसे उड़कर भागेगी।

सवाल : हमेशा आम मुसलमान नेक, मुत्तक़ी, परहेज़गार मिस्कीन और ग़रीब क्यों हुए हैं और कुफ्फार बद अमल, फुस्साक व फुज्जार लोग मालदार क्यों हैं? अब भी अमूमन यही देखा जा रहा है।

जवाब : इससे नबी का ज़ोर और दीन हक़ की कुव्वत दिखाना मकसूद होती है। नमरूदी, फिरओनी ताक़तें जब नुबूवत से टकराकर पाश पाश हो गयीं तक कुव्वते ख़लीली ताक़ते कलीमी का पता लगा। अल्लाह ने फुक़र और मसाकीन और ग़रीब लोगों के ज़रिये इस्लाम को फैलाकर दिखाया कि दीन में खुद अपनी कुव्वत है जिससे वह फैल रहा है। किसी के माली कुव्वत से नहीं फैलता। मक्का के सरदारों ने पीठ दिखाई तो मदीना मुनव्वरा के ग़रीबों को तौफीक़ दे दी उन्होने पूरी दुनिया में इस्लाम फैलाया। नीज़ दौलत की छांव में फितरतन नफ्से अम्मारा ऐश में ग़ाफिल हो जाता है। तकलीफ में बेदार होता है आराम में ख़ुदा को भूल जाता हैं मुसीबत में याद करता हैं ख़िलाफते शैख़ेन (अबू बकर व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुम) में मुसलमान बड़े बेदार रहे। ख़िलाफते उसमानी में ऐश ज़्यादा मिला। आपस ही में लड़ने लगे। फिरओन दौलत के नशे में चूर होकर ख़ुदा बना। मुख़्तसर यह कि बड़े लोग ऐश व आराम में ज़्यादा होते हैं इसलिये नबी की और हक़ बात की मुखालेफत यही लोग ज़्यादा करते हैं। मूसा कलीमुल्लाह इब्राहीम खलीलुल्लाह के मकाबिल फिरऔनी नमरूदी आये जो मालदार थे। ऐश व आराम में थे। नीज़ दुनिया में ऐश व आराम पर्दा और

अंधेरा है जिसमें हर चीज़ सही नज़र नहीं आती। बंदा कहता है कि मैं मालदार हूं खुदा का प्यारा हूं। या अंधेरा और पर्दा मौत के बाद महशर में हटेगा तब अपने और नबी के अहमियत मालूम होंगे। तब गरीब और ग़नी का पता चलेगा कि कौन मुफलिस और कौन कंगाल, कौन सआदत मंद है और कौन बद बख़्त?

यह दौर अपने बराहीम की तलाश में है
सनम कदा है जहां ला इलाहा इल्लल्लाह

यानी जिस तरह इब्राहीम के ज़माने में नमरूद ने खुदाई का दावा किया था और अल्लाह के बंदों को अपनी परस्तिश पर मजबूर किया था और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उसका ख़ात्मा किया था उसी तरह मौजूदा ज़माने में कई नमरूद पैदा हो गये हैं जो खुदाई का दावा करके अल्लाह के बंदों को गुमराह कर रहे हैं। इस लिये मौजूदा ज़माना भी इस बात का मुतमन्नी है कि कोई अल्लाह का बंदा ऐसा पैदा हो जो असरे हाज़िर के बुतों को पाश पाश कर दे। असरे हाज़िर के बुतो में सबसे बड़ा बुत शख़्सियत परस्ती है। दाअयी अलाल्लाह खुद अल्लाह बने हुए हैं। अपनी पूजापाट में अल्लाह के बंदों को लगाए हुए हैं। हकीकते हाल यह है कि यह दुनिया तो समन कदा है और परस्तिश व इताअत के लायक सिर्फ अल्लाह तआला की ज़ात है और ज़ाते बारी तआला तक रसाई इश्क रसूल और इत्तेबाए रसूल के बग़ैर ना मुमकिन है और जब तक बंदा इत्तेबाए रसूल और इश्क के ज़रिये मर्तबा कमाल को न पहुंचे बंदा अपना मकसदे हयात हासिल नहीं कर सकता और अगर मकसद हयात हासिल न हुआ तो अदम और वजूद दोनों बराबर हो गये। इश्के रसूल इत्तेबाए रसूल का फलसफा कुरआन की इस आयते करीमा से माखुज़ है। यानी मेरी इत्तेबा करो अल्लाह खुद तुमसे मुहब्बत करने लगेगा।

सवाल : जिसे अल्लाह हिदायत देना चाहता है उसे इस्लाम की तौफीक देता है। इससे मालूम हुआ कि हिदायत के ज़रिये इस्लाम मिलता है हालांकि इस्लाम से हिदायत मिलती है। दोनों में कौन सही है?

जवाब : हिदायत की कई किस्में हैं। बाज़ हिदायात इस्लाम से मिलती है और बाज़ हिदायतों से इस्लाम नसीब होता है। यहां हिदायत से वह हिदायत मुराद है जो इस्लाम मिलने का ज़रिया है। फिर इस्लाम कबूल करने के बाद नेक आमाल की हिदायत, यह वह हिदायत है जो इस्लाम के बाद मिलती है।

सवाल : रास्ता के ज़रिये किसी मकान या मकानी चीज़ तक पहुंचा जाता है। रब तआला मकान और मकानियात से पाक है फिर उस तक पहुचंने के लिये राह कैसी?

जवाब : यहां बस इतना समझ लो कि जिस्मानी रास्ता जिस्मानी मक़सद पहुंचाना है और नूरानी व ईमानी रास्ता नूरानी मकसद तक पहुंचाना हैं यहां अच्छे अक़ीदों, नेक आमाल को रास्ता फरमाया गया है कि इन को इख़्तेयार करके इंसान रब की रज़ा हासिल कर सकता है यह मक़सद भी नूरानी है और इसका यह रास्ता भी नूरानी। यहां रास्ते से ईंट, कंकर वाला रास्ता मुराद नहीं।

सवाल : खुदारसी के लिये रास्ते की ज़रूरत नहीं होनी चाहिये क्योंकि रास्ता तो दूर वाली चीज़ को हासिल करने के लिये तय किया जाता है। रब तआला तो हमारी शहे रग से भी ज़्यादा क़रीब है।

जवाब : होना और चीज़ है पाना कुछ और। बेशक रब तआला हमसे करीब है मगर उसका पाना बहुत मुश्किल हैं पाने के लिये रास्ता तय करना बहुत ज़रूरी है रूह जिस्म में है मगर हम उसे पा नहीं सकते, नीज़ रब तआला तो हम से करीब है मगर हम उससे दूर हैं। हम को उससे कुर्ब हासिल करने के लिये रास्ता तय करना ज़रूरी है।

सवाल : कुरआन में है कि जब तुम्हारे आमाल ख़राब हो जायेंगे तो अल्लाह तुम्हारे ऊपर ज़ालिम हाकिमों को मुसल्लत कर देगा। जिससे मालूम हुआ कि बद आमाली का नतीजा ज़ालिम बादशाह, ज़ालिम हुक्काम हैं। अगर यह बात है तो इमाम हुसैन पर यज़ीद क्यों मुसल्लत हुआ? उन्होंने कौन से गुनाह किये थे? (नादान)

जवाब : यह ग़लत है। इमाम हुसैन पर यज़ीद मुसल्लत नहीं हुआ बल्कि अल्लाह तआला ने यज़ीद पर इमाम हुसैन को मुसल्लत फरमा दिया कि आपने उसकी ग़ैर इस्लामी सलतनत के टुकड़े टुकड़े उड़ा दिये। उसको उसकी नापाक मकसद में कामयाब नहीं होने दिया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फिरऔन पर और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम नमरूद पर मुसल्लत फरमा दिये गये। शहीद हो जाना शिकस्त नहीं बल्कि अपना मकसद और मुद्दा हासिल न कर सकना यह शिकस्त है। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने जिस मकसद के

लिये अपना सर दिया वह पा लिया। यज़ीद ने जिस मकसद के लिये आपको शहीद किया वह न पा सका। मकसद को न पाना सबसे बड़ी नाकामी और हार है।

सवाल : दुनिया में नबी सबके पास नहीं पहुंचते। बहुत कम लोग उन्हें या उनका ज़माना पाते हैं। फिर यह सवाल सारे काफिरों से कैसे दुरुस्त हुआ कि ऐ जिन्नों और आदमियों की गरोह! क्या तुम्हारे पास तुममें के रसूल न आये थे? मसलन आज के कुफ्फार व मुश्रेकीन जो हुजूर से सदियों बाद पैदा हुए वह उसके जवाब में कह सकते हैं कि खुदाया हमारे पास तेरे नबी नहीं आये हमने उनका ज़माना नहीं पाया? (आर्या)

जवाब : किसी के पास नबी की तश्रीफ लाने का यह मतलब होता है कि उनकी तालीमात पहुंचना, उनकी उम्मत के उलमा और औलिया और नेक बंदों का पहुंचना। अलहम्दोलिल्लाह! हुजूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीम उलमा औलिया सालेहीन और उलमा की तसानीफ के ज़रिये सब तक पहुंच गयी कोई इससे महरूम नहीं रहा। नबी का पैदा होना और है, कहीं रहना कुछ और है और आना कुछ और है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए मक्का मोअज़्ज़मा में रहे मदीना शरीफ में मगर आये आलम के ज़र्रे ज़र्रे के लिये। जैसे सूरज रहता है चौथे आसमान पर मगर चमकता है सारे जहान पर।

सवाल : अल्लाह तआला ने अपनी सिफत रबूबियत का चार तरह ज़िक्र कुरआन में किया है (१) ऐ महबूब आपका रब (२) ऐ मुसलमानो तुम्हारा रब (३) सब लोगों का रब (४) तमाम जहानों का रब। मालूम हुआ कि हम और नबी बल्कि सारी मख़लूक बंदा होने में बराबर हैं। हम सबका रब अल्लाह ही है फिर तुम नबियों, वलियों से क्यों डरते हो और उनसे क्यों आस व उम्मीद लगाते हो? क्या अल्लाह तुम्हारा रब नहीं। (वहाबी, बेदीन)

जवाब : इस सवाल के दो जवाब हैं। एक इल्ज़ामी, दूसरा तहकीकी। इल्ज़ामी तो यह है कि अगर बकरा यह कहे कि मैं अल्लाह का बंदा हूं और शेरभी, फिर मुझमें और शेर में क्या फर्क है? तो उससे यही कहा जायेगा कि तू शेर के सामने जाकर देख ले फर्क मालूम हो जायेगा। यह फर्क फिरओन, नमरूद, अबू जहल से पूछो कि तुम ने नबी का मुकाबला करके क्या पाया? तुम्हारी और उनकी बंदगी में क्या फर्क है? तहकीकी जवाब यह है कि हम रब

के महज़ बंदे हैं। यह हज़रात रब के फ़रमांबरदार बंदे हैं और बंदों के मौला हैं। इनकी तरफ बंदों की निसबत हो जाये तो बेड़ा पार हो जायेगा। हज़रत सफीना रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सामने जब शेर आया तो आपने उससे यह न कहा कि मैं अल्लाह का बंदा हूं वरना शेर कहता मैं भी अल्लाह का बंदा हूं। बकरा भी अल्लाह का बंदा, मैं अल्लाह के बंदों ही को खाया करता हूं बल्कि यह कहा कि ऐ शेर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुलाम हूं, रास्ता भूल गया हूं। यह सुना तो दुम हिलाने लगा और क़दमों में लौट गया। अब आप उनसे पूछो ऐ सफीना तुम्हारी अबदियत (बंदा होना) और मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अबदियत (बंदा होना) मैं क्या फर्क है? यहां पर मज़ीद एक बात की वज़ाहत कर दूं कि अगर हज़रत सफीना यह कहते कि ऐ शेर मैं अल्लाह का बंदा हूं तो यकीनन शेर आपको खा जाता। इसलिये कि सब इंसान अल्लाह ही के बंदे हैं। हज़रत सफीना ने यह कहा मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुलाम हूं। यहां से मालूम हुआ कि जो सिर्फ खुदा का बंदा होने का दावा करे वह बे ख़तर नहीं हो सकता बल्कि बे ख़तर वह होगा जो बंदा खुदा का हो और गुलाम मुस्तफा का हो।

खौफ न रख रज़ा ज़रा तू है अब्दे मुस्तफा
तेरे लिये अमान है तेरे लिये अमान है

सवाल : आज कल मुसलमान अपनी आमदनी या पैदावार या जानवरों में से कुछ हिस्सा ग्यारहवीं शरीफ या किसी बुजुर्ग के लिये निकालते हैं। यह अमल हराम है और वह चीज़ भी हराम है यह वही तरीका है जो कुफ्फारे अरब करते थे कि कुछ हिस्सा अल्लाह के लिये निकालते थे, कुछ बुतों के लिये यह मुसलमान भी कुछ हिस्सा अल्लाह के लिये निकालते हैं कुछ गौस पाक या ख़्वाजा अजमेरी के लिये दोनों यकसां हैं? (वहाबी)

जवाब : मुसलमानों के सारे सदकात ख़्वाह अल्लाह के नाम के हों ख़्वाह ग्यारहवीं के, सब अल्लाह ही के लिये होते हैं। ख़ैरात, सदकात, अल्लाह के लिये है। इसी ख़ैरात का सवाब उन बुजुर्ग के रूह को है इसका सबूत अहादीसे सहीहा और कुरआन मजीद से है। हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ईसाले सवाब के लिये अपनी मां के नाम पर कुंआ खुदवाया और उस कुंए का नाम अपनी मां के नाम पर रखा। आज अगर कोई शख़्स अपने माल का कुछ हिस्सा दीनी मदरसा

के लिये निकाले, अपने उस्ताद के नाम का निकाले तो दुरुस्त है। मुसलमानों के इस अमल को कुफ्फार बुत परस्तों की उन हरकतों से कोई ताल्लुक नहीं।

सवाल : जो चीज़ गैरुल्लाह के नाम पर मंसूब या नामज़द हो जाये उसका इस्तेमाल करना हराम है लिहाज़ा ग्यारवहीं के नाम का खाना, कपड़ा गौसे आज़म के नाम का तोशा, ख्वाजा अजमेरी का नियाज़ वग़ैरह सब हराम हैं। उनका इस्तेमाल हराम। (वहाबी)

जवाब : यह कायदा ग़लत है वरना लाज़िम आयेगा कि गंगाराम अस्पताल में ईलाज कराना, सीतापुर रामपुर में रहना हराम हो, राम नारायण तेल इस्तेमाल करना हराम हो, सीताफल, काशीफल खाना हराम हो कि इन सबकी निसबत बुतों की तरफ है। सिर्फ उस जानवर का खाना हराम है जो ग़ैरे खुदा के नाम पर ज़िब्ह किया गया हो। उसका भी सिर्फ खाना हराम होगा, दीगर इस्तेमाल दुरुस्त वरना फिरतो देवबंद में रहना, देवबंद में पढ़ना भी हराम होगा, कि इसकी निसबत देवबुत की तरफ हैं कुफ्फार अरब का यह दस्तूर था कि उनके खेतियों बाग़ों में जो पैदावार होती या उनके ऊंट बकरियां जो बच्चे देतीं उसके तीन हिस्से करते थे। एक हिस्सा अल्लाह के नाम का जो ग़रीबों, मिस्कीनों और मेहमानों के लिये और दूसरे अच्छे कामों में खर्च करने, और तीसरे हिस्सा बुतों के नाम का निकालते जो मंदिरों, वहां के पुजारियों और बुतों के चढ़ाव पर खर्च करते। बाकी अपने काम में लाते। यूं ही उनके सांड, बेल, गाय, वग़ैरह बुतों के नाम पर भी देते हैं। उसे खाना हराम है लेकिन अगर कोई मुसलमान उन्हें अल्लाह के नाम पर बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर कहकर ज़िब्ह कर दे तो खाया जा सकता है। बुतों के नाम का ज़बीहा हराम है न कि औलिया अल्लाह के नाम की नज़र व नियाज़।

सवाल : कुरआन में है कि अपनी औलाद को मुफलिसी और रोटी व रोज़ी के खौफ से कत्ल न करो। यह बहुत बड़ा गुनाह है। अगर औलाद का कत्ल इतना ही बड़ा गुनाह है तो फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे इस्माईल अलैहिस्सलाम को ज़िब्ह क्यों किया? वह तो रब ने उनकी जान बचाई वरना वह तो बेकसूर बेटे को कत्ल ही कर चुके थे।

जवाब : [illegible] ख्वाहिश या शैतानी अग़वा से कत्ल औलाद जुर्म है

अगर इससे रब तआला राज़ी होता हो तो फ़र्ज़ है। जिस अमल से वह राज़ी हो वही अमल अच्छा। वहां हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम खुदा के हुक्म से अपने फरज़ंद को ज़िब्ह किया, इसका नाम कत्ल नहीं कुरबानी है। नफ़स के लिये लड़ना, भिड़ना, मारना, मरना, फसाद हैं रब तआला के लिये यह काम जिहाद और सवाब हैं मकसूद तो इसे राज़ी करना हैं जब कुफ्फार का ज़ोर उनका दबाव जंग में बहुत हो जावे और मुजाहिद का मारा जाना यकीनी हो जाये फिर भी इसका आगे बढ़ना, सीने पर गोल खाना खुदकुशी नहीं बल्कि शहादत है कि रज़ाए इलाही के लिये है। जब मुल्क की सरहदों पर अपनी जान देने वाले एक फौजी की यह शन है कि मुल्क का हाकिम आला उससे खुश हो जाता है और उसके बीवी बच्चों को इनाम व इकराम से नवाज़ा जाता है तो जो शख़्स अल्लाह के नाम की सरबुलंदी के लिये लड़कर शहीद हो जाये सारे जहान का ख़ालिक व मालिक अल्लाह उसे अपना दीदार अता करता है जो तमाम नेमतों से बेहतरीन और अफजल व आला हैं जन्नत के तमाम इनामात से उसे नवाज़ा जाता है और सबसे बड़ा इनाम तो यह है कि अल्लाह तआला अपने उस बंदे को अपनी रज़ा व खुशनूदी का तमग़ा इनायत फरमाता है।

सवाल : अगर कत्ल औलाद कुफ्फार का अमल था तो जनाब अब्दुल मुत्तलिब ने अपने फरज़ंद अब्दुल्लाह को कत्ल करने का इरादा क्यों किया? वह तो मोमिन मोहिद थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके इस अमल की तारीफ क्यों फरमाई और अपने मुताल्लिक क्यों फरमाया कि मैं दो ज़बीहों का बेटा हूं। (आर्य)

जवाब : आर से बचने या गुरबत व अफलास की खौफ से बच्चों को कत्ल करना बुरा थ। अब्दुल मुत्तलिब ने इसलिये यह कोशिश न की थी बल्कि वह अपनी बे अमली और दीने इब्राहीमी से बे खबरी की वजह से यह समझे कि रब तआला हमारे इस अमल से राज़ी होगा। नीयत बुरी न थी, अमल में गलती न थी। हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जनाब अब्दुल मुत्तलिब के इस अमल की तारीफ न की बल्कि रब तआला के बचा लेने की तारीफ फरमाई।

सवाल : अगर कुफ्फारे मक्का बुतों के नाम पर छोड़े हुए जानवरों में पाबंदियां लगाते थे कि भेड़, बकरी, ऊंट, गाय होना चाहिये तो इन पर अत्ताब हो तो मुसलमान हरम शरीफ के शिकार वहां की घास वग़ैरह में पाबंदियां लगाते

हैं कि हरम का शिकार हराम, वहां की घास का काटना हराम, मुसलमान कोभी इस अत्ताब के शिकार होना चाहिये।

जवाब : कुफ्फारे मक्का अपनी राय से यह पाबंदियां लगाते थे। इस्लाम की यह पाबंदियां खुदा और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसललम के हुक्म से लगाते हैं। अल्लाह रसूल मालिके अहकामे शरीया हैं लिहाज़ा कुफ्फार पर अत्ताब हुआ। मोमिनीन ऐसी पाबंदी से रहमत की मुस्तहिक़ हैं क़ातिल मुजरिम को हाकिम के हुक्म से क़त्ल करना बिल्कुल हक़ है और किसी का अपने आपसे क़त्ल कर देना जुर्म है। बीमार का अपने आप दवाख़ाना से दवा लेकर इस्तेमाल करना हलाकत का बाइस है और हकीम की तजवीज़ से इस्तेमाल करना बाइसे शिफ़ा है। अल्लाह और रसूल हाकिम हैं। हकीम हैं। उनकी तजवीज़ बिल्कुल दुरुस्त हमारी तजवीज़ ग़लत।

सवाल : जब तौरेत और इंजील शरीफ़ में हर चीज़ की तफसील भी थी, हिदायत भी, रहमत भी, तो अब उसको मानना, उस पर अमल करना ममनूअ क्यों हो गया? अब भी जो शख़्स तौरेत पर अमल करे हिदायत पर होना चाहिये क्योंकि जो चीज़ हिदायत व रहमत है वह हर ज़माने में हिदायत है। (इसाई, यहूदी)

जवाब : तौरेत शरीफ, बल्कि तमाम आसमानी किताबों में दो तरह की हिदायत थी, और है। एक हिदायते ईमान, दूसरे हिदायते आमाल। इन सब हिदायत ईमान अब भी बाक़ी है और ता क़यामत बाक़ी रहेगी। तमाम किताबों ने यही फरमाया कि अल्लाह एक है, उसकी ही इबादत करो। और नबी आख़िरुज़्ज़मा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाओ। फरिश्ते, क़यामत बरहक़ हैं। रही हिदायत आमाल वह इनमें वक़्ती थी। वह वक़्त गुज़र गया। इनकी हिदायत भी ख़त्म हो गयी, बल्कि गुमराही में तबदील हो गयी। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम शरीयत में बहन से निकाह करना हिदायत था मगर वह दौर गुज़र जाने के पर यह अमल हराम हो गया। उसको हलाल जानना कुफ्र हो गया। यूं ही इन किताबों का हिदायत होना वक़्ती थी, वह भी सिर्फ बनी इसराईल के लिये। वह वक़्त गुज़र गा। उनकी रहमत ख़त्म हो गयी, चिराग़ की रौशनी सूरज आने पर ख़त्म हो जाती है। खेत पक जाने पर बारिश नुक़सान देती है।

सवाल : अगर कुरआन की बरकतों और तासीर में बिल्कुल फर्क नहीं पड़ा तो जो बरकतें सहाबा के ज़माने में कुरआन में थीं, वह अब क्यों नहीं। वह हज़रात सूरः फातेहा दम करके जहर उतार देते थे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद पारसियों की जमाअत के सामने बिसमिल्लाह कहकर ज़हरे कातिल पी लिया था मगर आप पर उसका ज़रा भी असर न हुआ। हम सारा कुरआन पढ़कर पी लें या दम करें भड़का ज़हर नही उतरता। (मुलहिद बे दीन)

जवाब : तार में पावर यकसां आता है मगर जिस ताकत का बल्ब हो इतनी ही रौशनी होती है देने में फर्क नहीं, लेने वाले की जर्फ में फर्क हैं हम हल्का बल्ब हैं बल्कि जो बद नीयती से कुरआन पढ़े वह गुनाहगार होता है। उलटा नुक्सान उठाता हैं मुसलमान कुरआन पढ़े तो हर हर्फ पर दस नेकियां पाता हैं काफिर बद नीयती से कुरआन पढ़ेगा तो उल्टा गुनाहगार होता हैं मुनाफेकीन कुफ्फार गोया फियूज़ उड़ा हुआ बल्ब हैं। वहां रौशनी कैसी आयेगी।

सवाल : कुरआन व अहादीस में है कि यहूद व नसारा के ७२ फिरके बने। इनमें से एक जन्नती है बाकी ७१ दौज़खी हैं और मेरी उम्मत के ७३ फिरके होंगे, एक जन्नती बाकी दौज़खी। तो क्या अगर कोई आज ईसाईयत या यहूदियत के जन्नती फिरके में दाखिल हो जाये तो नजात पा जायेगा? अगर पा जाये तो फिर इस्लाम लाने की क्या ज़रूरत है? (इसाई, यहूदी)

जवाब : उन लोगों में एक एक फिरका जन्नती जब तक हो सकता था जब तक वह दीन मंसूख नही हुए थे। अब मंसूख हो चुकने के बाद वह सारे फिरके जहन्नमी हैं। अगर काई शख़्स आज असल तौरेत व इंजील हासिल करके उस परअ मल करे जब भी वह जहन्नमी है। इस्लाम चूंकि कभी न मंसूख होगा लिहाज़ा उसका फिरका हमेशा जन्नती रहेगा। उस फिरके में रहना चाहिये। वह वही फिरका है अहले सुन्नत अल जमाअत जिसमें हज़रात औलिया अल्लाह हैं। सालेहीन हैं शोहदा हैं उलमा रब्बानीन हैं।

सवाल : गुज़िश्ता दीन यानी यहूदियत, ईसाईयत, को मिल्लते इब्राहीमी क्यों नहीं कहा जाता वह सभी हज़रात इब्राहीम की औलाद ही के दीन थे? हज़रत ईसा, मूसा, दाऊद, सुलेमान, यहया, ज़िक्रिया अलैहिमुस्सलाम सब औलादे इब्राहीमी हैं। इनके दीन को दीने इब्राहीमी क्यों नहीं कहा गया? सिर्फ

इस्लाम ही को दीने इब्राहीमी क्यों कहा जाता है?

जवाब : औलादे इस्हाक़ में बहुत नबी आये। अलग अलग दीन लाये। अगले नबी का दीन मंसूख किया। फिर इस सिलसिला औलाद में दीने इब्राहीमी कैसे बाक़ी रह सकता था। औलादे इस्माईल में हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल के सिवा कोई नबी नहीं आया। सिर्फ़ हुज़ूर आये और आपने दीने इब्राहीमी को मंसूख़ नहीं किया बल्कि उसकी ताईद करके मअ इज़ाफ़ा बाक़ी रखा। नीज़ अक्सर इब्राहीमी सुन्नतें हिजाज में रायज रहें। फिलीस्तीन में न रहीं। कुरबानी तामीरे काबा, मक़ामे इब्राहीम का एहतेमाम, सफ़ा व मरवा की सअई, अरफ़ात व मना में क़याम, जमरों को कंकरियां मारना, ख़त्ना वग़ैरह सब चीज़ें हिजाजे मुक़द्दस में रायज हुईं। हुज़ूर अनवर ने इस सबको बाक़ी रखा बल्कि इन्हें फ़रोग़ दिया। लिहाज़ा इस्लाम और सिर्फ़ इस्लाम ही मिल्लते इब्राहीमी है। हुज़ूर से पहले सिर्फ़ हुज्जाज़ के लोग हज काबा करते थे। अब सारी दुनिया के लोग काबा का हज करते हैं। काबा तो वही है मगर राजा दूसरा है जिसका राज सारे जहान में है जहां तक राज वहां तक सिक्का और क़ानून। जहां तक जनाबे मुस्तफ़ा का राज वहां तक कुरआन और काबा की धूम

सवाल : क़यामत में हिसाबे के बाद वज़न आमाल क्यों होगा? हिसाब काफ़ी नहीं। (अवाम)

जवाब : आमाल का हिसाब तो उनकी तादाद ज़ाहिर करने के लिये होगा और आमाल का वज़न उनकी कैफ़ियत बताने के लिये होगा। हिसाब में यह बताया जायेगा कि आमाल कितने हैं वज़न से यह ज़ाहिर किया जायेगा कि आमाल कैसे हैं? जैसे कराची या दिल्ली से बज़रिये हवाई जहाज़ जिद्दा जाओ तो कराची या दिल्ली में असबाब तोला जाता है किराया के लिये अगर चालीस किलो से ज़्यादा हो तो किराया वसूल किया जावे और जिद्दा में असबाब देखा जाता है कि कैसा है? क्या है, नशा आवर है या तिजारती कस्टम के लायक़ है कि नहीं। गर्ज़ यह कि वज़न कराची और दिल्ली में देखा गया और नोइयत जिद्दा में।

सवाल : यहां वज़न से मुराद यह मुरौवजह तोलना नहीं है बल्कि इससे [illegible] और रब तआला का फैसला क्योंकि इंसान के आमाल

जौहर नहीं बल्कि अर्ज़ हैं जो करते ही फ़ना हो जाते हैं और मअदूम फ़ना शुदा चीज़ का वज़न ना मुमकिन आमाल में बोझ होना अक्ल के खिलाफ है। (मोतजला)

जवाब : कुरआनी आयात में बिला शरई ज़रूरत तावीलीं तहरीफें करना हरगिज़ दुरुस्त नहीं वरना फिर आयाते कुरआनिया मोतबतरा न रहेंगी। लोग सोम व सलात ज़कात में ऐसी वाहियात तावीलीं शुरू कर देंगे। कयामत के तराज़ू को अपने दुनिया की तराज़ू पर कयास न करो। कल वहां हमारी सिफात की शक्लें भी होंगी। इनमें वज़न भी। दुनिया में इल्म व दौलत, कहत अरज़ानी ख्वाब में मुख्तलिफ शक्लों में नज़र आते हैं। बादशाहे मिस्र ने कहत और अरज़ानी के बरसों को सात गायों सात बालियों की शक्ल में देखा। आज साइंसी आलात टेंप्रेचर नाप लेते हैं सौ डिग्री है या एक सौ पांच। बिजली का पावर मीटर के ज़रिये नाप लिया जाता है कि कितने यूनिट खर्च हुआ। होम्योपैथिक वाले दवा की ताकत, बीमारी की कुव्वत नाप लेते हैं। दवा बीमारी से ज़्यादा ताकतवर इस्तेमाल कराते हैं। हवा की रफ्तार नाप ली जाती है कि इतने मील फी घंटा की रफ्तार से तूफ़ान आया। अगर वहां यह चीज़ें वज़न में आ जावें तो क्यों इंकार है? आमाल के वज़न के मुताल्लिक आयात व अहादीस बहुत हैं।

सवाल : तुमने जो वज़न के मुताल्लिक हदीस पेश की एक शख्स की नेकियां हल्की हो जाने की वजह से दौजख़ में ले जाया जा रहा होगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके पल्ले में दुरूद शरीफ या उसकी इल्मी ख़िदमात रखकर उसका वज़न बढ़ा देंगे तो रब तआला ने उसकी यह नेकियां पहले ही उसकी नेकियों वाले पल्ले में नहीं रख दीं? क्या वहां आमाल में कतर बयुंत की जायेगी? (मोतज़ला)

जवाब : मंशाए इलाही यह होगा कि उसकी उस नेकी का वज़न बढ़ जावे। रोटी में पानी लग जाये तो भारी हो जाती है। हम गुनाहगारों के हल्के आमाल में हुज़ूर अनवर की नज़र करम या दस्ते करम लग जावे तो भारी वज़न हो जाते हैं। हुज़ूर का हाथ लगवाना उस गुनाहगार की किस्मत जगाने, मुश्किल हल करने के लिये होगा और इस में हुज़ूर की शान दिखाई जायेगी कि पकड़े हुओं को छुड़ा लेते हैं बिगड़े हुए को बना देते हैं, डूबते हुओं को तैरा देते हैं, दौजख में जाते हुओं की लाइन बदल कर जन्नत की लाइन पर लगा देते हैं।

सवाल : रब तआला से हम कलामी बड़ी इज्ज़त है। हजरत मूसा इस वजह से मुमताज हुए उनका लकब कलीमुल्लाह हुआ तो चाहिये कि इबलीस भी बड़ी अजमत वाला हो कि उससे बिला वास्ता रब ने कलाम फरमाया? (बे दीन)

जवाब : पहली बात यह कि इबलीस से कलाम खुद रब तआला ने फरमाया या फरिश्तों के ज़रिये उसको कहलवाया। अगर फरिश्ते के ज़रिये कहलवाया गया हो तो फिर कोई सवाल ही नहीं और अगर बिला वास्ता रब तआला ने ही कलाम फरमाया हो तो यह कलामे इज़हार कहर व गज़ब का है। रब से हम कलामी वह इज़्ज़त का बाइस है जो एहतेराम व इकराम के साथ हो। हाकिम जिसको अपने यहां मेहमान बुलाकर उससे मुहब्बत का कलाम करे वह मोअजिज्ज है और जिस मुजरिम को बज़रिये पुलिस पकड़वाकर उसे सज़ा का हुक्म सुनाए वह मुजरिम बद तरीन ज़लील है। मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम मुहब्बत का था और इबलीस से ग़ज़ब का। एक में मुहब्बत है, दूसरे में लानत और ग़ज़ब है।

सवाल : शैतान दौज़ख की तरफ इंसान को बुलाता है तो चाहिये कि वह टेढ़े रास्ते पर बैठे सीधे रास्ते पर क्यों बैठता है? यह तो जन्नतियों और नेक लोगों का रास्ता है? (आर्य)

जवाब : तीन वजहों से। एक यह कि उधर आने वालों को यहां से हटाने और टेढ़े रास्ते पर पहुंचाने की कोशिश करना है। दौज़ख़ियों को सिर्फ टेढ़े रास्ते पर जमाता है। जमाना आसान है हटाना मुश्किल है। इसलिये वह मुश्किल मकाम पर बैठता हैं दूसरे यह कि इसी रास्ते पर अल्लाह की कायम करदा हिफाजती चौकियां हैं जहां पर मुहाफेज़ीन बंदे रहते हैं। हज़रात अंबियाए किराम औलिया किराम हैं क्योंकि रब तआला का कायम करदा रास्ता है। टेढ़े रास्तों पर ही कुछ नहीं इसलिये यह वहां ही रहता है। मगर लोगों को सिराते मुस्तकीम पर चलाने के लिये बल्कि चलने वालों को सीधे रास्ते से हटाने और उनको गुमराह करने के लिये। तीसरे यह कि शैतन गोया डाकू है, डाकू वहां ही रहता है जहां से माल वाले गुज़रते हैं। ईमान वाले आमाल वाले, इरफान वाले, तकवा वाले लोग यहां से गुज़रते हैं इसलिये वह यहां ही रहता है। टेढ़े रास्ते वालों के पास होता ही कुछ नहीं। इनके पास क्या लेने आयेगा?

सवाल : इबलीस और उसकी ज़ुररियत को अल्लाह तआला ने इतनी कुव्वत क्यों दी कि वह सब बयक वक़्त सारे इंसानों को देखते हैं और उनके इरादों ख़तरात से ख़बरदार हैं? यह तो बड़ा ज़ुल्म है? (आर्य)

जवाब : वह रब्बे करीम कभी किसी पर ज़ुल्म नहीं करता। उसने जहां इतने ताक़तवर, क़वी इबलीस पैदा किया है तो उससे बढ़कर कुव्वत वाले अंबिया औलिया पैदा फरमाये जो शैतान का तोड़ हैं और उससे ज़्यादा ताक़तवर हैं। अगर उस रहीम ने निहायत तेज़ धूप पैदा फरमाई तो उसके तोड़ के लिये तेज़ बारिश भी पैदा की है। अगर उसने सख़्त भूक, और बीमारियां पैदा की हैं तो उनके तोड़ के लिये गिज़ायें, पानी, शरबत और दवायें भी पैदा फरमाई हैं। पंडित जी, इस जोड़ तोड़ से दुनिया का निज़ाम कायम है। निज़ामे कुदरत पर ग़ौर करो।

सवाल : अल्लाह तआला ने गुमराह करने वाले शैतान को लंबी उम्र अता फरमा दी मगर किसी नबी वली को इतनी उम्र न दी। यह तो इंसाफ के ख़िलाफ है कि बीमारी को मौत नहीं और ईलाज को मौत दे दी। (आर्य)

जवाब : उसकी वजह यह कि रब तआला जानता है कि मक़बूल बंदों के वफ़ात के बाद उनके फियूज़ व बरकात ख़त्म नहीं होते बल्कि और ज़्यादा हो जाते हैं। फिर उन्हें दुनिया की तकालीफ में ज़्यादा क्यों रखा जावे। इबलीस अगर मर जाता तो उसके तसर्रुफात वग़ैरह सब ख़त्म हो जाते। मक़सूद यह था कि उस मरदूद की गुमराही गिरी बाकी रहे ताकि मुसलमानों को उनके आमाल के सवाब मिलते रहें। इधर शैतान बाकी उधर अल्लाह वालों के फैज़ान ग़ैर फ़ानी। पंडित जी अल्लाह के कामों में हिकमतें होती हैं। इसका कोई भी फेअल हिकमत से ख़ाली नहीं होता।

सवाल : हदीस शरीफ में है कि फुस्साक व फुज्जार सरकश नाफरमान और कुफ्फार की जान निकालने के लिये फरिश्तों की एक जमाअत है जो डरावनी शक्ल में जाते हैं और मोमिनीन की रूह निकालने के लिये निहायत हसीन व जमील ख़ूब सूरत शक्ल में आते हैं यह कैसे हो सकता है? शक्लें तबदील नहीं हो सकतीं? (आर्य)

जवाब : फरिश्ते तो पुरनूर मख़लूक हैं। इंसान की शक्लें मुख़्तलिफ होती हैं। गुस्से की शक्ल और होती है, ख़ुशी व मुसर्रत की शक्ल में और, बीमारी और

तंदरुस्ती की सूरत और। हजरत यूसुफ अलैहिस्सलाम को जब काफिले वालों ने कुएं से निकाला तो आप इतने हल्के थे कि उन्हें पानी का डोल मालूम हुआ मगर चंद रोज़ के बाद जब अजीज़ मिस्र ने सोने वगैरह से वजन करके खरीदा तो आप तकरीबन पांच मन थे। कुंए पर आप का हुस्न और वज़न कुछ और था और बाज़ारे मिस्र में कुछ और। मगर जब मिस्री औरतों ने देखा तो ऐसा हुस्न था कि उन्होंने अपनी उंगलियां काट लीं। आला हज़रत मुहद्दिस बरैलवी फरमाते हैं-

हुस्ने यूसुफ पे कटी मिस्र में अंगुश्त ज़नां
सर कटाते हैं तेरे नाम पे मरदाने अरब

सवाल : जन्नतियों की जुबान तो अरबी होगी और दौज़खियों की जुबान फारसी होगी, फिर वह एक दूसरे की बात कैसे समझ लेंगे, और सवाल व जवाब क्यों कर होंगे?

जवाब : यह जुबानें इन दोनों जमाअतों की आपस में बोलने की होंगी मगर वह दोनों एक दूसरे की बोली समझा करेंगे। बोलने की जुबान और सकती है और समझने की दूसरी। आज हरमैन तैयबीन के दुकानदार अरबी में बात करते है। अरबी बोलते हैं और समझते हैं। वह हर मुल्क की जुबान समझते हैं और बा आसानी हर एक से तिजारत भी कर लेते हैं। हज़रत सुलेमान अपनी जुबान बोलते थे मगर तमाम जानवरों की जुबान समझते थे।

सवाल : गुज़िश्ता पैगम्बरों की उम्मतों ने अपने नबियों से अज़ाब मांगे और आ गये मगर कुफ्फारे मक्का ने हुजूर अनवर से अजाब मांगा तो हुजूर ने फरमाया, मेरे पास तुम्हारा मुंह मांगा अज़ाब नहीं, या फरमाया कि अगर मेरे पास वह अजाब होता तो फैसला हो जाता। मालूम हुआ कि हुजूर बिल्कुल मालिक व मुख्तार नहीं बल्कि मजबूर व माजूर हैं। (वहाबी)

जवाब : तहकीकी जवाब यह है कि तुम्हारी पेश कर्दा हदीस के यह मायने नहीं कि मैं अज़ाब लाने से मजबूर हूं बल्कि यह मायने हैं कि मैं रहमत वाला नबी हूं मेरे पास रहम व करम है अज़ाब नहीं। अगर अज़ाब होता तो तुम हलाक हो जाते। मेरी मंशा यह है कि न मक्का उजड़े न काबा, ना चाह जमज़म वगैरह बरबाद हों ना कुफ्फारे मक्का हलाक हों बल्कि मक्का वगैरह आबाद रहें और यही कुफ्फार मुसलमान होकर इस्लाम की खिदमत अंजाम दें।

सवाल : यह कैसे हो सकता है कि एक ही हवा कौम आद के लिये मकामे अहकाफ में अज़ाब हो और उसके करीब ही गार हो वहीं रहमत? अगर हवा रहमत है तो सबके लिये है और अगर अज़ाब है तो सबके लिये है।

जवाब : अल्लाह तआला ने इसकी मिसाल हमारे हुजूर को दिखा दी थी। ग़जवए अहज़ाब में हवा एक थी मगर खंदक के उस पार जानिबे मदीना रहमत की थी और खंदक के दूसरी तरफ अज़ाब। हीटर और फ्रिज दोनों एक मेज़ पर रख दो और दोनों में बिजली का पावर छोड़ो, हीटर गमर होगा, फ्रिज ठंडा होगा, हालांकि पावर दोनों में एक ही है। दो शख़्स एक चारपाई एक बिस्तर में सो रहे हैं एक दिल खुश ख़्वाब देख रहा है ख़ुश हो रहा है, दूसरा ख़तरनाक ख़्वाब देख कर डर रहा है। एक कब्र में मोमिन व काफिर दफन हो गये मोमिन के लिये वह कब्र जन्नत का बाग़ है और काफिर के लिये वही कब्र दौज़ख़ की भटटी।

सवाल : उलमा मुफस्सेरीन मुहद्देसीन फरमाते हैं कि कायनाते आलम के हर चीज़ पर हुजूर अनवर का नाम लिखा हुआ है अगर हुजूर का नाम कायनात के हर चीज़ पर कन्दा है तो वह हमें दिखाई क्यों नहीं देता?

जवाब : जिस तरह दरिया पहाड़, चांद, सूरज, सितारे शजर व हजर गर्ज़ यह कि कायनात की हर चीज़ अपनी अपनी ज़ुबान में अपने अपने अंदाज़ में अल्लाह की तसबीह और ज़िक्र करती हैं मगर वह सबको सुनाई नहीं देते। इसी तरह कायनात के हर शय पर हुज़ूर का नामे पाक लिखा हुआ है मगर हम को दिखाई नही देता। अर्शे आज़म के पायों पर मुहम्मद का नाम, लौहे महफूज़ पे मुहम्मद का नाम, जन्नत की हर चीज़ पे मुहम्मद का नाम, हूरों की आंखों की पुतलियों पर मुहम्मद का नाम, लौहे महफूज़ पे मुहम्मद का नाम, आसमानी किताबों में मुहम्मद का नाम, कदीम पत्थरों पर मुहम्मद का नाम, सुलेमान अलैहिस्सलाम की अंगूठी पर मुहम्मद का नाम, मूसा कलीमुल्लाह की पेशानी पर मुहम्मद का नाम, कश्तीय नूह में मुहम्मद का नाम, अंबिया कि मुकद्दस शानों के बीच मुहम्मद का नाम, फरिश्तों की नूरानी जुल्फों पर मुहम्मद कानाम, मोअज़्ज़िन के अज़ान में, खतीब के खुत्बों में, मुफस्सिर की तफसीर में, मुकर्रर की तकरीर में, अदीब के अदब में मुहररिर की तहरीर में नमाज़ी की नमाज़ों में, गर्ज़ यह कि हर जगह अल्लाह के नाम के साथ नाम मुहम्मद मौजूद है। हमारा ऐनी मुशाहेदा है कि दरख़्तों के पत्तों पर, पत्थरों पर, फल फूल और सब्ज़ियों पर कलमे

कुदरत से लिखा है मुहम्मद रसूलुल्लाह।

क्या शाने अहमदी का चमन में जहूर है

हर गुल में हर शजर में मुहम्मद का नूर है

कायनात का ख़ालिक अल्लाह है मगर कायनात के हर शय पर नाम पाक मुहम्मद लिख कर अल्लह ने ऐलान फरमा दिया है कि ऐ दुनिया वालो मैं दोनों जहान का ख़ालिक हूं तो मेरा महबूब। दोनों जहान का मालिक व मुख़्तार है इसलिये आशिकों के इमाम सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं-

मैं तो मालिक ही कहूंगा कि हो मालिक के हबीब

यानी महबूब व मुहिब्ब में नहीं मेरा तेरा

सवाल : तुमने कहा कि शानदान कोठियां, आला महल खुशनुमा बंगले बनाना बिल्कुल जायज़ है मगर हदीस शरीफ में इसकी मुमानेअत है। हत्ता कि एक शख़्स ने ऊंचा मकान बना लिया था तो जब तक उसे खुद अपने हाथ से न ढहा दिया हुजूर ने उनके सलाम के जवाब न दिया। एक साहब अपने मकान की मरम्मत कर रहे थे हुजूर ने फरमाया कि मौत तो इससे भी करीब है। इस हदीस शरीफ से मालूम हुआ कि पक्का मकान बनाना शानदार महल और कोठी बंगला बनाना हुजूर के लिये बाइसे ईज़ा है। (नादान मुसलमान)

जवाब : वह हदीस हंगामी हालात की हैं जब कि मुसलमानों को दिफाई तैयारियों, जिहादों की सख़्त ज़रूरत थी ऐसे हालात में ऐसे अहकाम जारी हो जाते हैं। हमारे मुल्क में हंगामी हालात में रात को शहरों और बस्तियों में रौशनी तक नही की जाती। हदीस शरीफ में है कि एक घर में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खेती बाड़ी करने वाले आलात व सामान मुलाहेज़ा फरमाये तो फरमाया कि जिस घर में यह चीज़ें होंगी वहां ज़िल्लत व ख़्वारी होगी। हालांकि ज़राअत और खेती बाड़ी पर ज़िन्दगी का दारोमदार है। वह फरमाने आली भी इन्हें हंगामी हालात में था कि अगर तुम ने आज के हालात में जिहाद छोड़ दिया खेती बाड़ी और मकान बनाने संवारने में मसरूफ हो गये तो दुश्मन तुम को तबाह व बरबाद कर देंगे। जब हालात नारमल हो गये तो यह अहकाम भी ख़त्म हो गये। हज़रत सहाबा किराम ने बड़ी बड़ी इमारतें और शानदार महल

बनाये लिहाज़ा अच्छा मकान शानदार महल और खूबसूरत बंगला बनाना दुरुस्त है, अलबत्ता इस पर गुरूर व घमंड करना यह जायज नहीं। इससे अल्लाह और रसूल की नाराज़गी होती है। फरमाने नबवी है कि एक दौर ऐसा भी आयेगा कि लोग अच्छे अच्छे मकान बनायेंगे उसको संवारेंगे मगर कब्र को भूल जायेंगे।

सवाल : कुरआन में है कि खबीस औरतों खबीस मर्दों के लिये और पाक व नेक औरतें पाक लोगों के लिये। हालांकि हज़रत नबी लूत अलैहिस्सलाम की बीवी काफिरा थीं और कुफ्र या काफिर नापाक है तो ऐसी नापाक काफिरा औरत पाक नबी की निकाह में क्यों?

जवाब : तुम्हारी पेश कर्दा आयत के हवाला मैं खबीसात से मुराद काफिरा औरतें नहीं बल्कि फाहेशा, ज़ानिया बदकार औरतों मुराद हैं। वाकई किसी नबी की बीवी फाहेशा नहीं हुई। नबी की बीवी काफिरा हो सकती है बल्कि हुई भी है मगर बदकार, ज़ानिया नहीं हो सकती हैं यह कुरआन व अहादीस का ऐलान है।

सवाल : अल्लाह ने लूत अलैहिस्सलाम की बीवी व अहलिया को हिदायत क्यों न दे दी, इसे ईमान की तौफीक न मिलने से नुबूवत के दामन पर धब्बा लगता है कि वह अपनी बीवी को भी हिदायत न दे सके? (नादान लोग)

जवाब : इस वाकिये में अल्लाह की शाने बेनियाजी का इज़हार है कि अगर वह करम करे तो गैरों अजनबियों को भी हिदायत दे दे और अगर वह करम न करे तो खास नबी के घर वालों को भी हिदायत न मिले। नीज़ कयामत तक नबी की औलाद को सबक है कि कोई अपनी पैगम्बर जादगी पर फख्र न करे, गुरूर हस्ब न नस्ब में मुबतला न हो। अल्लाह से रहमत व हिदायत मांगे। हमने देखा है कि बाज पढ़े लिखे सैयदजादे कादयानी बहाई होकर मरे। इस बहाई फिरके का पेशावा सैयद महफूज़ुल हक इल्मी है मैंने खुद उसकी किताब देखी है बहाई फिरके की तबलीग के सिलसिले में यह पहले अहले सुन्नत का बड़ा आलिम था। हर शख्स को हमेशा बुरी सोहबतों बुरी किताबों के मुताला से परहेज करना चाहिये। ईमान एक दौलत है इसकी हिफाज़त करो। वाहेला अपनी काफिर कौम में घुली मिली रहती थी और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के खिलाफ जासूसी में भी मुलव्विस थी।

सवाल : बाज़ बुज़ुर्गों से बसा औक़ात ख़िलाफ़े शरई अफ़आल सादिर हो जाते हैं जैसे कि अल्लाह के इश्क़ में ख़ुद को बुलंदी से गिरा देना और दम तोड़ देना। यह ख़ुदकशी हुई और ख़ुदकशी शरीयत में हराम है? (अवाम)

जवाब : फनाइयत महवियत और इस्तग़राक़ी कैफ़ियत जब बंदे पर तारी होती है तो बंदा शरीयत का पाबंद नहीं रहता। जिन बुज़ुर्गों से इस्तग़राक़ी कैफ़ियत में ऐसा फेअल सरज़द हुआ उसे ख़ुदकशी से ताबीर नहीं किया जा सकता है। जैसा कि सरकार गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब मजमए आम में तक़रीर या ख़िताब फ़रमाते थे तो आपकी तक़रीर सुनकर बाज़ सूफ़ियाए किराम और अहले दिल पर फनाइयत, महवियत और इस्तिग़राक़ तारी हो जाता था और मजमा में चीख़ मारकर बेहोश हो जाते और उनकी रूह क़फ़से उनसुरी से परवाज़ कर जाती। लिहाज़ा उनके इस फेल को ख़ुदकशी नहीं कहा जायेगा, जिन्होंने अल्लाह से दिल लगा दिया वह अपनी मक़सद में कामयाब हो गये।

सवाल : अगर अज़ाब की जगह रहना मना है तो लोग मक्का मोअज़्ज़मा में क्यों रहते हैं? वहां पर भी तो असहाबे फील पर अज़ाब आया था जिस का ज़िक्र कुरआन में मौजूद है?

जवाब : यह अज़ाब मक्का मोअज़्ज़मा से बाहर आया। यह जगह मिना को जाते हुए बायें तरफ पड़ती है जो शहर मक्का से दूर है। वहां रहना, क्या ठहरना भी मना है। हत्ता कि हुज्जाजे किराम को वहां से तेज़ी से गुज़र जाने का हुक्म है लिहाज़ा कोई एतेराज़ नहीं। (आर्य)

सवाल : कुरआन में है कि हम कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन के दिलों पर मुहर लगा देंगे तो वह सुन न सकें। सुनना दिल का काम नहीं, कानों का काम है तो यह कैसे हो सकता है कि मुहर दिल पर लगे और कान सुनने से महरूम हो जावें, यह बात अक़्ल में नहीं आती?

जवाब : जैसे ज़ाहिरी हालात में देखा जाता है कि जब सोने या बेहोशी या दीवानगी की हालत में दिल पर असर पड़ता है तो कान आंखें, देखना और सुनना छोड़ देते हैं ऐसे ही रूहानियत में है कि जब दिल पर बद दीनी और कुफ़्र व शिर्क की मुहर लग जाती है तो कान हक़ बात सुनते ही नहीं। आंखें हक़ देखती ही नहीं। बज़ाहिर सुनना देखना मालूम होता है मगर दिल चूंकि उसे कबूल नहीं

करता इस लिये यह सुनना बेकार होता है। लिहाज़ा यह सुनना न सुनने की तरह है देखना न देखने की तरह है। इसी को तो कुरआन ने कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन को अंधा, बहरा, मुर्दा फरमाया है कि जो दिल रखते हुए भी हक़ कबूल न करे वह मुर्दा हैं जो कान रखते हुए भी हक़ न सुने वह बहरा है, जो आंख रखते हुए हक़ न देखे वह अंधा है, जो जुबान रखते हुए हक़ न बोले वह गूंगा है।

सवाल : अगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का असा सांप बन जाता था फिर बाद में लाठी हो जाता था तो आरियों का मसला तनासुख दुरुस्त हुआ कि इंसान मरने के बाद कुत्ता बिल्ला बनकर दुनिया में आता है हालांकि मुसलमान इस अक़ीदे को कुफ़्र कहते हैं?

जवाब : इस सवाल का जवाब दिया जा चुका है कि जिस्मों का तनासुख रात व दिन होता रहता है जिस्मे ईसानी क़ब्र में गल कर मिट्टी आग में जलकर राख बन जाता है। सर का मेल जूं और चारपाई का मेल खटमल बन जाता है। अलबत्ता अरवाह का नतासुख़ ना मुमकिन है कि रूह इंसान नातिक़ घोड़े गधे की रूह बन जाये। आर्या रूहों का तनासुख़ मानते हैं, रांग, चांदी कान की नमक में जो चीज़ जाकर नमक बन जाती है यह सब तनासुख़ अबदान है। लिहाज़ा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मोजिज़ा से मिट्टी का परिन्दा बन जाना, लाठी का सांप हो जाना बिल्कुल बरहक़ हैं मालूम हुआ कि तनासुख़ रूह का नाम आवागून है न कि तनासुख़ अबदान।

सवाल : यह तबदीली हकीकत आपके हाथ का मोजिज़ा था या असा का। अगर आपके हाथ का मोजिज़ा था तो चाहिये था कि आप हर लाठी को सांप बना दिया करते और अगर लाठी का मोजिज़ा था तो चाहिये था कि यह लाठी हर एक के हाथ में सांप बन जाया करती? (माद्दा परस्त)

जवाब : मोजिज़ा आपके हाथ शरीफ का था मगर इसका मज़हर यह ख़ास लाठी थी जैसे बिजली का पावर रौशनी देता है मगर इसका मज़हर बल्ब होता है। चुनांचे अगर पावर का ताल्लुक़ बल्ब के बजाए तेल के चिराग़ से कर दिया जाये तो वह रौशनी न देगा। यह बात ख़्याल में रहे कि फिरओनी जादूगरों ने भी रस्सियों, बल्लियों, बांसों को सांप बनाकर दिखाया मगर वहां सिर्फ नज़र बंद थी, हकीकत न बदली थी। इसको जादू कहते हैं। नबी के ज़रिये जैसे चीज़

की हकीकत बदल जाती है वैसे ही चीज़ की सिफात भी बदल जाती है। जब नबी की बरकत से चीज़ों की ज़ात व सिफात बदल जाती है तो ऐसे ही उनकी बरकत से इंसानों की ज़ात व सिफात बदल जाती है। हुजूर अनवर ने अपने कम्बल शरीफ में हब्शी को लेकर हसीन बना दिया। ज़ाहिर व बातिन सब बदल दिया। नक्शा बदल दिया, रंग व रूप बदल दिया। काफिर को मोमिन, फ़ासिक को नेक, मुत्तकी, ग़ाफिल को आरिफ़ बना दिया।

सवाल : अल्लाह तआला ने फ़िरओनी जादूगरों के इस जादू को अज़ीम क्यों फरमाया। रब की शान तो यह है कि इस दुनिया और दुनिया की सारी चीज़ों को हकीर व कलील फरमाया और कहा ऐ मेरे महबूब फरमा दो कि दुनिया की पूंजी थोड़ी और कम है मगर यहां फ़िरओनी जादूगरों के चंद सांपों को अज़ीम फरमाना उसकी शान के ख़िलाफ़ है।

जवाब : इस सवाल के दो जवाब हैं, एक यह कि जादू देखने वालों में अज़ीम है या जादूगरों के नज़दीक बड़ा था या जादू के फन के लिहाज़ से बड़ा था न कि अल्लाह के नज़दीक। बहुत चीज़ें दुनिया वालों की नज़र में मामूली होती हैं मगर अल्लाह के नज़दीक अजीम होती हैं। देखो उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा पर तोहमत लगाना उस वक़्त के मुनाफ़िकों की नज़र में मामूली बात थी मगर अल्लाह के नज़दीक वह गुनाहे अज़ीम था और बाज़ चीज़ें इसके बर अक्स दुनियावालों की नज़र में बहुत ही अज़ीम और बड़ी होती हैं मगर रब तआला के नज़दीक मामूली हकीर। जैसे यह दुनिया और इसकी तमाम चीज़ें और जैसे यह मज़कूरा जादू। दूसरे यह कि जादू अल्लाह के नज़दीक भी अजीमुश्शान था कि इसी के ज़रिये इतने बहुत से जादूगरों को ईमान मिला। चूंकि इस जादू को निसबत थी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से और मूसा अलैहिस्सलाम तो अज़ीम हैं लिहाज़ा यह जादू भी अज़ीम हुआ। देखो रब तआला ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के फ़िदये वाले दुम्बे को अज़ीम बनाया हालांकि दुम्बा ज़्यादा से ज़्यादा डेढ़ मन का होगा चूंकि उसे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से निसबत थी लिहाज़ा अज़ीम हुआ।

सवाल : फ़िरओनी जादूगर न तो इसराईली थे न तो मिस्री। फिर वह मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान क्यों लाये? मूसा अलैहिस्सलाम न उनके नबी थे न यह लोग आप के उम्मती कि आप सिर्फ़ इसराईलों और मिस्रियों के नबी थे?

जवाब : हर नबी पर ईमान लाना चाहिये। देखो हम लोग मुहम्मदी मुसलमान हैं मगर सारे नबियों पर हमारा ईमान है। उम्मत न होने के मायने यह होते हैं कि उनके शरीयत के अहकाम उन लोगों पर जारी नहीं हो सकते। गुजिश्ता अंबियाए किराम अगरचे ख़ास ख़ास जमाअतों के नबी हुए मगर उन्होंने ईमान की दावत सब को दी। हां अपने अहकाम सिर्फ इन्हीं पर जारी किये जिनके वह नबी थे। यह फर्क ख़्याल में रहना चाहिये।

सवाल : बदला लेना रब तआला की शान के ख़िलाफ है। माफी देना इस की शान है। फिर उसने कुरआन में यह क्यों फरमाया कि हमने फिरओनियों से बदला लिया?

जवाब : ज़ालिम से मज़लूम का बदला लेना ऐन इंसाफ है। इसे छोड़ देना जुल्म है। अल्लाह तआला ने फिरओनियों से इसराईली मजलूम बच्चों, मोमिन जादूगरों का बदला लिया। यह ऐन इंसाफ था। नीज़ मूज़ी को सज़ा देना जरूरी है, सांप को मार देना ज़रूरी, ज़िन्दा छोड़ दिया तो लोगों पर जुल्म है कि वह किसी और को डसेगा।

सवाल : अल्लाह के यहां हस्ब नस्ब कोई चीज़ नहीं। फज़ीलत आमाल और तकवा पर है। अल्लाह तआला फरमाता है, लिहाज़ा साबित हुआ कि बद ख़्वारिज अमल सैयद से नेक आमाल वाला ग़ैर सैयद अफज़ल है।

जवाब : यह ग़लत है। औलादे नबी होना अल्लाह तआला की ख़ास रहमत है। तुम्हारी पेशकर्दा यह आयात में ख़िताब कुफ्फारे अरब से है कि कुफ्र के होते हुए हस्ब व नस्ब से शराफत नहीं मिलती। या इस आयत का मकसद यह है कि औलादे रसूल अपने को आमाल से बे नियाज़ न जाने बल्कि दूसरों से ज़्यादा नेकियां करे। वरना बताओ बनी इसराईल को आलेमीन से अफज़ल क्यों फरमाया गया जब कि वह बुत परस्ती की ख़्वाहिश भी कर चुके थे। इसकी तहकीक के लिये हमारी किताब नस्बुर्रसूल का मुताला करो।

सवाल : मुस्लिम शरीफ की रिवायत है कि किसी ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा क्या आपने रब तआला को देखा है? तो हुजूर ने फरमाया, वो वह नूर है, मैं उसे कैसे देखूं? मालूम हुआ कि हुजूर ने रब का [illegible] -मज़हब)

जवाब : इस हदीस की असल इबारत मोतरज़ ने नहीं पढ़ी। तर्जमा पढ़ा। मगर वह भी गलत किया। हदीस शरीफ की असल इबारत यह है मैने उसे देखा है वह नूर है दूसरे मकाम पर फरमाया मैंने अपने रब को एक हसीन व जमील रूप में देखा जैसा कि उस की शान है। लिहाज़ा यह हदीस उन हदीस के खिलाफ नहीं जो हमने अभी दीदारे इलाही की सबूत में पेश की। ख्याल रहे कि हालते ज़ाहिरी और हालते बेदारी में रब का दीदार सिर्फ हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खास्सा है। अलबत्ता हालत नोम में गैर नबी के लिये दीदार मुमकिन है जैसा कि उलमाए जम्हूर का इत्तेफाक है।

सवाल : अल्लाह तआला नूर है औरहमारी आंखें नूर को नहीं देख सकतीं। देखो फरिश्ते नूर हैं जो आंख को नज़र नहीं आते तो खुदा तआला कैसे नज़र आ सकता है? (बाज़ जोहला)

जवाब : इस सवाल के दो जवाब हैं। एक यह कि अल्लाह तआला की ज़ात नूर नहीं वह खालिक नूर है, क्योंकि नूर या तो वह जिस्म है या वह अर्ज़ जो खुद ज़ाहिर हो, दूसरों को ज़ाहिर करे और रब तआला जिस्म होने, अर्ज़ होने दोनों से पाक है। तफसीर बेज़ावी ने नूर की तफसीर में फरमाया कि नूर एक कैफियत है जो खुद ज़ाहिर हो और दूसरों को ज़ाहिर करे। बहरहाल अल्लाह तआला की ज़ात नूर नहीं आयते करीमा में नूर बामायने मुनव्वर है यानी वह आसमानों और ज़मीनों को रौशन करने वाला है।

सवाल : तुम सुन्नी बरेलवी लोग हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शरई अहकाम का मालिक मानते हो यह शिर्क है, शरई अहकाम का मालिक सिर्फ अल्लाह तआला है। (वहाबी)

जवाब : तुम लोग दुनियावी बादशाहों और हुक्काम को दुनियावी कवानीन का मालिक व मुख्तार मानते हो कि इन्हें फांसी देने, उम्र कैद देने, जुर्माना करनेका इख्तेयार है। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दीनी सुलतान हैं। वह दीनी कवानीन के मालिक हैं मगर रब के मालिक करने से हैं। पूरा मालिक वही होता है जो दूसरों को मालिक कर सके। जम्हूर उलमा का कौल है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तशरीई इख्तेयार हासिल है। शरई कानून को जैसा चाहें बदल दें। चाहें तो सुराका के लिय सोना हलाल कर दें, चाहें तो अबू

खुज़ैमा अंसारी की गवाही दो मर्दों के बराबर कर दें, चाहें तो किसी को एक ही वक़्त की नमाज़ पढ़ने की शर्त पर मुसलमान कर दें। वह अपनी मर्ज़ी से कुछ भी कहते हैं या करते नहीं बल्कि ख़ुदा की मर्ज़ी होती है। वही मुस्तफा की मर्ज़ी उनकी शाने अज़ीम है।

सवाल : हदीस शरीफ में है कि उम्मते मुहम्मदिया की खुसूसियत है कि यह सारी की सारी गुमराह न होंगी। इसमें एक फिरका हक पर रहेगा मगर कुरआन में सूर: आराफ आयत नं० १५९ से मालूम होता है कि बनी इसराईल में भी सारे गुमराह न हुए। इनमें भी एक जमाअत हक पर रही। यह आयत इस हदीस के ख़िलाफ है। (इसाई-यहूदी)

जवाब : बनी इसराईल मौसूवी रहकर हिदायत पर नहीं रहे कि वह दीन मंसूख़ हो गया। इनमें जो हक पर कायम रहे वही थे जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाये। जैसे अब्दुल्लाह बिनल सलाम जनाब मूसा कलीमुल्लाह की औलाद हैं और जनाब हबीबुल्लाह के सहाबी जांबाज़। उम्मते मुहम्मदिया की यह खुसूसियत है कि इनमें एक जमाअत मुहम्मदी रहते हुए हक पर होंगे कि दीन मंसूख़ नहीं। लिहाज़ा आयत व अहादीस में कोई तारुज़ नहीं और अगर कुरआन के फरमान के मायने यह हों कि मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में इसराईलियों की एक जमाअत हक पर थी तब तो कोई एतेराज़ ही नहीं। कि उनकी हिदायत एक ख़ास वक़्त में थी। हुज़ूर की उम्मत का हिदायत पर कायम रहना ता क्यामत है।

सवाल : मूसा अलैहिस्सलाम के मोजिज़ात हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मोजिज़ात से अफज़ल व आला थे देखो हमारे हुज़ूर के लाठी से कभी पानी के चश्मे न निकले, असाए मूसवी ने यह करिश्मा करके दिखाया। (नेचरी)

जवाब : असाए मूसवी ने पत्थर से पानी निकाला, पानी पत्थरों ही से निकला करता है क्योंकि यह पानी के ममबअ और मर्कज़ हैं। ज़मीन और पत्थरों से पानी के चश्मे फूटना बाइसे ताज्जुब व कमाल नहीं। कमाल तो यह है कि उंगलियों से पानी का चश्मा जारी हो। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उंगलियों से हुदैबिया के मकाम पर पानी निकाला जिससे पंद्रह सौ

सहाबाए किराम ने प्यास बुझाई। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि अगर एक लाख भी होते तो खुदा की कसम यह पानी सब के लिये काफी होता। इसी तरह लुआबे मुबारक हांडी में डाला तो उसमे गोश्त, शोरबे वग़ैरह के चश्मे फूट पड़े। यह मूसा अलैहिस्सलाम के मोजिज़े से भी अज़ीम तर मोजिज़ा है। असाए मूसवी से जो बारह चश्मे जारी हुए वह आपकी ज़िन्दगी में खुश्क भी हो गये लेकिन कलीमुल्लाह के नबी मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कलबे इंसानी पर जब नुबूवत वाली निगाहों से ज़र्ब लगायी तो दिलों पर पड़े हुए कुफ्र व शिर्क के पत्थर पिघल गये और इसमें ईमान के चश्मे जारी हो गये। मेरे नबी ने अपनी निगाह पाक से लोहे और पत्थर से ज़्यादा सख़्त दिल पर निगाह डाली तो अनवार व ईमान और इल्म व हिकमत के चश्मे बहा दिये और दिल को अल्लाह का अर्श बना दिया। ख़ौफे इलाही से पत्थरों से पनी के चश्मे फूटते हैं लेकिन कुफ्र व शिर्क करने वालों के दिल पत्थरों से भी ज़्याद सख़्त होते हैं, ऐसे सख़्त दिल को मेरे नबी ने अपनी निगाहे नुबूवत से मोम बना दिया। यह मेरे नबी का अज़ीम मोजिज़ा नहीं तो फिर और क्या है? उलमाए किराम व मुहद्देसीन इज्ज़ाम फरमाते हैं कि हुजूर के दस्ते हक़ परस्त पर दो लाख ७४ हज़ार मोजिज़ात का ज़हूर हुए-

दिये मोजिज़े अंबिया को खुदा ने
हमारा नबी मोजिज़ा बनके आया

सवाल : जब अल्लाह जानता था कि बलअम बिन बाउरा का अंजाम ख़राब होगा तो पहले उसे इल्म तसर्रुफ वली आलिम सूफी मुस्तजाबुद दावात और अपना कुर्ब अता क्यों फरमाया? इसे पहले ही से मरदूद किया होता? (आम लोग)

जवाब : इबलीस और बलअम बिन बाउरा दोनों के वाकियात में कयामत तक लोगों के लिये मिसाल फरमाना है ताकि ता कयामत मौलवी, सूफी, पीर मशायख़ गौर करें कि नबी की मुखालेफत से सब कुछ बरबाद हो जाता है इसलिये दोनों को आलिम और सूफी बनाकर मारा। अगर इंसान ठीक रहे तो फ़रिश्तों से भी अफज़ल व आला हो जाये और अगर बिगड़े तो शैतान का भी उस्ताद हो जायें। ख़्याल रहे कि शैतान मुख़्तलिफ लोगों के पास मुख़्तलिफ

शक्लों में जाता है। नफ़सानी लोगों के पास नफ़सानी शक्ल में गुनाहों और बुराईयों पर खूब सूरत रंग की पालिश करता है। नाचना, गाना, खेल कूद, तमाशा वग़ैरह की पालिस नफ़सानी लोगों के लिये करता है मगर रूहानी लोगों के पास रूहानी लिबास पहनकर पहुंचता है। गुमराह कुन मौलवी, बे दीन पीर बन कर आता है। बद आमालियां बद अकीदगियां आयाते कुरआनिया से साबित करता है। हमने बाज़ बे दीन मौलवियों को देखा कि मिम्बर पर खड़े होकर हाथ में कुरआन लेकर इल्म गैब मुस्तफा, इख़्तेयाराते रसूल और शाने रिसालत घटाते हुए नज़र आये। याद रखो जिसके दिल में नबी की अदावत हो वह बहुक्मे कुरआन शैतन है। अगरचे आलिम की शक्ल में हो या पीर व मुरशिद की सूरत में। उसकी महफिल शैतानी है। ऐसों की महफिल में बैठना, उनकी बातों को सुनना, उनसे मुरीद होना कतई हराम हैं इसके बर अक्स जिसके दिल में नबी की उलफत व मुहब्बत हो वह महबूबे रहमान है अगरचे गुदड़ी में हो, उसकी महफिल रहमानी है उसका कलाम उसके सब काम रहमानी। जिस काग़ज़ में कुरआन लिख दिया जाये अहले ईमान उसे चूमते हैं जिस दिल में उलफते रसूल इश्के नबी नक़्श हो उसके दिल को फरिश्ते बोसे देते हैं। जिन लबों व जुबान से नअत रसूल और अज़मते मुस्तफा ब्यान हो वह बोसा गाहे मलायका हैं, दुश्मने रसूल और गुस्ताख़े नबी के जुबान पर शैतान बोलता है। गुलामे रसूल और आशिके रसूल की जुबान पर रहमान बोलता है।

सवाल : किसी को कुत्ता, गधा वग़ैरह कहना तहज़ीब के ख़िलाफ है, उससे अपना ही मुंह गंदा होता हैं कुरआन मजीद ने जो कि आला दर्जे की मुहज़्जब किताब है, यह तरीका क्यों इख़्तेयार फरमाया, कि बलअम बिन बाउरा को कुत्ते की तरह फरमाया? (यहूदी-इसाई)

जवाब : जी हां, यह आजकल की फिरंगी तहज़ीब के ख़िलाफ होगा, मगर यह मुहज़्ज़ब लोग जब अपनी ज़ात का मामला पड़े तो यह तालीम भूल जाते हैं। अपनी मामलात में बर्दाश्त करो मगर अल्लाह व रसूल के दुश्मनों को अच्छी तरह बुरा कहो। हम तो नमाज़ में पहले ही शैतान को बुरा कहते हैं फिर तिलावत शुरू करते हैं। कुरआन मजीद की पूरी एक सूरः लहब और उसकी बीवी जमीला की बुराई में आयी है जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की राह में कांटे बिछाती थी और अबू लहब जो शाने रिसालत में बकवास करता था। मालूम हुआ कि

अल्लाह और रसूल के दुश्मनों का ऐब ब्यान करना उनकी बुराई करना, उनकी तौहीन करना उनके फ़ासिद नज़रियात की तरदीद करना सुन्नते इलाहिया है।

सवाल : बेशक हमने जहन्नम के लिये पैदा किये बहुत से जिन्न और इंसान। इस आयते करीमा से मालूम हुआ कि अक्सर जिन्न व इन्स दौजख़ के लिये पैदा किये गये हैं मगर दूसरी जगह कुरआन में है कि सारे जिन्न और इंसान अल्लाह की इबादत के लिये पैदा हुए। यहां दोनों आयात में तारुज़ है। (आर्य)

जवाब : दोनों आयतें सही हैं यहां इस आयत में लाम आक़बत और अंजाम का है और दूसरी वाली आयत में लाम मक़सद और हिकमत का है। अल्लाह तआला ने सारे जिन्न व इन्स को इस मक़सद और हिकमत से पैदा फ़रमाया कि सब अल्लाह की इबादत करें मगर अक्सर लोगों ने इस मक़सद को पूरा न किया। अक्सर का अंजाम दौज़ख़ है कि उन्होंने बदकारियां करके अपने आपको दौजख़ का मुस्तहिक़ कर लिया। जैसा कि कारख़ाना जूता बनाता है पांव में पहनने के लिये, टोपी सर पर ओढ़ने के लिये, यह है बनाने का मक़सद। अब अगर कोई पागल जूता सर पर बांध ले और टोपी पांव में पहन ले तो यह हुआ इन दोनों का ग़लत अंजाम और इस्तेमाल जो खुद पहनने वाले की अपनी ग़लती का नतीजा हैं देखो अल्लाह तआला ने फ़िरओनियों को माल दिया था नेकियां करने के लिये मगर उन्होंने माल को बंदों की गुमराही के लिये इस्तेमाल किया। यह हुआ उनका अपना ग़लत इस्तेमाल और माल का अंजाम।

सवाल : अल्लाह तआला के ९९ नाम हैं सारे नाम अच्छे हैं मगर उसके नाम कहार, व जब्बार भी हैं, यह दोनों नाम के मायने के लिहाज़ से अच्छे नहीं। किसी पर जबर या कहर करना तो बुरा है फिर भी इसके यह नाम क्यों? (आर्य)

जवाब : जब्बार, कहार, के मायने ज़ालिम नहीं बल्कि जब्बार के मायने हैं जबर, नुक़सान या तलाफ़ी कर देने वाला, कि एक नेकी की बरकत से सदहा गुनाह माफ़ फ़रमा देता है। कहार के मायने ग़ालिब के हैं कि सारी मख़लूक इसके ज़ेरे फ़रमान है और वह सारी मख़लूक पर ग़ालिब है लिहाज़ा यह नाम बहुत ही प्यारे, गुनाहगारों के सहारे और शानदार हैं।

सवाल : तुम ने कुरआन से साबित किया कि इंसान का निकाह ईसानी औरत से ही हो सकता है, दूसरी मख़लूक से नहीं मगर रब फ़रमाता है कि हमने

जन्नती इंसानों का निकाह हूरों से कर दिया हालांकि हूरें इंसान नहीं। यानी औलादे आदम नहीं फिर भी यह निकाह दुरुस्त कैसे हुआ? (आर्य)

जवाब : इस सवाल का जवाब बस इतना ही समझ लो कि यह अहकाम इस दुनिया के हैं जन्नत दूसरी दुनिया हैं वहां के अहकाम दूसरे हैं। वहां ग़ैर जिन्स से निकाह दुरुस्त होगा। यहां ज़िक्र इस दुनिया का है।

सवाल : हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने मलिका बिलकीस (जो उस वक़्त मुल्के सबा की हुक्मरां थी) से निकाह किया जो जिन्नाती थी यूं ही हज़रत अली का निकाह एक जिन्नाती से हुआ जिसके पेट से मुहम्मद हनीफ पैदा हुए। फिर तुम्हारा यह क़ायदा दुरुस्त कैसे हुआ? (आम जाहिल)

जवाब : यह दोनों बातें ग़लत हैं बिलक़ीस इंसानी औरत थी जिसका सबूत कुरआन की तफ़ासीर में मौजूद है और हज़रत अली का निकाह किसी जिन्नाती से नहीं हुआ। यह भी ग़लत है और न आप के किसी बेटे का नाम मुहम्मद हनीफ़ है अहदे सिद्दीक़ी में कबीला बनी हनीफ़ा से जंग हुई जो मुस्लेमा कज़्ज़ाब की क़ौम थी। इस जंग में एक औरत खूला बिन्त जाफ़र कैद होकर आयी उसके शिकम से जो लड़का पैदा हुआ उसका नाम मुहम्मद बिन हनफ़ीया हुआ कि उनकी मां हनीफ़ा थी।

सवाल : कुफ़्फ़ार मक्का को अल्लाह तआला ने बिल्कुल हलाक क्यों न फ़रमाया, उनके जुर्म तो क़ौमे फ़िरओन वग़ैरह से भी किसी तरह कम न थे? बदर में फ़रिश्ते आये मगर काफ़िरों को हलाक किया।

जवाब : इसलिये कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रहमते आलम हैं। आपके आने से दुनिया में कुफ़्फ़ार पर ग़ैबी अज़ाब आना बन्द हो गया। बदर में जो मारे गये वह तो मारे गये मगर जो बाक़ी बचे वह सारे कुफ़्फ़ार बाद में ईमान ले आये और उन्होंने इस्लाम की बड़ी बड़ी ख़िदमत अंजाम दीं। हुज़ूर ने कुफ़्र को मिटाया, काफ़िरों का हलाक न फ़रमाया कि वही दावते इस्लामी के लिये असल ज़मीन हैं। आज मुसलमानों में बड़ी ख़राबियां और बिगाड़ हैं जिसकी वजह से उलमा अपनी दावत का रुख़ कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन के बजाए मुस्लेमीन की तरफ़ किये हुए हैं।

सवाल : हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी को ज़िन्दगी कैसे दे सकते हैं, वह तो खुद ज़िन्दा न रहे, वफात पा गये, लिहाज़ा यह अकीदा ग़लत है कि रसूल जिसे चाहें जिन्दगी बख़्श दें? (बदअकीदा, गुस्ताखे रसूल)

जवाब : जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुर्दा कहे उसका अपना दिल व दिमाग़ और ईमान मुर्दा है हम तमाम सुन्नी मुसलमानों का अकीदा है कि वह ज़िन्दा थे, ज़िन्दा हैं, और ज़िन्दा रहेंगे। बल्कि जिस पर उनका निगाह पड़ जाये वह नहीं मरता। रब तआला कुरआन में शोहदा के लिये फरमाता है कि वह ज़िन्दा हैं। अल्लाह वालों की मौत उनकी जिन्दगी को फना नहीं कर सकती। सूरज डूबकर छिप जाता है, मिट नहीं जाता, हुजूर वफात पाकर हम से छिप गये हैं मिट नहीं गये। सूरज छिपकर भी दुनिया के काम बनाता है, रात बनाता है, तारे चमकाता है, नमाज़ मग़्रिब ईशा और तहज्जुद के औकात बताता है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कब्रे अनवर में हम सबसे छिपकर हमारे सारे दीनी काम बना रहे हैं ईमान, इरफान, तकवा बल्कि आलम का बका हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है आशिकों के इमाम आला हज़रत शाह अहमद मुहद्दिस बरैलवी फरमाते हैं-

वह जो न थे तो कुछ न था वह जो हैं तो सब कुछ है
जान हैं वह जहान की जान है तो जहान है

सवाल : अगर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ता कयामत हम में मौजूद हैं और दुनिया में अज़ाबे इलाही नही आ सकते हैं तो दिनों रात कत्ल व ग़ारतगरी, ज़लज़ले तबाह कुन सैलाब वग़ैरह दुनिया में क्यों आते हैं? लिहाज़ा या तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नहीं या आप हम में मौजूद नहीं?

जवाब : इस सूरत में अज़ाब से मुराद ग़ैबी तबाहकुन अज़ाब है। यह वाकई ता कयामत न आयेगा जिसे पूरी कौम हलाक हो। यहां अज़ाब से मुराद ग़ैबी अज़ाब हैं जैसे आसमान से पत्थर या आग का बरसना, सूरतें मसख़ हो जाना, ज़मीन का तख़्ता उलट जाना, ऐसे आम अज़ाब न आयेंगे।

सवाल : अल्लाह तआला ने ग़ज़वए बदर को रौशन दलील क्यों फरमाया? हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सारे मोजिज़ात रौशने दलील थे जो भी उन्हें देखकर काफिर रहां वह रोशन दलील देखकर ही मरा और जो रौशन और

वाज़ेह दलील देखकर भी ईमान लाये फिर इस रोशन दलील का क्या मतलब?

जवाब : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दूसरे मोजिज़ात में कुफ्फार व मुश्रेकीन गौर करते ही न थे और इन्हें देखते ही न थे। मगर फतह बदर वह मोजिज़ा है जो इन्हें देखना पड़ गया। इस बदर की वजह से हज़रत अब्बास जैसे लोग ईमान लाये। इसके बाद भी जो काफ़िर रहा वाकई वह बड़ा बदबख़्त था। ख़्याल रहे कि ७० कुफ्फार जो बदर में मुसलमानों के हाथों कैद हुए और हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु की राय पर फ़िदया लेकर छोड़े गये वह सारे ही मुसलमान हो गये, बल्कि बाद में उन्होंने शानदार ख़िदमते इस्लाम अंजाम दीं। यह हुआ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मोज़िज़ा और हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खुली करामत, इन वजूहात की बिना पर यह फतह बदर रौशन दलील कहलाई।

सवाल : रियाकारी दिखावा बुरी चीज़ है मगर इस्लाम में बहुत सी नेकियों का ऐलान है जैसे नमाज़, पंजगाना, जुमा, ईदैन, ऐलानिया जमाअत से नमाज़ पढ़ो, ज़कात दो, हज को ऐलानिया जाओ, लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक का शोर करते जाओ, यह ऐलान बुरा क्यों न हुआ? यह भी तो एक तरह से दिखावा है?

जवाब : एक है ऐलान और एक है दिखावा। ऐलान और दिखावा (रियाकारी) में बहुत बड़ा फर्क है। रियाकारी यह है कि नेकी की जाये लोगों को खुश करने और उनमें अपनी नामवरी हासिल करने के लिये यह बुरा है। इबादत का ऐलान कभी दावते तबलीग़ के लिये होता है कि दूसरों को भी इसका काम की रग़बत हो जैसे कि हज और ज़कात का ऐलानिया हुकम है ताकि लोग उनकी तरफ मायल हों और उनको ज़कात देने का जज़्बा पैदा हो।

सवाल : यह कैसे हो सकता है कि शैतान शक्ल इंसानी में आवे और फिर शैतान भी रहे? यह तो इजतेमआ ज़िद्दैन है शैतानियत और इंसानियत अलहेदा जिन्स हैं और हर जिन्स दूसरे जिन्स की ज़िद है अपोज़िट है।

जवाब : अल्लाह तआला ने नूरी फरिश्तों और नारी जिन्नात में तबदीली शक्ल की ताकत ही है बारहा हज़रत जिब्राईल शक्ल इंसानी में देखे गये। लिबास व जिस्म भी इंसान जैसा हो गया। बुखारी शरीफ वग़ैरह की अहादीस है कि बारहा सहाबा किराम ने हज़रत जिब्राईल को इंसानी शक्ल में देखा है।

इस सूरत में उनकी सूरत इंसानी हो जाती है। सीरत व हकीकत वही रहती है जैसे हजरत मूसा अलैहिस्सलाम का असा सांप बन जाता था, लिहाजा यह दोनों इज्तेमअ जिददैन नहीं।

सवाल : जब अल्लाह तआला शैतान को कयामत तक जिन्दगी दे चुका है तो जंगे बदर में उसे फरिश्तों को देखकर खौफ किस चीज का हुवा? उसे मरने का खतरा तो था ही नहीं? (आम लोग)

जवाब : इस एतेराज के जवाब में लोगों ने बहुत धोके खाये हैं। किसी ने कहा कि वह फरिश्तों को देखकर समझा कि कयामत आज ही है, किसी ने कहा कि रब ने उसे कयामत तक की मोहलत दी है शायद वह दिन आज ही है। मगर यह सब जवाब कमजोर हैं। कवी जवाब यह है कि उसे मौत का खौफ न हुआ थ, मार का खौफ था कि आज इन कुफ्फार की शामत आ रही है अगर मैं उनके साथ रहा तो मेरी भी खैर नहीं।

सवाल : जंगे बदर में शैतान फरिश्तों को देखकर भागा। हदीस शरीफ में है कि हमारे साथ हर वक्त फरिश्ते रहते हैं। ६० तो हमारी हिफाजत के लिये और दो हमारे अच्छे बुरे आमाल को तहरीर के लिये। तो हमारे पास शैतान कैसे आ सकता है? उन फरिश्तों से क्यों नहीं भागता? (आर्य)

जवाब : जंगे बदर में फरिश्तें मुसलमानों की मदद में कुफ्फार व मुश्रेकीन को शिकस्त देने आये थे उनकी यह डयूटी देखकर शैतान भागा। हमारे साथ के फरिश्ते उनकी डयूटी सिर्फ हिफाजत या आमाल की तहरीर है कि इसलिये उसे उनसे कोई खतरा नहीं। इस वजह से वह बे खतर हमारे पास आ जाात है जैसे कि वह जन्नत में हजरत आदम के पास धोका देने के लिये पहुंच गया हालांकि वहां फरिश्ते भी थे।

सवाल : आग और जलने का अजाब तो बाद कयामत होगा तो फिर फरिश्ते काफिर से मरते वक्त क्यों कहते हैं कि अजाब और आग का मजा चखो, यह क्यों कर दुरुस्त है? (आर्य)

जवाब : अगर यहां दौजख में दाखिला मुराद है तो मायने यह है कि आइंदा दौजख का अजाब चखना हैं मोमिन को मरते वक्त जन्नत की बशारत दी जाती है जो बादे कयामत मिलेगी। यूं ही काफिर को यह डराना मरते वक्त होता है।

और अगर उससे मुराद गुर्ज़ और कोड़ों की मार है या क़ब्र का अज़ाब है तब तो कोई एतेराज़ ही नही है। ख़्याल रहे कि क़ब्र में दौज़ख़ की आग से अज़ाब क़ब्र मुराद हैं इस तरह कि आग वहां पहुंचती हैं बाद क़यामत व दौज़ख़ में जाकर अज़ाब पायेगा। आग का अज़ाब और आग में अज़ाब इन दोनों में फ़र्क़ है।

सवाल : तुमने कहा कि क़ब्र का अज़ाब सिर्फ़ काफ़िरों को होगा मगर हदीस शरीफ़ में है कि बाज़ मुसलमानों को भी अज़ाब क़ब्र होगा जैसे कि पेशाब के छींटों से न बचने वाला, ग़ीबत और चुग़ली खाने वाला, तुम्हारा यह क़ौल क्यों कर दुरुस्त हुआ? (आर्य)

जवाब : हां! बेशक बाज़ मुसलमानों को अज़ाबे क़ब्र होता है मगर उनके अज़ाब और काफ़िर के अज़ाब में चंद तरह का फ़र्क़ है। उस मोमिन को यह अज़ाब आरज़ी होता है जो कुछ दिनों के बाद किसी न किसी ज़रिये से ख़त्म हो जाता है। जैसे क़ब्र पर किसी बुज़ुर्ग अल्लाह वाले का गुज़र या किसी आलमे दीन का गुज़र या ज़िन्दों की तरफ़ से ईसाले सवाब वग़ैरह। दूसरे यह कि मोमिन को ख़ास अज़ाब अंधेरे और क़ब्र की तंगी का होता है मगर क़ब्र में दौज़ख़ की खिड़कियां खुलना, वहां आग की लौ का अज़ाब होना, यह कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन के लिये ख़ास है। अल्लाह हर मोमिन के क़ब्र को मुनव्वर व कुशादा फ़रमाये।

सवाल : कुफ़्फ़ार पर जब शरई अहकाम जारी ही नहीं, उन पर नमाज़ रोज़ा फ़र्ज़ ही नहीं, जुआ, शराब हराम ही नहीं, गर्ज़ कि जब वह शरई अहकाम के मुकल्लफ़ ही नहीं तो उन पर पकड़ कैसी?

जवाब : कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन की पकड़ छोटे बड़े सब गुनाहों पर होगी अगरचे उस पर इबादत फ़र्ज़ नहीं मगर चूंकि उसने आयात, मोजिज़ात और अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की तालीमात का इंकार किया इसलिये वह अदालते इलाहिया का मुजरिम है। कुफ़्फ़ार पर रोज़ा नमाज़ वग़ैरह फ़र्ज़ न होने का मतलब यह है कि बहालते कुफ़्र उन पर शरई इबादात अदाए फ़र्ज़ नहीं और मुसलमान हो जाने पर क़ज़ा फ़र्ज़ नहीं। यह हुक्मे शरई है। मगर अल्लाह के नज़दीक उनको हुक्म है कि ईमान लाओ, नमाज़ रोज़ा, वग़ैरह अदा करो, जुआ, सूद, शराब से बचो। इस अहकाम पर अमल न करने की वजह से उन पर सब जुर्मों की सज़ा और अज़ाब होगा। शरीयत का फ़र्ज़ और चीज़ है और हराम और

चीज़ है। हुकूमते इस्लामिया में अगर कोई ग़ैर मुस्लिम चोरी करे या शरबा पिये या ज़िना करे तो उसको भी सज़ा दी जायेगी। उस पर शरीयत के हुदूद नाफिज़ होंगे। ऐसा नहीं कि वह शरीयत के अहकाम का मुकल्लिफ नहीं। जिस्मानी गुनाह और दुनियावी मामलात वग़ैरह की खराबी पर काफ़िर की पकड़ होगी और उसे भी सज़ा दी जायेगी क्योंकि इस्लाम के बाज़ अहकाम मुआशरती हैं जिस में बसने वाले तमाम पर नाफिज़ होता है ख्वाह वह किसी भी क़ौम व मज़हब से ताल्लुक रखते हों।

सवाल : कुरआन में है कि कुफ्फार व मुश्रेकीन जानवरों से बदतर हैं, मगर दूसरी जगह कुरआन में है कि हमने हज़रते इंसान के सर पर फज़ीलत और बुजुर्गी का ताज रखा। उसे तमाम मख़लूक़ात में अशरफ बनाया। जिससे मालूम हुआ कि मुतलक़न इंसान इज्ज़त वाला है अगरचे वह काफ़िर है मगर है तो इंसान। (आर्य गैर मुस्लिम)

जवाब : इंसानियत और अफ़राद इंसान में बड़ा फर्क हैं इंसानियत यानी हकीकत इंसान (नस्ले इंसान) मलूकियत से भी अफ़ज़ल है। कुरआन पाक में इसी का ज़िक्र है मगर अफ़रादे इंसान उनके हालात मुख्तलिफ हैं। बाज़ इंसान फरिश्तों से भी अफज़ल हैं और बाज़ इंसान जानवरों से भी बदतर बल्कि कुत्ते से भी ज़्यादा हकीर। इसलिये कि कुत्ता जिस के यहां रोटी का टुकड़ा खा लेता है रात भर उसकी निगरानी करता है। उसके चोखट को नहीं छोड़ता। मगर यह इंसान ख़ुदा की बनाई हुई करोड़ों टन पानी और अनाज, फल फ्रूट और लाखों करोड़ों नेमतें खाता हैं उसकी बिछाई हुई ज़मीन पर चलता फिरता और रहता है। उसकी बनाई हुई हवाओं और फ़िज़ाओं में सांस लेता है, वग़ैरह वग़ैरह। मगर फिर भी यह अपने ख़ालिक व मालिक को छोड़कर ग़ैरों की पूजापाट में लगा हुआ है। अपने ख़ालिक व मालिक के अहकाम से मुंह मोड़े हुए हैं तो यह जानवर ओर कुत्ते से बदतर नहीं तो और क्या है?

घटे तो ज़र्राए नाचीज़ से है कम इंसान
बढ़े तो वुसअत कौनेन में समा न सके

सवाल : कुरआन में है कि तमाम सहाबा आपस में एक दूसरे के लिये रहम दिल हैं, वह एक दूसरे के बुग्ज़ व अदावत नहीं रखते थे। उनके दिलों में एक

दूसरे के उलफत व मुहब्बत थी मगर जैसा कि सहाबा में आपस में बुग्ज़ था उसकी मिसाल नहीं मिलेगी। देखो कत्ले उसमान ग़नी, हज़रत अली, व अमीर मुआविया और हज़रत आयशा सिद्दीका की खूंरेज़ जंगें उसका सबूत हैं। उन जंगों में पचास हज़ार मुसलमान दोनों तरफ से मारे गये। क्या उलफत व मुहब्बत में खूंरेज़ जंग होती है? क्या रहम के यही मायने हैं? (गुमराह-बेदीन)

जवाब : इस सवाल का तफसीली जवाब हकीमुल उम्मत हज़रत मुफ्ती अहमद यार खान नईमी रहमतुल्लाह अलैहि की तसनीफ अमीर मुआविया में देखो। यहां मुख्तसरन इतना ही समझो कि जंग व जदाल की तीन वजहें होती हैं (१) इख़्तेलाफे दीन (२) अदावते नफसानी (३) इख़्तेलाफे राय या कुछ ग़लत फहमियां। सहाबए किराम की आपस में लड़ाईयां इख़्तेलाफे दीन या अदावत की न थीं, सिर्फ इख़्तेलाफे राय की थीं। और अगर सहाबा में बुग्ज़ व अदावत होती तो जिस वक़्त रोम के बादशाह ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की सलतनत पर हमला करना चाहा था तो उस वक़्त हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु मुल्के शाम के हुक्मरां थे और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ईराक़ के हुक्मरां थे जब हज़रत मुआविया को पता चला कि रोम का बदशाह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की सलतनत ईराक के शुमाली हिस्से पर हमला करना चाहता है तो आपने उसी वक़्त रूमी बादशाह के नाम पर एक ख़त लिखा, जिसमें साफ साफ लफ़ज़ों में लिखा कि ऐ रूमी कुत्ते! अगर तू हमारे इख़्तेलाफे राय को इख़्तेलाफे नफस समझकर एक इस्लामी मिलकियत पर हमला करना चाहता है तो तुझे मालूम होना चाहिये कि जिस लश्कर के अली कमांडर होंगे उस लश्कर का मुआविया एक अदना सिपाही होगा। इस खत को पाते ही रूमी बादशाह ने हमला का इरादा तर्क कर दिया और खौफज़दा हो गया। काश आलमे इस्लाम के वह हुक्म्रां जो इस्लाम के दुश्मनों का आला कार बने हुए हैं वह एक हो जायें आपसी तमाम झगड़ों को मिटा दें तो आलमे इस्लाम का नकशा कुछ और ही होगा। मगर शर्त है कि आलमे इस्लाम की बागडोर ख़ालिद बिन वलीद के सच्चे जांनशीन के हाथ में हो।

सवाल : क्या अल्लाह व रसूल सिर्फ मुशिरकों से बेज़ार हैं दूसरे काफिरों से राज़ी हैं? क्या फरमाया गया?

जवाब : यहां मुश्रेकीन से मुराद ता क़यामत सारे कुफ्फार हैं क्योंकि अल्लाह व रसूल हर काफिर से बे ज़ार व नाराज़ हैं ख़्वाह किसी किस्म का काफिर हो। कुरआन मजीद में अक्सर मुश्रिक बामायने काफिर हैं यह मतलब नहीं कि अल्लाह तआला सिर्फ मुश्रिकों से तो नाराज़ है बाकी मजूसी, यहूदी, हनूदी, ईसाई सारे काफिरों से राज़ी है। लिहाज़ा मुश्रेकीन से मुराद सारे काफिर होते हैं। चूंकि अरब में मुश्रेकीन बहुत थे, दूसरे काफिर थोड़े थे इसलिये अक्सर मुश्रेकीन कहा जाता है।

सवाल : कहते हैं यानी कुफ्फार और मुश्रेकीन के वादों का एतेबार नहीं मगर आज देखा जा रहा है कि बामुकाबला मुसलमान कुफ्फार जुबान के ज़्यादा पाबंद होते हैं फिर यह कौल क्यों कर दुरुस्त हुआ? (आर्य ग़ैर मुस्लिम)

जवाब : इसकी वजह सोहबत है यानी कुफ्फार की सोहबत में रहकर ग़द्दार बद अहद बन गये और कुफ्फार हमारी सोहबत में रहकर वफादार बन गये। हमारी खूबियां उन्होनें ले लीं, उनकी बुराईयां हमने इख़्तेयार कर लीं। मगर इतना ख़्याल रहे कि कुफ्फार की यह अहद पाबंदियां अल्लाह के खौफ से नहीं हैं बल्कि सियासी और दुनियावी अग़राज़ व मकासिद से अपने नफ़अ के लिये होती हैं। मोमिन को चाहिये कि एक सुराख़ से दोबारा न काटा जाए जहां से बेवफाई का तर्जबा हो चुका है इस पर आइंदा एतेमाद न करे। देखो कुफ्फार व मुश्रेकीन की हुकूमतों ने मुसलमानों से कितने वादे किये मगर सब से फिर गये। फसादात के वक़्त हम नवाला व हम प्याला दोस्तों ने ही अपने मुसलमान दोस्त के घर को जलाया और लूटा। अक्सर कुफ्फार जुबान के मीठे दिल के कड़वे ज़हर होते हैं ऐसे लोग बहुत ख़तरनाक हैं। काला सांप शोर नहीं मचाता चुपके से काटता और सुला देता है।

सवाल : तुमने कहा कि कुफ्फार व मुश्रेकीन मस्जिद में न आयें हालांकि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ही बनो सकीब को मस्जिद में ठहराया, समामा को मस्जिद के सतून से बांधा हालांकि वह मुश्रिक थे। बाद में मुसलमान हो गये। अगर तुम्हारा यह मसला दुरुस्त है तो हिंदु मेमआर मज़दूरों से मस्जिद तामीर न कराई जाये हालांकि रात दिन यह काम होता है?

जवाब : मजबूरन या ज़रूरतन कुफ्फार को मस्जिद में आने की इजाज़त

देना जायज़ है। वह मुसलमानों की इजाज़त लेकर आ सकते हैं। लिहाज़ा मुश्रेकीन मज़दूर, इंजीनियर, मस्जिद में बुलाये जा सकते हैं बशर्तेकि उनके जूते बदन कपड़े वग़ैरह नापाक न हों। हां कुफ्फार व मुश्रेकीन को मस्जिदों में बुलाना वहां मिम्बर पर बैठकर तक़रीर करना उनकी तारीफें करना, यह सब हराम हैं। कबीला बनी सक़ीफ और समामा हुज़ूर के इजाज़त से आये थे।

सवाल : आख़िर इसमें हर्ज ही क्या है कि कुफ्फार व मुश्रेकीन हमारी मस्जिदों में बे तकल्लुफ आया जाया करें इससे मना क्यों फरमाया गया है? हमारी मस्जिद में वह अपनी इबादत करें उनकी मंदिरों में गिरजाओं में हम इबादत करें।

जवाब : इसकी बहुत सी हिकमतें उलमाए इस्लाम और मुफस्सेरीन ने फरमाई हैं जिनमें से एक यह है कि मस्जिद अल्लाह की ख़ालिस तौहीदी इबादत के लिये बनायी गयी हैं न कि शरकिया इबादत के लिये। मस्जिद में इबादत का हक़ सिर्फ और सिर्फ अहले ईमान ही को है कुफ्फार व मुश्रेकीन को क़तई नहीं। इनका हमारी मस्जिदों में आना ऐसा है जैसे हम बावरची ख़ाने में कुत्ते गधे पालें। हमारा उनकी मंदिरों और गिरजा घरों में इबादत के लिये जाना ऐसा ही है जैसे हम पाख़ाना में बैठकर रोटी पकायें। दूसरे यह कि यह इज्तेमआ फसाद व ख़ूंरेज़ी का ज़रिया है। हम नमाज़ पढ़ रहे हैं वह मस्जिद के अंदर बाजे और घंटे बजा रहे हैं। अक्सर देखा गया है कि मस्जिद के सामने बाजा, ढोल, ताशा, बजाने पर कौमी फसाद हो जाते हैं तो अगर मस्जिद के अंदर बजें तो क्या हाल होगा? बहुमत से सुलह कुल्ली वज़ीर, प्रधान, सरपंच को कौमी एकता सम्मेलन में कुफ्रिया अल्फाज़ व अशआर बकते हुए देखा गया है। जो लोग हिंदु व मुस्लिम की इत्तेहाद की बात करते हैं जब वक़्त आता है तो वही मुसलमानों के ख़िलाफ नापाक मंसूबे बनाते हैं। कोई कौमी इत्तेहाद के उसूल पर अमल नहीं करता। नीज़ हिंदु मुस्लिम इत्तेहाद का मतलब यह नहीं कि हम उनके मंदिर में जाकर नमाज़ या कुरआन पढ़ें और वह हमारी मस्जिद में आकर भजन कीर्तन करें। कौमी इत्तेहाद बड़ी अच्छी बात है दुनिया के तमाम मज़ाहिब खुलूस हमदर्दी इंसानी भाई चारा प्यार व मुहब्बत इंसानियत व शराफत समानता व मानवता से ही रहने की तालीम देते हैं। अगर तमाम लोग अपने अपने मज़हब के उसूलों पर अमल करें तो दुनिया में अमन व अमान कायम हो जायेगा मगर हाथी के दांत

खाने के और दिखाने के और। ऐ मर्दे मोमिन ध्यान से मेरी बात सुन-

गुफ़तार सियासत में वतन और ही कुछ है
इरशाद नुबूवत में वतन और ही कुछ है
बाज़ू तेरा तौहीद की कुव्वत से कवी है
इस्लाम तेरा देश है तू मुस्तफ़वी है

सवाल : कुरआन में है कि अल्लाह तआला ज़ालिम कौम को हिदायत नहीं देता मगर कुरआन करीम और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सारे जहानों के लिये हिदायत हैं तो क्या कुफ्फार व मुश्रेकीन जहानों से अलग हैं?

जवाब : हिदायत के मायने होते हैं राह दिखाना, यह सब को है मगर हिदायत बामायने कबूल की तौफीक देना मंज़िल पर पहुचाना किसी नसीब वाले को मयस्सर है। कुरआन व अहादीस का हिदायत देना आम है मगर हिदायत लेना आम नहीं अल्लाह की तौफीक से है।

सवाल : अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत सारे अजीज़ों और मां, औलाद, बीवी मां बाप हत्ता कि अपनी जान से भी ज़्यादा होना ईमान के लिये ज़रूरी है तो आज कोई भी मुसलमान नहीं। बड़े बड़े लोग बीवी बच्चों और माले दुनिया की मुहब्बत में फंस कर हुज़ूर की बहुत नाफरमानी या कर लेते हैं। एक तरफ बीवी बच्चों की ज़िद होती है दूसरी तरफ हुज़ूर का फ़रमान। वह बच्चों की ज़िद पूरी करने के लिये चोरी भी कर लेते हैं, सूद ब्याज रिश्वत वग़ैरह भी ले लेते हैं। (बाज़ हज़रात)

जवाब : तुमने मुकाबला गलत किया, मुहब्बतों का मुकाबला कुफ्र व इमान के मौके पर होता है। हम ने जाहिल मां बाप को देखा है कि अगर उनका इकलौता बेटा काफिर हो जाये तो उस पर थूक देते हैं। उसकी शक्ल नहीं देखना पसंद करते हैं। इस्लामी तारीख़ का मशहूर वाकिया है कि जंगे उहद के मौके पर शैतान ने जब यह खबर उड़ा दी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हो गये जब यह खबर मदीना तक पहुंची तो कबीला बनू दीनार की एक औरत ने अपने जज़्बात से मग़लूब होकर घर से निकल पड़ी और मैदाने जंग की तरफ चल पड़ी। रास्ते में उसको बाप भाई शौहर और बेटे की शहादत की खबर मिली मगर उसने कोई परवाह नहीं की और लोगों से सिर्फ यही पूछती

रही कि मुझे यह बताओ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कैसे हैं? मेरे आक़ा व मौला की हालत कैसी है? जब उसे बताया गया कि अलहम्दोलिल्लाह आप हर तरह से ठीक हैं तो इससे भी उस बूढ़ी औरत को तसल्ली न हुई और कहने लगी तुम लोग मुझे रहमते आलम का दीदार करा दो। मुझे उनके पास ले चलो, जब लोगों ने उनको रहमते आलम के पास ले जाकर खड़ा कर दिया तो उस सहाबिया ने जमाले नुबूवत को देखा तो बे इख़्तेयार पुकार उठी या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप के होते हुए मेरी हर मुसीबत हेच है।

मुसलमान कौम बे अमल सही मगर आज भी मुसलमान अपने नबी की अज़मतों के ख़ातिर अपनी जान अपना माल अपनी औलाद कुरबान कर देना बाइसे फख़्र व सआदत समझता है। यह है ग़लबए मुहब्बते रसूल हज़ारों बद आमालियों के बावजूद जो इश्क़ व मुहब्बत इसको अपने नबी से है वह किसी से नहीं।

बद सही, चोर सही, मुजरिम व नाकार सही
ऐ कि वह कैसा ही सही, हूं तो करीमा तेरा
(कलामे रज़ा)

सवाल : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिहाद से भागने को गुनाहे कबीरा फरमाया। सहाबा ने ग़ज़वए हुनैन से भाग गये। उन्होंने गुनाहे कबीरा किया यह फिस्क़ है मालूम हुआ कि सहाबा फासिक़ थे? (बद तमीज़ गुस्ताख़)

जवाब : ग़ज़वए हुनैन में जिन सहाबा के कदम उखड़ गये वह सब मुत्तकी हैं। इस घबराहट से न वह ईमान से निकले और न ही तक़वा से। हां इन का भागना गुनाह हुआ मगर इस गुनाह के माफी का ऐलान भी हो गया और उन्होंने उस जंग में फतह हासिल करके कुफ्फारा अदा किया। माफी के बाद इस गुनाह का ताना देना गुनाह है। हम सहाबाए किराम को मासूम नही मानते आदिल मानते हैं। आदिल वह जो गुनाह पर कायम न रहे। मासूम सिर्फ हज़रात अंबियाए किराम और फरिश्ते हैं।

सवाल : तुम भी ईसाईयों की तरह हुज़ूर से गुनाह माफ करवाते हो और कहते हो कि बख़्श दो मेरी ख़तायें, भेज दो अपनी अतायें या नबी सलाम अलैक पढ़ा करते हो तुम भी इन्हीं की तरह मुश्रिक हो। (वहाबी, गुस्ताख़)

जवाब : हम हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रब के गुनाह नहीं बख़्शवाते बल्कि हुजूर अनवर के मारे हुए हुकूक़ बख़्शवाते हैं। हर गुनाह में रब तआला का भी हक़ मारा जाता है और हुजूर अनवर का भी मसलन हमारा नमाज़ न पढ़ना अल्लाह की नाराज़गी का बाइस है और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तकलीफ़ का सबब और हक़ हक़दार ही माफ़ करता है।

सवाल : रब ने फ़रमाया कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को या इस्लाम को तमाम दीनों पर ग़ालिब करेगा मगर देखा जा रहा है कि हर जगह हर मुल्क में मुसलमान पसती में हैं बाज़ जगह से तो मुसलमानों का नाम व निशान मिट चुका है फिर यह वादा कैसे सही हुआ? (आर्य)

जवाब : यहां हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या दीने इस्लाम के ग़ल्बे का ज़िक्र है ना कि मुसलमानों के हमेशा दूसरी कौमों पर ग़ालिब रहने का। मुसलमान ख़्वाह ग़ालिब रहें या मग़लूब मुसलमानों का दीन तमाम दीनों पर मुसलमानों का नबी तमाम दीनी पेशवाओं पर ग़ालिब हैं और रहेंगे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और इस्लाम के दुश्मन हमेशा से नबी पाक की अज़मत व शान घटाने और इस्लाम को दबाने की सर तोड़ कोशिशें कर रहे हैं और करते रहेंगे मगर इनमें कोई भी अपने इस नापाक इरादे में कामयाब न होगा। अगरचे किसी जगह किसी वक़्त मुसलमान कुफ्फार से दब जायें मगर दीनी ग़ल्बा इस्लाम को ही हासिल रहेगा। देख लो कुरआन मजीद आज भी तमाम मज़हबी किताबों पर ग़ालिब हैं इस्लाम की मस्जिदें तमाम मज़ाहिब के इबादतख़ानों पर ग़ालिब हैं। इस्लाम का मक्का और मदीना सारे मज़हबी मकामात पर ग़ालिब हैं कि इस का हज व ज़ियारत हर साल होता है जिस की मिसाल नही मिलती। हमारे सरकार हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम दीनों के पेशवाओं पर ग़ालिब हैं। आज भी जितना चर्चा इस्लाम और इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हैं इतनी किसी की नहीं। एक लाख से ज़्यादा हुजूर की सीरत मुकद्देसा पर किताबें लिखी गयीं। इतनी किसी कौम के मज़हबी पेशवा की नहीं। यहूदी और ईसाई अभी तक हज़रत मूसा व ईसा अलैहिमुस्सलाम की सवानेह हयात न लिख सके। उम्मते मुहम्मदिया के उलमा ने हुजूर की सीरत के मौजूअ पर लाखों किताबें लिख डाली हत्ता कि मदीना पाक के गली कूचों और वहां की हर चीज़ की तवारीख़ लिखी गयी। इस

तरह अल्लाह तआला ने हुजूर और दीन इस्लाम को सब पर ग़ल्बा अता फ़रमाया मगर मुसलमान अपनी बद आमाली से मग़लूब और ज़वाल पज़ीर है।

सबब कुछ और है तू जिस को खुद समझता है
ज़वाल बंदए मोमिन का बे ज़री से नहीं

सवाल : कुरआन में है कि जो लोग सोना चांदी जमा करके रखते हैं और उसकी ज़कात अदा नहीं करते यानी खुदा की राह में खर्च नहीं करते उन्हें भयानक दर्दनाक अज़ाब मिलेगा और उनके माल से उनकी जिस्मों को दाग़ा जायेगा तो चाहिये कि आज कल के बख़ीलों को यह सज़ा न मिले क्योंकि अब तो लोग काग़ज़ के नोट जमा करते हैं और काग़ज़ दौज़ख़ की आग में तप नहीं सकता बल्कि वह जल जायेगा। (बाज़ नादान)

जवाब : नोट अगरचे काग़ज़ है मगर सोने का काम देता है इससे तिजारत कायम है। इससे सोना चांदी भी ख़रीदा जा सकता है लिहाज़ा उनका एहकाम उनका अंजाम भी सोने की तरह है। चुनांचे चादी मान कर उन पर ज़कात वाजिब होती है। दुनिया में इन्हें चांदी माना जाता है हत्ता कि रुपया कहा जाता है तो आख़िरत में इन्हें चांदी सोना बना दिया जायेगा और इसी से उनके जिस्मों को दाग़ा जायेगा।

सवाल : मुनाफ़ेक़ीन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने ऐसी बकवास कर जाते थे जो बे अदबी और गुस्ताख़ी पर महमूल होता था मगर सहाबाए किराम उनको कुछ न कहते थे उनकी ग़ैरत को क्या हुआ था, आज कोई शख़्स हुजूर अनवर के मुताल्लिक ऐसी बकवास करे तो मुसलमान उसकी जान ले लें। (ग़ैर मुस्लिम)

जवाब : इस सवाल के तीन जवाब हैं। दो इल्ज़ामी एक तहकीकी। पहला इल्ज़ामी जवाब तो यह है कि इबलीस ने रब तआला की बारगाह में बड़ी बकवास की मगर फ़रिश्ते सुनते रहे कुछ न बोले इसकी क्या वजह थी? दूसरा इल्ज़ामी जवाब यह कि उस वक़्त रब तआला ने भी कुछ न कहा न इन्हें अज़ाब दिया। दरबारे ग़ैरते इलाही जोश में क्यों न आया? तहकीकी जवाब यह है कि उस वक़्त हालात ही कुछ ऐसे थे कि इन बातों पर तहम्मुल किया जावे वरना दूसरे ममालिक में ख़बर उड़ती कि मुसलमान तो मुसलमानों ही को कत्ल करते हैं।

इनमें आपस में जंग है तो दूसरी कौमों पर से मुसलमानों का रोब व दबदबा भी जाता रहता और लोग मुसलमान होने की हिम्मत न करते। बहुत दफ़ा हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऐसे गुस्ताख़ों को क़त्ल की इजाज़त मांगी मगर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना भी फ़रमा दिया। हज़रत उमर के ज़माने में ऐलान किया गया कि निफ़ाक़ हुजूर अनवर के वक़्त ही था। अब या कुफ़्र है या इस्लाम यानी किसी भी मुनाफ़िक़ और शाने रिसालत में गुस्ताख़ी करने वाले को माफ़ न किया जाये क्योंकि अब हालात बदल गये थे इसलिये मुरतिद या गुस्ताख़े नबी की सज़ा क़त्ल तजवीद की गयी।

कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन के माल व मताअ उनकी नेकियों का दुनियावी सवाब और बदला नहीं बल्कि अल्लाह की तरफ़ से ढील है ताकि और ज़्यादा गुनाह कर लें या यूं कहो कि कुफ़्फ़ार के माल व मताअ का दुनियावी अज़ाब है जिससे उनकी ग़फ़लत और सरकशी में और भी ज़्यादती होती है और उनका कुफ़्री एतेक़ाद और क़वी होता है वह सोचते हैं कि अगर मैं हक़ पर न होता तो ख़ुदा मुझे यह सब माल व दौलत की फ़रावानी और खुशहाली क्यों देता। इस तरह शैतान उनकी खूब मदद करता है ताकि वह अपने कुफ़्रियात में खूब पुख़्ता हो जायें।

सवाल : हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ से कोई फ़ायदा नहीं। हुजूर की दुआ से रब तआला से नहीं बख़्शता, देखो कुरआन में फ़रमाया गया है कि अगर आप मुनाफ़ेक़ीन व कुफ़्फ़ार के लिये सत्तर बार भी दुआ करें जब भी हम इन्हें नहीं बख़्शेंगे। फिर तुम लोग उनकी दुआ की आस क्यों लगाये बैठे हो? (बेअदब, गुस्ताख़ लोग)

जवाब : जी हां! हुजूर की दुआ काफ़िरीन मुनाफ़ेक़ीन के लिये फ़ायदेमंद नहीं इसलिये कि वह बख़्शिश के लायक़ ही नहीं। चमगादड़ की आंख सूरज से रौशनी हासिल नहीं कर सकती। अगर मुअतरिज़ भी उन्हीं में से है तो वाक़ई उसे हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नफ़ा नहीं पहुंचेगा। हम गुनाहगारों के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़रमाया, ऐ मेरे महबूब! अपने गुलामों के लिये दुआए रहमत करो और फ़रमाता है कि जो लोग अपनी जानों पर जुल्म करके तुम्हारे पास आ जावें और आप उनके लिये दुआए मग्फ़िरत करें तो वह अल्लाह तआला को तो अब

(तौबा कबूल करने वाला) व रहीम पायेंगे। यानी ऐ महबूब! जब तक तू न चाहे जब तक तो उनकी बख़्शिश की सिफ़ारिश न करे मैं उन्हें नहीं बख़्शूंगा। मेरे हुज़ूर वकील उम्मत हैं अगर कोई शख़्स हुकूमत के किसी क़ानून या ज़ाब्ते की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करे तो उसे किसी वकील या मुख़्तारे अदालत के पास जाना पड़ता है। डायरेक्ट वह जज के पास पेश नहीं होता बल्कि वकील के ज़रिये व वसीले वह जाता है और जज के पास जाने के पहले उसका वकील उसे समझा देता है कि जब तुम अदालत में जज के सामने पेश हो और जज तुझसे यह सवाल करे तो यह यह जवाब दे देना घबराना नहीं मैं तेरे पास खड़ा रहूंगा। मैं तुझे कुछ नहीं होने दूंगा। इसी तरह अदालते इलाहिया में हुज़ूर के बग़ैर कोई सुनवाई न होगी। ऐ मेरे उम्मती फ़िक्र मत करना क़ब्र में तेरा नबी तेरे साथ होगा वह पूछेंगे कि तुम्हारा रब कौन है तो कह देना कि मेरा रब अल्लाह है। अगर वह पूछेंगे कि तेरा दीन क्या है तो बोल देना मेरा दीन इस्लाम है। पूछेंगे तेरे वकील कौन है तो मेरा नाम ले लेना। फिर देखना-

क़ब्र में लहरायेंगे ता हश्र चशमे नूर के
जल्वा फ़रमा होगी जब तलअत रसूलुल्लाह की
वह जहन्नम में गया जो उनसे मुसत्तग़नी हुआ
है ख़लीलुल्लाह को हाजत रसूलुल्लाह की
-कलामे रज़ा

सवाल : तुम कहते हो कि अल्लाह के वली को राज़ी कर लो तो हुज़ूर राज़ी हो जाते हैं और हुज़ूर राज़ी हो जायें तो ख़ुदा राज़ी हो जाता है मगर कुरआन में सहाबा किराम से अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि जो तमाम वलीयों के सरताज हैं कि ऐ जमाअते सहाबा अगर तुम उन मुनाफ़िक़ों से राज़ी हो जाओ तो अल्लाह तआला राज़ी न होगा। मालूम हुआ कि नबी वली की रज़ा से ख़ुदा की रज़ा हासिल नहीं होती। (वहाबी)

जवाब : अल्लाह के मक़बूल बंदों को राज़ी करने की दो सूरतें हैं। एक तो उनकी ख़िदमत करके राज़ी करना, दूसरे उन्हें धोका फ़रेब देकर राज़ी कर लेना, इस दूसरी किस्म की रज़ा से अल्लाह और ज़्यादा नाराज़ होता है। पहली किस्म की रज़ा वह है जो अल्लाह को राज़ी करती है वह हुज़ूर अनवर

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत व फरमा बरदारी है। मोमिनीन हुजूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दुआए मग्फिरत कराते थे और मुनाफेकीन भी अपनी चालाकियों से दुआए मग्फिरत कराते थे। उनके लिये इरशाद हुआ कि ऐ मेरे महबूब अगर सत्तर बार भी उनके लिये दुआए मग्फिरत करें तो भी हम उन्हें नहीं बख्शेंगे क्योंकि वह आपसे बुग्ज व कीना रखते हैं। वह बे अदब और गुस्ताख हैं। दुआ कराने और दुआ लेने में बड़ा फर्क है ऐसे ही राजी कर लेने और धोका देने में बड़ा फर्क है। आला हजरत बरैलवी फरमाते हैं-

करके तुम्हारे गुनाह मांगे तुम्ही से पनाह
तुम कहो दामन में आ तुम पे करोड़ों दुरूद

सवाल : हदीस शरीफ में है कि हमारा मदीना भट्टी है खबीस लोगों को निकाल देता है तो मदीना के मुनाफिकों को जमीन मदीना से क्यों नहीं निकाला? (वहाबी)

जवाब : वाकई जमीन मदीना खबीस लोगों को निकाल फेंकती है मगर किसी को जल्द किसी को देर से हत्ता कि बाज को मरने के बाद उसकी लाश को मरने के बाद फरिश्ते जमीन से निकाल कर बाहर डाल देते हैं। रिवायत में है कि अल्लाह के एक वली थे एक रात उन्होंने ख्वाब में देखा कि जन्नतुल बकी (मदीना मुनव्वरा) के कब्रस्तानों से कुछ लाशें निकाल कर दूसरी जगह पहुंचाया जा रहा है और बाहर से कुछ लाशें लाकर जन्नतुल बकी में दफन किया जा रहा है। आपने उन निकालने वालों से पूछा कि यह किस की लाशें हैं जो जन्नतुल बकी में लाकर दफनाई जा रही हैं? जवाब दिया गया कि जिन लोगों की लाशें निकाल कर मदीना से बाहर पहुंचाई जा रही हैं यह मुनाफेकीन और उन बद बख्त लोगों की लाशें हैं जो मदीना में रहकर भी नबी पर दुरूद व सलाम नहीं पढ़ते थे। नबी के शाने अज़मत के मुन्किर थे और जिन खुश नसीबों की लाशों को बाहर से लाकर जन्नतुल बकी में दफन किया जा रहा है यह उन आशिकों की लाशें हैं जो मदीना से दूर दूसरे मुल्कों में रहते थे मगर जिन्दगी भर मदीने की याद में तड़पते थे कि काश मदीना देखना नसीब हो जाये। सुनहरे जालियों के रूबरू खड़े होकर सलाम पढ़ो लेकिन गुरबत व अफलास ने इन्हें पहुंचने न दिया और अपने मुल्क में रहकर आका पर सलाम पेश करते थे। मदीने की याद और तड़प लेकर वह दुनिया से रुखसत हो गये। उनकी इश्के रसूल और दुरूद

व सलाम की बरकत से अल्लाह ने उन्हें अपने प्यारे महबूब की जवार रहमत में जगह नसीब किया है। यह उन्हीं आशिकों की लाशें हैं जो जन्नतुल बक़ी में दफ़नाई जा रही हैं-

काश तैयबा में ऐ मेरे माहे मुबीं
दफ़ा होने को मिल जाये दो गज़र ज़मीं
कोई इस के सिवा आरजू ही नहीं
तुम पे हर दम करोड़ों दुरूद व सलाम

सवाल : मस्जिद ज़र्रार हुज़ूर ने क्यों उसे गिरवा दिया, उसे कायम रखते वहां से मुनाफ़िकों को निकाल दिया होता मस्जिद ता कयामत मस्जिद ही रहती है इस पर इमारत रहे या न रहे यह वह काबिले एहतेराम है हुज़ूर ने इसे गिरवा दिया इसमें मस्जिद की तौहीन है? (आर्य, गुमराह लोग)

जवाब : जब मस्जिद बने तो क़यामत तक रहेगी वह जगह मस्जिद बनी ही नहीं थी। इसके बाक़ी रखने में दो ख़राबियां होतीं। एक यह कि उस मस्जिद का वक्फ़ दुरुस्त मानना पड़ता यह ग़लत था क्योंकि मुनाफ़ेक़ीन कुफ़्फार का वक्फ़ शरअन दुरुसत नहीं। दूसरे यह कि उससे जुर्म की जड़ न कटती कभी यही मुनाफ़ेक़ीन या दूसरे उसे इस्लाम के ख़िलाफ़ अड्डा बना लेते। मूसा अलैहिस्सलाम ने सामरी का बछड़ा आग में जलवा दिया उसका सोना भी जिससे की वह बना था बाक़ी न रखा, न किसी को उस सोने की इस्तेमाल की इजाज़त दी ताकि जुर्म की जड़ कट जाये। मस्जिद ज़र्रार को मुनाफ़ेक़ीन मदीना ने इस नीयत से तामीर की थी और उसकी दीवारें निहायत कमज़ोर थीं कि जब हुज़ूर उस मस्जिद में आयेंगे तो हम उन दीवारों को उन पर गिरा देंगे और वह इसी के नीचे दब कर हलाक हो जायेंगे। मुनाफ़ेक़ीन की इस साज़िश से अल्लाह तआला ने अपने नबी को आगाह कर दिया। हुज़ूर ने सहाबा किराम को हुक्म दिया कि जाओ उस मस्जिद को गिरा दो क्योंकि उसकी बुनियाद नेक नियती पर नहीं बल्कि इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िश पर रखी गयी है। अल्लाह व रसूल के नज़दीक वह मस्जिद है ही नहीं। अगर वह बर क़रार रही तो दूसरे इस्लाम के ख़िलाफ़ उसे अपना अड्डा बना लेंगे।

सवाल : तो चाहिये कि औलिया अल्लाह के कुबूर पर बने हुए गुंबद बल्कि उनकी कब्रें ढा दी जायें कि यह शिर्क व कुफ्र का मर्कज़ और हज़ार हा गुनाहों का अड्डा हैं। यह मस्जिद ज़र्रार से बढ़कर नुक़सान देह हैं। (वहाबी)

जवाब : मस्जिद जर्रार असल में मस्जिद बनी ही नहीं इसका वक्फ दुरुस्त ही नहीं हुआ इसकी खराबी असल थी जिसकी तसदीक़ मैं अल्लाह तआला ने फरमाया कि ऐ मेरे महबूब! यह जो मुनाफिक़ों ने मस्जिद बनाई है इसकी बुनियाद तक़वा और नेक नीयती पर नहीं है बल्कि इस्लाम को नुक़सान पहुचांने के लिये है इसलिये आप इसे गिरा दें यह मस्जिद नहीं बल्कि इस्लाम के ख़िलाफ एक तखरीब ख़ाना हैं रही बात मज़ाराते औलिया पर गुंबद बनाने की तो उनकी असल सहीह है। अगर चंद जुहला और मुजावर वहां ख़राबियां पैदा कर दें नाचगाना, तबला, सारंगी हारमोनियम ढोल बाजा और तमाशा ला दें तो यह खराबी आरजी इस ख़राबी को मिटा दो असल इमारत बाक़ी रखो। दानिश मंदी यह नहीं है कि अगर आप के नाक पर मक्खी बैठी तो आप नाक ही काट कर फेंक दें बल्कि दानिश मंदी यह है कि आप मक्खी उड़ा दो नाक को सलामत रखो। देखो खाना काबा में बुत रखे गये। हुजूर अनवर ने उन बुतों की वजह से काबा नहीं ढाया बल्कि मौका मिलने पर वहां से बुत निकाल दिये। असल और आरज़ी ख़राबी का फर्क ध्यान में रहे। आज कल निकाह के वक़्त बहुत गुनाह किये जाते हैं। शरीयत के खिलाफ खुले आम हरकतें होती हैं। इन ख़िलाफ शरअ रस्मों और रिवाजों को ख़त्म करो। हराम काम न करो। असल निकाल है बंदा न करे। उलमा किराम बुजुर्गाने दीन की मज़ारों पर गुंबद और इमारत बनाना सुन्नते सहाबा से साबित है। ज़्यारते कुबूर भी सुन्नत है। ज़्यारते कुबूर का शरई तरीका सीखो किसी आरजी ख़राबी और अपनी जहालत से सुन्नत न मिटाओ।

सवाल : कुफ्फार व मुश्रेकीन के लिये दुआए मग्फिरत मना क्यों है जब काफिर मां बाप की ख़िदमत करना अच्छा है तो चाहिये कि उनके लिये दुआ करना भी अच्छा हो। ख़िदमत तो दुआ से भी आला है?

जवाब : इसलिये कि इस दुआ में रब तआला से दर परदा अर्ज़ किया जाता है कि तू अपने कलाम को झूठा कर दे क्योंकि रब तआला ने फरमाया कि अल्लाह अल्लाह तआला मुश्रिक को नहीं बख़्शेगा। तुम कहते हो कि खुदाया इसे

ख़्बश दे तो इसका मतलब साफ़ यह है कि वह अपना कलाम ग़लत कर दे लिहाज़ा यह दुआ रब तआला की तकज़ीब (झुटलाने) की दुआ है। किसी ना मुमकिन चीज़ की दुआ जायज़ नहीं। आज यह दुआ करना कि खुदाया मुझे नबी कर दे नबी करने की दुआ मांगना सिर्फ़ हराम ही नहीं बल्कि कुफ़्र है।

सवाल : हो सकता है जिसे हम काफ़िर समझते हैं वह मोमिन होकर मरा हो इस एहतेमाल से उसके लिये दुआए मग़्फ़िरत में क्या हज्र है? (आम बे दीन)

जवाब : इस सवाल के दो जवाब हैं एक इल्ज़ामी दूसरा तहकीकी। इल्ज़ामी जवाब तो यह है कि फिर मुसलमान मुर्दा को भी जला देना जायज़ होना चाहिये कि शायद वह काफ़िर होकर मरा हो। तहीकीकी जवाब यह है कि किसी शख़्स का मरते वक़्त तक काफ़िर रहना उसका इस्लाम ज़ाहिर न करना इस बात की अलामत है कि वह काफ़िर मरा। ऐसे ही किसी का मरते वक़्त मोमिन रहना इसका कुफ़्र ज़ाहिर न होना उसके मोमिन होकर मरने की अलामत है। लिहाज़ा यह एहतेमाल कि शायद फलां काफ़िर मोमिन मरा हो या शायद यह फलां मोमिन काफ़िर होकर मरा है महज़ बातिल है। कुफ़्र व इस्लाम के अहकाम ज़ाहिर है। लिहाज़ा किसी मुश्रिक का कफ़न दफ़न नमाज़े जनाज़े पढ़ना उसके लिये दुआए मग्फ़िरत करना कि शायद वह मुसलमान होकर मरा या किसी मुसलमान का दफ़न कफ़न नमाज़े जनाज़ा न पढ़ना कि शायद वह काफ़ि मरा हो महज़ बातिल है। ख़्याल रहे कि आम मुर्दा काफ़िरों पर नाम लेकर लानत न की जाये हां यह कहा जाये कि वह ज़िन्दगी में लानती था। हां जिनके कुफ़्र पर मरने की वही आ चुकी है जैसे फ़िरओन, हामान, नमरूद, क़ारून, अबू जहल वग़ैरह इन पर नाम लेकर लानत जायज़ है।

सवाल : हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने काफ़िर व मुश्रिक आज़र के लिये दुआए मग्फ़िरत का वादा क्यों फ़रमाया। हराम काम का वादा करना भी हराम है और गर वादा कर लिया तो पूरा करना भी हराम।

जवाब : मुफ़स्सेरीने किराम ने फ़रमाया कि वादा इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने नहीं बल्कि आज़र ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम से ईमान लाने का वादा किया था इस वादे पर आपने दुआए मग्फ़िरत का वादा फ़रमाया तब तो मामला ही साफ़ है। और अगर आपने आज़र से वादा किया तो क्या वादा किया यही ना कि मैं

तेरे ईमान व मग़्फिरत की दुआ करूंगा कि ख़ुदाया इसे ईमान और माफी दे। तब भी मामला साफ है और आगर आप अपने दुआ का वादा बग़ैर शर्त ईमान किया तो उस वक़्त किया जब कि यह दुआ मुश्रिकों के लिये ममनूअ न थी। जैसे हमारे हुज़ूर ने अब्दुल्लाह बिन उबई की नमाज़े जनाज़ा पढ़ा जब कि यह ममनूअ न था बहरहाल आप पर कोई एतेराज़ नहीं।

सवाल : हदीस शरीफ में है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम कयामत के दिन आज़र से मिलेंगे आख़िरकार बारगाहे इलाही में अर्ज़ करेंगे कि इलाही तूने मुझसे वादा किया था कि तू मुझे कयामत में रुसवा नहीं करेगा। भला इससे बढ़कर मेरी रुसवाई और क्या होगी कि मेरा बाप (चचा) दौज़ख़ में जावे। तब इरशादे इलाही होगा मैंने काफिरों मुश्रिकों पर जन्नत हराम कर दी है फिर उसे दौजख़ में डाल दिया जायेगा। अगर आप दुनिया में इससे बेज़ासर हो चुके थे तो कयामत में उसकी यह शिफाअत कैसी? कुरआन व अहादीस में तारुज़ है यह हदीस इमाम बुख़ारी ने हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की। (बाज़ मुसलमान)

जवाब : हाफिज़ुल हदीस अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी वग़ैरह ने इस सवाल के चंद जवाब दिये हैं। फकीर के नज़दीक कवी जवाब यह है कि हज़रत इब्राहीम का कयामत में उज़्र करना इस की शफाअत के लिये नहीं बल्कि मामला साफ करने के लिये होगा कि इसकी अज़ाब से मेरी शान व अज़मत को धब्बा न लगे। इस हदीस में शिफाअत का एक लफ्ज़ भी नहीं जैसे हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने कनआन के डूब जाने के अर्सा के बाद अर्ज़ किया था। इलाही! वह मेरी घर वालों में से था। इसका मकसद भी इसकी शिफाअत नहीं वह तो डूब चुका बल्कि रब से यह कहलवाकर वह तुम्हारे अहले में से नहीं था। कौम के सामने अपनी हिमायत साफ करने के लिये है उसे ख़ूब समझ लो।

सवाल : क्या इस्लामी कानून में आने से पहले लोगों को चोरी, डकेती, ज़िना, कत्ल, वग़ैरह जायज़ थे। तो इस्लाम से पहले कुफ्फारे अरब पर बच्चियों को ज़िन्दा दफन करने पर अत्ताब कैसा?

जवाब : बाज़ मामलात ऐसे हैं जिनकी भलाई बुराई अक़्ल से मालूम हो जाता है जैसे चोरी, डकेती, ज़ुल्म वग़ैरह इनकी बुराई अक़्ल से भी मालूम होती है। यूं सच इंसाफ लोगों से अच्छे बर्ताव उनकी अच्छाई अक़्ल से मालूम होती है।

यह फर्क ख़्याल में रहे। तफसीर रूहुल ब्यान ने फरमाया कि अंबियाए किराम के शइई फरई, खुसूसी अहकाम में फर्क है। बाकी अकायद व मामलात वग़ैरह तमाम नबियों सब लोगों पर मानना ज़रूरी है। चोरी, डकेती, ज़िना, ज़ुल्म, लड़कियों को ज़िन्दा दफन करना हर आसमानी दीन में जुर्म रहा। लिहाज़ा उनका मानना सारे लोगों पर लाज़िम है।

सवाल : अगर आज कोई शख़्स शरई अहकाम से बे ख़बर हो इस वजह से वह अमल न करे क्या वह भी माजूर है? (जोहला)

जवाब : हरगिज़ नहीं क्योंकि अब शरई अहकाम तमाम दुनिया में पहुंच चुके हैं। किताबों की शक्ल में दुनिया की हर ज़ुबान में शाया हो चुके हैं। अब जो बे ख़बर होगा अपनी कोताही से होगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इल्मे दीन हासिल करना, तलब करना हर मुसलमान मर्द व औरत पर फर्ज़ है। अहकामे शरीया न सीखने और पहुंचने में फ़र्क है। लिहाज़ा जब पूरी दुनिया में शरीयत का पैग़ाम व अहकाम पहुंच गया तो अब अगर कोई इन्हें न सीखे तो वह माजूर नहीं बल्कि तर्क फ़र्ज़ का मुजरिम है। अगर वह जुर्म करेगा तो मुजरिम और क़ाबिले गिरफ्त होगा। ला इल्मी व बेख़बरी इसका उज्र नहीं।

सवाल : मरते वक़्त ईमान लाना मोतबर नहीं, फ़िरऔन ने डूबते वक़्त कहा था कि मैं मूसा के रब पर ईमान लाया मगर कबूल नहीं हुआ फिर हज़रत आमना और हज़रत अब्दुल्लाह को ज़िन्दा फ़रमाकर इन्हें कलिमा पढ़ाना कैसे क़बूल हुआ? (वहाबी)

जवाब : यह मसला काफ़िर व मुश्रिक के लिये है जो जिन्दगी भर नबी का इंकार करता रहे, कुफ्र व शिर्क का पुजारी रहे, मरते वक़्त वह ईमान लाये इस्लाम क़बूल करे। हज़रत आमिना काफिरा नहीं थीं और न ही हज़रत अब्दुल्लाह काफिर थे बल्कि यह दोनों मोहिद मुसलमान थे नीज़ यह हुज़ूर अनवर की खुसूसियत है क़ानून और खुसूसियत में फर्क होता है, फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इन्हें कलिमा पढ़ाना दीदार दिखाना, दीने मुहम्दी में दाख़िल फरमाने और इन्हें अपना सहाबी बनाने के लिये हुआ वह भी हुज़ूर की ख़ूसूसियत है।

सवाल : अल्लाह तआला का वादा है कि तुम मुझसे दुआयें करो मैं क़बूल करूंगा फिर हज़रत कअब रज़ियल्लाहु अन्हु की तौबए दुआ इतने रोज़ तक

क़बूल क्यों न हुई?

जवाब : इस सवाल का तफ़सीसली जवाब किताब दरसुलकुरआन में देखो। यहां बस इतना समझ लो कि उसने क़बूलियते दुआ का वादा किया है जल्द कबूल फरमा लेने का नहीं। बाज़ लोगों की क़बूलियते दुआ का ज़हूर बाद मौत, बाज़ को कयामत में होगा। नीज़ कबूलियते दुआ के मायेन जवाब देना भी हो सकते हैं। यानी तुम मुझे पुकारो ऐ मेरे रब मैं तुमको जवाब दूंगा या अबदी (ऐ मेरे बंदे) हज़रत कअब की दुआ क़बूल हुई मगर पचास दिन के वक्फ़े से। इसमें देर रब की हिकमत है-

मेरी रात की दुआयें जो नहीं क़बूल होतीं
मैं समझ गया यक़ीनन अभी मुझमें कमी है

सवाल : कुरआन में है कि ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ रहो, जो शख़्स मोमिन भी हो मुत्तक़ी भी हो वह खुद ही अक़ीदे और आमाल का सच्चा हो गया फिर उसे सच्चों के साथ रहने की क्या ज़रूरत है?

जवाब : सच्चा रहने के लिये सच्चों के साथ रहना ज़रूरी है। सच्चा होना आसान है सच्चा रहना मुश्किल है। सच्चों की जमाअत पर अल्लाह का हाथ है। जो बकरी अपनी रेवड में रहती है वह भेड़िये के हमले से महफ़ूज़ रहती है। रेवड पर भेड़िया हमला करने की हिम्मत नहीं करता मगर जो बकरी अपने रेवड़ से अलग हो जाती है वह भेड़िये का लुक़्मा तर बन जाती है।

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है
साने वाले जागते रहना चोरों की रखवाली है

सवाल : तो चाहिये कि कोई मुसलमान न तो काफ़िरों फ़ासिकों के मुहल्ले में रहे न किसी ऐसी मजलिस व महफ़िल में बैठे जहां झूटे काफ़िरों फ़ासिकों की मौजूदगी हो। फिर ज़िन्दगी क्योंकर गुज़ारे। (आज़ाद ख़्याल मुसलमान)

जवाब : यहां मअैयत और हमराही में सिर्फ जिस्मानी मक्कानी हमराही मुराद नहीं बल्कि अक़ायद व आमाल उनकी हमराही मुराद है कि उनकी तरह अक़ीदे आमाल व तहज़ीब उनके तौर व तरीक़े इख़्तेयार करे और उनसे इस तरह दिली मुहब्बत रखे जिससे अपना इस्लामी ज़ेहन व फ़िक्र मुतास्सिर हो। अपना इस्लामी नज़रिया व अक़ीदा बिगड़ने का इमकान हो ऐसी मुहब्बत व दोस्ती

हराम है। मक्का का अबू जहल हुजूर अनवर के साथ न हुआ। यमन के उवैस करनी हुजूर के साथ हुए अगर उसके साथ मक्कानी हमराही भी नसीब हो जाये तो ज़हे किस्मत। फिर मकानी हमराही में ख़िलवत की हमराही सोने पे सुहागा है। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ग़ार के यार हैं तो बाद अंबिया सारी ख़िलक़त से अफ़ज़ल हैं।

सवाल : सबसे सच्चे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं बस इन्हीं के साथ रहो, मुहम्मदी न बनो, हनफी, शाफ़ई, मालिकी, हंबली न बनो क्यों? (वहाबी)

जवाब : जैसे सारे इंसान हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की औलाद है मगर इसके बावजूद मुख़्तलिफ मुल्कों और कौमें में बटे हुए हैं। इसी तकसीम से दुनिया का निज़ाम कायम है। आपका पता होना सिर्फ औलादे आदम होना ही नहीं बल्कि कुछ और वजह हैं जिसमें सकूनत है वलदियत है बिरादरी है। इसी तरह हर कलिमा गो अपने को मुहम्मदी कहता है। अब सिर्फ मुहम्मदी कहने से पता नहीं लग सकता कि मिरज़ाई है कि चक्करालवी है शिया है या ख़ारजी है, वहाबी है कि अहले हदीस है लिहाज़ा ज़रूरी है कि हमारा दीनी पता ज़रूर हो और वह है हनफी, शाफ़ई, मालिकी, हंबली होना। जैसे सैयद शैख़ पठान होना आदमी के ख़िलाफ़ नहीं बल्कि ज़रूरी है। जिस्मानी इम्तेयाज़ कौम व मुल्क वतन से होता है रूहानी इम्तेयाज़ शरीयत और तरीकत के सिलसिलों से होता है। मुख़ालेफ़ीन भी अपने को अहले हदीस कहकर दूसरों से मुमताज़ करते हैं। फिर अहले हदीस भी अपने को रोपड़ी और सनाई कहकर आपस में एक दूसरे से छटते हैं। ख़्याल रहे कि जब इंसान थोड़े थे तो उनमें कौमें थीं न मुख़्तलिफ वतन। हाबील, शीस वग़ैरह एक ही कौम थे हम वतन थे। जब इंसान ज़्यादा हुए तो पहचान के लिये कौमों वतनों की ज़रूरत हुई। इसी तरह जब मुसलमान थोड़े थे यानी हुजूर के ज़माने में तो उन्हें किसी सिलसिले की ज़रूरत न थी। जब मुसलमान बहुत हो गये तो फर्क और पहचान के लिये सिलसिला कायम हो गये।

सवाल : क्या औरतें भी इल्म हासिल करने के लिये सफ़र करें?

जवाब : औरत के लिये बग़ैर महरम सफ़र करना शरअन ममनूअ है हत्ता कि बग़ैर महरम हज के लिये भी सफ़र नहीं कर सकती, जब कि इस सूरत में इस पर फर्ज़ ही नहीं। मर्द के लिये हज के लिये सामाने सफ़र ज़रूरी है और औरत के लिये सामाने सफ़र के साथ साथ महरम की हमराही शर्त है। औरत

अपने मां बाप खाविंद से दीन सीखे यही बेहतर है।

सवाल : क्या औरत अपने वतन से आलिमे दीन के पास या दीनी जल्से में जाकर दीन सीख सकती है?

जवाब : हां पर्दे के साथ जाकर दीन सीख सकती है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में तो हयज़ा औरतों तक को हुक्म था कि वह ईद की नमाज़ के मौके पर ईदगाह में आवें अगर उनके पास चादर न हो तो अपनी किसी सहेली से मांगकर ओढ़ लें और वहां पहुंचे। ईदगाह से अलग थलग बैठें ताकि अनले मुताल्लिक़ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शरई अहकाम सुनेंओर सीखें। ख़िलाफते फारूक़ी में औरतों को मस्जिदों में जाने से रोक दिया गया। अब इस ज़माने में चूंकि औरतें, कालेजों, स्कूलों, दफतरों आफिसों और बाज़ारों बल्कि सिनेमा घरों से नहीं रुकती। इसलिये मुनासिब यह है कि इन्हें पर्दे के साथ आलिमे दीन के पास आने या दीनी जल्सों में आने से न रोको कि यहां आकर वह कुछ दीनी मसायल सीखें और सुनेंगी मगर मर्दो से अलहेदगी और पर्दा ज़रूरी है। आजकल ख़ालिस बच्चियों के लिये दीनी मदरसा का क़याम है जहां उनके कयाम व तअम का मुकम्मल इंतज़ाम हैं दीन सिखाने और आलिमा बनाने के लिये बाकायदा सनद याफ्ता मोअल्लिमा या आलिमा पढ़ाती हैं लड़कियों को ख़ास तौर से दीनी तालीम से आरासता व पैरास्ता करना चाहिये क्योंकि यही लड़की कल मुआशरे का एक अहम हिस्सा बनेगी अगर यह सही होगी तो मुआशरा सही होगा। इस्लामी तहज़ीब व तमद्दुन वाली होंगी तो हमारा मुआशरा एक इस्लामी मुआशरा होगा जिसमें हर तरह का सकून व इत्मीनान होगा।

सवाल : हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में इल्मे फिकह था ही नहीं यह तो बाद में फुकहा और उलमा ने बनाया फिर रब तआला का यह फरमान क्यों कर दुरुस्त हुआ कि यानी तुमसे एक जमाअत निकले जो दीन की समझ हासिल कर सके। सहाबए किराम ने फिकह पढ़ाना पढ़ाया। हदीस के होते हुए फिकह की ज़रूरत क्या है? (वहाबी)

जवाब : हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में इल्मे फिकह कामिल तौर पर था हां यह कहो फिक़्ह की किताबें न थीं वह इल्म हुजूर अक्दस के सीना ज़बाने फैज़ तर्जमान और निगाहे करम से अता हुआ था बाद में इसे

किताबों के ज़रिये फैलाया गया। हजरत उमर फारूके आज़म रजियल्लाहु तआला अन्हु ने हुजूर से सूरः बकरह तकरीबन बारह साल में पढ़ी। सोचो कि क्या बारह साल में इस सूर के अल्फाज़ पढ़े? नहीं बल्कि इसका मायने व मतालिब तफसीर व फिकह पढ़ा। हुजूर के ज़माने में कुतुबे अहादीस बल्कि इल्मे हदीस असनाद, अकसाम, मरातिबे हदीस मुकर्रर किये गये। कुरआन हदीस की सही समझ इल्मे फिकह है अल्लाह जिसका भला चाहता है इसको दीन का फकीह बनाता है। पूरा आलिमे दीन और फ़िक़ीह बनना हर शख़्स पर ज़रूरी नहीं यह फर्ज़ किफाया है कि बस्ती में एक अगर आलिम बन गया तो सब की तरफ से अदा हो जायेगा। अलबत्ता इल्मे दीन हासिल करना सब मुसलमान मर्द व औरत पर फर्ज़ है। लिहाज़ा नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात और तमाम ज़रूरियाते दीनी व फिक़ह मसायल हलाल व हराम पाकी नापाकी, वुज़ू, गुस्ल, नमाज़, आदाब तिजारत उसूल सेहत वग़ैरह के असरार व रमूज़ व मसायल हर मुसलमान पर सीखना फ़र्ज़ हैं औरतों पर हैज़ व निफ़ास के मसायल सीखना ज़रूरी है। ताजिर को तिजारत के मसायल सीखना ज़रूरी है और सीखने वाला खुद आलिम के पास जाये उस्ताद को अपने यहां बुलाकर न सीखे। देखो मूसा अलैहिस्सलाम नबी हैं मगर इल्म सीखने के लिये शौक़ में हज़रत ख़िज़्र के पस सफर करके तशरीफ़ ले गये। अगरचे उनसे कुछ सीखा नहीं। हालांकि आप ख़िज़्र से कहीं ज़्यादा अफ़ज़ल थे कि साहबे शरीयत साहबे किताब नबी थे। ख़्याल रहे कि इल्मे दीन खुसूसन इल्म फिक़ह तबलीग़ दीन के लिये हासिल करे दुनिया कमाना मक़सूद न हो। अलबत्ता उलमाए दीन को अपने बच्चों की कफालत के लिये बक़द्रे ज़रूरत तंख़्वाह देना उम्मत पर वाजिब है हां आलिम अगर ख़ुद कफील है तो न लेना बेहतर है।

सवाल : हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ज़ाते गिरामी हैं जो मक्का में पैदा हुए और मदीना में क़याम पज़ीर रहे। वह एक तमाम इंसानों के पास कैसे आ सकते हैं फिर क्योंकर दुरुस्त हुआ कि तुम सबके पास आये? (नेचरी)

जवाब : हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के नूर से हैं और नूर बयक वक़्त हज़ार हा जगह हज़ार हा चीज़ों में जल्वागर हो सकता है। अगर बयक वक़्त हज़ारों जगह से शीशों का रुख़ सूरज की तरफ कर दिया जाये तो सूरज इन में जलवागर हो जाता है। मोमिनों के सीने साफ आईने हैं जिनमें हुज़ूर

जलवागर हैं। रूह बयक वक़्त जिस्म के हर अज़्व में जलवागर हैं इसलिये इरशादे बारी तआला है नबी मोमिनों से उनकी जानों से भी ज़्यादा करीब है। हुज़ूर सिर्फ मक्का और मदीना में नहीं आये बल्कि सारे मोमिनों के पास आये। जिस तरह सूरज रहता है आसमान पर मगर तुलूअ होता है सारे जहां पर इसलिये हर मोमिन अत्तेहियात (तशहदुद) में हुज़ूर को सलाम करता है अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पास होते तो सलाम किसे कह रहा है। आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत फरमाते हैं-

जान हैं जान क्या नज़र आये
क्यों अदु गर्दे ग़ार फ़िरते हैं

सवाल : अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सारे जहान के नबी हैं तो क्या तमाम मख़लूक़ पर आपके शरीयत के अहकाम जारी हैं। क्या चांद सूरज और सितारे, दरिया, पहाड़, समुंद्र, रेगिस्तान के ज़र्रात पर नमाज़ रोज़ा और इस्लाम के अरकान फ़र्ज़ हैं। अगर नहीं तो आप इनके नबी क्यों कर हुए? (ग़ैर मुस्लिम)

जवाब : हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम मख़लूक़ात और इंसानों के दायमी रसूल हैं। आपकी रिसालत ज़मीन या ज़मान से मुक़ैयद नहीं। सारी मख़लूक़ पर हुज़ूर की इताअत लाज़िम व ज़रूरी है इसलिये इशारे से सूरज लौटा, चांद फटा, बालद आकर बरसा, ज़मीन फटी दरख़्तों पत्थरों ने कलिमा पढ़ा मगर जैसी मखलूक़ इसके लिये हुज़ूर का वैसा ही हुक्म है और वह मख़लूक़ इस हुक्म की इताअत करेगी। मुहद्दिस बरैलवी फ़रमाते हैं-

सूरज उलटे पांव पलटे चांद इशारे से हो चाक
अंधे नजदी देख ले कुदरत रसूलुल्लाह की

सवाल : आमाल के लिये दुनिया और सवाब व अज़ाब के लिये आख़िरत क्यों मुकर्रर हुई। दोनों एक ही जगह क्यों न हुए? (जोहला)

जवाब : क्योंकि अमल हमारे कम हैं, हम छोटे हैं, हमारे काम थोड़े हैं। इनके लिये थोड़ी जिन्दगानी चाहिये और सवाब व अज़ाब रब का काम है। रब अज़ीम इसकी अता व सज़ा भी अज़ीम, इसके लिये ज़माना वह चाहिये जिसकी इंतेहा न हो और भी बहुत वजहें हैं। नीज़ आखिरत आमाल की जगह नहीं कि

वहां आमाल के असबाब नहीं। नमाज़ रोज़ा हज ज़कात को तोड़ने के लिये होता है वहां कुफ्फार का ज़ोर नहीं। नेकियों से रोकने वाला शैतान और नफ़्से अम्मारा है। वहां शैतान कैद नफ़्से अम्मारा हलाक है। लिहाज़ा आमाल और जज़ा एक वक़्त नहीं हो सकते। ऐ लोगो! ज़िन्दगी ग़नीमत जानों। इसमें जो भी बन पड़े इबादत कर लो क्योंकि दुनिया में हमेशा नहीं रहना है और न ही यह दुनिया हमेशा रहेगी। हम सब को आख़िरकार अल्लाह की तरफ़ लौटना है। अल्लाह की तरफ़ से उसका पुख़्ता सच्चा वादा हो चुका है। जब मरना है तो तैयारी करो। ख़्वाब गफ़लत से बेदार हो जाओ। जनिके लिये तुम अपनी आख़िरत तबाह व बरबाद कर रहे हो वह लोग वहां काम नहीं आयेंगे जब कि तुम्हारे नेक आमाल काम आयेंगे।

यह माल व दौलते दुनिया, यह रिश्ता व पेवंद
तबान व हम व गुमां ला इलाहा इल्लल्लाह

दुनिया और इसके मुताल्लिक़ात और इसके गूना गूं मुनाज़िर और मज़ाहिर मसलन मां व दौलत बीवी बच्चे, रिश्तादार, माददी, सामाने, आराईश जिसके लिये तो अल्लाह और उसके रसूल के अहकाम से रो गरदानी करता है यह सब बे हक़ीकत और फ़ानी चीज़ें हैं। यह सब तेरे वहम व गुमान के तराशे हुए बुत हैं। हक़ीक़त यह है कि अल्लाह के सिवा मुस्लिम का न कोई माबूद हो सकता है न मतलूब न मक़सूद।

अल्लाह ही एक मुस्तकिल क़ायम बिज़्ज़ात और बाक़ी हस्ती है। वही इस लायक है कि इससे मुहब्बत की जाये और सिर्फ़ वही इस लायक़ है कि इसे मक़सूदे ज़िन्दगी बनाया जाये। माल, दौलत, जागीर, ओहदे, बीवी बच्चे इनमें से किसी को भी सिबात नहीं है और इसलिये इनमें किसी के साथ दिल लगाना सरा सर नादानी है क्योंकि न इन्हीं दावाम है और न तो उनको अपने साथ क़ब्र में ले जा सकता है। यहां आदमी ख़ाली हाथ आता है और ख़ाली हाथ जाता है अलबत्ता अगर नेक आमाल लेकर गया तो क़ब्र में इसे राहत व आराम मिलेगा।

सवाल : दुनिया में बुत परस्ती की इब्तेदा कैसे हुई और किसने की?

जवाब : बुत परस्ती की शुरूआत क़ौमे नूह से हुई कि इनमें पांच नेक मुत्तक़ी, पारसा आदमी थे। (१) वद्दाअ (२) सूआ (३) यगूस (४) यऊक़ (५)

नसर। लोगों को इनसे बड़ी मुहब्बत थी कि वदआ का इंतक़ाल हो गया जिस पर क़ौम बहुत ग़मगीन हुई हत्ता कि बहुत से लोग इनकी क़ब्रों पर जा बैठे। यह वाक़िया ईराक़ के शहर बाबुल में हुआ। इन लोगों के पास इबलीस इंसानी शक्ल में आया और बोला कि मैं तुम्हारे लिये वअद्दा की तसवीर बनाये देता हूं कि तुम इसे देख कर याद कर लिया करो। लोग बोले हां ज़रूर बनाईये। उसने यही किया और लोग इस तसवीर मूर्ती के पास जमा हो गये। फिर बारी बारी सवाअ, यगूस, और नसर भी फौत हो गये। इबलीस उनकी तसवीरें और मूर्तियां बना बनाकर उन लोगों को देता रहा। इन तसवीरों और मूर्तियों के दो नाम रखे गये जो उन पांचों नेकोकारों के थे उनके चेहरे हो बहो तराश करो वैसा ही बनाया गया जैसे वह थे। उस ज़माने में तो सिर्फ इतना ही हुआ जब यह लोग मर गये और उनकी औलादों का ज़माना आया तो इबलीस उनसे बोला कि तुम्हारे बाप दादा इन तसवीरों को पूजते थे लिहाज़ा तुम लोग भी उकनी परस्तिश शुरू कर दो। इस तरह वह लोग इबलीस के बहकावे में आ गये और उन्होंने इन तसावीर की पूजापाट शुरू कर दी। इन्हें नूह अलैहिस्सलाम ने तबलीग़ की मगर उन लोगों ने आपकी बात न मानी हत्ता कि तूफ़ाने नूह पानी की अज़ाब की शक्ल में आया और यह तसावीर पानी में बैहकर जिद्दा पहुंच गयीं। अरब में बुत परस्ती लाने वाला उमर बिन लहया था यह मुल्के शाम के इलाके में गया। वहां बुत परस्त देखे उनसे एक बुत अक़ीक़ पत्थर का लाया जिसे हुबल कहते थे वह मक्का मोअज़्ज़मा में रखा उसकी पूजापाट शुरू कर दी। इस तरह अरब में बुत परस्ती का बुनियाद उम्र व इब्ने लहई ने डाला। (तफ़सीर रूहुल ब्यान)

बाज़ रिवायात में है कि काबा मोअज़्ज़मा में हज़रत इब्राहीम व हज़रत इस्माईल अलैहिमुस्सलाम के बुत भी थे। फतह मक्का के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन तसवीरों को हटाया जिस से पता चला कि तसवीर ख़्वाह पैग़म्बर की क्यों न हो मगर यह हराम है। अगर तसवीर इस्लाम में जायज़ होती तो हमारे सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत इब्राहीम और इस्माईल की तसवीर क्यों कर जायज़ होगी। इस वाक़िये से उन लोगों को दर्से इबरत हासिल करना चाहिये जो बुज़ुर्गों और पीरों की तसवीर घरों में दुकानों में रखते हैं। इस पर फूल हार डालते हैं। लोबान अगरबत्ती वग़ैरह की धूनी देते हैं। इसके सामने फातेहा पढ़ते हैं और हाथ जोड़कर कहते हैं। बाबा जाता हूं ख़्याल रखना। यह

कितनी बड़ी जहालत है ऐसे लोगों पर तौबा लाज़िम है।

इंसान जिस से इश्क़ व मुहब्बत करता है चाहता है कि मैं उसकी आवाज़ सुनूं। इसको देखो और जब इसको देख लेता है तो इसका जी चहाता है कि अब मैं इसे पूजूं यानी देखने के बाद इंसानी फ़ितरत परस्तिश की तरफ़ ख़ुद बख़ुद मायल हो जाती है। यह इंसानी फ़ितरत है और इस्लाम इंसानी फ़ितरत को अच्छी तरह समझता है इसलिये तसवीर ख़्वाह वह किसी की क्यों न हो हराम है हराम है। सिगनल ट्रेन आने से पहले दिया जाता है। इस्लाम इंसानी मिज़ाज और फ़ितरत को अच्छी तरह पहचानता है इसलिये वह उन चीज़ों के पास जाने से सख़्ती के साथ रोकता है जिससे बुराईयां फैलती या पैदा होती हैं।

सवाल : कुरआन कहता है कि यह बुत जिन्हें लोग पूजते हैं यह न नफ़ा दे सकते है। न नुकसान हालांकि बुत से नफ़ा नुक़सान हाता है। लकड़ी, पत्थर, लोहा ज़ख़्मी कर देते हैं उनसे बहुत काम चलते यूं ही चांद सूरज वग़ैरह से बड़े बड़े मुनाफ़े हैं फिर यह फ़रमान क्योंकर दुरुस्त हुआ? (आर्य)

जवाब : यहां नफ़ा नुक़सान से मुराद इबादत का नफ़ा नुक़सान है। अल्लाह के सिवा बड़ी से बड़ी मख़लूक़ की इबादत नफ़ा नुक़सान नहीं दे सकती कि अपनी इबादत पर सवाब और इबादत न करने पर अज़ाब दे यह सिर्फ़ रब तआला माबूदे हकीकी की शान है और इबादत के लायक़ वही ज़ात वाहिद है। कोई शख़्स अपने बीवी बच्चें में माल व दौलत में शिर्कते ग़ैर पसंद नहीं करता तो फिर वह अपनी ज़ात व सिफ़ात में किसी की शिर्कत कैसे गवारा फ़रमायेगा। शिर्क दर हक़ीकत उस ख़ुदाए वाहिद के ख़िलाफ़ एक तरह की बग़ावत है उसकी बादशाही व फ़रमां बरदारी में किसी को शरीक करना उसको हाकिम आला तसलीम करने के मनाफ़ी है। देखिये दुनिया की हुकूमतें संगीन से संगीन जुर्म करने वालों को माफ़ कर देती हैं लेकिन मुल्क से ग़्ददारी करने वाले को माफ नही किया जाता इसको सज़ाए मौत दी जाती है। तख़्ताए दार पर लटका दिया जाता है तो अब आप ख़ुद ही अंदाज़ा लगा लो कि उस बादशाहे हकीकी के होते हुए आप किसी और को अपना ख़ालिक़ व मालिक तसलीम कर लो कि इससे बड़ा जुर्म कोई और हो ही नहीं सकता। इसलिये नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि शिर्क सबसे बड़ा गुनाह और जुर्म है और शिर्क करने वाला सबसे बड़ा मुजरिम। हुकूमते इलाहिया का बाग़ी है।

सवाल : ख़ुदा मौजूद है तो हम को नज़र क्यों नहीं आता, चूंकि वह नज़र नहीं आता इसलिये क्या मालूम वह है भी या नहीं, और अगर बिन देखे मान भी लें तो यकीन कैसे आये? (माद्दा परस्त, मुलहिद)

जवाब : इस दुनिया में बेशुमार चीज़े हैं, बे हिसाब इंसान, अनगिनत जानवर, चरिन्दे परिन्दे, दरिन्दे, दरिया, पहाड़, समुंद्र और बहुत से ममालिक वग़ैरह ऐसे हैं जिनको हमने भी देखा नहीं। सिर्फ़ नाम सुना है तो क्या इससे यह नतीजा निकाला जा सकता है कि इनका वजूद ही नहीं। फर्ज़ कीजिये कि आपने अमेरिका मुल्क कभी नहीं देखा, लंदन, पेरिस कभी नहीं गये, तो यह आपके न जाने न देखे से यह मान लिया जायेगा कि अमेरिका, लंदन, पेरिस मुल्क एक ख़्याल और फ़र्ज़ी नाम है। दुनिया के नक्शे पर इन मुल्कों का वजूद ही नहीं। आप यतीम पैदा हुए आपने अपने बाप का देखा ही नहीं क्या आपको इससे इंकार है? क्या यह बात क़ाबिले तसलीम है? बिल्कुल उसी तरह हमने खुदा जन्नत दौज़ख़ को नहीं देखा तो क्या आपके न देखने से यह मान लिया जायेगा कि खुदा और जन्नत व दौज़ख़ का वजूद ही नहीं हैं जिस इल्म का सहारा लेकर हम अल्लाह के वजूद का इंकार करते है। उसी इल्मे साइंस का यह हाल है कि वह माद्दा लताफतों से भी क़ासिर और आजिज़ है। एथर एक माद्दी शय है लेकिन माद्दा परस्तों की नज़रों से पोशीदा है। इसी ऐथर पर साइंस के बेशुमार नज़रियात का दारोमदार है। अगर ऐथर की वजूद से इंकार किया जाता है तो साइंस की तमाम इमारत ज़मीं बोस हो जाती है। अब आप ही फ़ैसला कीजिये कि जब हम माद्दी लताफ़तों को नहीं देख सकते तो फिर ग़ैर माद्दी और ग़ैर महसूस अशिया की लताफ़तों को किया देख सकेंगें। जब तमाम मादा व सायल मसायब व आलाम की घड़ियों में साथ छोड़ देते हैं और इंसानी किश्ती मसायब व आलाम की समुंद्र में हिचकोले खाने लगती है। उस वक़्त उसे अपने मालिके हक़ीकी का ख़्याल पैदा होता है और इसी की दामने रहमत में पनाह की उम्मीद बनती है। बस इसी बे चारगी के आलम में जिस ज़ात पर आस व उम्मीद है वही ख़ुदा है वही अल्लाह है जो नज़र तो नहीं आता मगर अपने बंदों की मदद फ़रमाता है।

सवाल : अगर कुफ्र व ईमान की सज़ा व जज़ा क़यामत के बाद ही मिलना है तो दुनिया में कुफ्फार व मुश्रेकीन पर अज़ाब क्यों आये और वह तबाह व

बरबाद क्यों किये गये जैसे कि कौम नूह, कौम आद व समूद वगैरह। (आर्य)

जवाब : ताकि इससे दूसरों को इबरत हासिल हो और वह अल्लाह तआला की ज़ात से सरकशी और नाफ़रमानी न करें। नीज़ यह अज़ाब अंबियाए किराम की हक्कानियत का सबूत और लोगों को दावते इस्लामी का ज़रिया हों। यह अज़ाब जो दुनिया में आया यह आरज़ी हैं। दायमी अज़ाब का सामना कुफ्फार व मुश्रेकीन को मरने के बाद ही करना होगा। जैसे कि मुलज़िम को हवालात की तकलीफ इसकी सज़ा के अलावा है सज़ा हाकिम के फैसले के बाद मिलती है।

सवाल : आज कल के दुनियावी पीरों को माने वाले मुसलमान उस ज़माने के कुफ्फार व मुश्रेकीन से बदतर हैं कि कुफ्फार व मुश्रेकीन दुनियावी मुसीबत और समुंद्री आफ़ात में फंस कर देवी देवताओं को मदद के लिये पुकारते हैं मगर यह मुसलमान ऐसे नाजुक वक़्त में भी या गौस या पीर या रसूलुल्लाह या अली अलमदद ही पुकारते हैं ऐसा पुकारना शिर्क है और यह सब मुश्रिक हुए? (वहाबी)

जवाब : इस सवाल के दो जवाब हैं एक इल्ज़ामी दूसरा तहकीकी। इल्ज़ामी जवाब यह है कि बड़ा अफरा तफरी और सख़्त मुसीबत होगी उस वक़्त सारी मख़लूक़ अंबियाए किराम को पुकारती होगी उनके पास जायेगी। आख़िरकार हुजूर के दरवाज़े पर पहुंचकर आप से फ़रियाद होगी। जब कयामत की मुसीबत में नबी को मदद के लिये पुकारना दुरुस्त हुआ तो समुंद्र की आफ़त इससे कहीं कम है। नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती हुजूर के वसीले से हुजूर को पुकारने से पार लगी। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा इन्हें के नाम पाक के वसीले से क़बूल हुई। मौलाना जामी रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते हैं-

अगर नामे मुहम्मद रा न आवर दे शफ़ीअ आदम
न आदम याफ़ते तौबा न नूह अज़ ग़र्क़ नुजीना

तहकीक जवाब यह है कि मुसीबातों में बुतों को पुकारना शिर्क है। मकबूल बंदों को पुकाना बिल्कुल हक है। इन्हें पुकारना इनके तवस्सुल से दुआ करना दर हकीकत अल्लाह ही को पुकारना है उससे ही दुआ करना है। अल्लाह वालों से इस्तेआनत व इसतमदाद दर हक़ीकत अल्लाह ही से इस्तेआनत है। यह मुकद्दस हस्तियां रहमते इलाही के ज़ीने हैं। देखो अगर डूबते वक़्त काफिर बुत

को सज्दा करे तो शिर्क है लेकिन अगर मोमिन काबे की तरफ़ सज्दा करे। नफ़ली नमाज़ पढ़े, सज्दे में गिरकर दुआ मांगे तो मोमिन है कि काबे की तरफ़ सज्दा हकीक़त में रब ही को सज्दा है। नबी से फ़रियाद करना अल्लाह ही से फ़रियाद हैं हां ऐसा अक़ीदा रखना कि ख़ुदा कुछ नहीं जो करते हैं पीर पैग़म्बर और वली करते हैं। ख़ुदा कुछ नहीं करता यह अक़ीदा सरीही शिर्क हैं मुसलमान दुनिया की आफ़ात व मसायब में बुजुर्गों के तवस्सुल से रब से दुआ करते हैं या उन बुजुर्गों से अल्लाह का वास्ता देकर मदद तलब करते हैं जैसे भिकारी, फ़कीर, सख़ी, अमीर के दरवाज़े पर अल्लाह के वास्ते से भीक मांगता है। मेरे हुज़ूर जन्नत के मालिक व मुख़्तार हैं। दुनिया व आख़िरत की तमाम नेमतों के क़ासिम हैं। हम भिकारियों के लिये वही जूद व अता का दरवाज़ा हैं सरकारे बरैलवी फ़रमाते हैं-

वही रब है जिसने तुझको हमा तन करम बनाया
हमें भीक मांगने को तेरा आस्तां बताया

सवाल : कुरआन मजीद सिर्फ़ दिली बीमारियों के लिये शिफ़ा है न कि जिस्मानी बीमारियों की। लिहाज़ा इससे दुआ तावीज़ करना जिस्मानी बीमारियों के लिये नहीं होना चाहिये? (माद्दा परस्त)

जवाब : अल्लामा जलालुद्दीन सयूती रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि कुरआने मजीद जैसे दिली बीमारियों की शिफ़ा है ऐसे ही जिस्मानी बीमारियों के लिये भी शिफ़ा हैं और उन्होंने इसके मुताल्लिक़ यह दो हदीसें पेश भी फ़रमायीं। (१) एक शख़्स हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे सीने में सख़्त दर्द हैं फ़रमाया कि कुरआने मजीद की तिलावत करो। (२) एक सहाबी ने सांप काटे हुए पर सूरः फ़ातेहा पढ़कर दम किया तीस बकरियां उजरत में लीं जो लश्कर सहाबा ने खायीं। मदीना शरीफ़ वापसी पर हुज़ूर ने भी इसका बक़िया गोश्त तनावुल फ़रमाया। जिससे मालूम हुआ कि कुरआन मजीद दिली बीमारियों के लिये भी शिफ़ा और रूहानी ईलाज है और जिस्मानी बीमारियों के लिये दवा ईलाज हैं नीज़ यह भी मालूम हुआ कि दुआ तावीज़ करना दुरुस्त है और सुन्नत से साबित है कि इस पर उजरत लेना भी जायज़ है कि यह असले कलाम की उजरत नहीं बल्कि काम की उजरत है।

सवाल : इसकी क्या वजह है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नुबूवत ख़त्म हो गयी मगर विलायत ख़त्म न हुई?

जवाब : हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आसमाने नुबूवत के दायमी चमकने वाले सूरज हैं। दूसरे अंबियाए किराम या चांद तारे हैं या रौशन चिराग़ और औलिया अल्लाह गाया इस सूरज के ज़र्रे है। सूरज चांद तारों को अपने नूर से छिपा लेता हैं चिराग़ों को बुझा देता हैं औलिया अल्लाह इस्लाम की हक्क़ानियत इसके ग़ैर मंसूख़ होने की दलील हैं लिहाज़ा इन का बक़ा ज़रूरी है। अंबियाए किराम अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात के मज़हर हैं और औलिया अल्लाह अपने नबी के कमालात सबूत के मज़हर हैं।

सवाल : बाज़ फ़ासिक़ व फ़ाजिर फ़क़ीर वली होते हैं, इनसे करामात सर ज़द होती हैं फिर विलायत तक़वा पर मौक़ूफ़ कैसे? (अन्धे मोतक़िद)

जवाब : वह वली नहीं बल्कि शैतान की ज़ातें हैं उनके अजायबात करामात नहीं बल्कि शुअबदा और इस्तदराज हैं। कुर्ब क़यामत दज्जाल आयेगा बड़ी बड़ी अजीब व ग़रीब करतब व शुअबदा दिखायेगा मगर वली क्या मोमिन भी नहीं होगा। विलायत के लिये करामत की शर्त नहीं। यह तो कुर्बे इलाही का एक ख़ास दर्जा है जो पाबंदे शरीयत से बंदे को नसीब होता है। जिस क़दर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुलामी और शरीयते मुत्तेहरा की पाबंदी होगी इसी क़दर इसे अल्लाह तआला का कुर्ब हासिल होगा और जिसे अल्लाह तआला का कुर्ब हासिल हो जाये वह अल्लाह का महबूब बंदा है जिसे कुरआनी इस्तेलाह में वली कहा जाता है। आजकल बाज़ बे दीन भंगी, चरसी, तारिके नमाज़ व तारिके सुन्नत व शरीयत होकर विलायत का दावा करते हैं और अजीब अजीब शुअबदा करतब दिखाते हैं। लोग जिन्हें शरीयत का इल्म नहीं वह उनके मोतक़िद हो जाते हैं। दोनों मरदूद हैं। खुदारसी और विलायत के लिये इत्तेबाए शरीयत व सुन्नत लाज़िम और शर्त अव्वल है। तक़वा परहेज़गारी ज़रूरी है इसे तर्क करके अगर कोई विलायत का दावा करे और वह आसमानों पर उड़े या आग में चले और न जले या पानी पर चले और पैर तर न हो लेकिन अगर वह तारके सलात व सुन्नत है तो समझो कि वह अपने ज़माने का सबसे बड़ा ज़िन्दीक़ है।

सवाल : कुरआन कहता है कि तमाम अंबियाए किराम सिर्फ इंसानों की तरफ मबऊस हुए तो जिन्नात को हिदायत किसने दी, हालांकि ज़माने में बड़े नेक जिन्न भी मौजूद रहे। कुरआन पाक के वाकिये सुलेमानी में तख़्ते बिलकीस के मौके पर एक दरबारी का ज़िक्र फरमाया है और अगर किसी ने हिदायत न दी तो बे हिदायत जिन्नात के लिये जन्नत है या जहन्नम। अगर जहन्नम है तो यह जुल्म है जिससे रब तआला पाक है। अगर जिन्नात से कुफ्र होता या किसी तबलीग़ का इंकार करते तब जहन्नमी बनते। बग़ैर इत्तेला और हादी के भेजे हुए जहन्नम की सज़ा क्यों और अगर उनका ठिकाना न जन्नत है तो वह आमाल की जज़ा से हासिल होगी बग़ैर अमल सालेह के जज़ा बहिश्त भी ना मुमकिन बल्कि नेकियों पर जुल्म है कि वही जन्नत एक को आमाल की सख़्त तरीन मशक़्क़त देकर अता हुई और दूसरे को बग़ैर मशक्क़त। (बाज़ लोग)

जवाब : अंबिया का माबूस होना सिर्फ दीन हक़ की इत्तेला देने के लिये हैं जिस मख़लूक़ को बजुज अंबियाए किराम इत्तेला न मुमकिन हो और किसी भी ज़रिये से उनको अल्लाह के दीन का पता न लग सके ऐसी मखलूक़ की तरफ अल्लाह अपने नबियों को भेजता है ऐसी मखलूक़ सिर्फ इंसान ही हैं जिन्नात को कुव्वत दी गयी थी कि आसमानों तक पहुंचकर फरिश्तों का कलाम सुन सकें लिहाज़ा उन को फरिश्तों के ज़रिये अच्छे बुरे का, कुफ्र और इस्लाम का पता चल जाता था इसलिये उन पर ईमान लाना वाजिब था। अंबिया को उनकी तरफ भेजकर इत्तेला देने की ज़रूरत न थी मगर इंसान को फरिश्तों तक और आसमानी परवाज़ की ताकत न थी इसलिये उनकी तरफ अंबियाए किराम माबूस हुए। दीगर जमादात, नबातात वग़ैरह को तबलीग़ की ज़रूरत न हुई क्योंकि वह शरीयत के मुकल्लिफ नहीं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तशरीफ आवरी से जिन्नात का आसमानों पर जाना बंद हो गया। अब जिसे हिदायत नहीं वह नबी के आस्ताने पर आ सकता है इसलिये नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिन्नात के भी नबी हैं। दीगर मखलूक़ात जमादात नबातात वग़ैरह को सिर्फ एज़ाज़ी तौर पर शर्फे उम्मत बख़्शने के लिये उम्मते मुस्तफा में शामिल किया गया वरना यह किसी हुक्म के मुकल्लफ नहीं। जिस तरह कोई हुकूमत किसी ग़ैर मुल्की को मुहब्बत की बिना पर अपने यहां की शहरियत का तमग़ा देकर अपनी रियाया में शामिल करे इसी तरह अल्लाह तआला ने हुजूर की

उम्मत में तमाम मख़लूक़ को शामिल फ़रमाकर अज़ीम एज़ाज़ी तमग़ा अता फ़रमाया। अब तमाम मख़लूक़ का काम यह है कि वह ता उम्र नबी करीम के गीत गाते रहें चूंकि बअसते अंबिया सिर्फ़ इत्तेला देने के लिये है तो जिनको किसी और ज़रिये से इत्तेला न पहुंचे उनकी तबलीग़ के लिये अंबियाए किराम तशरीफ़ लाये लेकिन जिनको बग़ैर नबी इत्तेला पहुंच जाये उनके लिए कोई नबी नहीं आयेगा इसलिये नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद अल्लाह तआला ने कोई नबी न भेजा कि हुज़ूर की तबलीग़ सहाबाए किराम औलियाए इज़्ज़ाम और उलमाए इस्लाम के ज़रिये सब कायनात मे जारी व सारी है।

सवाल : तो फिर अंबिया की क्या ज़रूरत थी जिस तरह सिर्फ़ इत्तेला व तबलीग़ जिन्नात ने फ़रिश्तों से रूबरू जाकर कर ली वही फ़रिश्ते नीचे आकर भी इंसानों को तबलीग़ कर देते?

जवाब : इंसान की ज़रूरियात जिन्नात की ज़रूरियात से ज़्यादा हैं और इंसान अक़्ल व खर्द फ़रेबकारी फ़ित्ना फ़साद में जिन्नात से बढ़ कर है। इस को सिर्फ़ क़वी तबलीग़ काफ़ी न थी इसके लिये अमली तबलीग़ काफ़ी न थी इसके लिये अमली तबलीग़ अश्द ज़रूरी है फ़रिश्ते क़वी तबलीग़ तो कर सकते थे मगर अमली तबलीग़ उनके लिये ना मुमकिन है। इंसानों की जिस्मानी ज़रूरियात के अलावा रूहानी और कलबी ज़रूरियात भी हैं अगर इसको कारोबार, रोटी, कपड़ा, दुकान और मकान है तो दर्दे दिल की भी ज़रूरत है। इश्क़ व मुहब्बत की आग भी चाहिये। न फ़रिश्ते ऐसी तबलीग़ कर सकते थे न जिन्नात को ऐसी तबलीग़ की ज़रूरत। इसलिये जिन्नात के लिये फ़रिश्ते काफ़ी थे मगर भला हज़रत इंसान कब मानने वाला था। जिस तरह अंबियाए किराम ने प्यार व मुहब्बत से तबलीग़ फ़रमाई और तकलीफ़ बर्दाश्त करने के बावजूद भी अपनी रूहानी कुव्वत से इनको हलाक न किया दुआयें ही देते रहे भला फ़रिश्तों से यह कब बर्दाश्त होता वह तो एक ही दफ़ा में तूर पहाड़ उठाकर ले आते कि मानो वरना जान से मार देंगे।

सवाल : तफ़ासीर की किताबों से मालूम होता है कि तमाम अंबियाए किराम का किब्ला काबा रहा तो बैतुल मक़दिस कब और किसने किब्ला बनाया हालांकि किब्ला बनाना तो फ़क़त अंबिया का काम है।

जवाब : सिर्फ चंद अंबियाए किराम के ज़माने में बैतुल मकदिस क़िब्ला रहा। मूसा अलैहिस्सलाम और आपसे पहले तमाम अंबियाए किराम का क़िब्ला काबा ही था। उस वक़्त तक मस्जिदे अक़सा बनी ही न थी। मस्जिदे अक़सा जिसको पहले हयकल कहा जाता था हज़रत आदम के तीन हज़ार एक सौ दस साला बाद हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने बनाई और दुआ की या अल्लाह! इसको हमारे लिये क़िब्ला बना दे। काबा कि पहली मर्तबा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने और दूसरी मर्तबा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इमारत की शक्ल में बनाया। काबा को आज साढ़े सात हज़ार साल हो रहे हैं और मस्जिदे अक़सा को आज तक़रीबन तीन हज़ार साल हुए। फिर काबा हज़रत आदम से आज तक क़िब्ला है और मस्जिदे अक़सा सिर्फ पंद्रह साल क़िब्ला रहा और काबा सब अंबियाए किराम का क़िब्ला रहा। इस दौरान ग़ैर इसराईली अंबिया सिमते काबा ही को क़िब्ला बनाते थे। हमारे हुजूर ने भी थोड़े अर्से तक मस्जिदे अक़सा को क़िब्ले की फ़ज़ीलत बख़्शी और यह क़ायदा है कि अक्सरियत को कुल का हुक्म दिया जाता है और थोड़ा न के बराबर होता है।

सवाल : हज़रत जिब्राईल ने फ़िरऔन के मुंह में ख़ाक क्यों डाली? ईमान से रोकना तो बुरी बात है। फिर यह रब तआला के हुक्म से हुआ या अपनी मर्जी से। अगर हुक्मे रब्बी से ख़ाक डाली तो अल्लाह तआला मूसा अलैहिस्लसाम को फ़िरआन के साथ नर्मी से बात करने का हुक्म फ़रमा रहा है। यहां क्यों सख़्ती का न हुक्म हुआ। अगर अपनी मर्ज़ी से जिब्राईल ने ख़ाक डाली तो इस आयत के ख़िलाफ़ है कि हम आपके रब के हुक्म से नाज़िल होते हैं?

जवाब : सच्चे और बा अख़लास ईमान से रोकना मना है जब कि हालते इख़्तेयारी में हो लेकिन हालते नज़अ का ईमान चूंकि मोतबर नहीं इसलिये इससे रोकना बुरा नहीं। फिर हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने इस दुश्मने अंबिया और ख़ुदाई का दावा करने वाले को फरियाद व गिड़ गिड़ाने से रोका था कि कहीं इस पर रहम न हो जाये और डूबने से बच न जाये। इसलिये इसके मुंह में ख़ाक डाली थी और यह उनका अपना काम था न कि रब के हुक्म से। मलायका और जिब्राईल का नुजूल हुक्मे रब्बी से होता है मगर नाज़िल होकर फिर अपने इख़्तेयार से काम कर सकते हैं। कुफ्फ़ार पर नर्मी उस वक़्त ज़ायज़ है जब उनको तबलीग़ मक़सूद हो इसलिये हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को नर्मी का

हुक्म हुआ कि आप तबलीग़ नर्मी से करो। वह वक़्त तबलीग़ का था लेकिन काफ़िर पर सख़्ती का भी हुक्म है।

सवाल : फ़िरऔन और उसकी आल अज़ाब के वक़्त ईमान लाये तो कबूल नहीं हुआ और अज़ाब से हलाक कर दिया गया लेकिन कौमे यूनुस (कौम सीरिया) अज़ाब के वक़्त ईमान लाये तो उनका ईमान कबूल हुआ और अज़ाब भी हटा लिया गया इसकी तफ़रीक़ की वजह क्या है?

जवाब : कौमे फ़िरऔन और कौमे युनुस और उनके अज़ाबों में चंद तरह का फ़र्क़ हैं एक यह कि कौमे फ़िरऔन ने अंबियाए किराम का मुक़ाबला किया और कराया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शान में गुस्ताख़ियां कीं मगर कौम यूनुस ने हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का मुक़ाबला किया और न ही आपकी शान में कोई गुस्ताख़ी की बल्कि आख़िरी दम तक हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की सदाक़त का एतेराफ़ करते रहे सिफ़ मुसलमान होने और अपने बाप दादा का दीन छोड़ने से इंकार किया। दूसरे यह कि कौम फ़िरऔन मग़रूर और मुतकब्बिर थी और तकब्बुरे क़ल्बी ही ईमान से दूर और सरकशी से क़रीब करता है लेकिन कौमे यूनुस में ज़ुल्म और गुंडागर्दी, चोरी, लूटमार तो था मगर गुरूर और तकब्बुर न था देखा गया है कि चोर, डाकू, लुटेरे, और आवारा बदमाश क़िस्म के लोग अवाम पर ज़ुल्म तो वाक़ई बहुत करते हैं मगर अल्लाह के अज़ाब और पीर फ़कीर औलिया और उलमा से बहुत डरते हैं। बुज़ुर्गों के आस्तानों के मज़ारात का बहुत एहतेराम करते हैं। अक्सर दीन के कामों में पेश पेश रहते हैं। कौमी फ़साद के ज़माने में यही लोग आगे आते हैं और कौम को बचाते हैं। कई गरहकट और डाकुओं को नमाज़ का पाबंद देखा गया है। चोर डाकू को मग़रूर नहीं होते, तीसरे यह कि कौमे फ़िरओन को जब अज़ाब की ख़बर सुनाई जाती तो वह हज़रत मूसा का मज़ाक़ उड़ाते, इस ख़बर को क़तअन झूट समझते यही हाल तमाम हलाक होने वाली कौमों का था मगर कौमे युनुस अज़ाब की खबर सुनकर फ़ौरन नर्म झूट पड़ गयी और अपने ईमान को मुक़र्ररा रात में हज़रत यूनुस के मौजूदगी पर मौक़ूफ़ कर दिया। चौथे कि फ़िरऔन और कौमे फ़िरओन उस वक़्त ईमान लाये जब उन पर अज़ाब उतर पड़ा और उन्होनें अपनी आंखों से अज़ाबे इलाही को देख लिया। कानूनी तौर पर उस वक़्त का ईमान मोतबर न था लेकिन कौमे युनुस ने अज़ाबे इलाही नहीं देखा सिर्फ़ निशाने अज़ाब स्याह

बादलों को देखा और ईमान ले आये और जब उन्होंने हज़रत यूनुस को तलाश किया तो न पाया। दिन तारीख़ मुक़र्ररा वही थी समझ गये कि यह यौमे अज़ाब है फ़ौरन कुफ्र से तौबा किये। बादल बज़ाते खुद अज़ाब न था। न मालूम किस नोइयत का था। सैलाब का था या आग का, या पत्थर का, मालूम हुआ कि क़ौमे यूनुस का ईमान अज़ाब देखकर या अज़ाब के नुजूल से न हुआ इसलिये उनका ईमान क़ाबिले क़बूल हुआ।

सवाल : कुरआन में है कि कुफ्फ़ार व मुश्रेकीन को दोगुना अज़ाब दिया जायेगा हालांकि कुरआन पाक की दूसरी आयत से साबित है जो गुनाह लेकर आया तो उसको तो उसका अज़ाब एक गुनाह का इसी के मिस्ल यानी एक ही होगा। मालूम हुआ कि अज़ाब दोगुना नहीं होगा। यहां कुरआन में तारुज़ मालूम होता है?

जवाब : तफ़सीरे सावी ने इसका जवाब यह दिया कि यहां गुनाह भी दो हैं। एक गुमराह होना दूसरा गुमराह करना। लिहाज़ा दो गुनाहों के दोगुना अज़ाब हुए न कि एक गुनाह के दोगुना अज़ाब। मोतरिज़ की पेश कर्दा आयत में एक गुनाह का ज़िक्र है लिहाज़ा तारुज़ न हुआ मगर मैं इसका जवाब इस तरह देता हूं कि यहां दोगुना होने का मतलब अददी दोगुना नहीं कि एक बार फिर दूसरी बार बल्कि मतलब यह है कि होगा एक ही बार ख़्वाह कितना ही दराज़ हो मगर होगा शदीद। मसलन एक आदमी किसी को चपत मारे मगर हल्का और नर्म तरीक़े से। दूसरे आदमी को सख़्त ज़ोर से चपत मारे तो अदद में दोनों चपत बराबर हैं मगर शिद्दत में दूसरा पहले से दोगुना है यही मतलब पेश करदा आयत का है कि फरमाया यानी जैसा गुनाह वैसा अज़ाब। अगर गुनाह डबल और ज़्यादा नुक़्सानदेह नोइयत का है तो अज़ाब भी इसकी मिस्ल शदीद और डबल होगा। हमारे इलाक़े में मैदा की डबल रोटी बनाई जाती है वह एक ही मगर मोटी होती है इसलिये इसको डबल रोटी कह देते हैं। ऐसे ही यहां है कि अज़ाब एक ही होगा मगर शदीद होगा।

सवाल : हज़रत नूह तूफ़ान शुरू होने के बाद अपने बेटे को दावते ईमान दी हालांकि यह तूफ़ान अज़ाबे इलाही था और अज़ाब देखकर ईमान लाना क़बूल नहीं और जब ईमान नहीं तो दावते ईमान फ़िज़ूल हुई और फ़िज़ूल काम शाने नुबूवत के ख़िलाफ़ है। (गुस्ताख़े अंबिया)

जवाब : अज़ाब देखने का मतलब है अज़ाब में मुबतला हो जाना तकलीफ पाकर फिर कोई ईमान लाये तो मोतबर नहीं। यहां तो अभी उन कुफ्फार को एहसास ही नहीं कि यह पानी अज़ाब है भी कि नहीं। अभी तो बहुत थोड़ा है या हो सकता है कि अभी तक उन लोगों के पास पानी आया ही न हो अभी दूर हो और कनआन अभी यही समझ रहा हो कि पता नहीं यह क्यों कश्ती में सवार हुए ऐसी हालत का ईमान मोतबर है मगर पहला जवाब क़वी है।

सवाल : तूफ़ाने नूह के वाक़िये में है कि जब नूह की कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहरी तो अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन को हुक्म दिया कि तू रुक जा थम जा और पानी चूस ले हालांकि यह दोनों बे अक़्ल चीज़ें हैं और अमर व नही (करने न करने का हुक्म) उसका होता है जो अक़्ल रखे ख़िताब समझे।

जवाब : इसका जवाब हज़रत अबू बकर राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने दो तरह से दिया है। एक यह कि ज़ाहिरन हुक्म और ख़िताब ज़मीन व आसमान को है मगर हक़ीक़त में हुक्म इन मलायका और फरिश्तों को है जो बारिश बरसाने और पानी बहाने पर मामूर मुक़र्रर रहें मगर यह जवाब ठीक नहीं। दूसरा जवाब यह है कि हुक्म दो तरह का है (१) अमर ईजाब (२) अमर ईजाद। अमर ईजाब सिर्फ़ ज़ी अक़्ल मुकल्लफ़ीन को होता है मगर अमर ईजाद इसमें अक़्ल फ़हम की शर्त नहीं क्योंकि कायनाते आलम की तमाम अशिया बा एतेबार अमर ईजाद के अल्ला के हुज़ूर मुतीअ व फरमां बरदार हैं। हर चीज़ अल्लाह तआला के ताबे और ज़ेर फरमान है किसी को इसके हुक्म अदूली की जुर्रत नहीं। सिर्फ इंसान ही वह सरकश और बदबख़्त है जो अपने रब की खुल्लम खुल्ला नाफ़रमानी हुक्म अदूली करता है मोमिन को इससे इबरत पकड़नी चाहिये।

सवाल : अंबिया भी इंसान ही होते हैं और कोई इंसान भी उस पर क़ादिर नहीं हो सकता कि हर वक़्त उस बुलंद तरीन मैयारे कमाल पर क़ायम रहे जो मोमिन के लिये मुक़र्रर किया गया है। बसा औक़ात किसी नाज़ुक नफ़सियाती मौके पर नबी जैसा आला इंसान भी थोड़ी देर के लिये अपनी बशरी कमज़ोरी से मग़लूब हो जाता है लिहाज़ा अंबिया से ग़लतियां होती रहती हैं जिस तरह दूसरे आम इंसानों से।

जवाब : जुहलाए ज़माना की बदबख़्ती को क्या क्या जाये कि वह मक़ामे

नुबूवत नहीं जान सका। अपनी जहालत से अंधा बन कर नबी को आम तराजू में तोलना चाहता है। यह अक़ीदा बनाना कुफ्रिया तो हो सकता है कोई इस गुमराही को नहीं जान सकता इसलिये कि नबी कभी भी बशरी कमज़ोरी से मग़लूब नहीं हो सकता वह हमेशा हर आन बुलंद तरीन मैयारे कमाल पर क़ायम रहता है जो मैयारी हर मोमिन के लिये मुक़र्रिब है। इसके भी करोड़ों दर्जे बुलंद मैयार नुबूवत का होता है जिस पर हर आन नबी फ़ायज़ और क़ायम रहता है। यह कहना इंतेहाई बदतमीज़ी है कि अंबिया भी इंसान ही होते हैं। कहना यह चाहिये था कि अंबियाए इंसान भी होते हैं। जो शख़्स बारगाहे नुबूवत में ही और भी का फर्क़ न समझे उसमें शैतानियत नहीं तो और क्या है? अगर नबी सिर्फ़ इंसान ही होते और बशरी कमज़ोरी से मग़लूब हो जाया करते तो हज़रत नूह को इस तरह तंबीह न फरमाई जाती बल्कि इंसानी ख़ताओं की तरह दर गुज़ार की जाती। यह मुशफ़ेकाना अताब ही बता रहा है कि नुबूवत की शान जुदागाना है।

सवाल : ईमान के लिये कुरआन ने क्यों फ़रमाया? अक़्ल की दावत क्यों दी गयी। अक़्ल तो बुरी चीज़ है सब बुजुर्ग उसकी बुराई करते चले आये हैं। वायज़ीन फरमाते हैं अक़्ल से ईमान नहीं मिलता। अक़्ल तो नमरूद व शैतान और अबू जहल के पास बहुत थी। (बाज़ हज़रात)

जवाब : अक़्ल बज़ाते ख़ुद बुरी नहीं बल्कि अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत हैं अक़्ल सफेद कपड़े की तरह है कि सफ़ेद कपड़े को जैसा रंग करोगे वैसा ही हो जायेगा। बाज़ हुक्मा ने फरमाया कि अक़्ल मिस्ल मुल्क के है जैसा इस पर सुलतान होगा वैसा मुल्क होगा। कुरआन ने दो बातें समझायी हैं। एक यह कि ऐ अहमक़ो! तुम यह समझते हो कि दीन को अक़्ल से मत समझो नहीं। अक़्ल को खूब इस्तेमाल करो। अंधे बहरे होकर दीन मत पकड़ो। तुमने दीन को अंधे और बे अक़्ल होकर सुना सुनाया इसी लिये काफिर बुत परस्त हो गये। अगर ज़रा अक़्ल से सोचते तो तुम को अपनी बुतों की हक़ीक़त का पता चलता और ज़र्रे ज़र्रे में तौहीद के जलवे नज़र आते। सच्चा दीन अक़्ल को नाकारा नहीं करता बल्कि अक़्ल को रौशन करता है और सिर्फ अक़्ल ही क्या सारे आज़ाए इंसानी का इस्तेमाल का सही तरीक़ा दीन ही सिखाता है। दूसरे यह कि दीन व मज़हब के मामले में अक़्ल अपनी मर्जी से इस्तेमाल न करो वरना हस्बे साबिक़ (पिछलो की तरह) गुमराह हो जाओगे। अब मैं तुमसे कह रहा हूं मेरे कहने से

अक्ल इस्तेमाल करो क्योंकि जब अक्ल नबी के फरमान से इस्तेमाल की जाये तो वही अक्ल मकामे सिद्दीकियत तक पहुंच जाती है। नुबूवत किसी अज्व, किसी नेमत, को जाया नहीं होने देती और न ही इसका गलत इस्तेमाल। फरमाया जा रहा है कि अभी तक तुमने अपनी अक्लें दौलत कमाने, जुल्म, चोरी, फरेब करने में इस्तेमाल की हैं यह गलत इस्तेमाल है। अक्ल को सिर्फ दीन और इल्मे दीन के लिये इस्तेमाल करो। इससे मारफते इलाही हासिल करो। दुनिया की दौलत तो तुम को खुद रब ही अता फरमा देगा वही असल कारसाज है बंदा नवाज है।

सवाल : कौम लूत पर मलायका ने जाते ही फौरन अजाब क्यों न नाजिल कर दिया। पहले लूत अलैहिस्सलाम के घर मेहमान बनकर क्यों गये? जिस तरह पिछली सरकश नाफरमान बागी कौमों पर एक दम फरिश्तों ने अजाब नाजिल कर दिया, ऐसा यहां भी कर देना चाहिये था? (बाज़ जाहिल)

जवाब : उसकी वजह तफसीर जमल ने इस तरह ब्यान फरमाई है कि पिछली उम्मतों पर अजाब सिर्फ उनके कुफ्र और गुस्ताखी अंबियाए किराम की वजह से आयी जो हर वक्त उनके साथ ज़ाहिर था लेकिन कौमे लूत पर तीन वजह से अजाब आया। एक कुफ्र, दूसरा वजह गुस्ताखी नुबूवत, तीसरी वजह बद फैअली लिवातत इसलिये इन तीनों चीज़ों की सजा मिलनी थी। दो जुर्मों पर अज़ाब और तीसरे जुर्म का बदकारी पर शरई ताजीर। और शरई ताजियत के लिय जुर्म की शहादत जरूरी है। इसलिये पहले लूत अलैहिस्सलाम के घर जाकर उनकी गवाही ली। फिर जब कौम को उनके मेहमानों का पता लगा तो वह दौड़ कर आये और हजरत लूत से बात चीत की तो फरिश्तों को मुजरिम का बहलते जुर्म मुशाहेदा भी हो गया और इकरारी गवाही भी मिल गयी कि उन्होने बे गैरती दिखाते हुए खुल्लम खुल्ला जुर्म का इकरार किया जिससे शरअन ताज़ीर वाजबि हो गयी और यह गवाही इल्मे मलायका के लिये नहीं थी बल्कि कानूने शरीयत को पूरा करने के लिये थी। यही रब तआला का हुक्म था इसलिये उनको खूब सूरत लड़कों की शक्ल में भेजा गया।

सवाल : लवातत करना और इसकी सज़ा व ताज़ीर शरई जुर्म है शरीयत के अहकाम तो सिर्फ मोमिनों पर जारी होते हैं काफिर उनके पाबंद व मुकल्लफ नही होते तो हज़रत लूत उनको इस बदकारी से बाज़ रहने की तकलीफ क्यों देते रहे और रब तआला उनको इस जुर्म की सज़ा क्यों दे रहा है?

जवाब : शरीयत के कानून तीन किस्म के हैं, (१) अकायद (२) मामलात (३) इबादात। काफिर सिर्फ इबादात का मुकल्लफ और पाबंद नही बाकी पहले दो का मुकल्लिफ है। लूती मामलात व हुकूकुल इबाद का मुजरिम है। इसलिये इनको दुनियावी सजा मिली। यहां आखिरी सज़ा इनको सिर्फ कुफ्र की होगी।

सवाल : कौम की बद तमीज़ी, बे हयाई बे ग़ैरती को देखकर हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने मौत की तमन्ना की हालांकि शरीयत का कानून है कि मौत मांगना हराम है तो हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने मौत क्यों मांगी? (आर्य)

जवाब : मौत नही मांगी बल्कि मौत की तमन्ना की वह भी ज़मानए माज़ी में। यह तमन्ना जुर्म नहीं जैसा कि हज़रत मरयम ने कहा था हाए काश! इससे पहले मैं मर गयी होती। यह भी तमन्नए मौत थी मगर हराम नहीं। ज़मानए हाल या ज़मानए मुस्तकबिल की तमन्नाए मौत हराम है। जैसे कि काश मैं मर जाऊं या मुझे मौत आ जाये इसी को दुआए मौत कहते हैं यह हराम है।

सवाल : हज़रत लूत ने कुफ्फार की ताकत व कुव्वत देखकर यह तमन्ना क्योंकि काश मुझ को भी ताकत व कुव्वत होती। जिस्मानी ताकत दुनियावी और दुनियावी चीज़ पर हदस या रश्क हराम है दामने नुबूवत इससे पाक होना चाहिये? (बद तमीज़, बे अदब)

जवाब : कुफ्फार की ताकत देखकर यह तमन्ना ना की थी बल्कि कुफ्फार की बेग़ैरती। बे हयाई व बदतमीज़ी देखकर इस्लाम के ग़ल्बे के लिये यह तमन्ना की कि काश मुझको ताकत होती तो मैं इसी वक़्त तुमको यहां से भगा कर शरई कानून की हिफाज़त करता कि मेहमानों की हिफाज़त शरीयत का हुक्म है। रहा कौम के ताव्वुन की तमन्ना तो यह इस्लामी ग़ल्बे के लिये है न कि अपनी ज़ात के लिये। दीन व ईमान के लिये दौलत, ताकत, सलतनत, हुकूमत की तमन्ना करना बल्कि मुतालबा करना जायज़ है।

सवाल : क्या वजह है कि फरिश्ते जब लूत अलैहिस्सलाम के यहां आये तो अपनी शक्लों को बदल कर आये। अपनी असली सूरत मे क्यों न आये। यह तो एक तरह का धोका देना हुआ। धोका देना भी बद तरीन गुनाह और जुर्म है। फरिश्ते मासूम हैं तो यह गुनाह इनसे क्यों सरज़द हुआ? (आर्य)

जवाब : कानूने शरीयत के मुताबिक नेक मुसलमान को इस तरह धोका

देना कि उसका नुक़्सान हो यह जुर्म और गुनाह है और इसको धोका कहा जाता हैं इन फरिश्तों के भेष बदलने से अंबियाए किराम को कुछ नुक़्सान न हुआ बल्कि फायदा हुआ कि दुश्मनों को खत्म किया गया और कुफ्फार व मुश्रेकीन मूज़ी और ज़ालिमों को धोका देना जायज़ है बल्कि सवाब है। जैसे कि पुलिस मुजरिम को पकड़ने के लिये वर्दी उतार देती है यहां तक कि मुजरिम जुर्म में अपने हाथ रंगे होता है कि वह पकड़ा जाता है इसी को कहते हैं रंगे हाथों पकड़े जाना। या मुजरिम का जुर्म साबित करने के लिये खुफिया पुलिस बनाई जाती है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैदाने जंग में धोके जायज़ हैं।

सवाल : अहले सुन्नत व जमाअत का मसलक है कि नबी की बीवी फाहेशा, बदकारा, ज़ानिया नहीं हो सकती मगर हज़रत नबी लूत अलैहिस्सलाम की बीवी फाहेशा बदकार हुई इसलिये इसको भी तमाम काफिरों की तरह सज़ा मिली?

जवाब : वाक़ई नबी की बीवी बदकार, फाहेशा ज़ानिया नही हो सकती। हज़रत लूत की बीवी फासिक़ा थी कि वह फासिक़ों की मदद करती थी वरना खुद उसका न कोई गुनाह साबित न ज़िना और सज़ा के एक होने की वजह फासिक बाग़ी क़ौम की मुहब्बत है। सजा के एक होने से जुर्म का एक होना साबित नहीं होता। इस्लाम में बहुत से जुर्मों की सज़ा कोड़े हैं। इसी तरह क़त्ल की सज़ा भी क़त्ल है माहे रमज़ान की बे हुरमती करने वाले, इगलाम बाज़ी करने वाले बग़ावत करने वाले की सज़ा भी क़त्ल ही है।

सवाल : कुरआन में जहां कहीं नमाज़ का ज़िक्र आया है वहां साथ ही ज़कात का ज़िक्र आया है और चंद जगह नमाज़ के साथ साथ सब्र का भी ज़िक्र आया है तो नमाज़, ज़कात और सब्र में क्या ताल्लुक़ है जिसकी वजह से एक दूसरे का एक दूसरे के साथ ज़िक्र किया गया है? (बाज़ हज़रात)

जवाब : अल्लाह तआला ने इंसानी बक़ा के लिये तीन चीज़ें पैदा फरमायीं। दाख़िली और एक ख़ारजी। दाख़िली जिस्म ज़ाहिर और क़लब है। खाजरी चीज़ माल व दौलत। यह तीनों चूंकि अल्लाह की तरफ से ऐन नेमत हैं लिहाज़ा अल्लाह का शुक्र यह इन तीनों ही से अदा होता है। माल व दौलत का शुक्रिया ज़कात से, बदन का शुक्रिया नमाज़ से, क़लब का शुक्रिया सब्र से। क्योंकि सब्र दिली

इरादे का नाम हैं दिल की नीयत पर ही सब्र का दारोमदार हैं इसलिये इन तीनों का साथ साथ ज़िक्र किया गया है। दूसरी वजह यह है कि यह तीनों हम मिस्ल हैं कि दिल की ज़कात सब्र है बदन की ज़कात नमाज़, माल की ज़कात खैरात है। इसी तरह माल का सब्र ज़कात देना है कि माल वाला बहुत सब्र के साथ अपने मेहनत व मशक्कत से कमाए हुए माल को अपने हाथों से ग़रीब को देता है। बदन का सब्र नमाज़ पढ़ना है कि मुसलमान पांच वक़्त अपने कारोबार आराम नींद और तमाम चीज़ों से एक दम मुंह मोड़कर रब की तरफ रुजूअ करता है जो नफ़स पर बहुत भारी है और दिल का सब्र रज़ाए रब की नीयत से राहे खुदा की हर मुसीबत को बर्दाश्त करना है चूंकि हर तरह इन तीनों इबादतों का आपस में ख़ास ताल्लुक़ है इसलिये इन का ज़िक्र भी साथ होता है और फिर इन तीनों इबादतों का क़बूल होना भी एक दूसरे के अदा पर मौकूफ़ है कि तारके नमाज़ ज़कात की परवाह नही करता। न इसको सब्र की आदत होती है। इसी तरह बे सब्र आदमी ज़कात और नमाज़ से घबराता है और ज़कात न देने वाले का दिल सख़्त मुतकब्बिर और सरकश हो जाता है। वह नमाज़ियों में बैठना पसंद नही करता। इन वजूह से इन तीनों इबादतों का ज़िक्र साथ में रखा गया। बंदा कामिल तभी बनता है जब तीनों इबादतें करे।

सवाल : मुफ़स्सेरीन किराम फ़रमाते हैं कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को शबे क़द्र में ख्वाब आया। हालांकि उस वक़्त शबे क़द्र कहा होती थी, यह तो मुसलमानों के लिये उस इसराईली के मक़ाबिल बनाई गयी जो हज़ार साल इबादत करता रहा? (बाज़ गुमराह मुसलमान)

जवाब : मुसलमानों के लिये सिर्फ़ इसका सवाब बताया गया है वरना यह रात हज़रत आदम से ही चली आ रही है। इसी रात हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से उतरे और नूरे मुहम्मदी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को नज़र आया और अपने अंगूठे चूमकर आंखों पर लगाये अब भी कई सालेहीन बुज़ुर्गाने दीन को इसी रात में नूरे मुहम्मदी नज़र आता है यह एक क़ौल है।

सवाल : तमाम मुफस्सेरीने किराम फरमात हैं कि हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के भाई नबी थे मगर बाज़ उलमा और फुक़हा कहते हैं कि नबी नहीं थे। इस फर्क की वजह क्या और हक़ीक़त क्या?

जवाब : तमाम मुफ़स्सेरीन नहीं बल्कि चंद एक ने ऐसा कहा है मगर यह बिल्कुल ग़लत है क्योंकि अंबियाए किराम शुरू ही से मासूम होते हैं और मासूम गुनाह कर ही नहीं सकता। इनमें कुदरते गुनाह का माद्दा ही नहीं हो सकता। हालांकि उनके भाईयों से खतायें सरज़द हुई जो मनसब नुबूवत के मनाफ़ी है। लिहाज़ा यह सहाबियत के दर्जे पर ही हैं और हिदायत के तारे हैं। बाज़ ने फरमाया कि आल से मुराद अंबिया इसराईल हैं क्योंकि वह सभी औलादे याकूब हैं। हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम का असल नाम इसराईल है और चूंकि आप अपने भाईयों में सबके बाद पैदा हुए इसलिये आपको याकूब कहा गया (याकूब का माद्दा अक़्ब है यानी पीछे आने वाला) जो लोग यह कहते हैं कि आपके बेटे भी बाद में नबी बनाये गये इससे यह सवाल पैदा होता है कि कब बनाये गये। सज्दए यूसुफी तक नुबूवत साबित नहीं। अभी तक वह जुर्म करते ही चले आ रहे हैं। मुख़्तसर यह कि कुरआन के दलायल और सयाक़ व सबाक़ ने साबित कर दिया है कि बिरादराने यूसुफ़ नबी न थे रहा बाज़ मुफस्सेरीन का यह कहना कि वह नबी थे चश्म पोशियों में से एक चश्म पोशी है।

सवाल : इसकी क्या वजह है कि कुरआन मजीद में बड़े अहम वाक़ियात आये हैं जिनमें औरतों का ज़िक्र है मगर बजुज़ हज़रत मरयम किसी औरत का नाम का ज़िक्र नहीं, जुलेख़ा का नाम भी नहीं आया हालांकि एक तवील दास्तान है जिसको कुरआन ने ब्यान किया।

जवाब : अल्लाह तआला यह चाहता है कि औरतों को पर्दे में रखा जाये। यहां तक कि नाम भी औरत का यानी पर्दा बना रहे और यह सब बंदों को सबक सिखाया गया कि ऐ बंदो ख़बरदार अपनी औरतों को ज़ाहिर न करना जिस्म तो दर किनार नाम तक अख़बार व रसायल में ज़ाहिर न करना, यह सिनफ़े नाज़ुक पर्दे में रहने से ही अच्छी लगती है। यह इशारतन अमरे इस्तहबाबी है। हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का नाम दो वजह से ज़ाहिर फरमाया गया है। एक तो हज़रत ईसा की वजह से यह बताने के लिये कि यह ईसा बग़ैर बाप महज़ हमारी कुदरत से वसीलए मरयम पैदा हुए और नुबूवत को मरयम की तरफ निसबत करने की बिना पर फरमाया गया ईसा इब्ने मरयम। दूसरी वजह यह कि हज़रत मरयम को ईसाईयों ने मअज़ल्लाह खुदा की बीवी कहना शुरू किया तो उनकी बंदी और मखलूक़ होना एहतेमाम से रब तआला ने ज़िक्र फरमायी लिहाज़ा नाम ज़ाहिर

करना ज़रूरी था ताकि मरयम के बंदे होने में शक व शुबह न रहे।

सवाल : जब जुलैख़ा ने यूसुफ अलैहिस्सलाम को दावते गुनाह दी तो आपने साफ लफ्ज़ों में इंकार न किया बल्कि तीन जवाब दिये (१) मअज़ल्लाह (२) बेशक वह मेरा रब अल्लाह मेरा रब है या तेरा ख़ाविंद मेरा मुरब्बी है (३) बेशक मेरा अल्लाह ज़ालिमों को भी कामयाब नहीं होने देता। जुलैख़ा से यह सब कहने की क्या ज़रूरत थी साफ साफ इंकार कर देते इसकी क्या वजह है? (बदतमीज़ लोग)

जवाब : आपने सिर्फ इंकार ही करना पसंद न किया बल्कि इंकार के साथ साथ वजहे इंकार भी बतायी और अपनी कुव्वत व ताक़त भी बतायी और इसको रोकने की तलक़ीन भी फरमाई। मअज़ल्लाह कहकर यह बताया कि अगरचे तू हुकूमत और लश्करों वाली है मगर मुझ पर ग़ल्बा नहीं पा सकती क्योकि मैं रब्बुल आलेमीन की पनाह में हूं मेरी ताक़त तुझसे ज़्यादा है। दूसरे मैं इशारा किया कि मैं शुक्रगुज़ार बंदा हूं नाशुक्रा और ख़ायन नहीं इस वजह से मैं तेरी दावत कबूल नहीं कर सकता। तीसरा जवाब देकर तबलीग़ फरमाई कि यह सरासर जुल्म है। मैं तो इससे बचा ही हुआ हूं तू भी बच जा। यह फायदेमंद इशारे सिर्फ इंकार में न मिलते। यहूद व नसारा ने आपके किरदार पर बहुत खबीस बकवास की है। कुरआन ने तमाम अंबियाए किराम की इज़्ज़त व अज़मत को महफूज़ किया हैं और फरमाया कि नबी तमाम गुनाहों से महफूज़ होता हैं नबी के पास अच्छाई ही अच्छाई होती है। और जो नबी से दूर हुआ उसके पास सिर्फ बुराई ही बुराई होती है। ख़्याल रहे कि हज़रत जुलैख़ा हज़रत आसिया, बिलकीस और हज़रत खदीजा यह सब के सब कुंवारी ही रहीं बजुज आसिया के सब अंबियाए किराम की अमानतें थीं इसलिये इन चारों के शौहर नामर्द थे।

सवाल : ग़ैर महरम अजनबी औरतों को अपना जल्वा दिखाना हराम है और इनको भी देखना भी गुनाह है फिर यूसुफ अलैहिस्सलाम ने अपना दीदार इन्हें क्यों कराया? (आर्य)

जवाब : अव्वलन तो इसलिये कि हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम का हुस्न मोजिज़ा था और मोजिज़ा दिखाना जायज़ है। दोम यह कि रग़बत और अपनी तरफ मायल करने के लिये दिखाना हराम रोब पैदा करने के लिये दिखाना जायज़ है इसलिये हुस्ने यूसुफ को देखकर औरतें मरऊब हो गयीं न कि राग़िब

हुई। सोम इसलिये कि जुलैखा ने कहा था और मकसद इनका ताना व घमंड तोड़ना था। नबी के लिये उन औरतों के दिल में गुलामियत की जो ग़लाज़त थी उसको दूर करना मकसूद था और उनके मुंह से कहलवाना था कि तुम ने पहले जिसको गुलाम कहा उसी को अब अपने ही मुंह से फरिश्ता कह कर उसकी सना ख्वानी करो। यह भी तबलीग़े दीन है क्योंकि अंबियाए किराम की तारीफ खुदा की तारीफ है। इनकी रज़ा खुदा की रज़ा है। इनकी इताअत व फरमाबरदारी खुदा की इताअत व फरमाबरदारी है।

सवाल : मिस्र की औरतें तो काफ़िरा थीं फिर उन्होंने क्यों कहा इनको खुदा और फरिश्तों का क्या पता?

जवाब : या महज़ रस्मी और रिवाजी तौर पर सुन सुनाकर। जिस तरह बहुत ईसाईयों और हिंदुओं को अल्लाह तआला की कसम खाते और नाम लेते देखा है और इस्लामी सलाम करते देखा है या इसलिये कि बुत परस्त काफ़िर खुदा को भी मानते हैं और बुतों को भी मानते हैं।

सवाल : औरतों ने हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम को फरिश्तों से मुशाबेहत क्यों दी और बशरियत की नफी की हालांकि इंसान ज़्यादा खूबसूरत है अल्लाह तआला ने खुद ही कुरआन में फरमाया कि हमने इंसान को बेहतरीन शक्ल व सूरत में पैदा किया?

जवाब : हर इंसान खूबसूरत नहीं और हर फ़रिश्ता एक जैसा नूर है और यह तशबीह देखकर नहीं थी सिर्फ सुना सुनाई और ख्याल के मुताबिक तशबीह थी। जैसे आज हम किसी खूबसूरत औरत को परी कह देते हैं हालांकि परी को हमने देखा नहीं हैं। बाज़ ने यह जवाब दिया कि हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम में औरतों को तीन चीज़ें ज़ाहिर हुई। (१) जलाल (२) जमाल (३) भोलापन मासूमियत। इसलिये उन्हें यकीन हो गया कि यह गुनाहगार नहीं या गुलाम नहीं, हो सकता है क्योंकि गुलाम में जलाल नहीं हो सकता, और गुनाहगार में भोलापन व मासूमियत नहीं हो सकती और उन्होंने सुन रखा था कि फरिश्ते मासूम होते हैं इसलिये हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम को देखकर उन औरतों ने कहा।

सवाल : एक ही बार हुस्ने यूसुफी को देखकर औरतों ने अपने हाथ काट लिये जुलैख़ा ने क्यों न काटे न ही किसी मर्द ने काटे? (बाज़ लोग)

जवाब : जुलैखा ने जब से इश्क किया था कभी छुरी इस्तेमाल न की। (इमाम ग़ज़ाली) दूसरे यह कि जुलैखा ने अपना कल्ब व जिगर काट लिया था उनको हाथ काटने की फुरसत कहां। जिसने हजरत यूसुफ अलैहिस्सलाम के ज़ाहिर को ज़ाहिरी आंख से देखा उसने जाहिरी जिस्म यानी हाथों को काटा और जिसने बातिन को देखा या बातिनी निगाह से देखा उसने बातिनी जिस्म यानी जिगर और कल्ब के टुकड़े किये। और औरतें जमाल देखकर वारफ्ता और आशिक होती हैं मगर मर्द कमाल देखकर आशिक होते हैं। हजरत यूसुफ के पास जमाल था और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कमाल था। औरतें फरेफता और आशिक होती हैं तो हाथ की उंगलियां काटती हैं मर्द फरेफता और आशिक होते हैं तो सर काटते हैं। जमाल वाले को देखकर इश्क पैदा होता है मगर कमाल वाले के नाम पर ही करोड़ों आशिक जांबाज बन जाते हैं। एक रिवायत और तहकीक के मुताबिक मुहद्देसीने किराम व मुफस्सेरीन इज्ज़ाम ने फरमाया कि अल्लाह ने जब हुस्न को पैदा किया तो उसके हज़ार टुकड़े किये इसमें से ९९९ टुकड़ा अपने महबूब पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अता किया। बकिया हज़ार में एक टुकड़ा बचा तो उस एक में फिर हज़ार टुकड़े किये और ९९९ टुकड़े हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम को दिया गया और एक टुकड़े को पूरी दुनिया के इंसानों में तकसीम किया गया। इससे आप हुस्ने मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अंदाज़ा लगाओ। खुदा की कसम जो मेरे सरकार को एक बार देख लेता तो वह बार बार देखने की तमन्ना करता।

वह हुस्न है ऐ सैयदे अबरार तुम्हारा
अल्लाह भी है तालिब दीदार तुम्हारा

सवाल : उलमा और फुकहा अपनी तहरीर और तक़रीर में अपना तार्रुफ करते हुए लिखते हैं और कहते हैं कि मैं आलिम हूं मुफती हूं शैख़ुल हदीस हूं शैख़ुल जामिया हूं वग़ैरह वग़ैरह। यह खुद सताई है यानी अपने मुंह से मियां मिट्ठू बनना यह कहां तक दुरुस्त है? (जोहला)

जवाब : अपना तार्रुफ जब कि कौम की इस्लाह के लिये हो तो जायज़ बल्कि वाजिब है। आलिम को यह कहना जायज़ है कि मैं आलिम हूं, मुफ्ती हूं, शैख़ुल हदीस हूं, सनद याफ़्ता हूं ताकि लोग उससे दीनी मसायल पूछें और इस्लाम की बात पर एतेमाद करें। बशर्तेकि नीयत में तकब्बुर गुरूर, रियाकारी

हो तो तार्रुफ हराम है। सूफ़ियाए किराम के लिये अपना तार्रुफ़ हराम है ख़्वाह नीयत में तकब्बुर हो या न हो। क्योंकि शरीयत ज़ाहिर करने के लिये है और तरीक़त छिपाने के लिये लिहाज़ा किसी सूफ़ी को यह जायज़ नहीं कि वह यह कहता फिरे मैं पीर हूं वली हूं। गौस व कुतुब हूं हां जबकि कुफरिस्तान में हो और अलहाम से इजहार व तार्रुफ का हुक्म मिले तब जायज़ है जैसे कि क़सीदा गौसिया में तार्रुफ़ हैं सरकार गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपना तार्रुफ पेश किया है-

सवाल : मुफ़स्सेरीन हज़रत नबी शोएब अलैहिस्सलाम के बारे में लिखते हैं कि नाबीना थे हालांकि मज़हबे अहले सुन्नत यह है कि तमाम अंबिया किराम ऐब से पाक होते हैं और कोई नबी पैदाईशी नाबीना न हुए न ही किसी मायूब बीमारी में मुबतला हुए जबकि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम १८ साल तक मर्ज़े कोढ़ में मुबतेला रहे यह मुताबेक़त क्यों?

जवाब : ऐसा हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के लिये इम्तेहातन हुआ था मगर कोढ़ नहीं बल्कि एक क़िस्म का आपके पूरे बदन में जख़्म व आबला पड़ गया था। ऐसी घिन और ख़बीस बीमारियों को नबी की तरफ मंसूब करना कुफ़्र और गुस्ताख़ी है। इन मुफस्सेरीन का कौल बिल्कुल ग़लत है जिन्होंने हज़रत शोएब को नाबीना लिखा है। मसलके अहले सुन्नत बरहक़ है यह हकीक़त है कि कोई नबी नाबीना न हुए और न ही किसी घिन वाली बीमारी में अल्लाह तआला ने उनको मुबतला किया। हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम की आंखों में हज़रत यूसुफ की जुदाई में रोने की कसरत से मोतिया उतर आया था। रिवाजी व इस्तेलाही तौर पर भी इसको नाबीना नहीं कहा जा सकता। कुतबे तफासीर में एक हदीस ग़ैर मशहूर रिवायत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मंकूल है कि एक मर्तबा हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम इश्के इलाही में बहुत रोए तो रोने की वजह से आपकी आंखों की रौशनी जाती रही मगर कुछ दिन बाद फज़्ले इलाही से लौट आयी। मुख़्तसर यह कि हज़रत शोएब नाबीना नहीं थे और कोई नबी पैदाईशी तौर पर नाबीना नहीं क्योंकि यह सब ऐब में शुमार है और अंबियाए किराम तमाम अयूब व नकायस से बफज़्लेहि तआला महफूज़ होते हैं। दुनिया के तमाम इंसानों को अल्लाह ने हुक्म दिया कि ऐ इंसानों तुम ऐब के पास मत जाना मगर यहां अल्लाह तआला ने ऐब को हुक्म दिया कि ऐ ऐब तू मेरे नबियों के पास

मत जाना।

सवाल : दुनिया से बे रग़बती और आख़िरत में मशगूलियत अंबियाए किराम की ख़ुसूसी शान है फिर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने तलबे हुकूमत क्यों की कि या अल्लाह मुझको ज़मीन के खज़ानों का हाकिम बना दे?

जवाब : दो वजह से एक यह कि अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के तमाम अक़वाल व अफ़आल ख़ालिस अल्लाह के लिये व मनफ़अत दीनी और तमाम बंदगाने खुदा के इस्लाह के लिये होते हैं। तलबे हुकूम्त दुनियावी अग़राज व मक़ासिद के लिये हराम लेकिन इशाअते दीन के लिये जायज़ बल्कि फ़र्ज़ है। दूसरे यह कि सच्चा जुहद व इबादत यही है कि हमा वक़्त ख़िदमते दीन और इस्लाहे इंसानियत में मशगूल हो। औलाद बिगड़ती रहे तो कौम तबाह होती रहे परवाह न करे और खुद क़ायमुल लैल (रात भर नमाज़ पढ़ना) सायमुल दहर (हमेशा रोज़ा रखना) बना रहे। नेक मत्तक़ी परहेज़गार बन कर बैठा रहे और दूसरों को नेक बनाने की फ़िक्र न करे तो यह मंशाए इलाही और तालीमे रसूल के ख़िलाफ़ है। इरशादे बारी है ख़ुद को और अपने अहल व अयाल को जहन्नम की आग से बचाओ। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का मुतालबा हुकूमत या मारका करबला किसी ख़ुद ग़र्ज़ी की बिना पर न था। हुसूले इक़्तेदार के लिये न था बल्कि इशाअते दीन और कौम की इस्लाह के लिये था और हक़ीक़ी इबादत बज़ाते दुनिया से बे रग़बती और आख़िरत की तवज्जोह ही है। जंगलों में बैठ जाना जुहद व इबादत नहीं बल्कि वह रुहबानियत है। इस्लाम क़तई इस की इजाज़त नहीं देता। इस्लाम में तर्क दुनिया नहीं है बल्कि दुनिया आख़िरत की खेती है दुनिया से अलग थलग रहकर आख़िरत के तक़ाज़ों को पूरा नहीं किया जा सकता।

सवाल : कुरआन में अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि हम नेकियों के अज्र को ज़ाया नहीं करते हालांकि अज्र तो जन्नती चीज़ें हैं वह तो वैसे भी ज़ाया नहीं होंगी। ज़ाया का मायने है बरबाद फ़ना हो जाना यहां यह फ़रमाना चाहिये था कि हम आमाल ज़ाया नहीं करते?

जवाब : ज़ाया करने का मायने है हक़दार के पास हक़। जरूरतमंद के पास ज़रूरत और मोहताज जिस चीज़ का मोहताज है उसका न पहुंचाना अमल

बंदे का काम है वह उसने कर लिया और क़बूल करना या न करना यह अल्लाह का काम है तो यहां बताया यह जा रहा है कि क़बूलियते अमल की निशान और अलामत है अमल का बदला और बदला न मिलना उसका ज़ाया होना है और अमल का ज़ाया करना या होना इस का कबूल न होना है।

सवाल : इरशादे बारी तआला है सब हुक्म अल्लाह का ही है तो फिर और किसी का हाकिम मानना शिर्क हुआ? (मुलहिद)

जवाब : हुक्म लफ्ज़ मुश्तरक है इसके पांच तर्जमे हैं। (१) फ़रमान (२) फ़ैसला (३) क़ानून (४) अटल बात (५) तक़दीरे इलाही। यहां लफ्ज़ अपने आख़िरी मायने में है। नीज़ जब हुक्म की निसबत बंदों की तरफ़ हो तो मुराद होता है फ़रमान दुनिया या किसी झगड़े का फ़ैसला देना। और जब हुक्म की निसबत अल्लाह तआला की तरफ हो तो मायने होते हैं अटल बात हतमी और तक़दीरी क़ानून। कुरआन पाक में दोनों तरह यह लफ्ज़ इस्तेमाल हुआ है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये भी और आम बंदों के लिये भी और अल्लाह के लिये भी। इसकी वजह यह है कि अगरचे हाकिम होना अल्लाह की सिफत है मगर ग़ैर ख़ुसूसी। सिर्फ यही नहीं बल्कि कुरआन ने और अहादीस ने चौबीस अदद अल्लाह की सिफात नबीए करीम व कुरआन पाक को अता फरमायें मसलन करीम मजीद, रऊफ, रहीम वग़ैरह। इसी तरह हाकिम भी दूसरों की सिफत हो सकती है। हां ख़ुसूसी सिफाते इलाहिया की निसबत किसी और की तरफ करना शिर्क है मसलन ख़ालिक़, रज़्ज़ाक़, माबूद रहमान वग़ैरह।

सवाल : अल्लाह ने कुरआन में फ़रमाया कि हमने इस ज़मीन में पहाड़ों की कीलें ठोंक दीं ताकि तुम को लेकर यह ज़मीन चल न पड़े। तो क्या यह पहाड़ व जमीन में शामिल नहीं? और क्या यह ज़मीन का जुज़ नहीं ग़ैर हैं। अगर ग़ैर हैं तो फिर इन में खेती बाड़ी और दरख़्त फल फ्रूट ग़ल्ला दाना इंसानी रिज़्क क्यों होता है जब कि अल्लाह ने फरमाया कि हमने ज़मीन से तुम्हारा रिज़्क पैदा किया। यह एतेराज़ इसलिये उभरा कि कील ठोंकी जाती है और कील लोहे का होता है। नीज़ क्या ज़मीन पहले पैदा हुई और पहाड़ बाद में हुए या दोनों एक साथ। कील ठोंकने से साबित होता है कि पहाड़ बाद में पैदा हुए?

जवाब : पहाड़ ज़मीन ही की जिन्स है कील का ग़ैर (लोहे का) होना शर्त

नहीं। क्या आप ने दरवाज़ा बनाने वाले बढ़ई कारपेंटर को नहीं देखा कि जब वह किवाड़ के एक पट को जोड़ता है तो लकड़ी के दरवाज़े में लकड़ी और बांस की कील ही ठोंकता है और लुहार को नहीं देखा कि लोहे की दो चादरों को जोड़ने और एक दूसरे के साथ रोकने के लिये लोहे की रिपट ही ठांकता हैं तो इस तरह अल्लाह तआला ने ज़मीन को रोकने और ठहरने के लिये जिन्स ज़मीन ही से पहाड़ को खड़ा कर दिये जो ज़मीन के अंदर तक ठुके हुए हैं। हां उनकी नोइयत कुछ सख़्त है जिसको पत्थर कहा जाता है। जबकि ज़मीन की असलियत मिट्टी है। रहा यह सवाल कि पहले कौन पैदा हुआ। पहाड़ या ज़मीन। तो इसमें मुफ़स्सेरीन के दो क़ौल हैं। एक यह कि पहले सब ज़मीन बन गयी और जब उसने हरकत की तो अल्लाह ने उस पर पहाड़ों को कील की तरह ठोंक दिया जिससे जमीन साकिन हो गयी। नयूटन की गुमराह कुन थयोरी इल्मेज़न्नी है। मुजद्दिदे आज़म हज़रत शाह इमाम अहमद रज़ा ने इस सिलसिले में एक किताब भी तसनीफ फरमाई जिसका नाम हैं जिसमें आपने कुरआन व अहादीस के हवालों से साबित किया है कि ज़मीन साकिन है मुत्तहिर्रक नहीं। सुन्नियत का दर्द रखने वाले सरमाया दारों और इदारों से मैं बसद एहतेराम गुज़ारिश करूंगा कि वह आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत की तमाम तसनीफ़ात को हर जुबान में तर्जमा करके मंज़रे आम पर लावें ताकि असल हक़ायक़ का सही पता चले। यह बड़ी महरूमी है हमारी कि अभी सरकार आला हज़रत की मुकम्मल तसानीफ मंज़रे आम पर हम न ला सके।

सवाल : कुरआन ने बेटी की पैदाईश की ख़बर सुनकर रंज व ग़म का इज़हार करना कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन की निशानी क़रार दिया है कि बेटी की विलादत से काफ़िरों की यह हालत होती है हालांकि हम ने तो बहुत से मुसलमानों की भी यही हालत देखी है कि वह भी बेटी की पैदाईश की खबर सुनकर गमज़दा हो जाते हैं बल्कि किसी शख़्स को बेटी की दुआ कराते आज तक नहीं देखा हर शख़्स बेटे ही की दुआ कराता है तो यहां कुरआन ने ऐसा क्यों कहा कि कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन के यहां जब बेटी पैदा होती है तो वह गुस्सा खाते हैं, मुरझाए रहते हैं, शर्म से मुंह छिपाये फिरते हैं जबकि यह आदत तो मुसलमानों में भी है?

जवाब : दो वजह से एक यह कि मौजूदा मुसलमानों ने यह बुरी आदत कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन ही से सीखी है जैसा कि और बहुत सी बुरी रस्में मसलन

जहेज़ की कसरत और महर की क़िल्लत रिश्ता तय होते वक़्त लड़की वालों से डिमांड वग़ैरह हालांकि इस्लाम ने बेटी की इज़्ज़त बढ़ाई है और हदीस पाक में बेटी को रहमत फ़रमाया गया है अगर बेटा नेमत है तो बेटी रहमत है और रहमत के बग़ैर नेमत का मिलना ना मुमकिन है। इसी तरह इस्लाम ने जहेज़ की क़िल्लत और हक़ महर की कसरत (ज़्यादा महर) की तरग़ीब दी है। दूसरी वजह यह कि यहां जिस ग़म और गुस्से का ज़िक्र किया जा रहा है वह सिर्फ़ कुफ़्फ़ार ही की हालत उस वक़्त थी कोई मुसलमान अगरचे अपनी बेवकूफ़ी और नादानी से लड़की की पैदाईश पर रंजीदा हो जाता है मगर ज़िन्दा दफ़न नहीं करता और न ही बेटों के मुक़ाबिल बेटियों को ज़लील करता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसके यहां लड़की पैदा हुई और वह मुहब्बत से अपनी लड़की को एक बार देख लेता है तो उसके नामए आमाल में सत्तर बार काबा शरीफ़ देखने का सवाब लिखा जाता है। नीज़ आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि जिसके यहां लड़की पैदा हुई और उसने उसकी परवरिश की जवान होने पर उसकी शादी कर दी तो ऐसे शख़्स पर मेरी शिफ़ाअत वाजिब है और वह जन्नत में मुझसे सबसे ज़्यादा क़रीब होगा।

सवाल : कुरआन में है कि शहद लोगों के लिये शिफ़ा है हालांकि सफ़रावी बुख़ार और पित्त की बीमारी में शहद सख़्त नुक़सानदेह हैं इस तरह पेचिस और दस्त की बीमारी में शहद खाने से बीमारी ज़्यादा हो जाती है तो यह क्यों दुरुस्त हुआ?

जवाब : तफ़सीर कबीर ने जवाब दिया कि यहां मुराद इंसान की वह छोटी मोटी बीमारियां जो अक्सर मौसम की तबदीलियों से पैदा होती रहती हैं मसलन जाड़ा, बुख़ार, नज़ला, खांसी, दमा वग़ैरह हैं न कि तमाम बीमारियां या पेचीदा बीमारियां इससे मुराद नहीं। लेकिन बीमार में ज़रा सब्र हो और डाक्टर हकीम हाज़िक़ हो तो शहद बहुत ही खुसूसी और पेचीदा अमराज़ में भी बाइसे शिफ़ा है बल्कि बहुत सी गो लियों, दवाईयों, में शहद ही इस्तेमाल होता है। मेडिकल साइंस में आज भी शहद को बहुत अहमियत हासिल हैं और आंखों की रौशनी व बीमारी के लिये जितनी भी दवायें बनती हैं आज भी इसमें अस्सी फ़ीसद शहद ही का इस्तेमाल होता है और यह इसलिये बाइसे शिफ़ा है कि जब शहद की मक्खी फूलों का रस चूसकर अपने छत्ते में लगाती है तो दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए

वह लगाती है यह दुरूद शरीफ की बरकत है कि अल्लाह ने इसमें शिफा ज़्यादा रखा है।

सवाल : कुरआन में है कि कुफ्फार अल्लाह की नेमतों का इंकार करते हैं हालांकि किसी काफिर ने कभी भी अल्लाह की नेमत का इंकार नहीं किया। इनका कुफ्र तो सिर्फ यही है कि वह बुतों को पूजते हैं बुत परस्ती को इंकारे नेमत किस तरह कहा जा सकता है? (आर्य)

जवाब : बुत परस्ती ही इंकार नेमत है इसलिये कि जब काफ़िर ने बुत को माबूद (इबादत व पूजा के लायक) समझा तो इसको नफ़ा नुक़सान का मालिक भी समझा और नफा भी नेमत है और कुदरते नुक़सान की बावजूद नुक़सान न देना भी नेमत हैं तो एक बुत परस्ती से हज़ार नेमतों को बुतों की जानिब से मानना पड़ता है और उन नेमतों का इसके हासिल होने के वक़्त अल्लाह तआला से सुनकर होना पड़ता है कि यह नफ़ा फलां बुत फलां देवी देवता फलां सितारे से हम को हासिल हुआ। रब तआला की तरफ निसबत नहीं की जाती हालांकि यह सब नेमतें जो किसी भी वक़्त कुफ्फार को मिली हैं सब अल्लाह तआला की तरफ से मिली हैं न कि बुतों की तरफ से । इसलिये बुत परस्ती नेमते इलाहिया का इंकार है अगरचे कोई अपने मुंह से इंकारी लफ्ज न बोले।

सवाल : कुरआन ने नेक आमाल के लिये ईमान की क़ैद लगायी है जिससे साबित हुआ कि ईमान के बग़ैर अच्छे आमाल बेकार हैं मगर दूसरी जगह कुरआन ने फरमाया कि यानी जिसने ज़र्रा बराबर भी नेक और अच्छा काम किया तो कयामत में उसका बदला ज़रूर पायेगा। यह तज़ाद क्यों है? (आर्य)

जवाब : नेक आमाल के लिये ईमान शर्त है। इस्लाम को छोड़कर कोई यहूदी ईसाई काफिर और मुश्रिक कितना भी नेक अमल करे सब बरबाद है। अच्छे आमाल का होना नेक होने की दलील नहीं नेक और मकबूल बारगाहे अमल उसको कहा जायेगा जिसके साथ ईमान भी हो। ईमान अमल के लिये शर्त है और शर्त हमेशा अपने मशरूत का ग़ैर होता है। यह तीसवें पारे की सूरः ज़िलज़तिल की आयत है जिसमें तीन क़ौल हैं पहले वहां मोमिन और काफिर का ज़िक्र है कि कयामत में मोमिन अपने आमाल और काफिर अपने आमाल का बदला पायेगा। मोमिन के आमाल ख़ैर हैं। काफिर के आमाल बद (बुरे) हैं। दूसरे

यह कि वहां नेक और बद मुसलमान के आमाल का ज़िक्र है। तीसरा क़ौल यह है कि वहां तमाम इंसानों के अच्छे बुरे आमाल का ज़िक्र है यानी काफ़िर ख़्वाह मोमिन जो भी अच्छे काम करे उसका आख़िरत में बदला ज़रूर मिलेगा मगर काफ़िर के अच्छे आमाल का बदला दुनिया में ही है और बुरे काम का बदला आख़िरत में मगर मोमिन के हर काम का बदला आख़िरत में मिलेगा लेकिन मज़कूरा पहला क़ौल दुरुस्त है कुरआन की सूर: नहेल वाली आयत में आमाल की कबूलियत का ज़िक्र है इसलिये इस आयत का इस आयत से कोई मुक़ाबला या तारुज़ नहीं।

सवाल : इसकी क्या वजह है कि हुज़ूर मेराज की रात मक्का मुकर्रमा से बैतुल मक़दिस आये फिर वहां से आसमान पर मेराज शुरू हुई। यह क्यों न हुआ कि सीधे मक्का मुकर्रमा से ही मेराज हो जाती बैतुल मक़दिस जाने की क्या ज़रूरत थी?

जवाब : उलमाए किराम के मुहावरे में बैतुल मक़दिस तक सैर को असरा और वहां से आसमानों का सफ़र अर्शे आज़म और कुर्बे रब में जाने को मेराज कहते हैं और आम मुहावरे में मेराज व असरा एक ही है दोनों में कुछ भी फ़र्क़ नहीं है। सरकार मेराज की रात बैतुल मक़दिस क्यों तशरीफ़ ले गये इसमें बहुत सी हिकमतें हैं। पहली हिकमत यह कि अगर सरकार बैतुल मक़दिस पहुंचकर वहां नमाज़ अदा न करते तो उसका तक़द्दुस ना तमाम व ना मुकम्मल रह जाता। अल्लाह को बैतुल मक़दिस का तक़द्दुस मुकम्मल करना मंज़ूर था इसलिये सरकार को पहले वहां पहुंचा गया ताकि सरकार बैतुल मक़दिस में नमाज़ पढ़ लें तो उसका तक़द्दुस मुकम्मल हो जाये। दूसरी हिकमत यह कि तमाम अंबिया व मुरसेलीन पर सरकार की फ़ज़ीलत का इज़हार मक़सूद था इसलिये सरकार को मजमा अंबियाए में बुलाया गया और सरकार को इमामते अंबिया सुपुर्द की गयी ताकि सब पर ज़ाहिर हो जाये कि खुदा के बाद मख़लूक़ात में अगर किसी का मर्तबा है तो वह हैं हमारे और आपके सरकार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। तीसरी हिकमत यह है कि सरकार को बैतुल मक़दिस में बुलाकर तमाम अंबिया व मुरसेलीन को बताना मंज़ूर था कि ऐ नबियो! जिसकी नुसरत व इआनत (साथ देने और मदद करने) का यौम मीशाक़ (आलमे अरवाह) तुमसे वादा लिया गया था और तुमने इक़रार किया था कि अगर नबी आख़िरुज़्ज़मा

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे ज़माने में जलवा फरमा होंगे तो हम उन पर ईमान लायेंगे और उनकी मदद करेंगें। देख लो वह जाने पहचान रसूल यही हैं जिन पर ईमान लाने का तुमने हमसे वादा किया था। इन्हें अच्छी तरह पहचान लो ताकि तुम्हारी बसीरत व बसारत में ख़ूब इज़ाफ़ा हो जाये। चौथी हिकमत यह कि बैतुल मक़दिस तमाम अंबियाए किराम की इबादतगाह रह चुका है। अगर बैतुल मक़दिस जाकर आप इमामते अंबिया न करते तो यहूद व नसारा को तंज़ व तअन का मौक़ा मिलता और वह कहते कि अंबियाए किराम की सरज़मीन और इबादत गाह तो बैतुल मक़दिस है अगर आप सच्चे रसूल होते तो आप को भी उस सरज़मीन और मस्जिद से हिस्सा मिलता। इसलिये अल्लाह तआला ने अपने महबूब को बैतुल मक़दिस पहुंचा दिया और कुफ्फ़ार यहूद व नसारा के तन्ज़ तअन को हमेशा के लिये दफ़न कर दिया। पांचवीं हिकमत यह है कि बैतुल मक़दिस जाए महशर है इसलिये हिकमते इलाहिया का तक़ाज़ा हुआ कि सरकार अपने क़दमे मुबारक से इसे पामाली का शर्फ़ बख़्शें ताकि सरकार की क़दम पाक की बरकत से उम्मत पर क़यामत के दिन क़याम आसान हो जाये। छटी हिकमत यह है कि सरकार एक मुद्दत से इसकी तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ते थे लेकिन इसे देखा न था अब बवक़्त मेराज इसे दिखा भी दिया गया ताकि सरकार देख लें कि यह है बैतुल मक़दिस। सातवीं हिकमत यह है कि बैतुल मक़दिस में अंबिया व मुरसेलीन का अज़ीमुश्शान इज्तेमा हैं इनको भी अपनी ज़्यारत से मुशर्रफ फरमाना मंजूर था इसलिये मेराज की इब्तेदा बैतुल मक़दिस से हुई। अलावा अज़ीं बहुत से हिकमते व रमूज़ हैं जो इस नाचीज़ बंदए आसी नूरी के अहातए तहरीर से बाहर हैं।

सवाल : मेराज की रात में कितने अंबियाए किराम की मुलाक़ात हुई?

जवाब : तमाम मुहद्देसीन व मुफ़स्सेरीन फरमाते हैं कि बैतुल मक़दिस में तमाम अंबिया तक़रीबन एक लाख चौबीस हज़ार कम व बेश जितने भी दुनिया में तशरीफ लाये वह सभी बैतुल मक़दिस में तशरीफ लाये और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे दो रकअत अदा फरमाई। मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुक़तदी व उम्मती बने। फिर चंद अंबियाए किराम ने बतरीक़ए वअज़ व तक़रीर अपना तार्रुफ पेश फरमाया। सब से पहले हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नातिया

तार्रुफ पेश किया और ख़ातिमुन्नबीईन इमामुल अंबिया के लकब से ज़िक्र किया। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम, हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और मोतद्दिद अंबियाए किराम ने तक़रीर फ़रमाई जिसमें सबने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नअत ब्यान फ़रमाई। इससे मालूम हुआ कि नअते रसूल पढ़ना अंबियाए किराम की फ़रिश्तों की और ख़ुदाए तआला की सुन्नत है। पूरा कुरआन नबी के नअतों का हसीन गुलदस्ता है। जिसको नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नअतों से चिढ़ हो तो उसे चाहिये कि वह कुरआन पढ़ना छोड़ दे।

सवाल : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कितनी बार मेराज हुई?

जवाब : मुफ़स्सेरीन व शारेहीन हदीस फ़रमाते हैं कि आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चौतीस दफ़ा मेराज और उरूज की सआदत नसीब हुई। ग्यारह दफ़ा ख़्वाब में, ग्यारह दफ़ा नमाज़ में, और ग्यारह दफ़ा बहालते बेदारी आम बैठने और चलने फिरने में। इनका ज़िक्र अहादीसे मुख़्तलफ़ा मश्हूरा में है और एक दफ़ा जिस्मानी सैर व सहयात व रवानगी मेराज बहालते बेदारी ला मकां तक। कुरआन मजीद की आयत में तीन जगह फकत इसी मेराज का ज़िक्र है और बैतुल मक़दिस जाना इसी मेराज का हिस्सा है।

सवाल : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शक्के सदर कितनी बार हुआ?

जवाब : अक्सर उलमा मुहद्देसीन, मुफ़स्सेरीन, शारहीन और मोर्रेख़ीन का इस बात पर इत्तेफ़ाक़ है कि आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सीनए अक़दस एक दफ़ा पांच साल की उम्र शरीफ में चाक किया गया जिसे नूरी आप्रेशन कहिये और इसमें इल्म व हिकमत, नूर व मारेफ़त, शफ़क़त व रहमत भर दिया गया और नफ़्से अम्मारा (वह कुव्वत जो इंसान को गुनाहों और फ़ित्ना फ़साद की तरफ़ मायल करती है) निकाल दिया गया लेकिन इसके अलावा भी ऐसी रिवायात मिलती हैं जिन से मेराज के मौक़े पर इब्तेदा मेराज में शक़ सदर और क़ल्ब मुबारक आबे ज़मज़म से धोने का ज़िक्र मिलता है। इन्हीं रिवायात की

बिना पर कुछ उलमा किराम फ़रमाते हैं कि शक़ सदर (नूरी आप्रेशन) चार मर्तबा हुआ। (१) दाई हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा के यहां रिहाईश के वक़्त (२) मक्के में कोहे सफ़ा के पीछे जब आप की उम्र शरीफ़ दस साल की थी (३) ग़ारे हिरा के पास जब आपकी उम्र बीस साल की थी (४) मेराज की रात आधी रात को मक्का मोअज़्ज़मा में आबे ज़मज़म के कुंए के पास, मगर मुहक्क़ेक़ीन फ़रमाते हैं कि ज़ाहिरी बेदारी में सिर्फ़ पहली बार ही शक़ सदर हुआ। बाक़ी तीन दफ़ा ख़्वाब में हुआ। इसलिये बैतुल मक़दिस वाली मेराज की हदीस में शक्के सदर का ज़िक्र नहीं है और ख़्वाब वाली मेराज की अहादीस में शक्के सदर का ज़िक्र मिलता है।

यहां पर हुज़ूर को नून वल कलम से तशबीहा दी चूंकि क़लम पर चार मर्तबा चाकू चलता है तब वह कुर्बे कातिब में आता है इसी तरह जब हुज़ूर का चार मर्तबा शक्के सदर हुआ तब आपको कुर्बे इलाही की दावत दी गयी। दूसरी बात यह कि कलम ख़ुद कुछ नहीं लिखता ता वक़्तेकि कातिब न हो कातिब की हरकत पर कलम मुत्तहर्रिक होता है, क़लम का सकून व हरकत कातिब के ताबे है गोया कि हुज़ूर की हर शान पर अदा मक़तज़ाए इलाही है। ऐसे ही क़लम का कोई ख़ास इल्म नहीं होता नोके क़लम पर वही आता है जो सीनए कातिब में होगा। ऐसे ही कलम जब चार मर्तबा की मशक्क़त झेल लेता है तब वह कातिब का राज़दार बनता है जो कुछ कातिब के दिल व दिमाग़ में होता है क़लम इसका तर्जमान होता है ऐसे ही सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुर्बे इलाही की वजह से परवर्दिगार के राज़दार हो गये। चुनांचे इसी कुरबत का नतीजा है कि शबे मेराज में यह फरमाया गया जुबान नुबूवत है मगर कलामे इलाही हैं यह इसी कुरबत ख़ुसूसी का नतीजा है कि सरकार ने इशारा फरमा दिया तो कंकरियां बोल पड़ीं। देखो अदाए महबूब को खुदा अपना फेअल करार दे रहा है। यहां इकरार भी है और इंकार भी। दुनिया देख रही है दस्ते नुबूवत को मगर रब तआला यह फरमाता है कि ऐ रसूल! जब तुमने कंकरियां फेंका तो तुमने नहीं फेंका, यह किस का असर है इसी कुरबते इलाही का बैतुल रिज़वान के मौके पर रब तआला ने यह फरमाया, सहाबा किराम के हाथों पर रसूल का हाथ था मगर अल्लाह फरमाता है उन लोगों के हाथ पर अल्लाह का हाथ है।

सवाल : हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मेराज कराने की हिकमतें और वजह क्या हैं? क्यों मेराज कराया गया?

जवाब : वैसे तो हज़ार हा हिकमतें और वजहें मेराज कराने में हैं लेकिन असल और हकीकी हिकमत व मक़सद मेराज पर बुलाने का सिर्फ दीदारे इलाही कराना था और अपनी ज़ात को बे हिजाब दिखाना था। इसके अलावा जन्नत व दौज़ख़, लौह व क़लम, अर्शी व कुर्सी, अंबियाए किराम और जिब्राईल व मिकाईल व मलायका मुक़र्रेबीन को देखना महज़ ज़मनी चीज़ थी इसलिये कि यह तमाम चीज़ें और मुलाक़ातें सब कुछ कई मर्तबा ज़मीन पर भी हासिल हो चुकी थीं। चुनांचे बुख़ारी शरीफ की हदीस है बहालते नमाज़ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जन्नत देखी, बल्कि वहां के फलों के गुच्छे को भी पकड़ लिया और तोड़ना चाहा। अबू दाऊद शरीफ में भी है कि एक दफा आपने जहन्नम को भी देखा और फ़रमाया वहां औरतें ज़्यादा हैं। बुख़ारी शरीफ में है कि हौज़े कौसर को यहां से देख रहा हूं और ज़मीन के ख़ज़ानों की चाबियां मुझे दी गयीं। मिश्कात बाबुल मसाजिद में है कि आज मैं नमाज़ पढ़ रहा था तो रब तआला की आवाज़ मुझ को आयी और मैंने अल्लाह की आवाज़ सुनी। रब ने फ़रमाया, ऐ मुहम्मद! क्या तुम जानते हो कि मलाए आला के फरिश्ते किस बात पर झगड़ते हैं? अर्ज़ किया मौला नहीं तो रब ने अपना हाथ मेरे सीने पर रख दिया जिसकी ठंडक और लज़्ज़त मैंने अपने सीने के अंदर तक महसूस की और जो कुछ ज़मीन व आसमान में है वह सब कुछ मैंने जान लिया।

हुजूर ने इसी ज़मीन पर रहते हुए कुदरते इलाहिया की हर चीज़ को देख लिया और यह तमाम चीज़ें तो इब्राहीम, मूसा, व ईसा अलैहिमुस्सलाम ने भी देखीं। लौहे महफूज़ औलिया अल्लाह ने कई मर्तबा देखा। अगर मेराज फक़त इन्हीं चीज़ों को देखने के लिये हो तो इतना एहतेमाम करके बुलाने की ज़रूरत न थी। मानना पड़ेगा कि मेराज का असल मक़सद व हिकमत लामकां पर बुला कर दीदारे इलाही कराना था। बारी तआला का दीदार ही ऐसी चीज़ है जिसका नज़ारा ज़मीन के किसी इलाक़े पर बहालत बेदारी नहीं हो सकता। मेराज की दूसरी हिकमत यह है कि अल्लाह तआला ने आपके ज़िक्र को बुलंद फ़रमाया और बुलंद वह होता है जिससे कोई ऊंचा न हो इसलिये अमली सबूत के लिये लामकां पर बुलाया और हूर व गुलमां फरिश्तों की ज़ुबान से आपकी आमद का

चर्चा कराया। तीसरी वजह मेराज की यह है कि अल्लाह तआला दोनों जहानों का ख़ालिक़ है और हुजूर व अताये रब दोनों जहानों के मालिक व मुख़्तार हैं। लिहाज़ा वह तमाम ममलिकत मेराज की रात दिखाये गये। चौथी वजह यह है कि तमाम अंबियाए किराम को अल्लाह तआला से कलाम करने की शर्फ हासिल हुआ लेकिन फ़र्क़ से वही के ज़रिये से फ़रिश्ते भेजकर, बग़ैर वही, बग़ैर फ़रिश्ता, बिला वास्ता बग़ैर रोइयत के पर्दे में से सिर्फ़ आवाज़ से कलाम फरमाया। आक़ाए दो जहां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चूंकि हज़रत कलीम से अफ़ज़ल हैं इसलिये आपको तीन क़िस्म के कलाम तो ज़मीन पर ही सुनाये। चौथी क़िस्म का कलाम आप को ख़ुसूसी तौर पर सुनाना था इसलिये जमीन का नाकाफ़ी थी इसलिये लामकां पर बुलाकर हिजाबे कलाम सुनाया। पांचवीं हिकमत मेराज कराने की यह है कि ज़ाते मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कमालाते कुदरत और कारख़ानए फ़ितरत का बे मिसल आला नमूना हैं और नमूना सब को दिखाया जाता है और जिसको दिखाना मक़सूद हो उसको ऊंची बुलंदी पर बिठाया जाता है ताकि सब देख लें कि इस लिये मेराज की इंतेहाईयों पर बुलाया कि अर्श व फ़र्श लौह व क़लम और ज़मीन व आसमान पर रहने वालो! देखो मेरे महबूब को और जी भर के देखो। कौन है तुम में से इसकी मिस्ल। छटी हिकमत यह है कि हुज़ूर अल्लाह तआला के शाहिद यानी गवाह हैं और आपकी ज़ात पर गवाही ख़त्म करना ख़त्मुल रसूल बनाना था इसलिये शबे मेराज में बुलाकर हर चीज़ के अलावा अपने ज़ात का भी मुशाहेदा व दीदार करा दिया ताकि देखी हुई गवाही हो जाये और फिर किसी गवाह या गवाही की ज़रूरत न पड़े। सातवीं हिकमत यह कि मस्जिदे हराम (मक्का शरीफ़) से मस्जिदे अक़सा (बैतुल मक़दिस फ़िलीस्तीन) तक बुराक़ की ताक़त का मुज़ाहिरा कराया गया। आसमानों पर अंबियाए किराम की ताक़त का मुज़ाहिरा हुआ कि अंबियाए किराम मस्जिदे अक़सा में नमाज़ पढ़कर रुख़सत होकर आसमानों पर बुराक़ से पहले पहुंच गये। सिदरह से आगे लामकां तक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताक़त का सबूत दिखाया गया कि अंबिया जिब्राईल मिकाईल बुराक़ सबसे पीछे रह गये। ममलिकत सुन्नियत के ताजदार इमाम अहमद रज़ा क़ादरी फरमाते हैं-

दुल्हा से इतना कह दो प्यारे सवारी रोके
मुश्किल में हैं बराती पुर खर वादीये हैं

सवाल : जिस्मानी मेराज ना मुमकिन और मुहाल है कि बशर और इंसान की ताक़त नहीं कि वह आसमानों पर जा सके। (माद्दा परस्त)

जवाब : आपका सवाल दुरुस्त है वाक़ई कोई आम इंसान आसमानों पर नहीं जा सकता। जनाबक वाला आपकी यही बात मेराज जिस्मानी की दलील बन गयी। इसलिये कि मेराज जिस्मानी मोजिज़ा है और कुदरत की अजीब तरनिशानी है। इसलिये कुरआन मजीद ने इसकी अहमियत को साबित करने के लिये सफ़रे मेराज को सुबहानल्लज़ी से शुरू फ़रमाया। मोजिज़ा होना ही वही है जो आम बशर की ताक़त से मुहाल हो। इसलिये अल्लाह तआला ने फ़रमाया, असरा यानी जाने वाले पर ताज्जुब नही किया जाता मसलन अगर कोई शख़्स आपसे कह कि रेल के पचास डिब्बों को एक इंजन खींचने के लिये जाता है तो आप को कोई ताज्जुब नहीं होगा क्योंकि इंजन में पचास डिब्बों को आप जानते है। कि इसमें हरकत क़बूल करने और खींचे जाने की सलाहियत व लियाक़त तो है मगर चूहे में इतनी ताक़त व कुव्वत नहीं कि वह रेल के डिब्बे को खींच सके इसलिये आपको यहां ताज्जुब हुआ। अब आईये ख़ुदा की ताक़त व कुव्वत का अंदाज़ा लगाईये उसकी ताक़त किस को मालूम नहीं, कौन वाकिफ नहीं। इसकी शाने कून फैकून को कौन नहीं जानता। इन तमाम अक़ली व नक़ली दलायल व शवाहिद से जब खुदा की ताक़त सब को मालूम है तो अब इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि वाक़ई मेराज मुहाल है। वरना ख़ुदा की कुदरत का इंकार लाज़िम आयेगा। मेराज की (मीम) बताती है कि मेराज मुहम्मद को हुई है। मेराज की ऐन बताती है कि मेराज अर्श पर हुई है मेराज की रेवताली कि रात में हुई है मेराज की अल्लीफ़ बताती है कि मेराज अल्लाह ने कराया। मेराज की जीम बताती है कि जिस्म के साथ हुई।

सवाल : यह बात समझ में नहीं आती कि एक इंसान रात के थोड़े हिस्से में आसमान पर चला जाये और बा तफसील सैरे समवात करके आन की आन में लौट भी आये यह कैसे मुमकिन है?

जवाब : माहिर फलकियात इल्म रियाज़ी से यह बात साबित करते हैं कि

आफ़ताब (सूरज) ज़मीन से तेरह लाख तेरह हज़ार दो सौ छप्पन गुना बड़ा है और पूरे आफ़ताब के तुलू होने में ग़ालिबन पांच मिनट ही लगता है और ज़मीन की सतह इकसठ करोड़ नौ लाख अस्सी मील हैं अब आप इसको तेरह लाख तेराह हज़ार दो सौ छप्पन से ज़र्ब दो। तो हासिल ज़र्ब सत्ताईस खबर अठत्तर अरब बयासी करोड़ आठ लाख उनसठ हज़ार दो सौ अस्सी मील हुए और आफ़ताब ने इतना मील ज़यादा से ज़्यादा पांच मिनट में तय कर लिया जो दर असल लाखों बरस की राह है। गोया आफ़ताब ने एक मिनट में पांच खरब पच्चीस अरब छियत्तर करोड़ इकतालीस लाख इकत्तहर हज़ार आठ सौ छप्पन मील तय किया। फ़लां सफ़र और माद्दा परस्त इस सुरअते सैर पर ताज्जुब नहीं करते। अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तीन साअतों में अर्शे आज़म पर चले गये तो इसमें क्या इस्तेहाला है कौन सी ताज्जुब की बात है हालांकि यह आफ़ताब भी इन्हीं के नूर की एक झलक से पैदा हुआ है। फिर सरकार की सुरअत का क्या पूछना जब कि वह खुदा के नूर से हैं। और चांद व सूरज में जो नूर है यह आक़ा के नूर से है और यह चांद सूरज भी मेरे आक़ा के गुलाम हैं इसलिये इशारा पाकर मक़ामे सहबा पर पलट आया था। सोचो जब गुलाम की रफ़्तार का यह आलम है तो फिर आक़ा की रफ़्तार का क्या आलम होगा? दूसरी दलील यह है कि साइंस यह बात बताती है कि बिजली का एक तार अपने पास रखा जाये और दूसरा तार दुनिया के किनारों से घुमाकर उसी जगह लायी जाये तो बिजली सात सैकंड में सारी दुनिया का चक्कर लगाकर वापस वहीं आ जाये। बिजली एक माद्दी नूर है। इंसान की तख़लीक़ है इसकी बनाई हुई है जब इसकी रफ़्तार सात सैकेंड में इकसठ करोड़ नौ लाख नौ हज़ार अस्सी मील है तो फिर जो ख़ुदा का नूर, हो उसकी रफ़्तार किस तरह क़यास और अक़्ल में आ सकती है। जब इंसान की बनाई हुई बरक़ (बिजली) का यह आलम है तो अल्लाह की बनाई हुई बुराक़ का क्या आलम होगा? तीसरी दलील यह है कि इबलीस जो बदतरीन मख़लूक़ है वह पलक झपकते ही मश्रिक़ से मग़्रिब और शुमाल से जुनूब तक का चक्कर लगा लेता है जब बदतरीन मख़लूक़ को यह कुदरत हासिल है तो फिर बेहतरीन मख़लूक़ के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है जब मरदूद की रफ़्तार का यह आलम है तो महबूब की रफ़्तार का क्या आलम होगा अंदाज़ा लगाओ।

सवाल : हवा से ऊपर तबक़ा ज़महरीर यह है कि और इससे ऊपर करेए नार है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेराज की रात उनसे कैसे गुज़रे क्यों कि तबक़ा जमहरीरिया इस कदर सर्द है कि वहां दौराने ख़ून बंद हो जाता है और तबक़ए नार तो नार ही नार है वहां से किसी का गुज़र कैसे हो सकता है?

जवाब : हमारा मुशाहेदा है कि बच्चे मोमिन की शमअें रौशन करके उनकी लौ में अपनी उंगली इधर से उधर करते रहते हैं और उंगली नहीं जलती हालांकि आग से होकर गुज़रती है। इसी तरह हुज़ूर आन की आन में तबक़ए जमहरीरिया व तबक़ए नार से गुज़र गये और हम अहले सुन्नत का अक़ीदा है कि जैसे ही मेरे सरकार की सवारी तबक़ए नार पर पहुंची तो ज़रूर ख़िताबे रहमत हुआ होगा कि ऐ मेरे महकूब तबक़ए नार से जल्दी गुज़र जाओ वरना तुम्हारे मुबारक कदमों से तबक़ए नार सर्द हो जायेगा और जहां यह सर्द हवा बस सारा निज़ामे आलम दरहम बरहम हो जायेगा और अभी तो हमें चंद दिनों तक यह दुनिया कायम रखना है इसलिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तबक़ए नार से निहायत तेज़ी के साथ गुज़र गये और फिर तबक़ए नार की हक़ीक़त ही क्या है वअल्लाह! वह तो बजाए खुद है अगर जहन्नम में भी इनका नाम ले लिया जाये तो वह भी सर्द हो जाये।

सर्द कर देंगे आसी जहन्नम की आग
या नबी कह के जिस वक़्त चिल्लायेंगे

सवाल : जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने उम्मत की भलाई की फ़िक्र क्यों की?

जवाब : इसलिये कि सरकार को अपने एक एक उम्मती से बहुत ही प्यार है यह सब जिब्राईल को मालूम है और उनको भी सरकार के निगाहे करम की ज़रूरत है इसलिये जिब्राईल ने उम्मत की बेहतरी चाही कि जब मैं उम्मत की बेहतरी चाहूंगा तो उम्मत के निगहबां सरकार की निगाहे करम मेरी तरफ़ खुद बखुदमुतावज्जोह हो जायेगी इसलिये जिब्राईल ने उम्मत की भलाई की फ़िक्र की।

सवाल : मेराज की रात हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बार बार क्यों वापस किया यह तो ख़िलाफ़े अदब है?

जवाब : जिस दीदारे खुदावंदी के लिये हज़रत मूसा दुनिया में तड़पते रहे मगर फिर भी खुदा का दीदार न हो सका आज मेराज की रात हज़रत मूसा के

सारे अरमान पूरे हो रहे हैं यानी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का दीदार हो रहा है मगर हुज़ूर के ज़रिये और वसीले से हुजूर के चेहरए अनवर में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह का दीदार कर रहे हैं। मेरे हुजूर फ़रमाते हैं, जिसने मुझे देखा उसने अल्लाह को देखा और नमाज़ों के तखफीफ के बहाने अपना दिली अरमान पूरा कर रहे हैं। यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने काम अपना बनाया और नाम उम्मत की ख़ैर ख़्वाही का लिया और इस नाम के बहाने नौ मर्तबा दीदारे खुदावंदी से फैज़याब हुए। दूसरा जवाब यह भी हो सकता है कि हज़रत मूसा के दिल में शायद यह ख़्याल पैदा हुआ कि मैं इतनी इबादत व रियाज़त और तकलीफें उठाया, चालीस रोज़े रखे फिर भी दीदारे खुदावंदी को बर्दाश्त न कर सका था तो सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कैसे बर्दाश्त करेंगे एक बार दीदारे खुदावंदी हो गया यह एक अमरे तफ़ाक़ी था दोबारा यह भी दीदारे खुदावंदी से मुशर्रफ हुए और इशारों इशारों में मूसा से कह दिया। ऐ मूसा आपके लिये सारे रास्ते बंद थे इसलिये कि आप कलीमुल्लाह हैं और मेरे लिए तमाम रास्ते खुले हुए हैं क्योंकि मैं हबीबुल्लाह हूं। और कलीम व हबीब में जो फ़र्क़ है वह ज़ाहिर है। कलीम वह है जो अल्लाह को देखना चाहिये, और हबीब वह है जिसको अल्लाह देखना चाहे।

तूर व मेराज के क़िस्से अयां होता है
ख़ुद का जाना और है उसका बुलाना और है

सवाल : कुरआन में है हज़रत मूसा ने कौहे तूर पर ख़ुदा की सिफ़ात की तजल्ली देखी तो बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़े और तूर पहाड़ जलकर सुरमा बन गया। ताज्जुब है पत्थर का पहाड़ जल जाये और जिस्म मूसा न जले, हज़रत मूसा को भी जल जाना चाहिये था मगर मूसा क्यों बच गये?

जवाब : उलमा व मुहक़्क़ेक़ीन फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की पेशानी पर नूरे मुहम्मदी जलवा गर था इसलिये हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बच गये और तूर जलकर राख हो गया। अगर मूसा की पेशानी पर नाम मुहम्मद न होता तो वह भी जल जाते। नूह की किश्ती में अगर नाम मुहम्मद न लिखा होता तो वह डूब जाती। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की जुबान पर अगर नाम मुहम्मद न होता तो उनकी तौबा कबूल न होती।

सवाल : अहले सुन्नत के पास रोयइत बारी तआला (दीदारे ख़ुदावंदी) की रिवायतें हैं इन सब में रोइयत के मायने हैं ख़्वाब देखना। साबित हुआ कि नबी करीम ने सब कुछ ख़्वाब में देखा था।

जवाब : कितना ग़लत और कम इल्मी वाला सवाल है देखो मूसा अलैहिस्सलाम ने दीदारे इलाही की तमन्ना की और कहा ऐ अल्लाह मुझको अपना दीदार करा, जवाब मिला ऐ मूसा तुम मुझको हरगिज़ नहीं देख सकोगे। अगर पहाड़ पर ठहरे रहे तो अन क़रीब मुझको देख लोगे। बताओ क्या यहां ख़्वाब में देखने का ज़िक्र है? क्या मूसा ख़्वाब में नहीं देख सकते थे जबकि ख़्वाब में हमारे सरकार इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने रब तआला को सौ मर्तबा देखा था और अगर फिर यह मेराज ख़्वाब होती तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हतीम काबा में मेराज का ऐलान फ़रमाया तो अबू जहल और कुफ़्फ़ारे मक्का ताज्जुब करते हुए तकज़ीब की। हंसी मज़ाक और गुस्ताख़ी से इंकार करते बैतुल मक़दिस निशानियां पूछते न नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इनको बताते न वह हैरान होते। ख़्वाब में दीदारे इलाही करना कोई कमाल नहीं यह शर्फ़ तो आक़ा के सदक़े में आक़ा के गुलामों को भी हासिल है।

सवाल : हज़रत उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब कोई कहता है कि नबीए करीम ने अल्लाह तआला को देखा तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं साबित हुआ कि दीदारे इलाही नामुमकिन है?

जवाब : हज़रत उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा का यह फ़रमाना कि मेरे रोंगटे उसके ज़िक्र से खड़े हो जाते हैं या इसलिये है कि वह देखने से मुराद अदराक ले रही हैं और यह वाक़ई ना मुमकिन है कि दीदारे इलाही का अहाता कोई नहीं कर सकता। दीदारे इलाही इतना मुश्किल है कि हज़रत मूसा सिर्फ़ तजल्ली देखकर बेहोश हो गये और हम जैसे सुनकर कांप जाते हैं जिस्म के बाल खड़े हो जाते हैं यह तो उसी का जिगर और हौसला है जिसने देखा। हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की यह अपनी एक तर्ज़ ब्यानी है वरना इससे इंकार दीदारे इलाही साबित नहीं होता। बाज़ ने जवाब दिया कि उम्मुल मोमिनीन की मुराद ज़मीन पर रहकर दीदारे इलाही ना मुमकिन है

हां ला मां पर जाकर दुरुस्त है। बाज़ ने जवाब दिया कि यह अकीदा आयशा सिद्दीका का अपना है इसलिये वह इस अकीदे के ख़िलाफ बात सुनना गवारा नही करतीं और गुस्से या इंतेहाई नागवारी से इनके रोंगटे खड़े हो जाते हैं। उम्मुल मोमिनीन की रिवायतें इस बिना पर हैं कि कोई शख़्स अपनी मर्ज़ी से अपनी कुव्वत व इख़्तेयार से ज़ाते खुदावंदी को नहीं देख सकता जैसा कि आम तौर पर हम अपनी मर्ज़ी से हर चीज़ को देख सकते हैं। हां जिसको वह अपना जमाल दिखाये और देखने की कुव्वत बख़्शे उनके लिये दीदारे इलाही साबित है और यह सिर्फ और सिर्फ हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़ासा है किसी वली या नबी को भी यह कुव्वत यह शर्फ हासिल नहीं कि वह इस दुनिया में हालते बेदारी में दीदारे इलाही करे।

सवाल : अल्लाह के दीदार के लिये इतने दूर ला मकां पर क्यों बुलाया गया ज़मीन पर ही दीदार क्यों न कराया गया? जिस तरह कि ज़मीन पर ही नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कई दफा जन्नत व दौजख़ लौह व कलम अर्श व कुर्सी को देखा?

जवाब : अल्लाह तआला के लिये तो सब कुछ मुमकिन है जहां चाहे अपना ज़हूर फरमा दे मगर बंदे की आंख में यह ताकत नहीं कि बिला हिजाब उसको देख सके। नीज़ नबी करीम की यह शान है और हिम्मत व ताकत है कि दीदारे इलाही को बर्दाश्त कर सकें। आपके अलावा ज़मीन की कोई चीज़ दीदार तो दर किनार तजल्लीयाते इलाही की झलक भी बर्दाश्त नहीं कर सकती। अगर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़मीन पर ही दीदार कराया जाता तो नबी पाक वाकई दीदारे इलाही से मुशर्रफ हो जाते मगर बाकी मख़लूके ज़मीन तबाह व बरबाद और टुकड़े टुकड़े हो जाते। देखो शाने नुबूवत कि जब कोहे तूर पर तजल्ली डाली तो पहाड़ के सख़्त पत्थर भी टुकड़े टुकड़े रेज़ा रेज़ा होकर जल गये मगर जिस्म मूसा सिर्फ बेहोश हुआ जला नहीं। साबित हुआ कि नबी की ताकत पहाड़ों से ज़्यादा है। दो वजह से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लामकां पर बुलाकर दीदार कराया गया। पहली वजह यह है कि तजल्लीयाते ज़ात की वुसअतों को ज़मीन व आसमान, लौह व कलम अर्श व कुर्सी जन्नत व दौज़ख़ कोई मकाम मुतहम्मिल व बर्दाश्त नहीं कर सकता था। इसलिये सिदरह से भी ला मकां पर दीदार हुआ। दूसरी वजह यह कि शायद

ज़मीन पर रहते हुए बसारते मुस्तफा में भी दीदार की बर्दाश्त न हो क्योंकि ज़मीन पर तकाज़ाए बशीरयत ग़ालिब हों लिहाज़ा वहां बुलाकर दीदार का शर्फ बख्शा जहां नूरानियते मुस्तफा का ग़ल्बा हुआ। बिला तशबीह यूं समझो कि नस्फुल नहार (दोपहर) पर सूरज को साफ आसमान से कोई नज़र नहीं देख सकती तो सूरज को देखने के लिये उस चोटी उस बुलंदी पर पहुंच जाओ जहां से सुबह का सूरज नज़र आता है या उस जगह पहुंच जाओ जहां सूरज हल्के बादलों के हिजाब में हो। जिस तरह सूरज का देखने के लिये बंद टीले या चोटी पर चढ़ना पड़ता है इसी तरह रब तआला के दीदार के लिये ला मकां की वुसअतों तक बुलंदी पर जाना पड़ता है। दीदारे आफताब के लिये किसी बादल का पर्दा होना चाहिये और दीदारे इलाही के लिये हिजाबे नूर होना चाहिये।

सवाल : आयत असरा से मेराज साबित की जाती है और असरा मेराज नहीं?

जवाब : असरा का लग़वी मायने है सैर कराना और सैर आम है। हर तरह और हर तरफ चलने को ख़्वाह ज़मीन पर दायें बायें आगे पीछे जाना हो या ऊपर की जानिब बशक्ले परवाज़ या बशक्ले मेराज इसलिये मेराज को असरा कहना दुरुस्त है। इसी तरह सफर में भी हर तरफ जाने को सैर कह दिया जाता है। सैर और सफर ख़्वाह रेल, मोटर और घोड़े ऊंट पर हो हवाई जहाज़ पर लेकिन मेराज को रब ने सैर कहा सफर नहीं कहा। इसकी चंद वजह और चंद इशारे हैं। (१) सफर ग़ैर की मिलकियत में होता है सैर अपनी मलकियत में (२) सफर में थकावट होती है और सैर में तरावट और सकून (३) सफर में मंज़िल पर पहुंचना मकसूद होता है सैर में हर चीज़ देखना मकसूद होता है। मेराज को सैर फरमाने से तीन चीज़ें साबित हुई एक यह कि सारी कायनात नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिलकियत है। हुजूर अकदस कहीं ला मकां तक जाकर मुसाफिर न बने। शरीयत में अठावन मील तक जाने से बंदा मुसाफिर बन जाता है लेकिन अगर किसी का घर या मिलकियत रकबा सौ मील लंबा हो तो वह सौ मील तक अपने रक़बे में जाने से मुसाफिर न बनेगा। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वैसे हयाते तैयबा में ज़मीन पर दूर दराज़ जाना और उसको सफर कहना मजाज़न और शरई मसायल समझाने के लिये था यहां

मजाज़ का ज़हूर है मगर मेराज में हकीकत का ज़हूर हुआ। दोम यह कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इंतेहाई कुव्वत वाले हैं कि इतनी लंबी मुसाफत भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये सैर ही था न थकावट न नकाहत मिस्ल सैर व तफरीह तर व ताज़ा है। सोम यह कि अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सब कुछ दिखा दिया कि सैर दिखाने के लिये कराई जाती है।

सवाल : कुरआन सूरः असरा में है कि काफिर अपने लिये या दूसरे के लिये बद दुआयें मांगते हैं जिससे साबित हुआ कि किसी को बद दुआ देना कुफ़्रिया काम और गुनाह है तो फिर अंबिग़ाए किराम मसलन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और मूसा अलैहिस्सलाम और ईसा अलैहिस्सलाम अपनी अपनी कौम को हलाकत की बद दुआ क्यों दी? (आर्य)

जवाब : हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का यह कहना कि या अल्लाह इन काफिरों को ज़मीन पर न छोड़ ये बद्दुआ नहीं बल्कि बारगाहे इलाही में इस्तगासा फरमाया और मुजरिम को सज़ा का मुतालबा था। जिस तरह कोई भी मज़लूम या मजबूर हाकिम की अदालत में मुक़द्दमा करके दरख़्वास्त करता है कि फलां मुजरिम को सज़ा दी जाये यही नोइयत की शिकायत नूह की है। शिकायत मूसवी की है और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का किसी काफिर को फरमाना कि तू ऐसा होगा तो यह भी बद दुआ नहीं बल्कि पेशेनगोई है। एक मौके पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी को बे इख़्तेयारी में बद्दुआ दी थी तो फौरन उससे रुजूअ फरमाया लिया था। हज़रत ज़ैनब बिन्त अली रज़ियल्लाहु अनहा ने कूफे के मैदान में यज़ीदी शियों को कहा था कि तुम कयामत तक इसी तरह पिटते रहोगे जिसका ज़हूर आज तक हो रहा है तो यह भी बद दुआ न थी बल्कि ग़ैबी पेशेनगोई थी।

सवाल : आपने कहा दुनिया में किसी भी जगह छः महीने का दिन और रात नहीं होती, हालांकि अल्लामा शामी ने फरमाया कि बलग़ारी यह में छः महीने का दिन छः महीने की रात होती है इसी तरह बहारे शरीयत में है कि बर्तानिया के बाज़ इलाकों में चंद माह की छोटी रातों में वक़्ते ईशा आता ही नहीं तो हम आपकी बात तसलीम करें या अल्लामा शामी की या साहबे बहारे शरीयत की?

जवाब : उन बुजुर्गों के पास आप जैसे लोगों ने सुनी सुनाई बातों का सवाल भेज दिया और उन्होंने यकीन करके फैसला ब्यान फरमा दिया। तहकीक हाल न उन्होंने की न उनके पास वसायल थे न ही उस जमाने में वतन से इतनी दूर जाने और आबाद होने का रिवाज था कि मुल्क मुल्क और दुनिया भर के इलाकों का पता लगता। आज दुनिया के हर खित्ते में तकरीबन हर जगह मुसलमान आबाद हैं और हर शख्स को टेलीफोन की सहूलत हासिल है। मीडिया काफी उरूज हासिल कर चुका है घर बैठे ही पूरी दुनिया का पता लगाया जा सकता है। तकरीबन दुनिया के हर मुल्क में मेरे मुसलमान भाई आबाद हैं। मैंने तमाम से राब्ता किया और बर्तानिया खुद आया यहां के रात दिन सुबह व शाम सर्दी गर्मी खुद देखने का मौका मिला। निज़ाल औकात के लिये खुद तफतीश की। दुनिया भर में बसने वाले अहबाब से राब्ता करके सोयडन, बलगारी या वगैरा की मालूमात हासिल की मगर किसी ने चश्म दीद गवाही या तसदीक न की जबकि बाज़ इलाकों के मुताल्लिक यह ज़रूर बताया गया कि वहां छः माह तक काले बादलों के अंधेरे छाए रहते हैं मगर सूरज ज़रूर तुलूअ व गुरूब होता है यह अलहेदा बात है कि रोज़ाना कम से कम एक घंटा ही निकले। इसलिये सुनी सुनाई बात की मकाबिल तर्जबे और मुशाहेदे को तरजीह होनी चाहिये। आज भी सर्दियों के अय्याम में अपने मुल्क के कुछ इलाकों में दस दस दिन तक सूरज ही नहीं दिखाई देता है इसका मतलब यह नहीं कि सूरज निकलता ही नहीं।

सवाल : कयामत में कोई किसी का बोझ न उठायेगा, किसी का गुनाह दूसरे पर न डाला जायेगा, हालांकि हदीस पाक में है जिसका हक मार लिया या जिसकी ग़ीबत करके दुनियावी नुक्सान पहुंचाया तो कयामत में हक मारने वाले की नेकियां जिसकी ग़ीबत की है जिसका हक मारा है उस मजलूम को दी जायेंगी और मजलूम के गुनाह जालिम पर डाल दिये जायेंगे लिहाजा बोझ तो उठा लिया और डाल भी दिया गया यह कुरआन व अहादीस में तारूज क्यों? (आर्य)

जवाब : कुरआन के कहने का मतलब यह है कि कोई अपने इख्तेयार और दोस्ती या रिश्तेदारी या दुनिया में गुनाह ले लेने का वादा कर लेने की बिना पर किसी के गुनाहों का बोझ नहीं उठा सकता और हदीस शरीफ में है कि अज़ाब के तरीके पर दूसरे के गुनाह डाल दिये जायेंगे यह गोया अज़ाब उसके उस जुल्म का है जो उसने किया और मज़लूम पर रहमत करने के लिये।

सवाल : अल्लाह जिस बस्ती को हलाक करने का इरादा फ़रमाता है उसके अमीरो को दीन का हुक्म देता है वह नाफ़रामानी करते हैं तो सारी बस्ती को हलाक कर दिया जाता है इसकी क्या वजह है कि गुनाह सिर्फ़ अमीरों ने किया और हलाक सब बस्ती हुई जिसमें बच्चे बेगुनाह जानवर भी थे? (आर्य)

जवाब : अक्सर कुल के हुक्म में है इसलिए अक्सरियत का हुक्म जारी कर दिया जाता है। दूसरे यह कि नेक लोगों को निकाल लिया जाता है सोम यह कि इस हुक्म से आम हुक्म हैं। नमाज़ रोज़ा वग़ैरह तो सब अमीर व ग़रीब पर फ़र्ज़ थे उस पर अमीरो ने भी अमल न किया अपने सरदारी के गुरूर में और ग़रीबों ने भी अमल न किया अमीरों की मातेहती की वजह से और देखा देखी न बच्चों को हलाल रोज़ी खिलाई न दीन सिखाया और न ही इल्म व और उलमा की क़दर की। नीज़ बच्चे और जानवर मिस्ले माल के हैं उनकी तबाही से इंसान को बहुत दुख होता है इसलिये सब को हलाक करना ऐन मसलेहत है मालूम हुआ कि जिस बंदे को अल्लाह तआला दीनी या दुनियावी सरदारी अता फ़रमाये उसको अपनी ज़िन्दगी बड़ी एहतियात से गुज़ारनी चाहिये, ख़्वाह आलिम हो या पीर हो, चौधरी हो या सरदार, छोटे अपने बड़ों ही की तक़लीद करते हैं।

सवाल : जो अपनी नेकियों और अच्छाईयों से दुनिया तलबी का इरादा करे हम उसको दुनिया दे देते हैं फिर आख़िरत में मज़मूम व रुसवा होकर जहन्नम में गिरेगा। इससे साबित हुआ कि जो शख़्स इस दुनिया में तर्क दुनिया करेगा और तालिबे आख़िरत बनकर रहेगा वह तो दायमी जहन्नम से बचेगा लेकिन जिसने माल व दौलत, सलतनत व हुकूमत जमअ और हासिल करने का इरादा किया वह दायमी जहन्नमी है हालांकि बहुत से मुसलमान और नेक लोग भी अपनी तिजारत वग़ैरह से दुनिया तलबी करते हैं। इसलिये मुसलमानों में भी बड़े दौलतमंद और सलातीन गुज़रे हैं और इनको नेक और जन्नती लोगों में शुमार किया जाता है इसकी क्या वजह है? (आर्य)

जवाब : इस सवाल के तीन जवाब हैं। पहला यह कि दुनिया तलबी का इस तरह हमा वक़्त पुख़्ता और मज़बूत इरादा हो कि आख़िरत का यक़ीन ही मिट जाये। क़यामत पर ईमान ही न हो जैसे कि कुफ्फार व मुश्रेकीन व मुनाफ़ेक़ीन का है। ऐसी दुनिया तलबी गुनाह है। शरीयत का ख़्याल रखे बग़ैर कोई तिजारत की जायेगी तो वह दुनिया परस्ती और दख़ूले जहन्नम का ज़रिया बनेगी। दोम

यह कि इससे मुराद दायमी जहन्नम नहीं बल्कि उसके बुरे इरादे और बुरे इरादे के ज़रिये हराम बदकारी की तलब का जो गुना है इसके बदले आरजी जहन्नम फिर बाकी नेकियों की वजह से ईमान की बिना पर जन्नत का दाख़िला हो जायेगा। मुसलमान अगरचे कितना ही लालची और तालिबे दुनिया बन जाये फिर भी आख़िरत के लिये बहुत कुछ कर लेता हैं सोम यह कि दुनिया सिर्फ़ ख़ुदा से ग़ाफिल होने का नाम है यानी तलबे दुनिया में अल्लाह तआला और उसकी सज़ा वजज़ा को बिल्कुल ही भूल जाये। हलाल व हराम की परवाह न करे। न किसी वक़्त आख़िरत की तैयारी में गुज़ारे ऐसा ग़ाफिल शख़्स जो भी हो अपना ईमान बरबाद कर लेता हैं नफ़स ने एक शोशा छोड़ दिया और धोके में डाल रखा है। ग़फ़लत किये जाते हो और कहते हो कि अल्लाह ग़फूर्रुहीम और करीम है। माफ करने वाला है वह सब कुछ बख़्श देगा और बद अमल करने के बावजूद हमें जन्नत में दाख़िल कर देगा। खूब याद रखो कि यह शैतनी वसवसा है जिसने मख़लूक़ को तबाह और आमाल से काहिल बनाकर इबादत व इताअत से रोक रखा हैं अल्लाह तआला ऐसे गुमाने फ़ासिद और शैतानी वसवसों से महफ़ूज़ रखे आमीन।

सवाल : रब की अता किसी भी इंसान पर बंद नहीं हालांकि देखा जाता है कि कोई आदमी ख़ज़ानों में भरपूर मस्त है उसके यहां दौलत की बरसात होती है और उसे उम्दा और मुरगगन गिज़ायें हासिल हैं और कोई भूका नंगा है एक वक्त की रोटी भी मयस्सर नहीं। मुफ़लिस कंगाल है मफ़लूकुल हाल है।

जवाब : अल्लाह तआला किसी का रिज़्क़ उस के गुनाहों नाफ़रमानियों और कुफ्रियात व शिरकियात की बिना पर बंद नहीं करता और न ही इस दुनिया में नेकियों और अल्लाह की रज़ा की बिना पर किसी को दुनियावी इज़्ज़त व दौलत दी जाती। रहा यह कि कोई ग़रीब है कोई अमीर है तो इसकी बड़ी वजह अज़ली तक्दीर है जो ऐन हिकमते इलाहिया है और छोटी छोटी वजहें अपनी ग़फ़लतों बे अकलियों ना तर्जबे कारियों की बिना पर बेशुमार हैं और फिर अमीरी गरीबी तो दौलत में है लेकिन इसके अलावा आज़ाए ज़ाहिरी व बातिनी और चांद सूरज हवा पानी की नेमतें तो काफिर व मोमिन पर यकसां हैं किसी पर कुछ बंद नहीं।

सवाल : यह क्या बात है कि कुफ्फ़ार व मुश्रेकीन पर दुनियावी रिज़्क़ बंद नहीं मगर तौफ़ीक़ व हिदायात, कसरते कुफ्र व शिर्क की बिना पर बंद हो जाती हैं? (राम चन्द्र आर्य)

जवाब : इसके तीन जवाब हैं (१) इसलिये कि रिज़्क़ बंद करने की वजह से मौत वाक़ेय होती है और मौत से ज़िन्दगी व मोहलत ईमान ख़त्म हो जाती है तो कल क़यामत में कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार अपने कुफ़्र व शिर्क और सरकशी पर यह उज़्र रख सकते हैं कि हम तो मर गये थे इसलिये ईमान कैसे कबूल करते। अगर ज़िन्दा रहते तो मोमिन बन जाते इसलिये इनको मुकम्मल हर तरह का रिज़्क़ दिया गया ताकि लंबी उम्रें पाएं और मोहलत हासिल करें। (२) यह कि अल्लाह तआला हलीम है और मार डालना गुनाहों की वजह से रिज़्क़ बंद कर देना, यह सज़ा है और जल्द ही सज़ा देना शाने हलीमी के ख़िलाफ़ है। नीज़ यह दुनिया दारे सज़ा नहीं है बल्कि आख़िरत यौमुल हिसाब है दारुल सज़ा व जज़ा है। (३) यह कि रिज़्क़ बंद कर देना बख़ीलों का काम है और अल्लाह रब्बुल आलेमीन है। बख़ीली से पाक है नीज़ रिज़्क़ देना अदल है और अदले इलाही आम है। हिदायत व तौफ़ीक़ फ़ज़्ल है और फ़ज़्ल के लिये बंदा का तालिब बनना चाहिये। फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है जिसको चाहता है देता है।

सवाल : कुरआन में है कि ऐ लोगो जब तुम ख़ुदा की बारगाह में दुआ मांगो तो मां-बाप को भूल नहीं जाना बल्कि उनके लिये भी दुआ मांगो और कहो ऐ अल्लाह हमारे मां-बाप पर रहम फरमा जिस तरह उन्होंने मुझ पर बचपन में रहम फ़रमाया, मेरी परवरिश की। वालिदैन ने औलाद पर रहम किया अपनी लज़्ज़त व शहवत के लिये सोहबत की और हज़ार हा मुसीबतों और तकलीफ़ों बीमारियों के लिये एक मासूम जान को दुनिया में ले आये और अगर वह बच्चा बुरा बन गया तो जहन्नम का मुस्तहिक़ ठहरा। यह वालिदैन का एहसान नहीं यह तो ज़ुल्म है? (बद तमीज)

जवाब : वालिदैन ने तो एहसान ही किया है दुनिया की रौनक़ों, दौलतों, और ईमानी अरफ़ानी बहारों में औलाद को लाए फिर औलाद के ख़ातिर हज़ार हा रंज व ग़म तकलीफ़ें बर्दाश्त कीं। फूलों की तरह बच्चों को रखा। अच्छी सोहबत अच्छी तालीम की कोशिश की। हर तरह इल्म व हुनर सिखाया हमेशा लुटाया। अब आगे बीमारी तकलीफ़ें इसकी किसमत जन्नती या दौज़ख़ी बनता तो वालिदैन के तर्बियत के बाद हुआ। बलूग़त में जाकर औलाद की अपनी मर्ज़ी पर मुनहसिर है पाबंदीए अहकामे शरअ करेगा या ख़िलाफ़े शरअ?

सवाल : कुरआन में है कि कुफ्फार व मुश्रेकीन बेटियों को सख़्त बुरी और ज़लील चीज़ समझते हैं लेकिन देखा गया है कि हिंदु अपनी तमाम मूर्तियों को औरत ही का नाम देते हैं और उनका एहतेराम करते हैं जैसे काली देवी, लक्ष्मी देवी, पार्वती, सरस्वती, गंगा, जमुना, पीपल वाली वग़ैरह वग़ैरह। इस मुशाहेदे से साबित होता है कि कुफ्फार व मुश्रेकीन औरतों का एहतेराम करते हैं? (आर्य)

जवाब : इस सवाल के दो जवाब हैं। पहला तो यह है कि बात कुरआन कुफ्फार मक्का के बारे में कह रहा है जो लड़कियों से बेटों के मुक़ाबले में नफ़रत करते थे और दुनिया में बहुत से कुफ्फार व मुश्रेकीन अब भी यह हरकत करते हैं कि तरह तरह की तकलीफ़ें देकर लड़कियों को मारने या ता उम्र ज़लील रखने की कोशिश करते हैं। ज़िन्दा दफ़न कर देना या बच्ची को पैदा होते ही जंगल और कूड़े के ढेर पर फेंक देना एक ही क़िसम की हरकत है। ऐसी ज़ालिमाना हरकतों की दो ही वजह हो सकती हैं। बेटी को जहेज़ कहां से देंगे उनको खिलायेंगे पिलायेंगे कहां से और जब बड़ी होगी तो दूसरों के घर चली जायेगी। यह जाहिलाना ख़्यालात बहुत से इलाक़ों और क़बीलों में आज भी मौजूद हैं। आज भी अपने घर बेटी पैदा होने पर अफ़सोस करते हैं। अल्लाह के दरबार में सब औलाद यकसां दर्जा रखती हैं कोई अदना, आला नहीं लड़का हो या लड़की, बेटा हो या बेटी। बेटी को ज़लील हक़ीर और अदना समझना गुनाह है और कुफ्फान का तरीक़ा हैं रहा कुफ्फार व मुश्रेकीन को गंगा जमना, सरस्वती और देवी को औरत समझना वह औरत होने की बिना पर नहीं बल्कि उनमें रूहानी कुव्वत मानते हैं और इस रूह और कुव्वत को मोवन्नस समझते हैं इसी तरह बहुत से देवी देवताओं के भगत अपने आपको मोन्नस बनाते हैं और तरह तरह की करतब व शुअदबाज़ी करते हैं और कहते हैं कि मैं फलां देवता की बीवी हूं। *लाहोल वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह*।

सवाल : सज्दए आदम का हुक्म सिर्फ़ फ़रिश्तों को दिया गया था, इबलीस फ़रिश्तों से नहीं था तो सज्दे का हुक्म उस पर कब आया और इंकार सज्दा से यह क्योंकर मुजरिम व काफ़िर हुआ? (आम लोग)

जवाब : इबलीस जिन्नों में से है और जिन्न आग से बनाये गये हैं वाक़ई इबलीस फ़रिश्ता नहीं है कि फ़रिश्ते नूर से पैदा किये गये हैं मगर सिफ़ात व

मकाम के एतेबार से इबलीस उस वक्त कुव्वत व ताकत आमाल व अफआल इबादत और सोहबत मलकूतियते वरजात की बिना पर फरिश्ता बना दिया गया था इसलिये सज्दे के हुक्म में शामिल था।

सवाल : शैतान ने कहा कि मैं सब इंसानों को गुमराह करूंगा सिवाए थोड़े इंसानों के, इबलीस को यह कैसे मालूम हुआ कि आइंदा पैदा होने वाली नस्ल आज जिनका निशान वजूद भी नहीं उनमें से कुछ थोड़े को गुमराह न कर सकूंगा। यह मतलब तो हो ही नहीं सकता कि इबलीस अजराहे हमदर्दी या तरस खाकर बाज़ को खुद ही छोड़ दे न वरग़लाए न गुमराह करे, इसकी मुराद तो यही थी कि मैं सब को वरगलाऊंगा मगर कुछ गुमराह न हो सकेंगे तो यह उसको कैसे मालूम हुआ?

जवाब : इबलीस को तीन तरीके से मालूम हो गया था (१) जब फरिश्तों ने कहा ऐ अल्लाह तू इस मखलूक को बनायेगा जिनमें कुछ फसादी और खूंरेज़ होंगे इससे इबलीस ने अंदाज़ा लगा लिया था कि कुछ नेक भी रहेंगे। (२) इबलीस ने ज़मीन ज़मीन की मुख़्तलिफ तासीर वाली मिट्टी से अंदाज़ा लगाया था कि अच्छी बुरी बंजर सर ज़मीन मिटटी से पैदा होने वाले आदमी का मिज़ाज भी एक जैसा नहीं हो सकता (३) बाज़ ने कहा कि शैतान को ग़ैबी ताकत भी दी गयी थी जैसा कि देवबंदी हज़रात कहते हैं कि शैतान का इल्म कुरआन से साबित है मगर नबी का इल्म साबित नहीं। मअज़ल्लाह।

अल्लाह के नेक बंदों पर शैतान की कोई ताकत काम नहीं आती इसलिये कि सच्चे बंदे औलिया अल्लाह तमाम के तमाम रब तआला की हिफाज़त में महफूज़ होते हैं और दामने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़रिये उनकी हिफाज़त फरमाई जाती है बल्कि बहुत से बुज़ुर्गाने दीन तो इबलीस से भी बहुत ज़्यादा ताकत वाले हैं। ऐसे बहुत से वाकियात व रिवायात अहादीस व सीरत की किताबों में मौजूद हैं जिनसे साबित होता है कि अल्लाह के नेक बंदों ने इबलीस को कैद कर दिया। गिरफ्तार करके पकड़ के बांध दिया इसकी खूब पिटाई भी की और इबलीस में अपने आपको छुड़ाने की ताकत नहीं हुई न ही खोलने की। फिर उन बुज़ुर्गों ने खुद ही शैतान को खोला तो वह आज़ाद हुआ। अल्लाह ने शैतान को इख़्तेयार देने के बावजूद यह इख़्तेयार नहीं दिया कि वह किसी बंदे को जबरन हाथ पकड़कर उठाकर गुमराही में ले जाये। ऐसा तसल्लुत

इसका किसी बंदे पर नहीं हो सकता। ख्वाह बंदा नेक हो या बद, आलिम हो या जाहिल, इसके बावजूद भी वह खुले बंदों के सामने नहीं आ सकता सिर्फ बातिनी ज़ेहनियत में वसवसे डाल सकता है। अब यह बंदों की कम बख़्ती है कि वह इसके पीछे पीछे कहने पर चल पड़े, मगर इंसान शैतान के हाथों बेबस नहीं है इबलीस सिर्फ अपनी मख़्फी आवाज़ से ही बहका सकता है। जबरदस्ती किसी पर नहीं कर सकता। इसलिये जो भी मुसलमान उसकी फरमांबरदारी करते हुए शरई जुर्म और तर्के इबादत करेगा वह मुजरिम लायके सज़ा होगा।

सवाल : जब शैतान ने कहा मैं तेरे बंदों को गुमराह करूंगा तो अल्लाह तआला ने फरमाया मेरे बंदों पर तेरा काबू नहीं हालांकि हज़रत आदम को जन्नत से निकलवाया, बड़े बड़े औलिया अल्लाह को अपने मरतबे से गिरा देता है बताओ काबू किस तरह होता है? (मोतज़ला)

जवाब : इबलीस किसी पर ज़बरदस्ती नहीं कर सकता, न ही सामने आकर किसी को डरा धमका सकता है और न ही किसी का ईमान छीन सकता है, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को झूटी कसमें खाकर धोका दिया था वहां तो वरग़लाना भी साबित नहीं। नीज़ किसी वली अल्लाह को बहकाना यह तो शज़ व नादिर है लेकिन यहां अक्सरियत का ज़िक्र हो रहा है।

सवाल : किसी भी हालत में अल्लाह के सिवा किसी और को याद नही करना चाहिये। हर वक़्त सफर हिज़्र में अल्लाह ही को याद करना चाहिये। यह बरैलवी लोग जो या रसूलुल्लाह, या गौसे आज़म, कहते और पुकारते हैं यह सख़्त गुनाह और गुमराही है, इन्हीं लोगों के लिये नाज़िल हुई कि अल्लाह के सिवा किसी को मत पुकारो। (वहाबी, नजदी)

जवाब : यह बात सबसे बड़ी गलती और जहालत की है कि बुतों की मज़म्मत में नाज़िल होने वाली आयते करीमा अंबिया औलिया अल्लाह पर चसपा कर दिया हालांकि कुरआन में जहां जहां ग़ैर अल्लाह से मदद मांगना या उनको पुकारना शिर्क किया गया है इससे मुराद पत्थर की मूर्तियां और बुत हैं न कि औलिया अल्लाह। चूंकि कुफ्फार व मुश्रेकीन अपने बुतों को पूजते हैं और उनको सज्दा करते हैं उनके आगे हाथ जोड़कर फरियाद करते हैं। इन्हें अपना ख़ालिक व मालिक और हाजत रवा मुश्किल कुशा समझते हैं इनसे मदद तलब करते हैं।

यह आयतें इन्ही मुश्रेकीन के हक में नाजिल हुई मगर इनको औलिया अल्लाह पर चसपा कर दिया गया यह वहाबियों और देवबंदियों की पुरानी आदत है अगर यह आयतें बरैलवियों के लिये नाजिल हुई है तो फिर साबित होता है कि सहाबा किराम बरैलवी ही थे वरना बताया जाये कि कौन मुसलमान ऐसा था जो मसायबो आलाम में तो खुदा को याद करता और राहत व सकून की लमहात में खुदा को छोड़ देता। सहाबा किराम ने तो सफर और हजर में खिलवत में या रसूलुल्लाह की फरियादें किया करते थे। क्या तुम लोग सहाबए किराम से ज्यादा कुरआन समझते हो। अलहासिल यह कि काफिर व मुश्रिक बुतों को खुदा माबूद समझकर पुकारता है और मुसलमान औलिया अल्लाह को अल्लाह का मकबूकल बंदा समझकर पुकारता है इसलिये मोमिन मुसलमान का यह काम वसीला बन जाता है और वसीला जायज़ है। आज कोई हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को इब्ने अल्लाह कहकर पुकारे तो काफिर होगा लेकिन अल्लाह का बंदा और नबी समझकर पुकारे तो बिल्कुल जायज़ है।

सवाल : कुरआन में है कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अगर अल्लाह को साबित कदम न रखता तो आप कुफ्फार की तरफ मायल हो जाते। इससे साबित हुआ कि अंबियाए किराम गुनाह कर सकते हैं मगर करते नहीं? (बेदीन, गुमराह लोग)

जवाब : मोतरज़ की बात का मायने है कि अंबियाए किराम अपनी मर्जी से गुनाह कर सकते हैं और अपनी मर्जी से बच सकते हैं और बचे हैं हालांकि कुरआन कह रहा है कि अंबियाए किराम अपनी मर्जी से गुनाह कर सकते ही नहीं क्योंकि अल्लाह तआला ने इनको गुनाहों से बहुत दूर और साबित कदम कर दिया है। गुनाह की तरफ उनके कदम उठते ही नहीं क्योंकि अंबियाए किराम गुनाहों से मासूम होते हैं। और जो मासूम होते हैं वह गुनाह पर कादिर ही नहीं होते। अब जो शख़्स यह कहे कि अंबियाए किराम गुनाह कर सकते हैं मगर करते नहीं तो वह जाहिल गुमराह बद अक़ीदा गुस्ताख़ हैं।

सवाल : अगर तहज्जुद की नमाज़ हुज़ूर पर फर्ज़ होती तो उसकी रकअतें मुतय्यन होतीं जिस तरह कि दूसरी फर्ज़ नमाज़ों की रकअतें मुकर्रर हैं। लेकिन तहज्जुद की नमाज़ की रकअत में कोई तादाद मुकर्रर नहीं। कोई कहता है कि दो रकअत, कोई कहता है चार रकअत, कोई कहता है आठ रकअत, कोई बारह

रकअत कह रहा हैं साबित हुआ कि तहज्जुद की नमाज़ नबी के लिये उम्मती की तरह नफल ही है लिहाज़ा हुज़ूर के लिये भी यह नकल थी फर्ज़ नहीं।

जवाब : फुकहाए किराम का दो, चार, रकअत फरमाना उम्मत के लिये है आकाए दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये उसकी तादाद आठ रकअत मुतय्यन थी। इसलिये नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमेशा आठ रकअत ही नमाज़ तहज्जुद अदा फरमाई। बुजुर्गाने दीन फरमाते हैं कि हर फर्ज़ नमाज़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तअय्युने तादाद रकअत अता फरमाया गया था और हर फर्ज़ की रकअत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद मुकर्रर फरमायीं कम व बेशी का भी ता उम्र इख़्तेयार था। अब उम्मत कम व बेश नही कर सकती।

सवाल : हदीस पाक में हज़रत मुग़ीरा की रिवायत है कि मैंने देखा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पांव मुबारक रातों में लंबी कयाम करने की वजह से सूज गये थे। मैने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप इतनी मशक़्क़त क्यों फरमाते हैं? आप तो गुनाहों से पाक व मासूम हैं। फरमाया ऐ मुग़ीरा! क्या मैं अल्लाह का शुक्रगुज़ार बंदा न बनूं? इसी तरह की रिवायत उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से भी है। इस से साबित हुआ कि तहज्जुद की नमाज़ हुज़ूर पर फर्ज़ थी नफली थी जो शुक्रगुज़ार बंदा बनने के लिये अदा फरमाई जाती थी।

जवाब : इस हदीस पाक में ही इसका जवाब मौज़ूद है। हज़रत मुग़ीरा का सवाल दराज़ीए कयाम और मशक्क़त का है न कि असले नमाज़ का। असल नमाज़ जल्दी भी पढ़ी जा सकती है और देर तक भी। कोई शख़्स तो किसी रकआत में सूरः बकरह शुरू कर दे और चाहे तो सूरः कौसर पढ़कर मुख़्तसर कर ले और पांव पर वरम का आ जाना दराज़ीए कयाम से था न कि असले नमाज़ से और हमारा कहना है कि नमाज़ तहज्जुद फर्ज़ थी न कि मशक़्क़त और दराजीए कयाम। इसलिये यह साबित न हुआ कि तहज्जुद नफली थी बल्कि इससे यह साबित हुआ कि तहज्जुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये फर्ज़ थी।

सवाल : कुरआन मजीद सिर्फ मोमिनीन के लिये शिफा और रहमत है

जैसा कि सूर: असरा में है हालांकि बहुत से ग़ैर मुस्लिमों को तावीज़ व अमलियात दुआ दम दुरूद से शिफ़ा मिल जाती है तो फिर यह खुसूसी कैद क्यों लगाई गयी? (आम लोग)

जवाब : इस सवाल के दो जवाब हैं पहला यह कि शिफ़ा मुतलक आम है और रहमत में खुसूसी कैद है यानी यह कुरआन शिफ़ा तो सब के लिये है मगर रहमत सिर्फ़ मोमिनीन के लिये है इसलिये कि शिफ़ा का ताल्लुक दुनिया से है और रहमत का ताल्लुक आख़िरत से है। जवाब दूसरा यह कि दोनो का ताल्लुक मोमिनों से है मगर यहां मुराद रूहानी शिफ़ा है या मतलब यह है कि इसके पढ़ने सुनने से दिल पर कुदरती असर होता है जिससे सबको ऐसी शिफ़ा व रहमत होती है कि कुफ्र व शिर्क की बीमारियां दूर हो जाती हैं और कुफ्फार व मुशरेकीन मोमिन बन जाते हैं।

सवाल : कुरआन के होते हुए हम को किसी और किताब और हदीसों की ज़रूरत नहीं है कुरआन मजीद ख़ुद फरमाता है हमने इस कुरआन में हर किस्म की मिसालें ब्यान फरमा दी इसमें हर चीज़ का ब्यान मौजूद है। (मुन्किरीने हदीस)

जवाब : यहां कुफ्फार के लिये मिसालों के तज़किरये का ज़िक्र है और मिसालें इबरत के लिये होती हैं। कुफ्र छुड़ाने के लिये होती हैं मगर मुसलमान हो जाने के बाद अहकाम और कवानीन और उस पर अमल की ज़रूरत होती है। अगर तुम लोग वाकई कुफ्र पर इसरार कर रहे हो तब तो हम को अहादीस मुबारका की ज़रूरत ही नहीं है और न ही मुसलमानों को तुम्हारी ज़रूरत लेकिन मुसलमानों को इस्लाम पर अमल करने के लिये हर दम ज़माने में अहादीस पर अमल की अशद ज़रूरत है बग़ैर अहादीस के कुरआन के एक भी आयत पर अमल मुमकिन नहीं है।

सवाल : कुफ्फार व मुशरेकीन ने जब मोजिज़ात का मुतालबा किया तो नबी करीम ने उनके मुतालबे को क्यों पूरा नहीं किया या तो आप आजिज़ और मजबूर थे और या आप तंग दिल और कंजूस थे कि एक चीज़ होते हुए भी न दी जाये यह अच्छी आदत नहीं? (आर्य)

जवाब : इस सवाल के दो जवाब हैं पहला यह कि मोजिज़ा सिर्फ नुबूवत

व सदाकत के लिये होता है नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नुबूवत का दावा फ़रमाया और कुरआन मजीद जैसे अज़ीम व अबदी मोजिज़े ने आपकी नुबूवत व रिसालत को बहुत शानदार तरीक़ों से साबित कर दिया। अब मुतालबों की ज़रूरत न थी। फिर भी मुतालबे करने दुरुस्त नहीं बल्कि मज़ाक़ बाज़ी थी। दूसरा जवाब यह कि ना अहलों नालायक़ों को इन सब मुतालबों को पूरा करना बुरा है। वालिदैन अपने नालायक़ बेटों को नहीं देते उनके मुतालबे को पूरा नहीं करते तो उस न देने से इज्ज या कंजूसी साबित नही होती वरना अल्लाह तआला पर एतेराज़ वारिद होगा। नीज़ अंबियाए किराम के मक़ामे मोजिज़ात इजाज़ते बारी तआला के पाबंद होते हैं।

सवाल : कुरआन सूर: असरा में फ़रमाया गया कि कुफ़्फ़ार महशर में अंधे, बहरे, गूंगे, होंगे हालांकि दूसरी आयत में है कि कुफ़्फ़ार अपना नामए आमाल पढ़ेंगे और मैदाने महशर में और जहन्नम में फ़रियाद करेंगे रोयेंगे, चिल्लायेंगे और चीख़ेंगे और पुकारेंगे। अपने लीडरों और मज़हबी रहनुमाओं को बुरा भला कहेंगे और उनके बेरुख़ी व अलहेदगी की बातें सुनेंगे। इन आयात में मताबक़त क्यों कर हो? (आर्य)

जवाब : मुफ़स्सेरीन किराम ने उसके मुख़्तलिफ़ जवाब दिये। एक यह कि कुछ कुफ़्फ़ार अंधे बहरे होंगे कुछ ठीक होंगे। दोम यह कि पहले पहले अंधे बहरे होंगे फिर ठीक कर दिये जायेंगे। सोम यह कि अंधे इस तरह होंगे कि नेक लोगों को न देख सकेंगे न फ़रिश्तों को। जिस तरह आज हम फ़रिश्तों जिन्नातों को नहीं देख सकते। बहरे इस तरह कि ख़ुश ख़बरी न सुनेंगे। गूंगे इस तरह कि जुबान पर मुहर होगी हाथ पैर और बदन के सारे आज़ा ख़िलाफ़ गवाही देंगे। चहारम यह कि दिल के अंधे बहरे होंगे जैसे कि दुनिया में हैं मगर पहला जवाब दुरुस्त है कि वह हकीकतन अंधे बहरे होंगे और दुनिया की क़ल्बी कैफ़ियत उनके आज़ाए बदन पर हकीकतन ज़ाहिर होंगे इसिलये औंधे मुंह भी होंगे कि दुनिया में उनके दिल दुनिया की तरफ़ झुके थे क़यामत में यह कैफ़ियत सारे आज़ा पर तारी होगी।

सवाल : अहले सुन्नत कहते हैं कि हर ख़ैर व शर का ख़ालिक़ अल्लाह है इस अक़ीदे और नज़रिये से जुल्म और फ़िस्क़ का ख़ालिक भी अल्लाह हुआ और कुरआन में है कि उसके नामों से उसको पुकारो तो क्या यह ज़ालिम या

फासिक भी उसको कह सकते हैं? (मोलज़ला)

जवाब : अल्लाह तआला खालिक खालिके फिस्क है न कि फायल यानी करने वाला। जुल्म व फिस्क क्या तुम्हारी सबकी अक़्लों ने ग़ाफिल और ख़ालिक का फर्क न जाना। फायले जुल्म व फिस्क तो बंदा है। हां अलबत्ता अल्लाह को ख़ालिके जुल्म या ख़ालिके कुफ्र कहा जा सकता है, मगर सख़्त गुस्ताख़ी और अदब व एहतेराम के खिलाफ है। देखो अल्लाह तआला को ख़ालिक शैतान ख़ालिक गधा या ख़ालिक खिंजीर कहना कुफ्र व हराम है। हालांकि बात सच्ची है इसलिये फुकहा तो यहां तक फरमाते हैं कि रब तआला को इस नाम से भी न पुकारो जो आम इंसानों के लिये पुकारते हैं अगरचे वह लोगों के अच्छे और अदब वाले हों जैसे अल्लाह मियां। अल्लाह बादशाह, अल्लाह साहब, हज़रत साहब या जमअ ग़ायब या जमा हाज़िर का सीग़ा अल्लाह तआला के लिये न बोलो यह बे अदबी है और वहाबियाना तरीक़े है कि वहाबिया बोलते हैं अल्लाह तआला फरमाते है। यह सब दुरुस्त नहीं है।

सवाल : मुफस्सेरीन किराम फरमाते हैं कि लोगों के मुकर्रर करदा अल्फाज़ से अल्लाह का नाम नहीं रखना चाहिये, न ही ऐसे नाम से अल्लाह तआला को पुकारना चाहिये बल्कि कुरआन व अहादीस के नाम ही अल्लाह के नाम हैं और वह है सिर्फ और सिर्फ अल्लाह अल्लाह लिहाज़ा अंग्रेज़ों ने जिस तरह गॉड, हिंदुओं ने भगवान, ईश्वर, परमेश्वर नाम रख लिया। फारसियों ने ख़ुदा और ख़ुदावंद और परवर्दिगार नाम रख लिया तो अगर ईश्वर, परमेश्वर, गॉड, भगवान कहना दुरुस्त नहीं तो फिर परवर्दिगार और ख़ुदा भी कहना दुरुस्त नहीं होना चाहिये क्योंकि यह भी लोगों के रखे हुए नाम हैं? (ग़ैर मुस्लिम)

जवाब : ख़ुदा यह अरबी का लफ्ज़ नहीं बल्कि अजमी लफ्ज़ हैं ख़ुदा दर असल ख़ुद आ था क्योंकि ख़ुदा अपने वजूद में किसी का मोहताज नहीं वह ख़ुद से आया। इसलिये उसे ख़ुदा कहा गया। लफ्ज़ ख़ुदा और परवर्दिगार यह कोई अलहेदा नाम नहीं बल्कि दो नामों का तर्जमा है ख़ुदा या ख़ुदावंद और परवर्दिगार यह मालिक और रब का तर्जमा हैं लफ्ज़ परवर्दिगार यह ऐसा ही है जैसे हम उर्दू में कह दें अल्लाह पालने वाला है या ऐ पालने वाले जिस तरह किसी भी नाम का तर्जमा करके दुआ मांगनी और उसको पुकारना जायज़ इसी तरह अल्लाह को ख़ुदाए तआला और परवर्दिगार कहना जायज़ है बाख़िलाफ गॉड, भगवान,

ईश्वर, परमेश्वर के न तो यह लफ्ज़ किसी नाम का तर्जमा हैं और न ही इनका अपना कोई मायने व मक़सद है। यह सब ग़ैर मुस्लिमों के ईजाद करदा खुद साख़्ता नाम हैं लिहाज़ा इन नामों से अल्लाह को नहीं पुकारना चाहिये। यह जो बाज़ जाहिल फैशन ज़दा मुसलमान अक्सर ओ माई गॉड कहते रहते हैं यह शरअन मकरूह व हराम है। जो तमाम जहान का ख़ालिक़ है वह प्रभु परमेश्वर भगवान नहीं उसका असल ज़ाती नाम अल्लाह है इसी नाम से सबको उसे पुकारना चाहिये।

सवाल : सूर: कहफ में फरमाया गया जिसको अल्लाह तआला गुमराह करे तुम उसके लिये कोई (रुश्द व हिदायत देने वाला) नहीं पाओगे तो लाज़िम आया कि जिस को अल्लाह तआला हिदायत दे उसके लिये मुरशिद हैं हालांकि जब रब तआला ने हिदायत अता फरमा दी तो अब मुरशिद की क्या ज़रूरत है?

जवाब : बा शरअ पीर व मुरशिद मिसल चिराग़ है अगर किसी चीज़ की तलाश हो और चिराग़ के ज़रिये या किसी के ज़रिये से अंधेरे में मिल जाये तो फिर उसको देखने के लिये चिराग़ की हर वक़्त ज़रूरत है। हिदायत वह रास्ता है जिसका पता लगना बंदों को ज़रूरी है। अल्लाह तआला ने वह रास्ता अपने प्यारे बंदो को दे दिया दिखा दिया अब उस पर ठीक दुरुस्त तरीक़े से साबित कदम चलना बंदे का काम है और चलाना और चलने का तरीका बताया समझाना पीर व मुरशिद का काम है। लिहाज़ा हिदायत पाने वाले बंदों को ही पीर व मुरशिद की ज़रूरत है। जिसके पास दौलत होती है उसी को मुहाफिज़ की शिद्दत से ज़रूरत होती है। अफसोस आज कल जुहला पीरों ने इसको हुसूले दुनिया का ज़रिया बना लिया है। खुद मोहताज हिदायत हैं और ख़ल्क के हादी बने बैठे हैं। खुदा परस्ती की तरफ बुलाने के बजाए खुद परस्ती में मुबतला हैं। ज़िन्दगी में तकवा परहेज़गारी की कोई झलक नहीं यही वजह है कि लोग दरे व दौलत पर खाली हाथ आते हैं और खाली हाथ वापस चले आते हैं। मुरीदों की ज़िन्दगी में भी कोई फर्क नज़र नहीं आता और आये भी कहां से जब सकावे में पानी न हो तो नल में कहां से आयेगा?

सवाल : अहादीस में है कि मुसलमान मर्दो को सोने का ज़ंजीर, अंगूठी, या ज़ेवर पहनना हराम है एक अंगूठी भी सोने की नहीं पहन सकते। मगर

कुरआन में है कि जन्नत में सोने के कंगन पहनाये जायेगें यह हराम काम जन्नत में क्यूं किया जायेगा? (आर्य और गुमराह लोग)

जवाब : मुफस्सेरीन किराम ने इस सवाल के चार जवाब दिये हैं। एक यह कि हलाल और हराम होना शरीयते पाक का मसला है और शरीयत के अहकाम सिर्फ दुनियावी ज़िन्दगी के लिये हैं बहुत सी वह ज़ीनतें जो मुसलमान मर्दों के लिये दुनिया में हराम हैं वह जन्नत में जायज़ होगी। दूसरे यह कि दुनिया में भी मुसलमानों को ख़ुद अपनी मर्ज़ी और पसंद से ज़ेवर पहनना हराम है लेकिन अगर अल्लाह तआला या हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुद किसी मुसलमान को ज़ेवर पहनायें तो उस मुसलमान के लिये वह ज़ेवर दुनिया में भी हलाल और जायज़ है इसलिये कि अल्लाह तआला मालिके शरीयत है और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुख़्तारे शरीयत हैं। देखो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सुराका को किसरा के सोने के कंगन पेशगी पहना दिये। तो गोया वह कंगन उनके लिये दुनिया में जायज़ हो गये इसी तरह जन्नत में कंगन सोने चांदी के मोमिन ख़ुद न पहनेगा बल्कि अल्लाह तआला की तरफ़ से पहनाया जायेगा। हज़रत सुराका अपने कंगन पहने हुए दफ़न किये गये। मैदाने महशर में वह यही कंगन पहने होंगे जैसा कि रिवायतों में आता है तीसरा जवाब यह है कि जन्नत में कंगन इसलिये पहनाये जायेंगे कि अहले ईमान जन्नती बादशाह हैं तो जिस तरह दुनिया में काफ़िर बादशाह सोने के कंगन पहना करते हैं और इसमें अपनी शान समझते हैं इसी तरह अहले जन्नत को शाहाना इज्ज़त देने के लिये अल्लाह तआला के हुक्म से फ़रिश्ते सोने के कंगन पहनायेंगे। चौथा जवाब यह है कि मुसलमान मर्दों पर दुनिया का सोना हराम है न कि आख़िरत का। जैसे कि आख़िरत का जन्नती रेशमी लिबास और जन्नत की चौथी नहर का शराब हलाल हैं जन्नत में चार नहरें होंगी। (१) दूध की (२) शहद की (३) शराब की (४) पानी की हालांकि दुनिया में रेशमी लिबास और शराब हराम है।

सवाल : इसकी क्या वजह है कि ज़ेवर और कंगन पहनाया जाये और लिबास खुद पहनेंगे दोनों ख़ुदा ने क्यों नहीं पहनाया या एक जैसे फ़ेअल क्यों नहीं आये? (आर्य)

जवाब : इस सवाल के दो जवाब हैं। इमाम फख़रुद्दीन राज़ी ने तफसीर कबीर में यह जवाब फरमाया कि यह ज़ेवर, यह कंगन किसी इबादत व अमल

के जजा न होंगे बल्कि सिर्फ अल्लाह तआला की नेमत करम व फज्ल होगी कि वह अपने आमाल जज़ा में यह ख़ूब सूरत लिबास पहनेंगें। दोम यह कि लिबास कपड़े हैं जिसमें जरूरत व ज़ीनत दोनों हैं। ज़रूरत तो बदन ढाकना है लेनिक ज़ीनत उसकी ख़ूब सूरती है। ज़रूरत में पर्दे की ज़रूरत है इसलिये फ़रमाया गया कि लिबास वह ख़ुद पहना करेंगे ताकि पर्दा कायम रहे। लेकिन ज़ेवर सिर्फ ज़ीनत है जैसे कि दुल्हा दुल्हन को ज़ेवर फूल हार सेहरा दूसरे लोग, दोस्त व अहबाब औरतें सहेलियां पहनाती हैं लेकिन कपड़े जोड़े दुल्हा दुल्हन खुद ही पर्दे में जाकर पहनते हैं। नीज़ कपड़े दूसरे लोग पहनायें तो यह ऐब और शर्म की बात है और फूल हार खुद पहने तो यह भी बड़े शर्म की बात हैं इज़्ज़त यही है कि दूसरे लोग फूल हार पहनायें। इस तरह अगर कोई जीत जाये या किसी काम में कामयाब हो जाये तो जीतने वाले को किसी बड़े आदमी के हाथ से इनाम व इकराम दिया जाता हैं फूलों का हार पहनाया जाता है सिर्फ़ और सिर्फ इज्ज़त अफ़ज़ाई के लिये हालांकि वह ख़ुद भी फूल हार पहन सकता हैं यही इज़्ज़त अफ़ज़ाई मोमिन की जन्नत में होगी।

सवाल : दुनिया बुरी है और दुनिया की ज़िन्दगी भी बुरी है हालांकि अहादीसे मुबारका से साबित है कि दुनिया की ज़िन्दगी अल्लाह की नेमत है, यह तक़ाबुल क्यों? (दुनिया परस्त लोग)

जवाब : दुनिया की हर वह चीज़ जो अल्लाह से ग़ाफ़िल कर दे वह बुरी हैं दुनियावी जिन्दगी जब तक कि सिर्फ दुनिया के लिये है वह बुरी है लेकिन जब उस जिन्दगी में दीन शामिल कर लिया जाये बल्कि पूरी जिन्दगी को दीन बनाया जाये तो वह बाक़यात सालेहात (बाकी रहने वाले नेक आमाल) है और अल्लाह तआला की नेमत है इसी का ज़िक्र अहादीस में है। मौत के बाद आंखें बंद होते ही दुनिया के किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं रहती और न ही दुनिया की चीज़ें बाक़ी रहने वाली हैं जबकि हर चीज़ अपने अपने वक़्त पर फना और ख़त्म होने वाली है और सदा बाक़ी रहने वाली चीज़ें सिर्फ नेक आमाल हैं। मोमिन को चाहिये कि अपनी दुनिया को पूरे दीन बना ले मोमिन का मक़सदे ज़िन्दगी दुनिया न हो बल्कि दीन हो। देखो किसान खेत में बहुत मेहनत व मशक्कत और ख़र्च करके खेती करता है फसल बोता है तो इसका मक़सद भूसा घास फूस नहीं होता जब फसल पककर तैयार हो जाती है तो किसान की ज़्यादा चाहत व मुहब्बत

दानों से होती है क्योंकि इसी में हकीकी नफा है और वही मकसद भी है। बाकी चीज़ों को तुम फेंक देते हो। हर शख़्स को नफा वाली चीज़ प्यारी लगती है तो समझ लो कि अल्लाह तआला और उसके प्यारे रसूल को भी नफा वाला बंदा प्यारा है। किरदार व आमाल बंदे के फल फूल हैं। क़यामत में अच्छे फल ही बाक़याते सालेहात हैं जिस तरह हम दानों को महफूज़ कर लेते हैं और पत्तों को भूसों को जला देते हैं इसी तरह अल्लाह तआला ने भी बुरे लोगों के लिये एक चुल्हा आख़िरत में तैयार कर रखा हैं इसी का नाम दौज़ख़ है। अगर इंसान के अक़ायद व आमाल अच्छे नहीं होंगे तो वह इस चुल्हे का ईंधन बनाया जायेगा।

अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नम भी
यह ख़ाकी अपनी फितरत में न नूरी है न नारी है

सवाल : कोई कहता है कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम फकत नबी हैं। कोई कहता है कि रसूल भी हैं कोई कहता है न नबी हैं न रसूल। कोई कहता है कि सिर्फ आलिम हैं। कोई कहता है कि फरिश्ता हैं। कोई सिर्फ़ वली कहता है यह सारे अक़वाल दीनी किताबों और तफसीरों में मिलते हैं। यह क्या मुसीबत है कि एक शख़्स है और इतने इख़्तेलाफात। अब कोई क्या फैसला कर सकता है कि क्या सही है क्या गलत और फिर हर शख़्स दावेदार है कि मेरा कौल दुरुस्त है लिहाज़ा सही क्या है वह तफसील के साथ बताईये? (अवाम)

जवाब : मोतरज़ अपनी शिकायत में हक़ बजानिब है वाक़ई तफ़ासीर की किताबों में बहुत इख़्तेलाफी अक़वाल मौजूद हैं जिसकी असलियत व हकीक़त ऐसे ऐसे जाहिल और इबलीस सिफत अहले क़लम पेदा हो गये हैं जिनका मक़सद ही उम्मत में नज़रियाती अक़ायद का तिफरक़ा डालना है और जिनकी क़लम की ख़बाशतों ने इस्लाम के हर मसले में अक़वाल व इख़्तेलाफ का कसीर उलझाव पैदा कर दिया है। उनकी जहालतों ने न कुरआन को छोड़ा और न अहादीस को। न तफसीर को छोड़ा न तारीख़ को हर छोटे बड़े मसायल में जाहिलाना इख़्तेलाफात की इतनी भरमार है कि ख़ुदा की पनाह। यह तो रब का बहुत बड़ा करम है कि उसने कुरआन की हिफाज़त का ख़ुद ज़िम्मा लिया है वरना हमारे यह क़लमकार अल्लाह के उस कलाम को भी माफ न करते। किस किस मसले में आप शिकायत करेंगे। बाज़ मसायल में तो उलटी सीधी अक़्ली इस्तिदलाली दलीलें भी दी है तो वह भीं इतनी भोंडी और बेहूदा कि असल मसले

का हुलिया बिगाड़ दिया। यही कुछ इन जुहलाए बातेलीन ने वाकियाते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम में किया है। हमने हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के बारे में अकाबिरे अहले सुन्नत का मज़बूत अकीदा व नज़रिया व मसलक सूर: कहफ़ आयत नं0 साठ के तहत ब्यान कर दिया है कि तमाम उलमा फुकहा और सूफ़िया का अलग अलग मज़हब है कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम अल्लाह के नबी हैं और रसूल हैं। हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम के ज़माने में आपकी विलादत हुई। हज़रत इलयास अलैहिस्सलाम आपके सगे भाई हैं। यह दोनों बनी इसराईल नहीं बल्कि फ़ारसी नस्ल हैं। जिन्होंने हज़रत ख़िज़्र और हज़रत इलयास अलैहिमुस्सलाम को इसराईली कहा है वह ग़लत है। हज़रत इलयास हज़रत ख़िज़्र से उम्र में पांच साल छोटे हैं। आपकी वालिदा अपने ज़माने की वलीया कामिला थीं। शाही महल छोड़कर पहाड़ों, ग़ारों में जिन्दगी बसर की। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम बस यही दो बेटे कुल औलाद हुई और दोनों नबी और रसूल हैं। कुर्बे क़यामत तक आप दोनों को अल्लाह तआला ने लंबी उम्र अता फ़रमाई। कुछ मुख़ालेफ़ीन कहते हैं कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम नबी या रसूल नहीं थे बल्कि आप वली अल्लाह थे। या यह कहते हैं कि फ़कत एक आलिम थे। कुछ लोग कहते है। कि नबी थे मगर रसूल नहीं। उन लोगों के पास अपने इस बातिल नज़रिये की सबूत के लिये कोई भी किसी किस्म की दलील नहीं सिर्फ मुख़ालेफ़ाना अक़्ल दराज़ियां हैं। हालांकि यह अक़ीदे का मसला है इसकी नज़रिया बंदी में बहुत गौर व फ़िक्र समझबूझ की ज़रूरत है। बहम्देहि तआला हमारे पास हज़रत ख़िज़्र की नुबूवत व रिसालत के सबूत हैं। कुरआन मजीद से मुंदरजा ज़ैल बातें दलायल हैं।

पहली दलील : यहां इरशादे बारी तआला है हमने अपने पास से ख़िज़्र को रहमत दी। तमाम मुफ़स्सेरीन किराम फ़रमाते हैं कि यहां रहमत से मुराद नुबूवत है इसलिये कि कुरआन मजीद में अक्सर मकामात से रहमत से मुराद नुबूवत ही ली गयी है जैसे कि सूर: ज़ख़रफ़ आयत ३२ में इरशादे बारी तआला है जब कुफ़्फ़ार ने कहा कि कुरआन किसी बड़े सरदार पर उतरना चाहिये था इस दुर्रे यतीम पर क्यों उतरा, तो जवाबन अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि क्या यह कुफ़्फ़ार आपके रब की नुबूवतों को बांटते हैं जो ऐसी शर्तें लगाते हैं और मसलन जैसे कि सूर: क़सस आयत ८६ में इरशाद है और आपको यह

उम्मीद नहीं थी कि आपकी तरफ़ यह किताब नाज़िल की जायेगी मगर नुबूवत मिलने की आपको उम्मीद थी? देखो इन तमाम आयात व मक़ाम में रहमत से मुराद नुबूवत है।

दूसरी दलील : हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया क्या मैं तुम्हारी इत्तेबा करूं और साथ रहूं ताकि मुझ को यह इल्म सिखा दो। इससे साबित हुआ कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम नबी हैं क्योंकि नबी ही की इत्तेबा कर सकता है इसलिये अंबियाए किराम के पास वहीए इलाही होती है।

तीसरी दलील : हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, किस तरह सब्र कर सको तुम इस शरीयत और क़ानून की बातों पर जिसकी हक़ीक़त का तुमको पता नहीं। इसके जवाब में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, मैं तुम्हारे किसी काम या किसी बात की नाफ़रमानी या मुखालेफ़त न करूंगा। मूसा अलैहिस्सलाम का यह वादा सिर्फ़ इसलिये था कि यह जो कुछ मुझको सिखायेंगे वह यक़ीनन वही इलाही होगी क्योंकि यह नबी हैं। कभी किसी ग़ैर नबी से पेशगी इस तरह का वादा करना जायज़ नहीं। मूसा अलैहिस्सलाम का यह वादा दर असल हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम की नुबूवत का इज़हार है।

चौथी दलील : हज़रत अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह जो कुछ मैंने किया अपनी मर्ज़ी और अपने क़लबी इरादे से नहीं किया बल्कि अल्लाह तआला के हुक्म और वही से ऐसा किया और वही सिर्फ़ अंबियाए किराम ही पर नाज़िल होती है। अगर आप वली होते तो आप पर अलहामात आते मगर अलहामात ज़नी होते हैं। इन पर यक़ीन नहीं किया जा सकता। ख़ुद साहबे अलहाम वली अल्लाह को भी अपने अलहाम पर यक़ीन नहीं होता। इसलिये वह अपने अलहामात पहले क़ुरआन व अहादीस और शरीयत के मुताबिक़ बनाते ग़ौर करते हैं। अगर शरीयत के मुताबिक़ हो तभी इस पर अमल करते हैं वरना रदद कर देते हैं जो बग़ैर सोचे समझे अपने अलहाम पर अमल करे वह गुमराह होकर मर्तबा विलायत से डगर जाता है। देखो सरकार ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नूर देखा और अलहाम सुना मगर शरीयत के ख़िलाफ़ समझकर लाहोल पढ़ा और रद्द कर दिया। इबलीस हाज़िर होकर बोला ऐ अब्दुल क़ादिर तुम बच गये वरना इसी जगह सत्तर औलिया अल्लाह इसी अलहाम से मरदूद व गुमराह होकर विलायत से गिर गये। शैतान इबलीस अंबियाए किराम के पास ऐसा कोई अलहाम लेकर

जा नहीं सकता। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम का इतने बड़े बड़े काम करना, कश्ती के तख़्ते उखेड़ना, बच्चा क़त्ल कर देना वही के बग़ैर नहीं हो सकते। आज कोई वली, ग़ौस कुतुब ऐसा नही कर सकता, न कोई साबिक़ा औलिया अल्लाह में इसकी मिसाल है। अंबियाए किराम अलैहिस्सलाम तो ख़्वाब देखकर भी बच्चे के गले पर छुरी चला सकते हैं। साबित हुआ कि ख़िज़्र अलैहिस्सलाम नबी हैं। यह काम ही बता रहे हैं कि आप को नुबूवत दी गयी है जो आपकी नुबूवत का इंकार करे उसके कुफ़्र का अंदेशा है।

पांचवी दलील : ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने मूसा अलैहिस्सलाम को पहचान कर कि तुम बनी इसराईल के पैग़म्बर मूसा हो तुम को तौरेत मिली, कलीमुल्लाह होने का शर्फ हासिल हुआ जो इल्म तुम्हारे पास है वह मुझको नहीं आता वग़ैरह वग़ैरह। तब मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ ख़िज़्र तुम ने मुझको कैसे पहचान लिया? हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जिस अल्लाह ने तुमको मेरे मुताल्लिक़ बताया उसी ने मुझे तुम्हारे मुताल्लिक़ बताया। यानी तुमको अल्लाह ने वही से बताया तो मुझको को भी उसने वही सब बताया। इस तर्ज़े तकल्लुम से अपनी वही का इज़हार है कि ऐ मूसा तुम को भी रब की तरफ से वही आती है और मुझको भी। और तुम नबी हो तो मैं भी नबी हूं। इस मवाज़ने से नुबूवत का सबूत मिलता है। इन मज़बूत दलायल कुरआनिया से हज़रते ख़िज़्र की नुबूवत साबित होती है लेकिन कुरआन मजीद की इन्हीं आयात से आपकी रिसालत भी साबित हो रही है।

छटी दलील : चुनांचे अल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, खुद हमने ख़िज़्र को इल्मे लदुन्नी यानी कुर्ब खास की तालीम दी। इल्मे लुदनी उलूमे ग़ैबिया को कहते हैं। हज़रत इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैहि ने इल्मे लदुन्नी के बारे में एक मुस्तक़िल किताब लिखी है जिसका नाम है इसबाते इल्मे लदुन्निया। और अल्लाह तआला अपने उलूमे ग़ैबिया सिर्फ अपने रसूलों को अता फ़रमाता है। चुनांचे दूसरी आयत में इरशाद है अल्लाह हर ग़ैब को जानने वाला है पस नहीं ज़ाहिर फ़रमाता है अपने ग़ैब पर किसी को, मगर उसी को जिसने चुन लिया रसूल बनाकर। (सूरह जिन्न आयत २६) और इस ऊपर वाली आयत में लदुन्नी की निसबते इलाहिया से साबित हो रहा है कि बिला वास्ता इल्म सिखाया गया है और बिला वास्ता रब तआला से इल्म हासिल करना अंबियाए किराम और

रसूलाने उज़्ज़ाम का खासा हैं औलिया अल्लाह को जो इल्मे लदुन्नी हासिल होता है वह आस्ताना नुबूवत से हासिल होता है। हर वली अपने नबी अलैहिस्सलाम के दरवाज़े से इल्मे लदुन्नी पाता है ख़्वाह शिकमे मादर में हो या बअदे विलादत। इन दलायल कतअया से साबित हो गया कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम नबी हैं। अब रहा यह सवाल कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम हज़रत मूसा से अफज़ल हैं या बराबर हैं। या हज़रत हज़रत मूसा अफज़ल हैं, तो इसमें सही और बा दलायल अकीदा यही है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम चूंकि साहबे किताब रसूल हैं इसलिये वह हज़रत्त ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से अफज़ल हैं। लेकिन इल्म में तो वह दोनों का इल्म अलहेदा अलहेदा है। खुद ख़िज़्र ने बवक़्ते मुलाकात फरमाया था कि ऐ मूसा जो रब्बे करीम ने तुम को इल्म दिया है उसको मैं नहीं जानता और जो मुझको इल्म दिया है उसको तुम नही जानते। इस गुफ्तगू से साबित हो रहा है कि इल्मियत में दोनों बुज़ुर्ग बराबर हैं। मगर इल्म की किस्म अलहेदा अलहेदा है। एक के पास सिर्फ शरीयत का ज़ाहिरी इल्म है और दूसरे बुज़ुर्ग के पास तरीकत का बातिनी इल्म है। हज़रत ख़िज़्र नबी हैं मगर साहबे किताब नहीं इसलिये मकामे अफज़लियत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़्यादा है। यह दलायल हम को तफसीर कबीर, तफसीर रूहुल ब्यान, वग़ैरह से हासिल हुए। मैंने बहुत सी किताबें देखीं मगर मुन्केरीने नुबूवत ख़िज़्र की एक भी दलील न मिली। बजुज़ इसके हम इनको नबी नहीं मानते। या यह कि नुबूवत वाली दलीलें ज़ईफ और कमज़ोर हैं मगर वजह कमज़ोरी भी ब्यान न कर सके। यह तो उनसे गुफ्तगू थी जो हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम की नुबूवत के मुन्किर हैं। लेकिन बाज़ लोग हज़रते ख़िज़्र की लंबी उम्र के भी मुन्किर हैं। इसलिये ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के दराज़ीए उम्र के दलायल भी सवाल के जवाब में आपको मिलेगा।

सवाल : अगर हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम की ता कयामत लंबी उम्र है तो नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़्यारत क्यों न की। सहाबी होकर उम्मते मुस्तफा में शामिल क्यों न हुए। आपके पीछे नमाज़ें और जुमा क्यों न पढ़ीं, जिहादों में शरीक क्यों न हुए?

जवाब : यह एक बेहूदा सवाल है। बहरकैफ! हम अपने दलायल पेश करते हैं तफसीर रूहुल ब्यान पारा १५ सफा ३२२ पर है। मुस्तदरक हाकिम ने हज़रत जाबिर से रिवायत किया कि जब आकाए दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

का विसाले पाक हुआ और तमाम सहाबा किराम एक जगह जमा हुए तो एक शख़्स निहायत चमकदार फैली हुई दाढ़ी शरीफ वाले, प्यारे जिस्म और खूब सूरत शबाहत वाले तश्रीफ लाये। सारे सहाबा की गर्दनें इन्हें देखकर झुक गयीं। वह साहब खूब रोए और सहाबा से कुछ ग़मगीन लहजे में गुफ़्तगू फ़रमाई। फिर तश्रीफ ले गये। हज़रत अबू बकर और अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने फ़रमाया कि यह हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम थे।

इस रिवायत से यह साबित हुआ कि आपकी उम्र इतनी लंबी थी कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वक़्त से लेकर अब तक ज़िन्दा थे जो तक़रीबन तीन हज़ार साल बनता है और यह भी साबित हुआ कि आप नबी हैं वरना सहाबा किराम की गर्दनें उनके एहतेराम में क्यों झुकतीं। सहाबा किराम तो दुनिया के तमाम वलियों, ग़ौसों और कुतबों से अफ़ज़ल हैं।

दूसरी दलील यह कि अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी की किताब पर इब्ने अदी कामिल जरजानी से रिवायत है कि एक दफा आकाए कायनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी मस्जिद में तश्रीफ फरमा थे कि एक कोने से किसी दुआ मांगने वाले की आवाज़ सुनी तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अपनी दुआ में दूसरों को भी शामिल कर लो। इन साहब ने दुआ को हुक्म के मुताबिक़ इस तरह शुरू फ़रमा दिया। फिर नबी करीम ने हज़रत अनस बिन मालिक से फरमाया, कि ऐ अनस इन साहब के पास जाकर कहो कि तुम से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि मेरी उम्मत के लिये भी इस्तिग़फ़ार मांगो। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जाकर कहा, तो उन साहब ने कहा कि तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ासिद हो। कहा हां मैं नबी पाक का क़ासिद हूं। उन साहब ने फ़रमाया तुम ख़िदमते अक़दस में वापस जाकर सलाम अर्ज़ करो कि वह साहब अर्ज़ करते हैं कि अल्लाह ने आपको तमाम अंबिया पर फ़ज़ीलत बख़्शी है जिस तरह माहे रमज़ान को तमाम महीनों पर और आपकी उम्मत को तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत बख़्शी है जिस तरह जुमा के दिन को तमाम दिनों पर। हज़रत अनस फ़रमाते हैं कि अचानक पता लगा कि वह हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम थे। इस दलील से साबित हुआ कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम बारगाहे अक़दस में हाज़िरी देते और आप की फ़ज़ायल व अज़्मत ब्यान फ़रमाते रहते थे। नबी करीम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम का हज़रत अनस को भेजना और ख़ुद न जाना उनको अपने क़रीब बुलाना सिर्फ हज़रत अनस को बताना था वरना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुद जानते थे कि यह ख़िज़्र अलैहिस्सलाम हैं।

तीसरी दलील यह है कि हज़रत ख़िज़्र ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया कि मैं ज़्यादा हक़दार हूं कि नबी पाक के ख़िदमत में हाज़िरी दूं मगर तुम मेरा सलाम नबी पाक से अर्ज़ करना। उस वक़्त भी ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर अक़दस की नअत ख़्वानी फरमाई और दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! मुझको भी इस हिदायत वाली उम्मत मरहूमा में शामिल फरमा।

चौथी दलील यह कि हज़रत वासला बिन असक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हम ग़ज़वा तबूक के मौक़े पर आक़ाए दो जहां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। यहां तक कि हम इलाक़ा जजाम में पहुंचे और हमको सख़्त प्यास लगी। हम वहां एक तालाब के पास पहुंचे जब एक तिहाई रात हुई तो हम ने कुछ दूर से किसी साहब की आवाज़ सुनी जो दुआ मांग रहे थे कि मौला मुझको उम्मत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म से बना दे जो मग़फ़ूर मुस्तजाब और मुबारक है। यह आवाज़ सुनकर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ऐ हुज़ैफ़ा और ऐ अनस तुम दोनों उस घाटी में जाओ और देखो यह किसकी आवाज़ है। जब हम दोनों वहां गये तो देखा कि एक बुज़ुर्ग निहायत ऊंचे लंबे सफेद लिबास ही जिसम व चेहरा हम ने उनको सलाम अर्ज़ किया तो उन्होंने मरहबा कहकर पूछा क्या तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ासिद हो? हमने कहा हां मगर आप कौन हैं? फरमाया मैं इलयास नबी हूं। लश्करे इस्लाम देखने आया हूं।

पांचवीं दलील यह है कि इब्ने शाहीन ने किताबुल ज़नाायज़ में रिवायत नक़ल फरमाई कि फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक मैयत की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने के लिये खड़े हुए थे कि पीछे आने वाले ने आवाज़ दी कि अल्लाह तुम पर रहम फरमाये। नमाज़ में जल्दी न करना, थोड़ा इंतज़ार कर लेना, तो फारूक़े आज़म ने इंतज़ार फरमाया। यहां तक कि वह साहब सफ में शामिल हो गये। फारूक़े आज़म ने तकबीर पढ़कर नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ के बाद शामिल होने वाले साहब ने दुआ मांगी तो फारूक़े आज़म और तमाम मौजूद सहाबा ने उन साहब की तरफ देखा। फिर दफन के वक़्त उन्होंने कुछ दुआयें पढ़ीं।

फारूके आजम ने लोगों से फरमाया कि इन साहब को मेरे पास लाओ, हम उनसे कुछ बातें करें। लोग उनकी तरफ दौड़ते तो वह उनके निशाने कदम के सिवा कुछ न पा सके और गज़ गज़ भर के फासले पर निशाने कदम थे। हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु ने फरमाया खुदा की कसम यह वही खिज्र थे जिनका जिक्र नबी पाक ने हमसे ब्यान फरमाया।

छटी दलील यह कि इमाम इसहाक बिन इब्राहीम खफगी ने अपनी किताब ''अलरमाअ'' में लिखा है कि असकलान का एक शख़्स बैतुल मकदिस में ठहरा हुआ था। उसने मुझे सुनाया कि मैं एक दफा उरदन के सहरा में सफर कर रहा था कि एक शख़्स को खड़े हुए नमाज़ पढ़ते देखा। उन पर बादल ने साया किया हुआ था। मेरे दिल में कुदरती ख्याल पैदा हुआ कि यह हज़रत नबी इलयास अलैहिस्सलाम हैं। मैं उनके करीब आया और सलाम किया। उन्होंने नमाज़ से फारिग़ होकर मेरे सलाम का जवाब अता फरमाया। मैंने अर्ज़ किया अल्लाह आप पर रहमत फरमाये आप कौन हैं? उन्होंने मेरी बात का जवाब नहीं दिया तो मैंने फिर उनसे पूछा तो उन्होनें फरमाया कि मैं इलयास नबी हूं। यह सुनकर मैं बहुत ही मरऊब हो गया। मैंने उनसे कुछ दुआयें पूछीं। फिर मैंने अर्ज़ किया कि अब भी आपके पास वही आती है? फरमाया जब से आका सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मबऊस हुए किसी पर भी वही नहीं आती। मैं पहले अपनी कौम अहले बअलबक की तरफ मबऊस किया गया था। मैंने अर्ज़ किया कोई और भी नबी अभी तक दुनिया में बा हयात हैं? फरमाया चार नबी हैं। मैं और खिज्र ज़मीन में और इदरीस व ईसा आसमान में। मैंने अर्ज़ किया क्या आपकी मुलाकात खिज्र से होती है? फरमाया हां हर साल अरफात में हज के अय्याम में। मैंने अर्ज़ किया दुनिया में अबदाल कितने होते हैं? फरमाया साठ और रिवायत में चालीस भी आया है।

सातवीं दलील यह कि मुहद्दिस इब्ने असाकिर ने रिवायत किया कि सनद सही से कि इमाम अबु ज़रआ ने फरमाया कि जब मैं जवान हुआ तो एक बुजुर्ग से मुलाकात हुई जिनकी दाढ़ी मुबारक में मेंहदी लगी हुई थी। फरमाया ऐ अबू ज़रआ अमीरों के दरवाज़े पर मत जाया करो। फिर जब मैं बहुत बूढ़ा हुआ तब दोबारा इन्हीं बुजुर्ग से मुलाकात हुई तो मुझको फरमाया क्या मैं ने तुझको मना नही किया था। अमीरों के दरवाज़ों से रावी ने कहा कि फिर वह दूसरी तरफ

मुतावज्जोह हो गये ओर मेरी नजरों से अचानक गायब हो गये। गोया कि जमीन मे चले गये। मेरा पक्का ख्याल है कि बेशक वह हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम थे। इसी तरह इमाम अहमद बिन हंबल रजियल्लाहु अन्हु ने फरमाया अपनी किताब "अखबारे खिज्र" में कि मै बैतुल मकदिस मे था तो मैने हजरत खिज्र और हजरत इल्यास अलैहिमुस्सलाम को देखा। यह तमाम दलायल हजरत खिज्र की दराजीए उम्र के मुताल्लिक अल्लामा इब्ने हजर असकलानी की किताब 'जहरुल नजरफी हालील खिज्र'' से मंकूल हैं। तफसीर रूहुल मानी से भी नकल हैं। लिहाजा शवाहिद व बराहीन के बाद अब किसी शक व शुबह की गुंजाईश नहीं। कुरआन व अहादीस, फिकह व तफसीर, तारीख व मुशाहेदात की मजबूत दलायल से हज़रत खिज्र की नुबूवत और ता कयामत आपकी लंबी उम्र साबित कर दी और वाज़ेह कर दिया कि तमाम मुसलमान अकाबेरीन उलमा, सूफिया, आइम्मा सहाबा व ताबेईन और उनके बाद तमाम मुस्लेमीन का यही अकीदा है। मगर मुसलमानों की बदनसीबी और फिरका बाज़ी उस दिन से शुरू हुई जिस दिन माह सफर बरोज़ मंगली ६६१ हि0 में नज्द के एक गांव हरान में तकीउद्दीन इब्ने तैमिया पैदा हुए। उसने फकत खिज्र अलैहिस्सलाम की नुबूवत और हयात दराज़ का इंकार किया और सिर्फ यही नहीं बेशुमार बिदअतें और इख्तेलाफात इस्लामी मसायल व अकायद में पैदा किये बल्कि हर मसले ही को बेहूदा और जाहिलाना इख्तेलाफात से उलझाया और ख़राब किया। उसका जन्म व परवरिश मोतज़ली माहोल में हुआ, यह उम्मते मुस्लेमा की तखरीब कारी उसर का असरे बद था। उसकी कुछ बातिल नजरियात मुंदरजा ज़ेल हैं जो उसकी किताबों से ज़ाहिर है मसलन उसने लिखा कि अल्लाह तआला का जिस्मत है और आसमान से उसी तरह उतरता चढ़ता है जिस तरह मैं मिम्बर से। अर्श व कुर्सी अल्लाह ने अपने बैठने के लिये बनाई है और जब वह कुर्सी पर बैठता है तो कुर्सी चूं चूं करती है। एक मजलिस की तीन तलाकें एक ही होती हैं। गायबाना नमाज़े जनाज़ा का इसी ने रिवाज दिया। मज़ारात पर फातेहा ख़्वानी को कब्र परस्ती करार दिया। सहाबा किराम की ग़लतियां निकाला करता था। आज भी उसके पैरोकार सहाबा किराम पर तंकीद करते हैं। अपने आपको मुजद्दिद, मुजतहिद और शैख़ुल इस्लाम कहता था, हंबली मसलक, मजहब का मुक़लिद होने का दावेदार था। तमाम उलमा व फुकहा यहां तक कि खुद हंबली उलमा भी उसको

गुमराह मुलहिद और मजनू कहते थे। इसके बावजूद भी जुहला ने उस वक़्त से लेकर आज तक कसरत से उसका साथ दिया। ऐसी अंधी अकीदत उसके साथ लगाई कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम का वह अदब व एहतेराम नहीं जो इब्ने तैमिया का उसके पैरुकारो के दिलों में है।

बहरहाल! जहां तक दलायल का ताल्लुक़ है तो हमने मज़बूत दलायल कुरआन व आहदीस से हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम की नुबूवत और लंबी उम्र पर सबूत पेश कर दिये और मुख़ालेफीन के नाक़िस दलीलों का मुदललल जवाब दे दिया। अब किसी तैमीयाई के बोलने की जुर्रत व हिम्मत न होगी।

सवाल : इत्तेबा की तारीफ बाज़ लोग इस तरह करते हैं किसी की मिस्ल या मुशाबा काम करना तो हम सब मुसलमान कलिमा तैयबा ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ते हैं और यहूद व नसारा भी यही कलिमा पढ़ते थे तो क्या हम यहूदियों की इत्तेबा करते हैं हालांकि मज़हबी इत्तेबा तो किसी ग़ैर मुस्लिम की जायज़ नहीं है? (बाज़ हज़रात)

जवाब : इत्तेबा का मायने मिसलियत या मुशाबेहत नहीं न किसी अहले लुग़त ने यह मायने किये हैं बल्कि इत्तेबा का लुग़वी मायने और इस्तेलाही व शरई मायने यह हैं कि किसी को बे ऐब और पाक दामन समझकर उसके नक़्शे क़दम पर चलना नक़ल और पैरवी करना, लिहाज़ा हम मुसलमान कलिमा पढ़ने में यहूद व नसारा तो दर किनार, किसी साबिक़ा नबी व रसूल की भी इत्तेबा व पैरवी नहीं करते। हम तो सिर्फ अपने आक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तेबा व पैरवी करते हैं। इसलिये पूरा कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्ररसूलुल्लाह पढ़ते है। न कि लफ्ज़ ला इलाहा इल्लल्लाह और न ही कोई फक़त आधा कलिमा पढ़कर मुसलमान हो सकता है। दुनिया में हर तरह हर ऐब से पाक और जिनका क़ौल दीनी व दुनियावी एतेबार से बिल्कुल सही हो वह सिर्फ अंबियाए किराम की ज़ाते बा बरकत है इसलिये कि इंसानों में सिर्फ अंबियाए किराम ही मासूम होते हैं और मासूम होने का मायने हैं कि गुनाह और शरई ग़लती उन हज़रात से मुहाल व नामुमकिन है। यह मुक़द्दस हस्तियां गुनाह पर क़ादिर ही नहीं होती।

सवाल : भीक मांगना तो हर शरीयत में हराम है तो फिर मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम ने आज़र बईजान की बस्ती वालों से खाने की भीक क्यों मांगी? आज तमाम भिकारी भी खाना ही मांगते हैं?

जवाब : यह भीक न थी बल्कि हक्के मुसाफिरत था जो तलब करना जायज़ था और बस्ती वालों पर देना हक बनता था और यह तलब ज़रूरी थी कि यह महज़ आदतन या तफ़रीहन। मगर रिवाजी पेशा व गदागरों की तलब बिला ज़रूरत महज़ आदतन होती है। रिवायत में है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक बार मांगने वाले की आवाज़ सुनी तो आप ने उसे खाना खिलाने का हुक्म दिया। थोड़ी देर के बाद उसकी आवाज़ फिर सुनाई दी, मालूम हुआ कि यह वही भिकारी है और खाना खाने के बाद अब फिर मांगता है। आपने उसको बुलवाया और देखा तो उसकी झोली रोटियों से भरी हुई है। आपने झोली का एक सिरा पकड़ा और उसे ऊंटों के आगे झाड़ दिया और फ़रमाया कि तू सायल नहीं बल्कि ताजिर है। ऐसे पेशावर भिकारियों को न देना बेहतर है। अहादीसे मुबारका में डेढ़ सौ रिवायत भीक मांगने की मज़म्मत में आयी हैं मगर आज सब से ज़्यादा मुसलमान ही आपको भीक मांगते नज़र आयेंगे। हां जो सख़्त महबूर हो, मफलूज हो, किसी हादसे का शिकार हो गया हो या दो वक़्त की रोटी न कमा सकता हो उसकी बात अलग है मगर जो तंदरुस्त हो हटटा कटटा हो उसको भीक देना हराम है और ऐसों को लेना भी जायज़ नहीं।

सवाल : कुरआन की तफासीर में है कि जोगी, राहिब, साधुओं की इबादतें बेकार हैं, मसलन तर्क दुनिया (संयास) उलटा लटक कर इबादत, फाक़ाकशी, कुंए में लटकाना, घास फूल खाकर गुज़ारा करना और इबादत में मशगूल रहना वग़ैरह वग़ैरह। हालांकि यह इबादतें बाज़ औलिया अल्लाह ने भी अपनी ज़िन्दगी में कीं। मसलन ख़्वाजा अजमेरी, साबिर कलियरी सुलतान बाहू, पीराने पीर गौसे आज़म वग़ैरह जैसा कि उन बुजुर्गों की सवानेह हयात में लिखा है जब यह इबादतें इंदल्लाह नाजायज़ हैं तो उन औलिया अल्लाह ने क्यों कीं? (आर्य)

जवाब : चंद मजज़ूबीन के सिवा किसी भी वली अल्लाह से इस किसम की इबादत व रियाज़त साबित नहीं। वह भी सिर्फ हालते जज़्ब में। ऐसी बातें बाज़ मुसन्नेफीन की झूटी और बनावटी हैं। इस्लाम ने तो अपनी ऐसी दिन रात की

इबादतें हैं कि कोई मुसलमान इनको छोड़कर जंगल में जाकर तर्के दुनिया (संयास) नहीं कर सकता। भला कोई वली अल्लाह ऐसी किस तरह कर सकता है तमाम औलिया अल्लाह मस्जिदों मकानों, बुरजों और गोशों में इबादतें करते विलायत कुबरा के मक़ाम को हासिल किये हैं और इनकी भूक भी फ़ाक़ाकशी नहीं बल्कि रोज़ा है।

सवाल : रिवायतों में आता है कि फरिश्ते चार जगह नहीं जाते। (१) जहां कुत्ता हो (२) जहां किसी जानदार की तसवीर हो (३) जहां बदबू हो (४) जहां नंगा बदन मर्द या औरत हो। तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम हज़रत मरयम के पास क्यों आये हालांकि हज़रत मरयम गुस्ल कर रही थीं और गुस्ल नंगे बदन ही को होता है? (आर्य)

जवाब : इस सवाल के तीन जवाब हैं। पहला यह कि वहां गुस्ल के लिये न गयीं थीं बल्कि इबादत के लिये गयी थीं। दोम यह कि गुस्ल के लिये गयी थीं मगर अभी गुस्ल शुरू न किया था सिर्फ पहुंची ही थीं और बा लिबास थीं। सोम यह कि गुस्ल से फ़ारिग़ होकर कपड़े पहन चुकी थीं, बाहर निकलने वाली थीं, यह जवाब सही और क़वी है।

सवाल : हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को देखकर हज़रत मरयम डर गयीं और कहा कि अल्लाह की पनाह डरना और अल्लाह की पनाह तू फासिक़ व फाजिर और बदकार आदमी से मांगी जाती है, नेक लोगों से तो पनाह मांगना दुरुस्त नहीं तो फिर आपने डर कर पनाह की दुआ क्यों मांगी? (आर्य)

जवाब : यह ठीक है कि पनाह की दुआ फासिक व फाजिर से बचने के लिये मांगी जाती है लेकिन यह दुआ नहीं बल्कि सामने मौजूद शख़्स से मुलतजियाना अंदाज़ में सवाल है और इसके अच्छे बुरे इरादे का अंदाज़ा करना है कि वह क्या चाहता है बुरा है अच्छा है। जान कर आया है या भूले से और चूंकि ऐसी इल्तेजाओं का असर उन ही लोगों होता है जो दिल के नेक और अच्छे होते हैं ऐसी इलतिजावों और अल्लाह खौफ दिलाने से दिल का मुत्तक़ी परहेज़गार आदमी बाज़ आ जाता है। उस वक़्त तक हज़रत मरयम ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को पहचाना नहीं था। यहां पर यह मसला भी वाज़ेह हो गया कि इस्लाम में औरत पर पर्दा फ़र्ज़ है मगर सिर्फ बालिग़ अजनबी ग़ैर महरम इंसान से फ़रिश्तों जिन्नातों और जानवरों से पर्दा फ़र्ज़ नहीं।

सवाल : मौत की तमन्ना गुनाह है तो फिर हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह क्यों कहा कि काश मैं इससे पहले मर गयी होती?

जवाब : मौत के लिये दुआ करना गुनाह है और दुआ ज़माना हाल के लिये होती है या मुस्तकबिल के लिये। हज़रत मरयम का यह कौल ज़माना माज़ी के लिये था तमन्ना थी कि दुआ और उन हालात में अपनी मौत की ख़्वाहिश व तमन्ना थी न कि दुआ और उन हालात में अपनी मौत की ख़्वाहिश व तमन्ना जायज़ है कि यह ज़मानए माज़िया की ख़्वाहिश हैं लिहाज़ा यह सवाल ग़लत है।

सवाल : हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को बग़ैर बाप के पैदा करने में क्या हिकमत थी कि एक बा इज़्ज़त पाकदामन औरत को बे पर्दा करके सारी कौम के सामने बदनाम और ता कयामत रुसवा कर दिया गया? क्या अपनी कुदरत व ताकत के इज़हार के लिये किसी नेक ख़ातून पाकदामन औरत को बदनाम करना मुनासिब है? यह भी कोई इंसाफ है? ऐसा नहीं करना चाहिये था?

जवाब : पहली बात तो यह ज़ेहने नशीन रहना चाहिये कि तमाम अंबियाए औलिया और हम तुम सब मख़लूक फकत अल्लाह ही की मख़लूक व ममलूक हैं। अल्लाह तआला जिस तरह चाहे इस्तेमाल करे, किसी को दम मारने की मजाल नहीं। दोम यह कि विलादते मसीह और उसके लिये हज़रत मरयम का इंतेख़ाब कर देने में बहुत सी हिकमतें हैं। एक यह कि ज़माना ईसवी के लोग बनी इसराईल, यहूदी अपनी फनकार सनअत कारी शुअदाबाजी और इल्म तिब में बहुत माहिर व कारीगर थे। जालीनूस, अरस्तू, अफलातून जैसे अज़ीम हकीम उसी दौर में गुज़रे हैं और उनको अपनी इस इल्मी काबलियत पर बहुत नाज़ था, और ऐसे इल्मे कयाफा के माहिर थे कि चेहरे को दिखाकर पेट की खाई हुई ख़ुराक का सही अंदाज़ा लगा लेते थे। यानी ग़िज़ा व ख़ुराक का वह दकीक असर जो खाने के बाद फौरन चेहरे पर नमूदार होता है। इसको अपने इल्म कयाफा से मालूम कर लेते थे। उन का अपने फन पर गुरूर व तकब्बुर इस हद तक बढ़ा हुआ था कि समझते थे कि हम से बढ़कर कोई नहीं। यहां तक कि अल्लाह के कुदरतों के मुन्किर थे और ऐलानिया कहते थे कि हम इतने बड़े फनकार हो कर भी असबाब के मोहताज हैं तो अल्लाह भी असबाब के सहारे पर तख़लीक फरमाता है। मसलन बादल बरसेगा तो अल्लाह तआला खेत में पौधे वग़ैरह उगा सकता है, बीज पड़ता है तो अल्लाह पौधा निकालता है, मियां बीवी

का मिलाप होता है तभी अल्लाह बच्चा पैदा कर सकता है। इन असबाब के बग़ैर तख़लीक़ ना मुमकिन है। इन तमाम कुफ़्रियात में बनी इसराईल मुबतला हो चुके थे। इल्मे तिब की बढ़ते हुए उरूज को देखकर लोग गुमराह हो चुके थे। इन तमाम बद अकीदगियों और कुफ़्रीयात को तोड़ने के लिये कुंवारी पाक मरयम की बतने मुक़द्दस में मासूम व इफ्फ़त से आनाफ़ानन चंद लम्हात में एक इंसान कामिल को बशक्ल ईसा मसीह अलैहिस्सलाम तखलीक़ फ़रमाया और तमाम इंसानों को उसने बता दिया कि ऐ दुनिया वालो तुम्हारा रब इस बात पर भी क़ादिर है कि वह बग़ैर बाप के भी बच्चा पैदा कर सकता है। ख़्याल रहे कि अल्लाह ने अपने कुदरते कामिला का ज़हूर चार तरीक़े से फ़रमाया है। (१) बग़ैर मां-बाप के पैदा किया जैसे हज़रते आदम अलैहिस्सलाम (२) बग़ैर मां के पैदा किया जैसे हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा (३) बग़ैर बाप के पैदा किया जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम (४) और मां-बाप के ज़रिये पैदा किया जैसे हम और आप। गोया तख़लीक़ इंसान चार तरह करके उसने अपनी कुदरत का इज़हार फ़रमाया।

सवाल : कुरआन में है कि अल्लाह तआला जब किसी अमर का फ़ैसला फ़रमाता है या कोई चीज़ वजूद में लाना चाहता है तो कुन (हो जा) फ़रमाता है और वह चीज़ वजूद में आ जाती हैं यानी लम्हा भी देर नहीं लगती। लेकिन आसमानों को छः दिन में बनाया गया। तो यहां देर क्यों? (काफ़िर बेदीन)

जवाब : एक है क़ानून और एक है कुदरत। वहां कानून का ज़िक्र है यहां कुदरत का। यानी क़ानून यह है कि हर चीज़ आहिस्ता आहिस्ता बनाई और उगाई जाये लेकिन कुदरत व कुव्वत आने वाहिद में सब कुछ कर सकती है। लिहाज़ा न आयत में तज़ाद है न तारुज़। नोइयत मुख्तलफा का अलहेदा अलहेदा ज़िक्र है।

सवाल : अहादीस में है कि कुफ्फार व मुश्रेकीन को सलाम करना मना है और हमारी शरीयत मिल्लते ख़लील अलैहिस्सलाम के मुताबिक़ है तो फिर हज़रते खलील अलैहिस्सलाम ने अपने काफ़िर चचा को सलाम क्यों किया?

जवाब : कुफ्फार व मुश्रेकीन को सलाम व दुआ मना है। यह सलाम सलामे मतारका या सलामे नफ़रत व अलहेदगी है। जब कोई शख़्स किसी रिश्ता

ताल्लुक तोड़ना चाहता है तो कहता है आज से ऐ फलां तुम को सलाम। इसकी वज़ाहत कर दी गयी है बाज़ ने कहा कि यह सलाम तालीफ़े क़लब के लिये था ताकि मुहब्बत आमेज़ नरम सलूक सलाम व दुआ से सख़्त दिल चचा का दिल नरम पड़ जाये और ईमान पर आमादा हो जाये। बाज़ मुफ़स्सेरीन ने यह लिखा भी है कि चचा ने ईमान लाने का वादा किया था और अपने लिये दुआ करने के लिये कहा था।

सवाल : काफ़िर व मुश्रिक के लिये मग्फ़िरत की दुआ मांगनी हराम है तो फिर इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने क्यों कहा कि मैं तुम्हारे लिये मग्फ़िरत की दुआ करूंगा कहकर दुआ मांगी? (मुनकेरीने अजमते अंबिया)

जवाब : काफ़िर व मुश्रिक के लिये उसकी ज़िन्दगी में उसके लिये मग्फ़िरत व हिदायत की दुआ मांगना जायज़ है लेकिन मरने के बाद दुआए मग़्फिरत मांगना हराम है। इसकी वजह यह कि कुफ़्र व ईमान का दारोमदार ख़ात्मा और मौत पर है। जब तक काफ़िर ज़िन्दा है उसके ईमान की उम्मीद है। लिहाज़ा दुआ जायज़ है। लेकिन जब मर गया तो अब कुफ़्र पर ख़ात्मे का यक़ीन हो गया और यक़ीनी काफ़िर के लिये ख़ात्मे का बज़रिये वही या कश्फ़ या अलहाम पता लग जाये उसके लिये भी दुआए मग़्फिरत हराम है। जैसा कि जब तक हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को चचा के ख़ात्मे का इल्म न आया कि यह कुफ़्र पर मरेगा उस वक़्त तक मग़्फिरत व हिदायत की दुआ मांगते रहे कि ऐ अल्लाह इसको माफ कर दे, तौफ़ीक तौबा व ईमान अता फरमा दे। मगर जब अल्लाह की तरफ से इल्म आ गया तब फिर आपने कतअन ज़र्रा भर दुआ न की। हां अलबत्ता मोमिन मुसलमान के लिये ज़िन्दगी में भी दुआए मग़्फिरत जायज़ है और बाद वफात भी कुरआन ख़्वानी खत्म वग़ैरह की ही एक शक्ल है।

सवाल : जब अल्लाह तआला को पता था कि फिरओन ईमान नहीं लायेगा तो फिर फिरओन की ईमान की तबलीग़ के लिये हज़रत मूसा अलैहिस्लाम को क्यों भेजा गया?

जवाब : इसलिये कि ईतमामे हुज्जत हो जाये और ता कयामत लोगों को पता लग जाये कि फ़िरऔन का ग़र्क होना दुरुस्त था। नीज़ बद बख़्त की और खुश बख़्त की छांट हो जाये और उस तबलीग़ से अहले सआदत फायदा पा लें

और मुबल्लेग़ीन को सवाब मिल जाये और आइंदा के लिये मसला मालूम हो जाये कि कोई माने या न माने मगर तबलीग़ करते ही रहना चाहिये।

सवाल : मुफ़स्सेरीन व उलमाए दीन फ़रमाते हैं कि कल क़यामत में काफिर का कोई सिफारिशी न होगा न कोई सिफारिश करेगा, हालांकि हदीस शरीफ़ में है कि अबू लहब को हर पीर के दिन अज़ाबे क़ब्र में तखफीफ़ होती है और वह शहादत की उंगली से जन्नत का पानी पीता है, मज़े करता है। इसी तरह अबू तालिब के मुताल्लिक़ रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनको जहन्नम में पाया तो खींच कर बाहर जहन्नम के छेड़े में रख दिया जहां बहुत हल्का अज़ाब है तो यह शिफ़ाअत हो गयी हालांकि यह ईमान नहीं लाये थे।

जवाब : अबू लहब की तखफीफ़े अज़ाब किसी की सिफारिश या शिफ़ाअत से नहीं बल्कि उस फ़ैज़ाने इलाहिया से है जो आक़ा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वजह से दिया जा रहा है। बग़ैर किसी शिफ़ाअत के नीज़ यह उंगली से निकलता पानी, जन्नत का नहीं बल्कि कुदरती है और फिर अज़ाबे क़ब्र सज़ाए आमाल नहीं, वह अज़ाब आख़िरत में होगा। शिफ़ाअत सिर्फ उसी के लिये होगी। अज़ाबे क़ब्र की तख़फीक़ से क़ानूने शरीयत पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। और अबू तालिब के मुताल्लिक़ फुक़हा उलमा का इख्तेलाफ़ है। अक्सर इसी मसलक पर हैं कि उनको लअन व तअन न किया जाये क्योंकि उन्होंने हमारे सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बड़ी शफ़क़त से परवरिश की है।

सवाल : कुरआन मजीद से साबित है कि अंबिया को बशर (आदमी) कहना जायज़ है। इसी तरह नबी को बड़ा भाई कहना भी जायज़ है। लिहाज़ा हमारे बड़ों ने जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना बड़ा भाई लिखा या कहा वह बिल्कुल दुरुस्त है। बरैलवी सुन्नी मुसलमानों का यह कहना है कि अंबिया को बशर या आम इंसान या गुनाहगार कहना यह अक़ीदा बातिल और ग़लत है। कुरआन के ख़िलाफ़ है और अंबियाए किराम की शान में गुस्ताख़ी व बे अदबी है। (वहाबी, चकरालवी, नेचरी)

जवाब : मअज़ल्लाह सुम्मे मअज़ल्लाह किसी मुसलमान उम्मती को जायज़ नहीं कि किसी भी नबी को बशर या इंसान कहकर ख़िताब करे या जल्से, तक़रीरों में बशर बशर की रट लगाता फिरे। अल्लाह तआला ने किसी नबी को

बशर या इंसान कहकर ख़िताब न फ़रमाया न उसका कुरआने मजीद में कहीं ज़िक्र है। अल्लाह तआला खलकत आदम का ज़िक्र फरमाते हुए बशरीयत का ज़िक्र सिर्फ असलियत बताने के लिये फ़रमाया और वह भी उस वक़्त जब कि आदम अभी नबी न बनाये गये थे और हक़ीक़त यह है कि आदम को बाद में नुबूवत के बाद अल्लाह तआला ने आदम को भी बशर न फ़रमाया। और नबी को आसी या गुनाहगार कहना यह शरई एतेबार से बदतरीन कुफ़्रिया गुस्ताख़ी है। इसलिये तुम्हारे जिन बीस बड़ों ने लिखा कि नबी सिर्फ़ भाई होता है नबी की इज़्ज़त बड़े भाई से ज़्यादा न करो, ये कुफ़्रिया अक़ीदा है यह लोग अपना कुफ़्र बचाने के लिये आयतें तो बना लीं सकते लेकिन झूटी ख़्वाबें झूटी हदीसें खूब बना लेते हैं। चुनांचे अपने इस कुफ़्री अक़ीदे को बचाने के लिये दो हदीसें बना लीं। (१) बीबी आयशा फरमाती हैं कि हम मोमिनों की मायें नहीं बल्कि उन पर अबदी हराम हैं। इस झूटी रिवायत से हज़रत उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को मुन्किर फरमाने कुरआन बनाया गया कि कुरआन कहे कि नबी की अज़वाजे मुत्तेहरात तमाम अहले ईमान की मायें हैं मगर सिद्दीक़ा कहें कि हम मायें नहीं। अबदी हराम तो बहन भी होती है। (२) ज़ालिमों ने दूसरी हदीस यह बनाई है कि नबी करीम ने सहाबा किराम से फरमाया कि तुम लोग मेरे सहाबा हो मगर जो मेरे बाद मुसलमान होंगे वह मेरे भाई हैं हालांकि अबू दाऊद शरीफ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैं क़यामत तक उम्मत के लिये वालिद के दर्जे में हूं, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम खुद फरमाते हैं-

ज़ाहिर में मेरे नख़्ल में मेरे फूल
इस गुल की याद में ये सदा अबू बशर की है

सवाल : इसकी क्या वजह है कि आदम अलैहिस्सलाम ने एक बार ज़रा सी लग्ज़िश कर ली तो रब तआला ने मशहूर कर दी और आपके नस्ल में लाखों आदमी रात दिन हज़ारों बड़े बड़े कुफ़्रियात व गुनाह करते रहते हैं। मगर रब तआला परदा पोशी फरमाता रहता है। (नादान बे अदब)

जवाब : इसकी तीन वजह हैं। एक यह कि आदम की खता अगरचे छोटी थी मगर उसका नतीजा बहुत बड़ा वसीअ व सख़्त था कि सारे आलम पर मुहीत

हो गया। दोम यह कि आदम की ख़ता ज़ाहिर करने में हिकमते रब्बानी थी कि इस मशहूरी से आइंदा नस्ले इंसानी को इंसानियत सिखानी बतानी थी और इंसानों को बचाना ख़बरदार करना था कि तुम सब बशर हो और यह बशरी कमज़ोरियां हैं। तुम कमज़ोर भोले, बेवकूफ़ और तुम्हारा दुश्मन इबलीस इंतेहाई चालाक, मुस्तअद और ताक़तवर इसकी दुश्मनी इतनी सख़्त और हर वक़्त। आदम का उस वक़्त जन्नत से निकलना या निकाला जाना तो इतना नुक़सान देह नहीं है लेकिन आइंदा शैतान ने तुम को वरग़लाया और तुमने इसका कहना माना तो फिर जन्नत से हमेशा के लिये महरूमी होगी। अभी तो जन्नत से निकलकर ज़मीन पर आये हों जहां हज़ार तरह के ऐश व आरमा और इनाम हैं लेकिन अगर तो जन्नत से निकलकर ज़मीन पर आये हों जहां हज़ार तरह के ऐश व आराम और इनाम हैं लेकिन अगर फिर महरूम हुए तो सीधा जहन्नम में जाओगे। सोम यह कि आराम और मक़ामे जन्नत का था उनकी मामूली ख़ता भी बड़ी हैसियत रखती थी। इस एक ख़ता से पूरे आलम में खलबली मच गयी थी क्योंकि वह जवारे इलाही में रहकर कर की गयी इसलिये उनकी लग्ज़िश बड़ी ख़ताए अज़ीम थी। दूसरे न मुक़र्रब, न मोअदद्‌ब न मक़ामे जन्नत, ज़मीन पर अमूमी हैसियत से गुनाह व ख़ता करते हैं लिहाज़ा इनसे दर गुज़र और दर गुज़र की वजह से पर्दा पोश होती है।

सवाल : इसकी क्या वजह से है कि सज़ा जज़ा के लिये मरने की पाबंदी है कि आमाल का सवाब व अज़ाब मरने के बाद मिलेगा। दुनिया ही में सज़ा जज़ा क्यों न दी गयी? दुनिया में इतने आराम देने के बाद सख़्त घड़ी लाज़मी करके हर शख़्स को ख़ौफ़ में क्यों मुबतला रखा गया? (मुलहिदीन)

जवाब : तीन वजह से पहली यह कि ताकि बंदों का ईमान व इबादत व तर्के गुनाह व नफ़रत कुफ़्र व शिर्क फकत इश्के इलाही में होना कि जन्नत की लालच व दराज़ चीज़ें हैं कि यह दुनिया कनी सज़ा या जज़ा बनने की क़ाबलियत नहीं रखती उसके लिए अबदी जान ही हो सकता है। सोम यह कि दुनिया में आज़ामईशी आराम व तकलीफ हैं आख़िरत में सज़ा व जज़ा का आराम व तकलीफ हैं तो अगर उखरवी आराम व तकलीफ भी दुनिया ही में दे दिया जाता तो बंदे फ़र्क न जान सकते कि यह आराम व तकलीफ आज़ामइशी है या जज़ाई। आज़माईश को जज़ाई और जज़ाई को आज़माईशी समझ लिया जाता और कोई

शख़्स हक़ व बातिल के दर्मियान फर्क़ न कर सकता इसलिये आराम व तकलीफ़ सवाब व अज़ाब के दर्मियान मौत से हदे फ़ासिल क़ायम कर दी गयी।

सवाल : कुरआन में है कि बेशक हमने नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा। इससे साबित हुआ कि हज़रत नूह भी दीगर अंबियाए साबेक़ीन की तरह सिर्फ़ अपनी क़ौम की तरफ़ माबूस हुए थे तो फिर नाफ़रमानी क़ौम की वजह से पूरी ज़मीन पर अज़ाबे इलाही का पानी का तूफ़ान क्यों आया? चाहिये था कि सिर्फ़ क़ौम नूह पर ही इलाक़ाई अज़ाब आता जिस तरह दीगर काफ़िरों क़ौमों पर इलाक़ाई अज़ाब आते रहे। तूफ़ाने के अज़ाब ने तो दूसरे बे गुनाह क़ौमों को भी हलाक कर दिया इसकी क्या वजह है? (मुन्किरीने अंबिया)

जवाब : वजह यह कि नूह अलैहिस्सलाम के वक़्त ज़मीन पर इंसान बहुत कम थे। तारीख़ व रिवायात से साबित है कि ज़माना नूह में पूरी ज़मीन पर सिर्फ़ क़ौम नूह ही आबाद थी और आप अकेले उस वक़्त इंसानी क़ौम के वाहिद नबी थे इसलिये वह तूफ़ान अगरचे पूरी ज़मीन पर आया था मगर हलाकत सिर्फ़ कुफ़्फ़ार नूही की हुई न कोई दूसरी बे गुनाह क़ौम ज़मीन पर थी न किसी बे गुनाह की हलाकत हुई। यही वजह है कि हलाकत तूफ़ानी के बाद जब तूफ़ान ख़त्म हुआ तो नूह अलैहिस्सलाम के तीन बेटों, हाम, साम, याफ़स की नस्ल व औलाद से ज़मीन पर यह मौजूदा इंसानियत फैली। इसलिये नूह को आदमे सानी भी कहा जाता है यह आपकी कुन्नियत है।

सवाल : एक अनपढ़ आदमी जिसको दीन का कुछ भी इल्म नहीं वह माज़ूर है? अगर वह कोई गुनाह या ख़ता करे तो माफी के लायक़ है क्योंकि उसे इल्म नहीं कि यह काम सवाब है या अज़ाब?

जवाब : कानूने इस्लामिया के मुताबिक़ उलूमे दीनिया से बेख़बर होना मसायले शरीया से नावाकिफ़ होना ना क़ाबिल माफी जुर्म है। और किसी मसले शरई से नावाकफ़ी को अपनी बे अमली या बद अमली का उज़्र व बहाना बनना इससे भी ज़्यादा जुर्म व क़ाबिले कबूल है। न दुनिया की क़ानूनी अदालत में न आख़िरत की अदालत में हाज़िरी में जो मुसलमान दुनिया की स्कूल व कालेज व यूनीवर्सिटी में तो ख़ूब माहिरे निसाब व क़वायद व अमलियात में कामयाब होकर खेल कूद में चस्पा हो, एमएबी की डिग्री लेकर निकला हो मगर दीन व

मज़हब के ज़रूरी व इब्तेदाई मसायल, हलाल व हराम जायज़ व नाजायज़ नमाज़ व रोज़ा, वुज़ू, गुस्ल तहारत वग़ैरह के मसायल से बेखबर हो और दीनी इल्म पढ़ने या याद करने में काहिल व सुस्त हो वह आख़िरत का संगीन मुजरिम क़ाबिले सज़ा गुनाहगार है। ऐसे ही जो मुसलमान मर्द व औरत दुनियावी फनकारी कशीदकारी सियासत बाज़ी करने में खूब चालाक व होशियार हो मगर दीनी मसायल सीखने और पढ़ने में बे तवज्जोह लापरवाह रहे वह भी दुनिया व आख़िरत में फ़ासिक़ीन ग़ाफ़लीन में शुमार है। हर मुसलमान मर्द व औरत पर इतना तो दीनी तालीम फ़र्ज़ है कि वह हलाल व हराम जायज़ व नाजायज़ हक़ व नाहक़ कुफ़्र और इस्लाम को समझ सकें।

सवाल : अहले सुन्नत कहते हैं कि अल्लाह को वाहिद के सीग़े से पुकारना चाहिये। मसलन अल्लाह तआला फ़रमाता है मगर हम देवबंदी कहते हैं कि अल्लाह को सीग़ा वाहिद से पुकारना तो तेरा के लफ्ज़ से अल्लाह को मुख़ातिब करना सख़्त बे अदबी व गुस्ताख़ी व बदतमीज़ी है बल्कि जमा के सीग़े से पुकारना चाहिये, मसलन अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, इसमें अल्लाह का अदब व ताज़ीम है लिहाज़ा सुन्नियों का नज़रिया व मसलक व तरीक़ा गलत और ताज़ीम व अदब के ख़िलाफ़ है। (वहाबी)

जवाब : अलहम्दोलिल्लाह अहले सुन्नत व जमाअत (सुन्नी बरैलवी) अंबिया व मुरसेलीन सहाबा व ताबेईन, औलिया व मुहद्देसीन की नक़ल करते हैं। मसलन हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने कहा किसी नबी ने अर्ज़ किया, अय्यूब अलैहिस्सलाम ने कहा किसी नबी ने कहा, वग़ैरह वग़ैरह। कुरआन मजीद में सुन्नियों के लिये बेशुमार दलीले हैं। इन सब दुआओं में वाहिद के ही अलफ़ाज़ व सीग़े हैं। क्या शानदार तौहीद की झलक वहदत की चमक वाली अर्ज़ व मारूज़ है। ज़ाते वाहिद के लिये जमा का कलाम अदब नहीं बल्कि शिर्क के मुशाबा है। तौहीद के ख़िलाफ़ है। नीज़ अगर अल्लाह को तू तेरा से ख़िताब बे अदबी व गुस्ताख़ी है तो कुरआन मजीद की आयत और अंबियाए किराम की इन दुआओं को क्या कहोगे जिन में सब जगह वाहिद ही का सीग़ा है। इसका मायने है बेशक तू तेरा कुरआन मजीद ने बता दिया कि अल्लाह तआला के अंबिया अलैहिमुस्सलाम अल्लाह तआला को वाहिद के अलफ़ाज़ से ही ता उम्र पुकारते रहे। अब बंदे की मर्ज़ी है कि कुफ़्फ़ार की नक़ल व इत्तेबा करे या अंबिया अलैहिमुस्सलाम की।

सवाल : कुरआन में है कि कोई मुर्दा कयामत तक दुनिया में वापस नहीं आ सकता, न मोमिन न काफिर क्योंकि बीच में बरज़ख है। लेकिन कुरआन मजीद ही से साबित है कि हज़रत ईसा ने चंद पुराने मुर्दे ज़िन्दा किये और वह दुनिया में वापस आये और हज़रत उजे़र अलैहिस्सलाम सौ साल बाद ज़िन्दा होकर वापस दुनिया में आये। आकाए कायनात हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु के दो फरज़ंद ज़िन्दा फरमाये जो काफी अर्से तक ज़िन्दा रहे। यह सब बरज़ख से वापस दुनिया में आये। इस उलझन का जवाब क्या है?

जवाब : दोनों हालात अपनी-अपनी जगह दुरुस्त हैं मगर फर्क यह है कि बरज़ख से दुनिया में वापस न आना यह कानूने इलाही है और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मुर्दा ज़िन्दा करना, आकाए कायनात हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जाबिर के दोनों बच्चों को ज़िन्दा फरमाना, इसमें कुदरते इलाही व मोजिज़ए अंबियाई का इज़हार है। ईसा अलैहिस्सलाम का मुर्दों को ज़िन्दा करना कुफ्फार के ईमान के लिये इज़हारे मोजिज़ा था और उजे़र अलहिस्सलाम का सौ साल बाद ज़िन्दा होना इज़हारे कुदरत व ता कयामत सबूते महशर था। फरज़ंदाने जाबिर का ज़िन्दा किया जाना आंच खूंबा दारन्द तो तंहा दारी के सबूत के लिये ज़रूरतन मोजिज़ा मुस्तफाई था।

सवाल : बरज़ख़ दुनिया और आख़िरत के दर्मियान ऐसी सख़्त आड़ है कि कोई फौत शुदा एक साअत के लिये भी दुनिया में नहीं आ सकता, हालांकि बहुत से औलिया अल्लाह ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बाद विसाल ज़ाहिर व ज़हूर हालते बेदारी असल हुलिया शरीफ में देखा। दीदार का शर्फ भी हासिल किया। यूं ही बुहत से औलिया अल्लाह की भी असल हुलिया शरीफ में बहालत बेदारी ज़्यारत हो जाती है। यह औलिया अंबिया अलैहिमुस्सलाम दुनिया में कैसे वापस आ जाते हैं जबकि बरज़ख़ सबके लिये है? (आज़ाद ख़्याल)

जवाब : बरज़ख़ की आड़ सिर्फ जिस्म के लिये है न कि रूह के लिये। काफिर की रूह मुकैयद, जिस्म फना, औलिया अल्लाह के रूह जिस्म मिसाली से बाहर तश्रीफ ला सकते है। और अंबिया अलैहिमुस्सलाम के अजसाम में उनकी रूहें ता अबद मौजूद रहती हैं। दुनिया में बवक़्ते नज़अ सिर्फ चंद मिनट

के लिये जुदाई की अजल होती है। इन फ़र्के मरातिब की वजह से यह ज़्यारतें हो जाती है। और काफ़िर व मोमिन के बरज़ख़ी हालात मुख़्तलिफ़ होते हैं।

सवाल : इसकी क्या वजह है कि ज़िना हर हाल में एक ही नोइयत का मगर कुंवारे मर्द औरत की सज़ाए ज़िना कोड़े मारना है और शादी शुदा ज़ानी ज़ानिया की सज़ा रजम (संगसार) है जब जुर्म एक ही तरह का हो तो सज़ा भी एक जैसी होना चाहिये थी। यानी दोनों क़िस्म के ज़ानिया और ज़ानी को कोड़ों ही की सज़ा दी जाती। नीज़ रजम यानी संगसार करने के बजाए क़त्ल कर दिया जाता तो बेहतर था। आसान भी था और मक़सद हलाकत भी हासिल था।

जवाब : फ़ेअल ज़िना अगरचे एक जैसा है लेकिन मुजरिमों की कैफ़ियत मुख़्तलिफ़ है। कुंवारा कुंवारी की शहवानी मजबूरी है जो वजहे जुर्म भी हो सकती है लेकिन शादी शुदगान को यह मजबूरी उनका जुर्म महज़ बदमाशी से है। नीज़ क़त्ल के बजाए रजम करने में दो हिकमतें हैं। एक यह कि ज़िना शहवानी लज़्ज़ात का जुर्म है और यह लज़्ज़त पूरे जिस्म ने हासिल की इसलिये पूरे जिस्म को सज़ा दी गयी न कि सिर्फ़ गर्दन को। दूसरी हिकमत यह है कि चूंकि ऐसी सज़ा दिलवाने में चार गवाह थे और इक़रारे जुर्म में जज ने फ़ैसला व सज़ा किया था इसलिये सज़ा देने में चारों गवाह हज भी शामिल हों और अवाम भी ताकि देखा जाये कि कौन तरस खाता है। कौन सज़ा देने से हिचकिचाता है कौन इबरत कौन नसीहत पकड़ता है यह बात क़त्ल से हासिल न होती वह तो सिर्फ़ एक ही हाथ को भी करना था।

सवाल : इसकी क्या वजह है कि आयते करीमा में लफ़्ज़ ज़ानिया मोवन्नस का ज़िक्र पहले और ज़ानी मुज़क्कर का ज़िक्र बाद में।

जवाब : सज़ा में ज़िना का जर्म और ज़िना में शहवत का, और शहवत औरत में ज़्यादा होती है इसलिये ज़िना की पेशकश अक्सर औरतों की तरफ़ से होती है और बदकारी की तहरीक और आमादगी व रग़बत अव्वलन औरत की तरफ़ से। इसलिये जुर्म ज़िना की सज़ा में औरत का ज़िक्र पहले किया गया। और निकाह व शादी में रग़बत व तलब मर्द की तरफ़ से होती है, शरअन भी रवाजन भी पैग़ामे निकाह भी मर्द वालों की तरफ़ से ही होता है इसलिये आयते निकाह में पहले मर्द का ज़िक्र है।

सवाल : इसकी क्या वजह है कि ज़िना करने वाला मर्द और ज़िना करने वाली औरत फरमाया गया। हालांकि ज़िना का फेअल तो सिर्फ मर्द ही करता है। औरत से ज़िना किया जाता है औरत ज़िना का फेअल नहीं कर सकती। लिहाज़ा इसको ज़ानिया कहना चाहिये बल्कि मुज़नीया कहा जाता है?

जवाब : चूंकि यहां मर्द औरत की सज़ा और तज़लील का ज़िक्र है इसलिये अज़ानिया फरमाया गया। ज़ानी और ज़ानिया के लफ्ज़ से फेअल ज़िन मुराद नहीं बल्कि मकसद ज़िन का हुसूल मुराद है। यानी ख़्वाहिश शहवत पूरी करना। औरत हो या मर्द, जब दोनों की रज़ा व रग़बत से ज़िना हो रहा हो तो दोनों ही ज़िनाकार हैं। अगरचे मर्द फायल और औरत मफऊल होती है। लेकिन दो तरफा रज़ा की वजह से दोनों ज़ानी और ज़ानिया हैं। इसी रज़ा व रग़बत की सज़ा दी जाती है। मुज़निया उस औरत को कहा जाता है जिससे मर्द जबरन ज़िना करे। मुज़निया को शरीयत में ज़िना की सज़ा नहीं है क्योंकि वह मजबूर व कमज़ोर है।

सवाल : अगरचे हमारे मुरशिद मुजद्दिदे अल्फेसानी रहमतुल्लाह अलैहि ने भी लिखा है कि जिस्म मुहम्मदी का साया न था और तमाम सुन्नी उलमा व फुकहा भी यही कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिस्म अनवर का साया न था, मगर मेरी अक़्ल तसलीम नहीं करती क्योंकि यह कैसे हो सकता है कि जिस्म कसीफ का साया न हो? (अब्दुद-दाइम मुजद्दी)

जवाब : यह आपकी फिक्री व अक्ली कमज़ोरी है वरना दुनिया में हज़ारों जिस्म कसीफ हैं जिनका साया नहीं होता। मसलन सफ़ाफ शीशा बल्ब, टयूब लाइट वग़ैरह वग़ैरह। नीज़ आयत नूर भी बता रही है कि आक़ा अलैहिस्सलाम के जिसम अकदस को महज़ कसीफ कहना भी बे अदबी व गुस्ताख़ी है क्योंकि आपका जिस्म पाक जिस्म शिफाफ है। अल्लाह का रौशन चिराग़ है और आपकी बशरियत भी सराजम मुनीरा है। न रौशन चिराग़ का साया होता है न सरा जा मनीरा के नूर का। यही वजह है किसी सहाबी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वल्लम का साया कभी न देखा। फुकहा फरमाते हैं कि अगर सरकार अब्द करार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म के जिस्म पाक का साया होता तो वह गंदी जगहों पर पड़ता, लोगों के पैरों तले भी आता। अल्लाह तआला को यह मंजूर ही नहीं था

कि मेरे महबूब का साया किसी गंदी जगह नाली वग़ैरह में पड़े इसलिये आपको बे साया कर दिया।

सायए क़द को जो कुदरत ने छिपा रखा था
काम उम्मत के वही हश्र में साया आया

इस सिलसिले में सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुकम्मल एक रिसाला तसनीफ़ फ़रमाया है जिसका नाम है जिस्म बे साया मुताला कीजिये।

सवाल : सुन्नी उलमा कहते हैं कि नबी की हर दुआ बद दुआ ज़रूर क़बूल होती है हालांकि अहादीस से साबित है कि अंबियाए किराम की भी बहुत सी दुआयें मंजूर हो जाती हैं, जैसे कि आम लोगों की। चुनांचे एक हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक दुआ मांगी थी कि या अल्लाह मेरी उम्मत में से कोई मुसलमान किसी मुसलमान से कोई तकलीफ़ न पाये तो अल्लाह तआला ने आपको इस दुआ से मना फ़रमा दिया, लिहाज़ा सुन्नियों का मसलक ग़लत हैं। (वहाबी, नजदी)

जवाब : अहले सुन्नत का यह अक़ीदा कुरआन व अहादीस की कई आयात व रिवायात से साबित है चुनांचे सूर: मरयम आयत नं0 ४ हज़रत ज़िक्रिया नबी अलैहिस्सलाम का क़ौल मंकूल है या रब मैं आज तक कभी तुझसे दुआ मांग कर नाकाम न रहा। साबित हुआ कि हर नबी की दुआ बरवक़्त क़बूल ही होती है। मोतरज़ ने जो हदीस पाक पेश की वह दुआ का रद्द नहीं बल्कि मुमानेअत है और यह मुमानेअत भी महबूबियत है। दुआ की ना मक़बूलियत यह है कि दुआ मांगने वाले को पता ही न लगे कि मेरी दुआ का क्या बना। ना ताखीर की इत्तेला न उख़रवी जख़ीरा होने की ख़बर। न दुआ से मना किया जाये न बदला दिया जाये। कबूलियते दुआ की सात नोइयतें हैं। (१) कभी जल्दी क़बूल (२) कभी देर से (३) कभी दुआ के बदले दूसरे नेमत की अता (४) कभी बता दिया जाता है कि इसका बदला आख़िर में (५) कभी दुआ के बदले उम्मती को शिफ़ाअत से नवाज़ना (६) कभी दुआ के बदले दुनिया का शर व मसायब दूर फ़रमा देना (७) कभी इसलिये मना फ़रमा देना कि यह तक़दीर मुम्बर है। इसके लिये दुआ न मांगो।

सवाल : मुफस्सेरीन किराम फरमाते हैं कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आग में जाते हुए अल्लाह से भी दुआ न मांगी हालांकि जिब्राईल अमीन ने कहा भी जब कि रब तआला से दुआ मांगना बहुत बड़ी इबादत है। कुरआन मजीद में दुआ न मांगने वालों को मुतकब्बुर कहा गया है और हदीस पाक में दुआ को इबादत का मग़ज़ कहा गया है। तो इतनी अज़ीम इबादत को इब्राहीम अलैहिस्सलाम के छोड़ने की क्या वजह हो सकती है?

जवाब : दर असल इंसानी ज़िन्दगी मिन जानिब अल्लाह इस दुनिया में चार हिस्सों में तकसीम है। (१) इब्तेलाई ज़िन्दगी (२) इम्तेहानी ज़िन्दगी (३) वबाई ज़िन्दगी (४) शिफाई ज़िन्दगी। जब ज़िन्दगी में अल्लाह की तरफ से इम्तेहान आ जाये तो उनके दफीया और ख़ात्मे की लिये दुआ मांगना मना है। उस वक़्त इम्तेहान में साबित कदम रहना कामयाबी की दलील है और इसमें बहुत बड़ी कुव्वते इरादी की ज़रूरत है और यह कुव्वत सिर्फ अंबियाए किराम को हासिल है। इसलिये सिर्फ अंबियाए अलैहिमुस्सलाम का ही इम्तेहान होता है और वही जानते हैं कि कौन सी मुसीबत इम्तेहान है, कौन सी बला है कौन सी वबा है। इब्तेला की मुसीबत में बंदे का दुरुस्त रहना कामयाबी है और इसलिये दुरुस्त रहना ज़रूरी है कि इबतेलाए रब्बानी (मुसीबत में डालकर आज़माना) में इब्तेला की दूरी और उसके ख़ात्मे की दुआ मांगना मुफीद नहीं क्योंकि इब्तेला तो होना ही है। वबा की मुसीबत में सब्र ज़रूरी है मगर वबा के ख़ात्मे की दुआ मांगना जायज़ है बला और व बाहर मुसलमान को होती है और शिफा की ज़िन्दगी यानी सेहत और तंदरुस्ती की जिन्दगी में शुक्रे इलाही करना वाजिब हो जाता है। नारे नमरूद वह इम्तेहाने इब्राहीम था। मैदाने करबला इबतला था और मसायब अय्यूब वबा था। इसलिये इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम के कहने के बावजूद दुआ न मांगी बल्कि जिब्राईल का यह कहना भी आज़माईश ही थी इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इसमें कमाल कामयाबी हासिल की। इसी तरह मैदाने करबला में इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की साबित क़दमी इंतेहा ये सब्र थी जो बे मिस्ल है।

सवाल : इसकी क्या वजह है कि नमरूद और नमरूदियों ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को खत्म करने के लिये आग में जला डालने के सज़ा

तजवीज़ की हालांकि ख़त्म करने के लिये और भी बहुत से तरीके थे मसलन कत्ल वग़ैरह?

जवाब : मुफ़स्सेरीन किराम ने उसकी चार वजह ब्यान फ़रमाई हैं। एक यह कि ताकि इब्राहीम का नाम व निशान दुनिया से मिट जाये कब्र भी न बन सके। दोम यह कि ताकि सब मश्वरा देने वाले इस सज़ा के जारी करने में शरीक हो जायें और सब लोग खुशी खुशी भाग भाग कर लकड़ियां जमा करें और यह सज़ा खूब मश्हूर होकर सब के लिये आंइदा इबरत बन जाये सब लोग इस सज़ा को अपने दीन की ख़िदमत समझ कर ज़्यादा से ज़्यादा दिलचस्पी से हिस्सा लें। कोई भी इस को ज़ालिमाना सज़ा न कह सके। सोम यह कि नमरूद और नमरूदी अवाम को यह बताना समझाना चाहते थे कि इब्राहीम का यह बुत शिकनी वाला जुर्म सब जुर्मों से ज़्यादा सख़्त है। इसलिये इसकी सज़ा भी सबसे ज़्यादा सख़्त होनी चाहिये और वह जलाना ही है। अहले ईमान को जलाना कुफ़्फार व मुश्रेकीन की फितरत हैं कौमी फसादात में मुशाहेदा है। चौथी वजह यह है कि नमरूदी मज़हब में तीन चीज़ों की पूजा होती थी (१) सूरज देवता की (२) मूर्तियों की (३) आग की। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बरमला कहा था कि ऐ नमरूदियो! जिनकी तुम पूजापाट और इबादत करते हो वह ज़र्रा भर किसी का कुछ नुक़सान नहीं कर सकते। नमरूद लोग अवाम को यह बताना चाहते थे कि हम जिनकी पूजापाट और इबादत करते हैं वह नुक़सान और सज़ा दे सकते हैं। यह बात सूरज से भी न होती और मूर्तियों से भी न मिलती तो उन्होंने अपने तीसरे देवता को सज़ा देने के लिये मुकर्रर किया कि इब्राहीम ने बुत देवताओं को तोड़ा तो आग देवता ने उसको जला डाला। यह लकड़ियां जमा करना वग़ैरह तो फकत अपने खुदाओं की मदद करना मकसूद था। असल सज़ा तो आग देवता ने ही दी हैं यही वजह है कि रब तआला ने आग सलामती बनाकर उनके सारे नापाक मंसूबे सारे अकीदे ख़ाक में मिला दिये और इब्राहीम अलैहिस्सलाम का यह नारा को सदा सलामत रखा। इसलिये यहां नारे नमरूद को गुलज़ार बनाना ज़रूरी था वरना कुफ़्फार व मुश्रेकीन का कुफ्र और ज़्यादा मज़बूत हो जाता। यही वजह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर सिर्फ यही आग उस दिन के लिये सलामती का तोहफा बन गयी अैर उस दिन आग पूरी दुनिया में कहीं भी न जली। इसके बाद कोई भी आग बरदन व सलामन न बनी। आपको

हमेशा आग की तपिश आती महसूस होती थी। मौसम गिरमां व सरमां में आप अपने जिस्म पर हरारत महसूस करते थे। इस जवाब से यह सवाल भी उठ गया कि क्या वजह है कि अल्लाह ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को तो आग से बचा लिया मगर ज़िक्रिया अलैहिस्सलाम को ओर से हज़रत यहया और कई दीगर अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को कुफ्फार की तलवार और क़त्ल से न बचाया।

सवाल : अल्लाह तआला ने फरमाया ऐ आग सलामती के साथ इब्राहीम पर ठंडी हो जा। अल्लाह का यह ख़िताब आग से है हालांकि आग जमादात में से है और जमादात को ख़िताब करना तो अबस है क्योंकि जमादात न सुनते हैं। न बोलते हैं न समझते हैं। यह बात खुद कुरआन मजीद में भी साबित है। बहुत सी आयात में बुतों की बुराई करते हुए यही फरमाया गया कि यह बुत जिन की तुम ऐ काफिरों पूजा करते हो यह न सुनते हैं न बोलते हैं। फिर यहां आग को क्यों ख़िताब किया गया? मुन्केरीन कुरआन इस को तज़ाद ब्यानी कहेंगे या फिर सब जमादात की खिताबात को बेकार कहेंगे। बहरकैफ दोनों सूरतों में कुरआन मजीद पर एतेराज़ होता है।

जवाब : इस सवाल के दो जवाब हो सकते हैं (१) इमाम अबू बकर राज़ी ने यह जवाब दिया कि खिताब तीन क़िस्म का होता है ख़िताबे तकवीनी ख़िताबे तहवीली ख़िताब तकल्लुम। पहले दो को मजाजनन ख़िताब कहा जाता है। मसलन जिस चीज़ का वजूद ही न हो उस मअदूम शय को कहना कि हो जा यह खिताब तकवीनी है। इसमें मुखातिब का बोलना, सुनना दरकिनार मौजूद होना ही ज़रूरी नहीं है। और किसी मौजूद शय पर अपना हुक्म जारी करते हुए इसकी एक हालत से दूसरी हालत में बदलने को ख़िताब करना यह खिताब तहवीली है। इसमें उस शय का सिर्फ मौजूद होना ज़रूरी है, मुखातिब की बात को सुनना समझना ज़रूरी नहीं। जमादात से खिताबाते इलाही इसी किस्म के होते हैं और मकसद यह होता है कि उस चीज़ पर यह हुक्मे इलाही जारी हो गया और उसने यह हुक्म अपने पर बिला इरादा ले लिया। वह लेने पर मजबूर व मकहूर है। लेकिन ख़िताबे तकम्मुल में मुखातिब चीजें मौजूदगी भी ज़रूरी, अक़्ल व फहम फिक्र व तकम्मुल होना भी ज़रूरी है। इसको खिताबे हकीकी कहते हैं। यह ख़िताब सिर्फ जानदार चीज़ों से ही हो सकता है। लिहाज़ा कुन फैकून को खिताब तकवीनी है। या नारन कोनी को खिताब तहवीली है मगर मेरे नजदीक

यह जवाब कमज़ोर है। सही और मज़बूत जवाब यह है कि अशयाए आलम आम इंसानी उलूम व अकलियात के एतेबार से तो बहुत सी किस्मों में मुनकसिम हैं यह नबातात हैं यह हैवानात। मगर अहलुल्लाह की कुव्वत अलमिया और मुशाहेदात समअया व तर्जबाते इमलिया में तमाम जमादात नबातात हैवानात शहजरात हजरात में भी कुव्वते नुतक व समाअत मौजूद है। चुनांचे एक हदीस पाक में आता है कि मक्का मुकर्रमा का एक पत्थर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आपके बचपन शरीफ में आप को आते जाते सलाम किया करता था जिसकी ख़बर ख़ुद आकाए दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फतह मक्का के बाद सहाबए किराम को दी कि यहां एक पत्थर होता था जो हमको सलाम करता था। मोजिज़ात में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मर्तबा एक दरख़्त को बुलाया तो वह दरख़्त दौड़ता हुआ चला आया और दोबारा हुक्म दिया तो वापस उसी जगह पर चला भी गया। पुख़्ता पक्के चावलों की तसबीह तो ख़ुद सहाबा किराम ने अपने कानों से सुनी, ज़िक्र ख़ैरे अनाम की किताब में लिखा है कि एक दफ़ा साईं तवक्कुल शाह रहमतुल्लाह अलैहि ने यही मोजिज़ा दरख़्त सुनाते हुए वैसे ही तसलीमन एक दरख़्त की तरफ़ इशारा फ़रमा दिया कि नबी करीम आकाए दो जहां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस तरह फ़रमाया होगा कि आजा वहां मौजूद मुरीदीन ने देखा कि हज़रत सायें तवक्कुल शाह रहमतुल्लाह अलैहि के इशारा करते ही वह करीबी दरख़्त भी दौड़ता हुआ चला आया, जिसकी महज़ तसलीमन साईं साहब ने इशारा फ़रमाया था। मौलाना रूमी फ़रमाते हैं-

नतक़ आब व नतक़ ख़ाक व नतक़ गुल
हस्त महसूस अज़ हवासे अहले दिल

यह अंबिया औलिया की शाने कैफ़ियत है तो बारगाहे किब्रियाई में कौन जमादात रह सकता है। वहां तो सब के कान हुक्म रब्बी पे हमा वक़्त लगे हुए हैं। यह सब अक़्ल के बे होश बेगोश जमादात हजरात होना तो हम अवाम के लिये है। रहा बुतों को जमादात फ़रमाना, ना सुनने न बोलने वाला न ही कुछ नफ़ा नुक़सान देने वाला फ़रमाना अवाम व कुफ़्फ़ार के एतेबार से है। इनकी कमज़ोरी बे कुव्वत और फ़रियाद बेफ़ायदा। इबादत बेकार और फ़िजूल हैं। इनसे आस लगाने से मना करने के लिये है कुफ़्फ़ार या अवाम का किसी जमादात को

पुकारना वाक़ई हिमाक़त ही है।

सवाल : इसराईली तारीख़ियों और इसलामी तफ़सीरों, रिवायतों में लिखा है कि नारे नमरूद जलाने का मश्वरा एक उजमी कुरदी ने दिया था और एक क़ौल के मुताबिक़ सबसे पहले आग भी इसी कुरदी ने लगाई। मिनजीक (गौफन) बनाई और तमाम जानवरों में आग को तेज़ करने के लिये सिर्फ़ गिरगिट फूंके मारता था ताकि आग तेज़ हो। वह कुरदी भी मरकर फ़ना हो गया और वह गिरगिट भी मर गया तो क्या वजह है कि हदीस पाक के इरशाद में ता क़यामत गिरगिट के लिये सज़ा मुक़र्रर हो गयी कि इसको मारना सवाब है मगर हर कुरदी के लिये नहीं। अगर बा एतेबारे जुर्म देखा जाये तो जैसे फ़क़त इसी एक कुरदी का जुर्म था तो इसी तरह फ़क़त एक गिरगिट का ही जुर्म था न कि ता क़यामत सब गिरगिट का। और अगर कहा जाये कि यह जुर्म ता क़यामत जारी रहेगा तो फिर कुरदी इंसानों को भी ता क़यामत कुछ सज़ा होनी चाहिये। सिर्फ़ गिरगिट को सज़ा मिलता रहना तो इंसाफ़ के ख़िलाफ़ है। (आर्य)

जवाब : चार चीज़ें वह हैं जो इंसानों और जानवरों में मुश्तक हैं यानी **दोनों में पायी जाती हैं। मगर** उसके असबाब और वजह मुख़्तलिफ़ हैं। (१) **मुहब्बत (२) नफ़रत (३) गुस्सा** (४) ईज़ा रसानी। इंसानों में यह चारों चीज़ें ग़ैर **फ़ितरी होती हैं। बजुज़** मां की ममता के मायने वालिदा की अपनी औलाद से **मुहब्बत सिर्फ़ यह ममता ही इंसानों** में फ़ितरी चीज़ है, मगर तमाम हैवानात में **चारों चीज़ें फ़ितरी जबिल्ली** (पैदाईशी नसली) हैं। ग़ैर फ़ितरी चीज़ आरज़ी होती **हैं और फ़ित्री चीज़ दायमी होती** है। दूसरा फ़र्क़ यह कि फ़ितरी चीज़ जिन्सी **होती है कि पूरे** जहान के हर **फ़र्द** में वह पायी जाती है लेकिन ग़ैर फ़ितरी आदत **और चीज़ शख़्सी और इनफ़ेरादी** होती है चूंकि यह चारों चीज़ें हैवानात में फ़ितरी **हैं इसलिये जिन्सी हैं और** जो **चीज़ें** जिन्सी में शामिल हों वह इज्तेमाई और अबदी **होती हैं। मसलन इंसान की नफ़रत**, मुहब्बत, गुस्सा और ईज़ा रसानी फ़ितरी **नहीं इसलिये इनकी जिन्स में यह शामिल नहीं**। यही वजह है कि इंसानी नफ़रत, **मुहब्बत, गुस्सा और ईज़ा के कुछ असबाब हैं** जो दुनियावी ज़िन्दगी में आरज़ी **पैदा होते रहते हैं। यह असबाब वजूद मज़हब** या सियासत या हिमाक़त या **तकब्बुर या क़ौमियत या वतनियत या रिश्तेदारी** की वजह से होती है। जानवरों **में नफ़रत, गुस्सा, बुज़दिली, दिलेरी ईज़ा रसानी** फ़ितरी चीज़ है। मज़हब या

क़ौमियत सियासत रिश्तेदारी या वतनियत की वजह से नहीं बल्कि यह ख़सायल उनके जिन्स में दाख़िल व शामिल हैं। मसलन कुत्ता किसी मुल्क, किसी ज़माने का हो फितरतन मालिक से मुहब्बत करने वाला ग़ैर से नफरत करने वाला है। चुहा हर दौर हर इलाके में मूज़ी है। कव्वा हर इलाके में होशियार, लोमड़ी हर ज़माने में हर इलाके की अयार है। जब यह कायदा कुल्लिया हकीकतन समझ लिया तो याद रखो कि गिरगिट फितरतन फासिक मूज़ी और नबी की ज़ात से दुश्मनी रखने वाला है। यानी मज़हबन वहाबी नहीं बल्कि फितरतन वहाबी है। इसलिए इसको सज़ा भी जिन्सन होगी न कि फरदन। मगर कुर्द इसांन है। इसकी किसी से नफरत मुखालेफत, दुश्मनी जिन्सन न थी बल्कि उसके कुफ्रिया दीन की वजह से थी। अगर वह मोमिन होता या हो जाता तो उसको ऐसा मश्वरा देने की हिम्मत न होती न वह देता। और अगर बाद में भी अपनी जिन्दगी के अंदर मोमिन व तायब बन जाता तो यकीनन सज़ाए अबदी से माफी मिल जाती। इसी इनफेरादियत की वजह से दूसरे कुरदों को इसकी सज़ा में शामिल नहीं किया जा सकता। ख़्वाह वह मोमिन हों या काफिर। हां अलबत्ता बाद के कुफ्फार इस कुर्द के इस मश्वरे को अच्छा कहने वाले इसी तरह बदबख़्त ज़रूर होंगे और इनको हुकमन दुश्मने इब्राहीम व तरफदारे नमरूद ज़रूर कहा जायेगा। जैसे कि रब तआला ने कातलीन अंबिया यहूदियों को अच्छा कहने वाले बहुत बाद के यहूदियों को भी कातलीने अंबिया में शुमार फरमाया। मगर सज़ा उनकी मिस्ल न दी गयी। जैसा कि यज़ीद पलीद की हिमायत करने वाले वहाबी वग़ैरह भी यज़ीद की तरह शरअन बे दीन हैं। इस बिना पर गिरगिट की अदावते इब्राहीम इसके मज़हब या सियासत या क़ौमियत वतनियत की वजह से नहीं थीं बल्कि जिन्सी जबिल्लत, फितरत की वजह से थी। जब जिन्स एक तो फितरत एक लिहाज़ा सज़ा भी ता कयामत सबको एक। अगर एक चुहा नुक़सान करे तो सब को ज़हर डाला जाता है। यह बे इंसाफी नहीं होती तो फिर फरमाने रसूल भी बे इंसाफी नहीं।

सवाल : पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रहमतुललिल आलेमीन हैं तो अगर यह सही है तो फिर आपने तलवार क्यों उठाई, जंगें क्यों कीं? जिहाद के लिये लश्करे खूंख़्वार क्यों तैयार किया? (आर्य, ईसाई, यहूदी)

जवाब : इस सवाल का जवाब थोड़ी तफसील से देना ज़रूरी समझता हूं।

आपकी तलवार रहमत थी। तलवार तलवार में फ़र्क होता है। अगर तलवार किसी पर जुल्म करने के लिये उठाई जाये तो गुनाह है लेकिन अगर ज़ालिम का सर काटकर मज़लूम की हिफ़ाज़त के लिये उठायी जाये तो सवाब और रहमत है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो तलवार उठाई है वह किसी पर जुल्म करने के लिये नहीं बल्कि इंसानियत के दुश्मन अमन के बागी और ज़ालिमों के जुल्म का सर काटने के लिये उठाई है। आपकी तलवार ने ज़ालिमों से मज़लूमों को बचाया। ज़मीन से फ़ित्ना फ़साद मिटाया। झगड़ा चुकाया। कुफ़्र को दबाया। ज़ालिम इंसानों का सर क़लम हुआ। इंसानियत और अमन के दुश्मनों की गर्दनें कटीं। फ़िरओनों के सर झुके। शैतान से इंसानों को निजात मिली। इंसानों को अमन सलामती और मआशी ख़ुशहाली हासिल हुई और तमाम इंसानी बिरादरी को अदल व इंसाफ़ और मसावात का निज़ाम मिला। पैग़म्बरे इस्लाम की सीरत पढ़ो। आपका अपने जानी दुश्मनों के साथ हुस्ने सलूक देखो कि आपने अपने जानी दुश्मनों पर क़ाबू पाकर भी उन्हें माफ़ कर दिया और आज यह एटमी दुनिया मैदाने जंग में अपने दुश्मनों के साथ जो ज़ालिमाना सलूक करती है वह सब अयां और ब्यां है। अक़वामे आलम की तारीख़ का मुताला कीजिये तो मालूम होगा कि १९१७ ई० में रूस में इंक़लाब की तारीख़ बताती है कि लीनन के मौत के बाद स्टालन जब वहां का सरबराह हुआ तो उसने लैलन के तमाम हामियों को मौत के घाट उतार दिया। १०९९ ई० में जब ईसाईयों ने बैतुल मक़दिस पर क़ब्ज़ा किया तो वहां की मुस्लिम आबादी का क़त्ले आम हुआ। मशहूर मोर्रिख़ लेबननान तारीख़ यूरोप में लिखता है कि ईसाईयों के घोड़ों के पांव घुटनों तक मुसलमानों के खून में डूबे हए थे। मज़ीद वहशत व बर्बियत का नमूना देखना हो ज़वाले स्पेन, सकूत ग़रनाता, कोरिया, व यतनाम, बोसनिया, ईराक़, अफ़ग़ानिस्तान, फ़िलीस्तीन हीरोशीमा, नागासाकी पर अमेरिका की बमबारी, सलामती कोंसिल के ज़रिये आलम इस्लाम की पामाली, मुस्लिम दुनिया में अमेरिका की गुंडागर्दी, आर्यों और द्रावणों की जंग, बुधों और ब्रहमणों की लड़ाई हिंदुस्तान में फ़िरक़ापरस्तों की इंसानियत से गिरी हुई हरकतें और दिल सोज़ वाकियात यह सब इंतक़ामी वहशत व बरबरियत की नंगी तस्वीरें हैं जिसे देखकर शैतान भी शरमाता है। दौरे जदीद में यूरोप और अमेरिका ने अपनी सियासी मफ़ाद के लिये इस्लाम पर जो इल्ज़ाम लगाये है। वह यह है कि इस्लाम एक

खूंख्वार मजहब है और वह अपने मानने वालों को खूंरेजी की तालीम देता है। लेकिन अगर तारीख़ के चेहरे से नकाब हटाया जाये तो यूरोप और अमेरिका खुद सबसे बड़े अमन के दुश्मन और इंसानियत के लिये खूंख्वार दरिंदे नज़र आयेंगे। उनके दामन बे गुनाहों के खून से सुर्ख दिखाई देंगे। इस्लाम पर दहशतगर्दी का इल्जाम लगाने वाले ज़रा तारीख़ के आईने में अपना मकरूह चेहरा देखें फिर पता चलेगा कि दहशतगर्द कौन है। इस्लाम पूरी दुनिया के लिये अमन का पैग़ाम लेकर आया है। दहशतगर्दी से इस्लाम का कोई ताल्लुक नहीं। अलबत्ता इतना कसूर कभी कभार हम से ज़रूर हुआ है कि जब हमें कोई मारने के लिये आया है तो हमने भी जवाब में हाथ उठा दिया है और अपनी दिफ़ाअ व बचाव के लिये हाथ उठाना अगर दहशतगर्दी है तो दुनिया की हर कौम आपको दहशतगर्द नज़र आयेगी। इस्लाम को अमेरिका, यूरोप और ग़ैर मुस्लिम लोगों ने समझने में सख़्त गलतियां की हैं। सच जो पूछो तो ग़ैर मुस्लिम दुनिया ने इस्लाम को समझा ही नहीं है। इस्लाम को किसी इंसान से दुश्मनी नहीं जो कुछ है वह जुल्म से है। ज़ालिम से है और ज़ालिम हुकूमतों से है। फ़ित्ना फसाद से है, जरायम और बुराईयों से है। इस्लाम ने कभी भी किसी पर अपना अकीदा मुसल्लत नही किया और न ही इस्लाम में ग़ैर मुस्लिम होने के बाइस किसी पर जुल्म करने की इजाज़त हे मगर यूरोपियन ब्लाक अमेरिका और उसके हामियों ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ महाज़ आराई के जुनून में इस्लाम और मुसलमानों की हमेशा ग़लत तसवीरें पेश की हैं। मुसलमान मुल्कों को दूसरे मुसलमान मुल्कों और हुकूमतों से यही दुनिया की नाम निहाद सुपर पावर कहलाने वाली ताक़तें अपने मफ़ाद के लिये लड़ाने की बीज होती हैं और जंग कराने के बाद अपने हथियार दिल खोल कर बेचती हैं। एक तफर जंग की तबाहकारियों के अलाव में आलमे इस्लाम भस्म होता है और दूसरी तरफ़ दुनिया भर के मुसलमानों को लड़ने वालों के ख़ानों में फिट करके उन्हें जंगजू, बदअमन, दहशतगर्द कहा जाता है।

अक़वामे आलम की तारीख़ का मुताला किया जाये तो पता चलता है कि तरक़्क़ी याफ़्ता दुनिया ने हुसूले इक़्तेदार के ख़ातिर इंसानियत को भूक प्यास गुरबत, व अफ़लास, हलाकत व बरबादी के सिवा कुछ नहीं दिया है। पहली और दूसरी जंगे अज़ीम में होने वाली जानी नुक़्सानात की लिस्ट पढ़िये और इस्लामी जिहाद को जुल्म से ताबीर करने वालों का असली मनहूस, मकरूह चेहरा

देखिये। कहने के लिये कोई कुछ भी कहे मगर इस्लाम की पूरी तारीख़ से एक भी ऐसा वाकिया कोई माई का लाल नहीं पेश कर सकता है जिससे यह साबित हो कि मुसलमानों ने मासूम बच्चों, औरतों, बूढ़ों, कमज़ोरों और निहत्ते शहरियों पर कभी हाथ उठाया हो या किसी ग़ैर मुस्लिम को जबरन दाख़िले इस्लाम किया हो। तारीख़ शाहिद है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ालिमों के सर कूबी के लिये कहीं लश्कर रवाना फरमाते तो आप इस्लामी फौज के कमांडरों को सबसे पहले यह नसीहत फरमाते कि ख़बरदार मासूम बच्चों, अपाहिजों, बूढ़ों, बीमारों, कमज़ोरों, किसानों, मज़दूरों, औरतों और मज़हबी पेशवाओं पर हाथ न उठाना, फलदार दरख़्तों को न काटना, दूध देने वाले जानवरों को हलाक न करना, और न ही किसी के मज़हबी इबादत ख़ानों को गिराना। यही मेरी नसीहत है और यही मेरा हुक्म है।

आज जो लोग इस्लाम के नज़रिये जिहाद पर तरह तरह के एतेराज़ात करते हैं मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि वही इंसाफ़ से बतायें कि क्या दुनिया में कोई ऐसी क़ौम गुज़री है जिसके जंगी उसूल में अदल व इंसाफ़ व एहतेराम इसानियत का इस तरह लिहाज़ रखा गया हो जिस तरह इस्लाम ने रखा। आज तो जब जंग शुरू होती है तो पुर अमन शहरों और आबाद बस्तियों को एटम बमों से उड़ा कर रख दिया जाता है। फलक बोस इमारतों को मिनटों में मलबे का ढेर बना दिया जाता है। औरतों, बच्चों, बूढ़ों, कमज़ोरों, बीमारों किसी से दर गुज़र नहीं की जाती। अस्पतालों दर्सगाहों इबादतख़ानों तक का एहतेराम पसे पुश्त डाल दिया जाता है। मैं अपने इस दावे के सबूत में ईराक, अफग़ानिस्तान, और फ़िलीस्तीन को पेश करना चाहता हूं जिस पर तारीख़ की अब तक सबसे ज़बरदस्त बमबारी की गयी। मगर ऐ दुनियावालो! आओ मेरे पैग़म्बर रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिन्दगी देखो, फतह मक्का के दिन मेरे नबी ने अपने जानी दुश्मनों को भी माफ कर दिया। मेरे पैग़म्बर की जिन्दगी का कोई भी गोशा वज़ावी यह ज़ुल्म व बरबरियत का नहीं बलिक हर गोशा हर पहलू इंसानियत के लिये शफकत ही शफकत है रहमत ही रहमत है।

आए दुनिया में बहुत पाक व मुकर्रम बनकर
कोई आया न मगर रहमते आलम बनकर

सवाल : कुरआन में है कि बेशक अल्लाह ईमान वालों की मदद करने पर कवी व कादिर और अज़ीज़ ग़ालिब है तो फिर बाज़ दफ़ा मुसलमान कुफ्फार से शिकस्त क्यों खा जाते हैं जैसे कि जंगे उहद में मुसलमानों की फ़तह शिकस्त में बदल गयी? अरगचे वह शिकस्त आरज़ी और वक़्ती ही थी। ख़्वार ज़म शाह चंगेज़ से खलीफ़ा बग़दाद हलाकू से, बहादुर शाह ज़फ़र और सुल्तान टीपू अंग्रेज़ कुफ्फार से शिकस्त खा गये, क्या वजह?

जवाब : अल्लाह का यह वादा बरवक़्त बिल्कुल सच्चा है मगर मुतलक नहीं बल्कि मुक़ैयद व मशरूत है। यानी उन मोमिनों की मदद होगी जो उसके दीन की मदद करेंगे। मुसलमान होना सच्चे अक़ायद का नाम है और मोमिन होना अच्छे आमाल का नाम है और अच्छे आमाल आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पूरी इताअत व इत्तेबा में मज़बूती से हर वक़्त क़ायम रहें तो कभी शिकस्त न हो। ख़ुलफ़ाए राशिदीन की फ़तूहात, हिंदुस्तान पर ग्यारह सौ साला मुसलमानों की हुकूमत का दौर, लेकिन जब भी मुसलमानों ने दीनी मदद में कमज़ोरी दिखाई इश्के इलाही व मुहब्बत मुस्तफ़ाई में कमी दिखाई, फ़रमाने नबवी से लापरवाही बरती तो फ़ौरन शिकस्त खाई। जंगे उहद की वक़्ती शिकस्त तरीके मुस्तफ़ी को छोड़ने पर हुई। ख़्वारज़म शाह की शिकस्त की वजह मुसलमान हुकूमतों की आपस में ना इत्तेफ़ाक़ी व बे इत्तेहादी बल्कि कुफ़्र नवाज़ी और मुख़बरी, ग़द्दारी का नतीजा था, बग़दाद की शिकस्त कमज़ोर सियासत, अंदरूनी दुश्मनी कुर्सी के लालची राफ़ज़ी वज़ीर पर अंधा एतेमाद और ख़लीफ़ा की अहमेक़ाना रविश थी, सलतनते हिंद बहादुर शाह जफ़र और शेरे मैसूर सुलतान टीपू सुल्तान की शिकस्त भी, बद अमली, हिंदु नवाज़ी और मुसलमानों की अंदरूनी ग़द्दारी थी। स्पेन में आठ सौ साला मुसलमानों का शानदार दौरे हुकूमत का ख़ात्मा भी आपसी ना इत्तेफ़ाक़ियों ग़द्दारियों की वजह से हुआ। वादा रब्बानी तो बरहक़ और हर हाल में मौजूद है लेकिन हर महाज़ पर शिकस्त व नाकामी अपनी कोताहियें का ख़मियाज़ा होता है जिस की वजह से मुसलमान कुफ्फ़ार व मुश्रेकीन से शिकस्त खा जाते हैं।

उनके जो हम गुलाम थे खल्क़ के पेशवा रहे
उनसे फिरे जहां फिरा आयी कमी वक़ार में

सवाल : सुन्नी बरैलवी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इतनी तारीफ करते हैं कि इन्हें अल्लाह का शरीक व हम मनसब बना देते हैं। (वहाबी)

जवाब : यह ग़लत और अहमेक़ाना इल्ज़ाम है हम शाने नबी ब्यान करके शरीक नही बनाते बल्कि हबीब बनाते हैं। शरीक बनाने में तो नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नुक़सान है क्योंकि शरीक आधे का मालिक होता है हबीब पूरे का मालिक। शरीक बे इख़्तेयार होता है हबीब बा इख़्तेयार। शरीक हर काम व हर चीज़ में इजाज़त का मोहताज होता है हबीब बिला इजाज़त मुख़्तार होता है। शरीक न कुछ तोड़ सकते न कुछ मोड़ सके मगर हबीब चांद तोड़ सकता है, सूरज मोड़ सकता है, बादल बरसा सकता है, उंगलियों से पानी के चश्मे बहा सकता है। अल्लाह का यह इंतेख़ाब हकीमाना है जिस पर किसी को न सवाल का हक़ है न एतेराज़ का। इस इंतेख़ाब रिसालत से कोई अल्लाह का शरीक नही बन सकता क्योंकि रब तआला का इंतेख़ाब हबीबुल्लाह बनाता है।

सवाल : कुरआन व अहादीस में है कि दीन आसान है। दीन इस्लाम में तुम पर कोई सख़्ती नहीं है हालांकि इस्लामी क़ानून बड़े सख़्त और सज़ायें बड़ी शदीद हैं। कोई मामूली चोरी करे तो हाथ काटे जायें कोई ज़िना करे तो संग सार किया जाये कोई जान बूझकर फ़र्ज़ रोज़ा तोड़ दे तो कफ्फ़ारे में दो माह के मुसलसल रोज़े रखे, वग़ैरह वग़ैरह। यह सब इस्लाम में सख़्तियां हैं फिर दीन आसान कहां है? (बेदीन, गुमराह लोग)

जवाब :यहां आसान से मुराद वह सख़्तियां हैं जो पहली उम्मतों के हर हर फर्द पर हर वक़्त लाज़िम वाजिब थीं जिनको अमली इबादात में शामिल कयिा गया था। इस्लाम में वह सख़्तियां नहीं और इस्लाम की इबादात व आमाल सख़्त नहीं बहुत ही आसान हैं। पहली शरीयतों में ईमान वालों के लिये जंग फ़र्ज़ थी मगर माले ग़नीमत लेना हराम था, कुरबानी वाजिब मगर उसका गोश्त खाना मना था, नापाक कपड़े को धोकर पाक नही किया जा सकता था बल्कि उसको काट कर फेंक देना पड़ता था, इबादत के लिये सिर्फ़ मुकर्ररा इबादतगाह में जाना लाज़िम था, हर जगह इबादत जायज़ न थी, क़सम से छुटकारा बज़रिये कफ्फ़ारा न हो सकता था, मगर इस्लाम मज़हब में ऐसी कोई सख़्ती नहीं। मैदान

हो मकान हो, खेत खलियान हो या दुकान हो, मुसलमान जमीन के किसी भी हिस्से पर नमाज पढ़ सकता है। इसकी इबादत में कोई फर्क नहीं। अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदके में पूरी ज़मीन को हमारे लिये मस्जिद बना दी है। हम कहीं भी नमाज़ पढ़ लें, हमारी नमाज़ हो जायेगीं। अमल के एतेबार से दीन इस्लाम बहुत ही आसान है। पानी न मिले तो तयमुम कर लो, कसम खा लिया है तो कफ्फारे में तीन रोज़े रख लो। कपड़े में एक दिरहम से ज़्यादा नापाकी लगी हो तो उसे धो डालो। इस्लाम अमली एतेबार से बहुत ही आसान दीन है जिस पर अमीर, ग़रीब, फकीर हर कोई आसानी से मिल कर सकता है।

सवाल : किसी की ताज़ीम के लिये खड़ा होना मना है। सहाबाए किराम जब हुजूर को देखते तो खड़े न होते थे क्योंकि कि जानते थे कि हुजूर को यह चीज़ नापसंद है। हुजूर खुद इरशाद फ़रमाते हैं कि जो आदमी यह पसंद करेगा कि लोग उसके सामने ताज़ीमन खड़े रहें तो ऐसा शख़्स जहन्नमी है। इस हदीस से मालूम हुआ कि अगर कोई बड़ा आदमी आए तो उसकी ताज़ीम के लिये न खड़ा होना चाहिये। मिलाद शरीफ में तो हुजूर आते भी नहीं फिर ताज़ीमी क़याम क्यों कर जायज़ हो सकता है? (वहाबी, गुस्ताख़े रसूल)

जवाब : क़यामे ताज़ीमी करना और न करना ज़माना और हालात और अशख़स के लिहाज़ से मुख़्तलिफ़ होता है। सहाबा किराम ने कभी तो हुजूर के लिये क़याम किया और कभी न किया जिससे मालूम हुआ कि सहाबए किराम हुजूर की तशरीफ़ आवरी पर खड़े हो जाते थे और कभी नहीं। ताज़ीम के लिये क़याम सुन्नत है। हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा शक्ल व सूरत में आदात व अख़लाक़ में अतवार व किरदार में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबा थीं और सरकार आपसे बेहद मुहब्बत फरमाते थे। आपके मकान पर जब सरकार तशरीफ लाते तो आप ताज़ीम के लिये खड़ी हो जातीं और जब आप के काशानाए अक़दस में हाज़िर होंतीं तो आप खड़े होकर इकराम व शफकत फ़रमाते और सर को बोसा देते। ख़ातूने जन्नत के लिये हुजूर का खड़ा होना ताज़ीम के लिये था। एक और मकाम पर हुजूर ने हज़रत सअद बिन मअज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की इज़्ज़त अफज़ाई फ़रमाते हुए फ़रमाया, अपने सरदार या

अपने से बेहतर के लिये खड़े हो जाओ। बुखारी शरीफ़ की इस हदीस पाक से मालूम हुआ कि किसी भी साहब फ़ज़ीलत के आमद पर खड़े होना अमर मुसतहसन है और यह क़याम सिर्फ़ खड़ा होना या उठने के मायने में है। जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कई मक़ामात पर साबित है। जैसे कि फ़तह मक्का पर हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अकरमा बिन अबू जहल के लिये क़याम फ़रमाया। और हज़रत अदी बिन हातिम ताई जब हाज़िरे बारगाहे रिसालत होते तो सरकार उनकी इज़्ज़त अफ़ज़ाई के लिये खड़े हो जाते। नीज़ इब्ने अब्बास की रिवायत के मुताबिक़ हुज़ूर ने बनी हाशिम, आले फ़ातिमा ज़ैद बिन हारसा और दीगर सहाबा किराम के लिये उम्मते मुस्लेमा को उनके लिये क़याम आदाब सुन्नत से है। और वह क़याम जिससे मना किया गया है वह खड़े रहने के मायने में है जैसे कि हाकिम या बादशाह के लिये होता है कि वह तख़्त या कुर्सी पर बैठा रहे और नौकर चार ख़िदमत में हाथ बांधे हमेशा खड़े रहें जैसा कि शाहाने हिंद और सलातीने आलम कराते थे। ऐसे क़याम से रोका गया है। ऐसा क़याम व ताज़ीम शरीयत में हराम है। मालूम हुआ कि ताज़ीम के लिये उठना और खड़े हो जाना यह जायज़ और दुरुस्त है मगर किसी की ताज़ीम के लिये हाथ बांध कर हमेशा खड़े रहना यह हराम है।

शैख़ुल इस्लाम ताजुद्दीन सुबकी जलीलुल क़द्र उलमाए शवाफ़ेअ में से हैं। एक महफ़िले मिलाद पाक में ज़िक्र पाक सुनकर ताज़ीमन खड़े हुए। उनकी मताबअत में सब लोग भी खड़े हो गये। यह क़याम ज़िक्रे हबीब पर था और ताज़ीम के इस अंदाज़ से पूरी मजलिस पर एक अजीब सुरूरे नूर छा गया। इमाम मालिक मदीना पाक की ज़मीन पाक पर कभी घोड़े पर सवार न हुए और न ही जूता चप्पल पहना और न ही कभी आप रफ़अ हाजत किये। कहिये मदीना पाक की यह ताज़ीम किसी सहाबी ने की थी? नहीं। मगर इमाम मालिक का जज़्बाए दिली है ऐन सवाब है और अहले ईमान के लिये हिदायत की रौशनी है। इसी तरह फतावा शामी में है ज़िक्र विलादत सुनना और ताज़ीम के लिये खड़े हो जाना महमूद और अमर मुस्तहसन है। इन तमाम दलायल से साबित हुआ कि क़यामे ताज़ीमी न सिर्फ़ जायज़ है बल्कि सुन्नत और तरीक़ा अस्लाफ़ है।

सवाल : ख़ामिमुन्नबीईन के मायने हैं नबियों से अफज़ल जैसे कहा जाता है कि फलां शख़्स ख़ातिमुन्नबीईन या ख़ातिमुल मुहद्देसीन है। इसके मायने यह नहीं कि शायरों या मुहद्दिसों में आख़िरी शायर या आख़िरी मुहद्दिस है बल्कि मुहद्दिसों से अफज़ल है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को फरमाया, तुम मुहाजिरीन में ख़ातिम यानी अफज़ल हो न यह मायने कि आख़िरी मुहाजिर हो क्योंकि हिजरत तो कयामत तक जारी रहेगी। लिहाज़ा आपके बाद नबी आ सकते हैं हां आप सबसे अफज़ल हैं और ख़ातिमुन्नबीईन के मायने यही हैं। (वहाबी, मिरजाई)

जवाब : ख़ातिम से बना है जिसके मायने अफज़ल के नहीं। वरना ख़त्म के मायने यह होते कि अल्लाह ने काफिरों के दिल अफज़ल कर दिये। जब ख़त्म में अफज़लियत के मायने नही तो ख़ातिम में जो इससे मुशतक़ हैं यह मायने कहां से आ गये। लोगों का किसी को ख़ातिमुल शुअरा कहना मुबालग़ा होता है गोया अब इस शान का शायर ना आयेगा। कहा करते हैं कि फलां पर शेर गोई ख़त्म हो गयी रब तआला का कलाम मुबालग़ा और झूट से पाक है, हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु उन मुहाजिरीन में से हैं जिन्होंने मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा की तरफ हिजरत की यह आख़िरी मुहाजिरीन हैं क्योंकि इनकी हिजरत फतह मक्का के दिन हुई जिस के बाद यह हिजरत बंद हो गयी। लिहाज़ा वहां भी ख़ातिम आख़िर के मायने में है। सरकार ने फरमाया, आज के बाद अब मक्का से कोई हिजरत न होगी। अगर वहां ख़ातिम के मायने अफज़ल हो तो लाज़िम आयेगा कि हज़रत अब्बास नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी अफज़ल हो जावें क्योंकि हुजूर भी मुहाजिर हैं। तो मालूम हुआ कि ख़ातिम के मायने अफजल के नहीं बल्कि आख़िरी के हैं जिसके बाद कोई न आये।

सवाल : ईमान किसे कहते हैं और ईमान का मायने व मफहूम क्या होता है?

जवाब : ईमान अमन से बना है जिसके लग़वी मायने अमन दुनिया है। मगर इस्तेलाहे शरीयत में ईमान अच्छे अकायद का नाम है जिसके इख़्तेयार करने से इंसान दायमी अज़ाबे इलाही से बच जावे। जैसे तौहीद व रिसालत, हश्र व नश्र, जन्नत व दौज़ख़ और तक़दीर को मानना वग़ैरह वग़ैरह। लेकिन इस्तेलाहे

कुरआन में ईमान की असल जिस पर तमाम अकीदों का दारोमदार है वह यह है कि बंदा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिल से अपना हाकिम मुतलक माने, अपने आपको उन का गुलाम तसलीम करे और यह ख़्याल करे कि मोमिन के जान व माल सब हुजूर के मालिक हैं। अगर इसको मान लिया तो तौहीद जन्नत फरिश्ते, हश्र व नश्र, जन्नत व दौज़ख सब को माने मगर कुरआन के फतवे से वह मोमिन नही बल्कि काफिर व मुशरिक है। इबलीस पक्का मोहिद, नमाज़ी, आबिद व साजिद था, फरिश्ते, कयामत, जन्नत व दौज़ख सबको मानता था, मगर रब ने फरमाया, शैतान काफिरों में से है। क्यों? सिर्फ इसलिये कि नबी की अज़मत का कायल नहीं था। गर्ज़ यह कि ईमान का दारोमदार कुरआन के नज़दीक अज़मत मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर है। सिर्फ तौहीद का मानना ईमान नहीं, जन्नत व दौज़ख तकदीर, फरिश्ते और तमाम चीज़ों का मानना ईमन नहीं बल्कि सिर्फ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बा इख़्तेयार, ग़ैबदां बे मिस्ल बे मिसाल मुख़्तार कुल और हाकिम दिल से मानना ईमान है, और ईमान पर ही कबूलियत आमाल का दारोमदार और नजात है।

सवाल : हकीकत कुफ्र क्या है?

जवाब : जैसे कि सदहा चीज़ों के मानने का नाम ईमान था लेकिन उन सबका मदार सिर्फ एक चीज़ पर था यानी पैग़म्बर को मानना कि जिसने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कमाहक्कहू मान लिया उसने सब कुछ मान लिया इसी तरह कुफ्र का मदार सिर्फ एक ही चीज़ पर है। यानी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इंकार, उनकी अज़मत का इंकार, उनकी शाने आली का इंकार। असल कुफ्र तो यही है। बाकी तमाम उसकी शाखें हैं। मसलन जो रब की ज़ात या सिफात का इंकार करता है वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुन्किर है कि हुजूर ने फरमाया कि अल्लाह एक है और यह कहता है कि एक नही बल्कि कई एक हैं। इसी तरह रोज़ा नमाज़ वग़ैरह किसी एक का इंकार दर हकीकत हुजूर का इंकार है कि सरकार फरमाते हैं कि यह चीज़ें फर्ज़ हैं। वह कहता है कि नहीं। इसलिये हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अदना तौहीन उनकी किसी शय की तौहीन कुरआनी फतावा से कुफ्र हैं इसलिये हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत का लिहाज़ न हो बल्कि उनकी मुखालेफत

हो वह कुफ्र बन जाता है। देखो मस्जिद बनाना अच्छा काम है लेकिन मुनाफेकीन ने जब मस्जिदे ज़रार बनाई हुजूर की मुख़ालेफत करने के लिये और ईज़ा रसानी की नीयत से तो कुरआन ने इसे कुफ्र करार दिया।

सवाल : किसी को दूर से पुकारना यह समझ कर कि वह सुन रहा है, यह शिर्क है? (वहाबी)

जवाब : यह बिल्कुल ग़लत है, अगर दूर से पुकारना शिर्क हो तो सब मुशरिक हो जायेंगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदीना मुनव्वरा से हज़रत सारिया को पुकारा हालांकि वह निहावनंद में थे। इस्लामी लश्कर के कमांडर थे। कुफ्फार से आप उस वक्त मसरूफे जिहाद थे। हज़रत इब्राहीम ने काबा बनाकर तमाम दौर के लोगों को पुकारा और कयामत तक पैदा होने वाले तमाम इंसानों की रूहों को पुकारा और उन्होंने सुन लिया और लब्बैक भी कहा। जिन्होंने लब्बैक कहा उनको हज की सआदत नसीब हुई और जो ख़ामोश रहे वह महरूम रहें। इन तमाम चीज़ों का ज़िक्र कुरआन में मौजूद है। आज नमाज़ी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पुकारता है, ऐ नबी आप पर सलाम हो अगर यह शिर्क हो जाये तो हर नमाज़ी नमाज़ तो बाद में ख़त्म होगी ईमान पहले ख़त्म हो जायेगा। आज रेडियो लाउडस्पीकर के ज़रिये दूर से लोगों को पुकारते हैं औ वह सुन लेते हैं। अगर कहा जाये कि रेडियो की बिजली की ताकत एक सबब है और सबब के मातेहत दूर से सुनना शिर्क नहीं तो यही बात तो हम भी कहेंगे कि नुबूवत के नूर की ताकत एक सबब है और सबब के मातेहत सुनना शिर्क नहीं। दूर हो या नज़दीक किसी को ख़ुदा समझकर पुकारना यह शिर्क है लिहाज़ा यह सवाल बातिल है।

सवाल : क्या महबूबाने ख़ुदा दूर से सुनते और देखते हैं? (वहाबी, गुमराह फिरके)

जवाब : अल्लाह के मुकर्रिब और मकबूल बंदे दूर नज़दीक की चीज़ें देखते हैं और दूर की आहिस्ता आवाज़ भी बाहुक्मे इलाही सुनते हैं। कुरआन करीम इस पर गवाह है कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने कई मील दूर से चींटी की आवाज़ सुनी। वह उस वक़्त तमाम चीटियों से कह रही थी चयूटियों! अपने अपने घरों में चली जाओ, सुलेमान अलैहिस्सलाम का लश्कर आ रहा है। वह कहीं तुम्हें

कुचल न डाले। हजरत सुलेमान अलैहिस्सलाम उस चयूंटी की आवाज सुनकर मुस्कुरा पड़े। जब कि आपका लश्कर अभी उस जंगल में दाखिल भी नहीं हुआ था और लश्कर तीन मील या साठ मील की दूरी पर था तो आपने यह आवाज यकीनन इतने जयादा फासले से सुनी। रहा चयूंटी का यह कहना कि वह बे खबरी में कहीं कुचल न दें। इससे मुराद बे इल्मी नहीं बल्कि उनका अदल व इंसाफ बताना मकसूद है कि वह बे कसूर चयूंटी को भी नहीं मारते। याकूब अलैहिस्सलाम कनआन में हैं और यूसुफ अलैहिस्सलाम की कमीस मिस्र से चली है और आपने खुश्बू यहां से पा ली। यह नुबूवत की ताकत है। आसिफ बिन बरख्या मुल्के शाम में हैं और बिलकीस का तख़्त यमन में फौरन लाने की खबर दे रहे हैं। और लाना जाने के बग़ैर ना मुमकिन है। मालूम हुआ कि इस तख्त को यहां से देख रहे हैं। यह है वली की नज़र। हजरत ईसा अलैहिस्सलाम की नजर घरों के अंदर जो हो रहा है उसे दूर से देख रही है कि कौन खा रहा है और क्या खा रहा है। यह है नबी की कुव्वते नजर। मलकुल मौत को जान निकालने के लिये यह ताकत व कुव्वत दी कि आलम के हर इंसान बल्कि हर जानदार को देख लेते हैं तो अंबिया औलिया को जो रहबर व रहनुमा हैं। खलक के हादी हैं सारे आलम की खबर होना लाजिम है ताकि दवा की ताकत बीमारी से कम न हो। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आंखों को अल्लाह तआला ने वह बीनाई बख़्शी कि उन्होंने तहतुस्सरा से अर्शे इलाही तक देख लिया। कुरआन पाक में यह तमाम वाकियात दर्ज हैं। मालूम हुआ कि महबूबाने ख़ुदा अंबिया व औलिया की नज़र गुज़िश्ता आइंदा सब को देखती है। इसलिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेराज की रात दौजख में मुख्तलिफ कौमों को बिलखुसूस शौहर की नाशुक्री करने वाली अक्सर औरतों को अज़ाब में मुबतला देखा हांलाकि उन का अज़ाब पाना कयामत के बाद होगा। मेरे आका सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निगाहे नुबूवत का क्या कहना? आपने अल्लाह की ज़ात, सिफात, निशानियां कुदरत सब को देखा। इमाम अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत ने फरमाया-

किसने देखा यह मूसा से पूछे कोई
आंख वालों की हिम्मत पे लाखों सलाम
दूर व नज़दीक के सुनने वाले वह कान
कान लाले करामत पे लाखों सलाम

सवाल : हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो नमाज़ वग़ैरह में सलाम किया जाए उसमें यह नीयत न हो कि आप सुन रहे हैं बल्कि जैसे किसी से सलाम कहला भेजते हैं या किसी को खत में सलाम लिखते हैं ऐसे ही सलाम किया जाये, क्योंकि दूर से आदमी का सलाम फरिश्ते पहुंचाते हैं और पास वाले का सलाम हुजूर खुद सुनते हैं जैसा कि हदीस शरीफ में है- (वहाबी)

जवाब : इस सवाल का जवाब यह है कि जब किसी के हाथ सलाम कह कर भेजे तो उसे खिताब करके अस्सलामु अलैकुम नही कहते बल्कि जाने वाले को कहते हैं कि फलां से हमारा सलाम कह देना। हम लोग नमाज़ वग़ैरह में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़त तो लिखते नहीं तुम्हारी कौल के मुताबिक फरिश्तों से कहला भेजते हैं तो इस सूरत में यह न कहा जाता कि ऐ नबी तुम पर सलाम हो बल्कि कहा जाना चाहिये कि ऐ फरिश्तो! हुजूर से हमारा सलाम कहना। ख़िताब फरिश्तों से होना चाहिये था। दूसरी बात यह कि तुम्हारी पेश कर्दा हदीस में यह नहीं है कि दूर वाले का सलाम नहीं सुनते। सिर्फ यह कि दूर वाले का सलाम मलायका पेश करते हैं जैसे कि फरिश्ते रब की बारगाह में बंदों के आमाल पेश करते हैं तो क्या खुदा खुद उनके आमाल को नहीं जानता ज़रूर जानता है मगर पेशी भी ज़रूरी है। उलमा किराम फरमाते हैं कि दूर हो या नज़दीक हुजूर अहले मुहब्बत के सलाम को खुद सुनते हैं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो हर जगह जल्वागर हैं। हिजाब हमारी आंखों पर है। नकीरीन इसी जवाब को कब्र में उठा देते हैं और जलवा दिखाकर पूछते हैं कि इनको पहचानो अगर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर जगह नहीं तो अत्तहियात में अस्सलामु अलैकुम या अय्योहन्नबी में खिताब क्यों है। शैख़ अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि ने लिखा है कि नमाज़ी अत्तहियात में समझे कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कल्ब मोमिन में जलवागर हैं और एक ही वक़्त में आदमी चंद जगह दफन होते हैं और इसके लिये सब को ज़्यारते जमाले

मुस्तफा कराई जाती है। मालूम हुआ कि हुजूर की जलवागरी हर जगह है-

तू ज़िन्दा है वअल्लाह तू ज़िन्दा है वअल्लाह
मेरे चश्म आलम से छिप जाने वाले

सवाल : हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नूर कहना हुजूर की बे अदबी है बल्कि हुजूर की इज़्ज़त इसी में है कि आप ख़ाक से हों क्योंकि खाक नूर से अफज़ल है इसलिये फरिश्ते नूर हैं और आदम अलैहिस्सलाम खाकी, बशर और फरिश्तों ने आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा किया न कि आदम अलैहिस्सलाम ने फरिश्तों को, हुजूर को नूर मानना गोया आपकी तौहीन करना है। नूर साजिद है और ख़ाक मसजूद। (वहाबी, नजदी)

जवाब : इस सवाल के दो जवाब हैं एक इल्ज़ामी दूसरा तहकीकी। इल्ज़ामी जवाब तो यह है कि फिर खुदाए तआला को नूर कहना खुदा की और कुरआन की बे अदबी हुई। ताज्जुब है कि हुजूर को नूर कहते हैं तो आप को हुजूर की बे अदबी मालूम हो और खुदा को नूर कहने में यह सारी बे अदबी काफूर हो जाये। माशाअल्लाह देवबंदी वहाबी भी अदब बावले बन गये जिन्होंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऐसी खुली गुस्ताखियां कीं जो खुला काफिर भी न कर सके। तहकीकी जवाब यह है कि सज्दा आदम अलैहिस्सलाम के सिर्फ खाकी जिस्म शरीफ को न था बल्कि उस नूरानी रूह को था जो जिस्म शरीफ को फूंकी गयी। चूंकि जिस्मे आदम इस रूह की तजल्ली गाह बन चुका था इसलिये सज्दा उसे भी और आदम अलैहिस्सलाम की रूह नूर मुस्तफवी की एक तजल्ली थी वरना आदम अलैहिस्सलाम का जिस्म शरीफ तो रूह फूंकने से चालीस साल पहले पैदा हो चुका था अगर सिर्फ जिस्म होता तो अब तक तवक्कुफ न किया जाता। इससे पहले सज्दा हो चुका होता नीज़ इबलीस को खाक पर खाक में खाक की तरफ सज्दा करने में कभी उज्र न होता क्योंकि वह इससे पहले खाक के हर ज़र्रे पर सज्दे कर चुका था। आज यह एक सज्दा भी कर लेता। अब जो सज्दे से इंकार कर रहा है वह दर हकीकत वह इस नूरानियत का मुन्किर है जो सज्दे का बाइस है। नीज़ अगर फकत खाक खाक ही को सज्दा कराना था तो खाक ढेर टीले हज़ार मौजूद थे। उनमें से किसी की तरफ सजदा कर दिया जाता मालूम हुआ कि खाक मसजूद न थी बल्कि वह

नूर मसजूद था जो हजरत आदम अलैहिस्सलाम में वदीयत था।

जुबाने हाल से कहते थे आदम
जिसे सज्दा हुआ है मैं नहीं हूं

सवाल : अगर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नूर होते तो हुजूर की सारी औलाद यानी कयामत तक सैयद नूर होते क्योंकि औलाद अपने मां बाप की जिन्स से होती है इंसान का बच्चा इंसान शेर का बच्चा शेर ऐसी ही चाहिए कि नूर की औलाद नूर हो। जब सारे सैयद नूर नहीं तो हुजूर भी नूर नहीं। (वहाबी)

जवाब : इस किस्म के एतेराज़ उस वक़्त मुमकिन हैं कि जब हम हुजूर की बशरियत का इंकार करते। हम तो कहते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नूर भी हैं और बशर भी। कभी बशरियत के सिफात आप पर ज़ाहिर होते हैं कभी नूरानियत के। रब तआला ने आपको तमाम सिफात का जामेअ बना कर भेजा। जब आप पर नूरानियत ग़ालिब आती तो महीनों तक कुछ नहीं खाते पीते बल्कि सोम विसाल रखते और जब बशरियत ग़ालिब आती तो उसके तमाम तकाजे भी पूरा करते। रहा सादात किराम का नूर होना तो हुजूर के यह तमाम रिश्ते बशरियत के हैं नूरानियत में किसी से कोई रिश्ता नहीं। हुजूर इस नूरानियत में न किसी की औलाद है। न किसी के वालिद न किसी के कराबत दार न रिश्ते वाले। आलमे नूरानियत तो बहुत आला है। कोई रूह किसी की जिन्स या असल नहीं। इसलिये औलादे रूहानी औसाफ में मां बाप के खिलाफ भी हो जाती है। नबी जादा काफिर, आलिम की औलाद, जाहिल जाहिल की औलादे आलम हो जाती है गर्ज कि विलादत बशरियत तरह की है नूरानियत की नहीं।

तेरी नस्ल पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐन नूर तेरासब घराना नूर का

सवाल : बुखारी शरीफ की रिवायत से मालूम होता है कि जब ग़ारे हिरा में हुजूर पर पहली वही आयी तो हुजूर हजरत जिब्राईल को पहचान न सके, वरका बिन नोफिल के बताने से पहचाना कि यह जिब्राईल हैं। फिर यह कैसे दुरूस्त हुआ कि हुजूर अपनी नुबूवत पहले ही से जानते थे? (गुमराह फिरके)

जवाब : यह ग़लत है। बुख़ारी शरीफ की इस रिवायत में कोई लफ्ज़ ऐसा नही जिसके मायने यह हों कि हुजूर ने हज़रत जिब्राईल को न पहचाना। अगर हुजूर हज़रत जिब्राईल को न पहचानते तो यह आयत कतई न रहती क्योंकि आयत कतई जब होगी जब उसके कलामे इलाही होने में किसी किस्म का कोई शक व शुबह न रहे और अगर हुजूर को यह मालूम ही न हो कि यह शख़्स फरिश्ता है या कोई और तो यह पता भी नहीं हो सकता कि यह रब का कलाम है। जब हुजूर ही को इस आयत के कलामे इलाही होने में शक हो तो हम को इस का यकीन किसी तरह नहीं हो सकता कि हमारा यकीन तो हुजूर के यकीन पर है। इसलिये उस वक़्त हुजूर अनवर ने हज़रत जिब्राईल से यह न पूछा कि तुम कौन हो और मुझे क्या पढ़ाना चाहते हो? मालूम हुआ कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्हें जानते पहचानते थे। क्यों न पहचानते कि हज़रत जिब्राईल और सारा आलम हुजूर के नूर ही से बना और हुजूर का नूर इन सब से पहले पैदा हुआ। रहा वरका निब नोफिल के पास तश्रीफ ले जाना और वरका का यह अर्ज़ करना दूसरों की तसदीक के लिये था कि सुनने वाले वरका की यह गुफ्तगू सुनकर हुजूर की नुबूवत पर ज़्यादा मुतमईन हो जायें क्योंकि वरका बिन नोफिल तौरेत के बहुत बड़े आलिम थे। मक्का वाले इनके इल्म व अमल के कायल थे और उन पर एतेमाद करते थे। गर्ज़ यह कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बीबी खदीजतुल कुबरा के साथ वरका बिन नोफल के पास जाना अपने इल्म के लिये नहीं बल्कि उनसे तसदीक कराने के लिये था ताकि हज़रत खदीजा को हुजूर की नुबूवत का ऐनुल यकीन हासिल हो जाये और दूसरों को इल्मुल यकीन। जैसे हुजूर का पत्थरों से कलिमा पढ़ाना, दरख़्तों से गवाही दिलवाना, अपने इल्म के लिये नहीं दूसरों को बताने के लिये है।

सवाल : मसनद इमाम अहमद बिन हंबल में बारिवायत बीबी सफिया रज़ियल्लाहु अन्हा है आप फरमाती हैं कि एक दिन ठीक दोपहर में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तश्रीफ लाये, मैं हुजूर के साए में थी अगर हुजूर का साया न था तो आप साया में किस तरह हो गयीं थीं? (वहाबी)

जवाब : इस हदीस में साया से मुराद यह मारूफ साया नहीं जो कसीफ इजसाम का होता है क्योंकि मदीना मुनव्वरा में गर्मी की ठीक दोपहर में यह साया

पड़ता ही नहीं और इतना दराज़ साया कि दूसरा आदमी इसमें चल सके तो यह तो गर्मियों में दोपहर के वक्त हमारे यहां भी नहीं पड़ता। लिहाज़ा यहां साया मुराद नहीं। अरबी बल्कि उर्दू जुबान में साया रहमत, मेहरबानी व करम और पनाह को कहते हैं। आम तौर पर बुजुर्गों को लिखते हैं कि उनका साया हमेशा रहे। मां बाप का साया हम पर दराज़ और सलामत रहे। इसका मतलब यह नहीं कि यह हज़रात रात दिन धूप और आग में तपते रहें और उनका साया पड़ता रहे। मतलब यह कि आपकी मेहरबानी रहमत पनाह हमेशा रहे। देखो! हदीस पाक में है कि सात आदमियों को अल्लाह अपने अर्श के साया में रखेगा। देखो न खुदा जिस्म कसीफ है कि उसका साया हो न अर्शे आज़म सायादार जिस्म है। यहां दोनों जगह साया से मुराद रहमत और पनाह है। नीज़ हदीस पाक में है कि जन्नत में एक दरख़्त है जिसके साये में सवा सौ बरस चले तो भी उसे तय न कर सके। देखो जन्नत में न धूप है न चांदनी, फिर तूबा दरख़्त के साया के क्या मायने। वहां भी साया से मुराद पनाह या उसके नीचे होना है। तुम्हारी पेश करदा हदीस में अगर साया से मुराद साया मअरुफा हो तो यह हदीस हमारी पेश कर्दा हदीस जकू के भी ख़िलाफ होगी, और इन आयाते कुरआन के भी खिलाफ जो नूर के बारे में है।

सवाल : हुजूर ने अपनी इब्तेदाई तबलीग़ में फरमाया कि ऐ फातिमा बिन्त रसूलुल्लाह! तुम जो चाहे मेरा माल मांग लो, लेकिन मैं तुम से खुदा के ग़जब को मिटा नहीं सकता, जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी लख़्ते जिगर हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मुसीबत दफअ नहीं कर सकते तो हम से किस तरह दफअ कर सकते हैं फिर मिलकियत कहां रही? (वहाबी)

जवाब : इस रिवायत में मुस्तकिल ज़ाती मिलकियत का इंकार है। यानी ऐ फातिमा! अगर तुम ने ईमान कबूल न किया और रब का इरादा हो गया कि तुम पर अताब आ जाये तो मैं रब के मुकाबले में तुम से किसी मुसीबत को दफा नहीं कर सकता। और इससे मकसूद दूसरों को सुनाना है। इसलिये फरमाया गया। और यह किसी का अकीदा नहीं कि कोई रब का बंदा रब से मुकाबला कर सकता है। मआज़ल्लाह जो कोई जो कुछ भी करता है वह रब की दी हुई कुदरत और उसी के इरादे से करता है। मोतरिज़ ने सलतनते मुस्तफा के मायने नहीं

समझा और ज़ाती व अताई मुस्तकिल में फर्क नहीं जाना। शामी जिल्द अव्वल बहस गुस्ल मैयत में है कि इस हदीस का मतलब यह है कि बगैर रब तआला के मालिक कई हुए मैं तुमसे मुसीबत दूर नहीं कर सकता। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो अजनबी लोगों को शिफाअत से नफा पहुंचायेंगे फिर अपने अहले करावत मोमिनीन को क्यों महरूम छोड़ेंगे। हदीस पाक में है कि मौत से तमाम रिश्ते और सिलसिले टूट जाते हैं सिवाए हमारे रिश्ते और सिलसिले के। इसलिये हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुलसुम बिन्त फातिमा ज़ोहरा से निकाह किया ताकि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उनका सुसराली रिश्ता कायम हो जाये और यह आयत कि यानी जब सूर फूंका जायेगा लोगों के नस्ब टूट जायेंगे। इस हदीस के हुक्म से हुजूर का नस्ब अलहेदा है। शामी की इस इबारत से मालूम हुआ कि फातिमा ज़ोहरा की बड़ी ज़ात है सादात किराम को ही नस्ब काम आयेगा बशर्तेकि मोमिन हों। मिश्कात बाब फज़ायल अलसहाबा में है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मेरे सहाबी को थोड़ा सा जो खैरात करना औरों के पहाड़ बराबर सोना खैरात करने से बेहतर है। हुजूर के सोहबत पाक के यह दर्जे हैं तो लख़्ते जिगर नूरे नज़र हूं रज़ियल्लाहु अन्हा उनकी मदारिज व मरातिब तो रब ही जाने।

खूने खैरुलसल से है जिनका खमीर
उनकी इस पाक नीयत पे लाखों सलाम

सवाल : इस्लाम में सारे नस्ब व खानदान बराबर हैं। कोई किसी से अफज़ल नहीं। लिहाज़ा सैयद मिर्ज़ा, मुगल, पठान, तेली, नाई, धुनिया, जुलाहा, धोबी सब यकसां दर्जा रखते हैं। तकवा से फज़ीलत है नस्ब व हस्ब से नहीं जैसा कि कुरआन में इरशादे बारी तआला है बेशक हमने कबीले और खानदान इसलिये बनाये हैं ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको। बेशक अल्लाह तआला के नज़दीक इज्ज़त वाला, ताज़ीम वाला वह है जो नेक हो मुत्तकी और परहेज़गार हो। (ज़ैद)

जवाब : हज़रात सादाते किराम का नस्ब दूसरे नस्बों से आला और अफज़ल है। सादात किराम जो हुजूर के अहले करावत और औलाद हैं उनसे हुजूर की खातिर मुहब्बत करना लाज़िम है। दीगर खानदानों का यह हाल नहीं।

हुजूर पाक का खानदान दुनिया जहान में सबसे ज़्यादा अशरफ है। सादाते किराम के नस्ब पाक को यह अफज़लियत इसलिये है कि वह हुजूर का खानदान है। इस आयत का मंशा यह है कि मुसलमान सारे ही इज्जत वाले हैं ख़्वाह किसी कबीले से ताल्लुक रखते हों, किसी इस्लामी कौम, कबीला और ख़ानदान को ज़लील न जानो। जैसा कि अरब में रिवाज था कि बाज़ कबीलों को हकीर ज़लील समझते थे। यानी मुसलामनों में कोई खानदान कबीला ज़ात बिरादरी ज़लील नहीं। हां बाज़ बाज़ से अफज़ल हैं। अल्लाह तआला फरमाता है इज्ज़त अल्लाह तआला रसूल और मोमिनों के लिये है। इसमें सारे मुसलमान शामिल हैं। बिला तशबीह यूं समझा जाये कि सारे ही नबी इज्ज़त वाले हैं। अल्लाह तआला के प्यारे हैं। किसी पैग़म्बर की अदना बे अदबी भी कुफ्र है। मगर बाज़ नबी बाज से अफज़ल हैं। या इस आयत का मंशा यह है कि कोई नसबी फज़ीलत के घमंड में तक्वा परहेज़गारी न छोड़े। यह ध्यान रखे कि अल्लाह के नज़दीक जितना तक्वा ज़्यादा उतना ही दर्जा ज़्यादा बल्कि बहुत बड़ी हस्ब नस्ब वालों को बड़ा तक्वा चाहिये। या इस आयत का मंशा यह है कि मुसलमान किसी मुसलमान को धुनिया, जुलाहा, नाई, धोबी वग़ैरह होने का ताना न दें। और न ही किसी मुसलमान को हकीर, कमीन और कमतर समझे और न ही इसका ज़ात बिरादरी के नाम पर मज़ाक उड़ाये। हर मुसलमान वाजिबुल ताज़ीम व एहतेराम है किसी खानदान के अफज़ल होने से यह लाज़िम नहीं कि दूसरों को ज़लील जानो। लिहाज़ा सादाते किराम को यह हक हासिल नहीं कि वह दूसरे मुसलमानों को हकीर व ज़लील जानें, हर मुसलमान का एहतेराम लाज़िम है कि मगर दूसरे मुसलमानों को चाहिये कि सादाते किराम का इसलिये एज़ाज़ व इकराम करें कि यह लोग उस रसूल के औलाद हैं, जिन्होंने हमें कलिमा पढ़ाया जिन्होंने हमें कुरआन व ईमान दिया, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

हिदायात : कुरआन व अहादीस में सैयद हज़रात के जो फज़ायल ब्यान हुए हैं उनका मतलब यह नहीं है कि वह हज़रात नेक काम न करें, नमाज़ न पढ़ें, सिर्फ खानदानी शराफत की वजह से आमाल से अहलेदा हो गये। यह ख़्याल महज गलत और बातिल है। सादाते किराम को दूसरों से ज़्यादा नेकियां करनी चाहिये ताकि वह हज़रात औरों के लिये मिसाल बनें। फर्स्ट क्लास वाले मुसाफिर

को थर्ड क्लास वाले मुसाफिर से ज़्यादा रुपया खर्च करना पड़ता है। उन्हें लाज़िम है कि वह अपने इस्लाफ का नमूना बनें। इमाम हुसैन ने खंजर के नीचे नमाज़ पढ़ी अगर उनकी औलद बिला वजह नमाज़ छोड़े तो बड़े अफसोस की बात है। जितने सादाते किराम के फज़ायल हैं वह उनके लिये हैं जो सहीहुन्नसब खानदानी सैयद हों। हज़रत फातिमा ज़ोहरा से लेकर उन तक उनकी नस्ल में को ग़ैर सैयद न आया हो। फी ज़माना नकली सैयद बहुत बन गये कि सैयद नहीं मगर सैयद कहलाते हैं। यह सख़्त हराम और शदीद तरीन जुर्म है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस गुलाम पर लानत फरमाई जो अपने ग़ैर मौला की तरफ निसबत करे और उस शख़्स पर लानत फरमाई जो अपने ग़ैर खानदान से मंसूब करे जो सैयद न हो और सैयद बने वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लानत का भी मुस्तहिक है। नीज़ दरे पर्दा वह अपने मां को गाली देता है और वह सैयद को अपनी मां का ख़ानदान बताता है। देखो ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु हारिसा के बेटे थे। कुरआन करीम ने इसे सख़्त मना फरमाया और कहा कि अल्लाह ने तुम्हारे पालकों को तुम्हारा बेटा न बनाया। सोचो जब हज़रत ज़ैद को नबी करीम का बेटा कहना हराम हुआ हालांकि वह हुजूर के परवरदा और पालक भी थे तो जो कोई अपने को सैयद कहकर हुजूर की औलाद कहे हालांकि वह सैयद न हो तो कुरआन के रू से कितना बड़ा मुजरिम है। इसी तरह जो अपने को सैयद कहेगा मगर हो मुरतिद वो वह मुसलमान ही नहीं सैयद होना तो बहुत बड़ी बात है। कोई मरज़ाई राफज़ी, ख़ारजी, चकरालवी, वहाबी गुस्ताख़ रसूल सैयद नहीं हो सकता क्योंकि सैयद होने के लिये ईमान ज़रूरी है और वह ईमान से बे बहरा कुफ्र की वजह से सारे निसबती रिश्ते टूट जाते हैं इसलिये काफिर न मोमिना से निकाह कर सके और न मोमिन की मीरास पाये न मोमिनों के क़ब्रस्तान में दफन हो। जब काफिर औलाद को मोमिन बाप की माली मीरास नहीं मिल सकती तो काफिर को नसबी शराफत व इज़्ज़त कैसे मिल सकती है? अबू लहब बनी हाशिम से है मगर उसकी कोई शराफत नहीं। लिहाज़ा सुन्नी सहीहुल अकीदा मोमिन सादाते किराम वाजिबुल एहतेराम हैं न कि गुस्ताख़े रसूल।

सवाल : हदीसें जमानाए नबी के बाद लिखी गयीं उस जमाने में किताबी शक्ल में न थी लिहाजा अब हदीसों का एतेबार न रहा न मालूम ग़लत लिखी गयीं या सही? (वहाबी)

जवाब : इसी तरह यह सवाल कुरआन पाक पर भी हो सकता है कि कुरआन ज़मानए नबवी में किताबी शक्ल में न था बाद में ज़मान सिद्दीकी में सिर्फ जमा किया गया। फिर ज़माना ये उसमानी में उसकी इशाअत हुई और खुलफाए राशिदीन के बाद इस पर आराब (ज़ेर, जबर, पेश) लगे। फिर बहुत अर्से के बाद इसके पारे और रुकूअ वग़ैरह मुकर्रर हुए। ना मालूम लोगों ने दुरुस्त लिखा या ग़लत। जनाब अल्लाह ने सहाबा को वह ग़जब का हाफिज़ा बख़्शा था कि बाज़ सहाबा हज़ारों बल्कि लाखों हदीसों के ऐसे हाफिज़ थे कि ज़ेर व ज़बर का भी फर्क न होता था। जब अहदे सहाबा करीबुल खत्म हुअ तो ज़माना ताबेईन में कुतबे अहादीस ऐसी एहतियात के साथ लिखी गयीं जिसकी मिसाल किस ज़माने में नही मिलती कि हर रावी की तारीख किताबों में आ गयी और उसके लिये मुकम्मल एक फन वज़अ हुआ जिसे इसमा उर्रजाल कहते हैं।

हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफा रज़ियल्लाहु ने जो कि ८0हि0 में पैदा हो चुके थे मसानीद इमाम अबू हनीफा लिखी, फिर हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो कि ९0 हि0 में पैदा हुए मुअत्ता इमाम मालिक लिखीं इसी तरह इमाम मुहम्मद ने मूता इमाम मुहम्मद वग़ैरह तालीफ की। हत्ता कि १९४ ई0 में हज़रत इमाम बुख़ारी पैदा हुए और उन्होंने ऐसी मारका तुल आरा किताब लिखी कि सुबहानाल्लाह! यानी बुख़ारी शरीफ़। इस तालीफ़ से पहले और तालीफ़ के ज़माने में लोग अहादीस ऐसे याद करते थे जैसे आज हाफ़िज़े कुरआन शरीफ़ को। इसके बाद फिर हदीस याद करने का रिवाज कम हो गया।

सवाल : हदीस और सुन्नत में क्या फ़र्क़ है?

जवाब : हदीस और सुन्नत में यह फ़र्क़ है कि हदीस तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हर वह क़ौल या फेअल शरीफ़ है जो रिवायत में आ जावे ख़्वाह हमारे लिये वह क़ाबिले अमल हो या न हो लेकिन सुन्नत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हर वह क़ौल या अमल शरीफ़ है जो हमारे लिये लायके

अमल हैं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयक वक्त नौ या ग्यारह बीवियां अपने निकाह में रखना या ऊंट पर सवार होकर तवाफे काबा फरमाना या अपनी नवासी हजरत इमामा को अपने कंधे पर बिठाकर नमाज़ अदा फरमाना हदीस से साबित है मगर सुन्नत नहीं। हम इस पर अमल हरगिज़ नहीं कर सकते इसलिये हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरी सुन्नत को लाज़िम पकड़ो। यह न फरमाया मेरी हदीस को लाज़िम पकड़ो। लिहाज़ा दुनिया में अहले हदीस कोई नहीं हो सकता और हम बाफज्लेहि तआला अहले सुन्नत हैं। क्योंकि अहले हदीस का मायने हदीस पर अमल करने वाला, और यह ना मुमकिन है मगर अहले सुन्नत के मायने हैं हर सुन्नत पर अमल करने वाला यह मुमकिन है।

सवाल : बाज लोग कहते हैं कि हर कौम में नबी आये, यानी मआज़ल्लाह भंगियों, चमारों, हिंदुओं, बुद्धों वगैरह में उन ही की कौम से आये। लिहाज़ा लाल गुरु, राम कृष्ण, गोतमबुद्ध, वगैरह चूंकि नबी थे इसलिये उनको बुरा न कहो। कुरआन फरमाता है हर कौम में हादी है। कुरआन फरमाता है हर कौम में हादी हैं नीज औरतें भी नबी हुई हैं क्योंकि हजरत मूसा की वालिदा और हज़रत मरयम को वही हुई और जिस को वही हो वह नबी है लिहाज़ा यह औरतें नबी हैं?

जवाब : सायल के यह दोनों कौल गलत हैं अव्वल तो इसलिये कि वह आयत पूरी नहीं ब्यान की और तर्जमा भी दुरुस्त नहीं किया। आयत यह है तुम डर सुनाने वाले और हर कौम के हादी हो। यानी हर कौम का हादी होना हुज़ूर अलैहिस्सलाम की सिफ्त है। दीगर अंबियाए किराम खास खास कौमों के नबी होते थे और ऐ महबूब तुम हर कौम के नबी हो। अगर मान भी लिया जाये कि इस आयत के यही मायने हैं कि हर कौम में हादी हुए तो यह कहां है कि हर कौम में इसी कौम के हादी हुए। हो सकता है कि अशरफ कौम में नबी आये, दीगर कौमें भी उनके मातेहत रहीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुरैशी हैं मगर पठान, शैख़ सैयद, मिरज़ा यह कि सारी कौमों बल्कि सारी मखलूक के नबी हैं। नीज़ लफ्ज़ हादी आम है कि नबी हो या गैर नबी। तो यह मायने भी हो सकते हैं कि हर कौम में इस कौम में से बाज़ बाज के लिये रहबर हुए। बल्कि महादेव, राम, कृष्ण, गोतमबुद्ध वग़ैरह की हस्ती का भी शरई सबूत नहीं। कुरआन व

अहादीस ने इनकी खबर न दी सिर्फ बुत परस्तों के जरिये उनका पता लगा। वह भी इस तरह कि किसी के चार हाथ, किसी के छः पांव, किसी के दस सर, किसी के मुह पर हाथी की सूंड, किसी के पीछे लंगूर की दुम। इनके नाम भी घड़े हुए और उनकी सूरतें भी। रब ने अरब के बुत परस्तों को फरमाया यह तुम्हारे और तुम्हारे बाप दादाओं के घड़े हुए नाम हैं जब उनके होने का यकीन ही नहीं तो इन्हें नबी मान लेना कौन सी अक्लमंदी है। दूसरा कौल इसलिये ग़लत है कि हजरत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा माजिदा के दिल में उलका या ईलहाम किया गया था जिसे कुरआन वही से से तावीर किया। वही बामायने अलहाम भी आती है जैसे कुरआन में है आपके रब ने शहद की मक्खी के दिल में यह बात डाल दी। यहां वही बामायने दिल में डालना है। हज़रत मरयम को वह वही तबलीग़ न थी और न वह तबलीगे अहकाम के लिये भेजी गयीं। नीज़ फरिश्ते का हर कलाम वही नहीं। बाज सहाबा ने मलायका के कलाम सुने हैं और बवक्त मौत और कब्र व हश्र में सब ही मलायका से कलाम करेंगे। हालांकि सब नबी नहीं।

सवाल : हुजूर अलैहिस्सलाम औलादे आदम हैं, हमारी तरह खाते पीते, सोते जागते और ज़िन्दगी गुज़ारते हैं बीमार होते हैं, मौत आती है। इतनी बातों में शिरकत होते हुए इनको बशर या अपना भाई क्यों न कहा जाये? (वहाबी)

जवाब : इसका जवाब मौलाना रोम ने अपनी मसनवी शरीफ़ में दिया है कि कुफ्फार ने कहा हम और पैग़म्बर बशर हैं क्योंकि और वह दोनों खाने सोने में वाबस्ता हैं। अंधों ने यह न जाना कि अंजाम में बहुत बड़ा फ़र्क हैं देखो भिड़ और शहद की मक्खी एक ही फूल चूसती है मगर एक जहर और दूसरे से शहद बनता है। दोनों हिरन एक ही दाना पानी खाते पीते हैं मगर एक से पाखाना और दूसरे से मुश्क बनता हैं यह जो खाता है उससे पलीदी बनती है, नबी के खाने से नूर खुदा होता है। यह सवाल तो ऐसा है जैसे कोई कहे कि मेरी किताब और कुरआन बराबर हैं क्योंकि यह दोनों एक ही रौशनाई से एक काग़ज़ पर एक ही कलम से लिखी गयीं एक ही किस्म के हुरुफ़ तहज्जी से दोनों बनें, एक ही प्रेस में छपीं, एक ही जिल्दसाज़ ने जिल्द बांधा, एक ही अलमारी में रखी गयीं। फिर इनमें फर्क ही क्या है? मगर कोई बेवकूफ भी नहीं कहेगा कि इन ज़ाहिरी बातों

से हमारी किताब कुरआन की तरह हो गयी। तो हम साहबे कुरआन की मिस्ल किस तरह हो सकते हैं? यह न देखा कि हुजूर का कलिमा पढ़ा जाता है इनको मेराज हुई इनको नमाज़ में सलाम करते हैं, इन पर दुरूद भेजते हैं तमाम अंबिया औलिया इनके खुद्दाम बारगाह हैं। यह औसाफ हमा शुमा तो क्या मलायका मुकर्रबीन को भी न मिले।

सवाल : महफिले मिलाद की वजह से रात को देर में सोना होता है जिसकी वजह से फज्र की नमाज़ कज़ा हो जाती है और जिससे फर्ज़ छूटे वह हराम लिहाज़ा महफिले मिलाद हराम?

जवाब : अव्वलन तो मिलाद शरीफ हमेशा रात को नहीं होता। बहुत दफा दिन में भी होता है। जहां रात को वहां बहुत देर तक नहीं होता, ग्यारह बजे तक ख़त्म हो जाता है। इतनी देर तक लोग अमूमन वैसे भी जागते ही हैं। अगर देर लग भी जाये तो नमाज़ बा जमाअत के पाबंद लोग सुबह को नमाज़ के वक़्त जाग जाते हैं जैसा कि बारहा का तर्जबा है। लिहाज़ा यह एतेराज़ महज़ ज़िक्र रसूल को रोकने का बहाना है। और अगर कभी मिलाद शरीफ देर में ख़त्म हुआ और इसकी वजह से किसी की नमाज़ के वक़्त आंख न खुली तो उससे मिलाद शरीफ क्यों हराम हो गया। दीनी मदारिस के सालाना जल्से दीगर मज़हबी कौमी जल्से रात को देर तक होते हैं और बाज़ जगह निकाह की मजलिस आख़िरी रात में होती है। रात की रेल से सफर करना होता है तो बहुत रात तक जागना होता है। कहो यह जल्से, यह निकाह, यह रेल का सफर हराम है या हलाल? जब यह तमाम चीज़ें हलाल हैं तो महफिल मिलाद पाक हराम क्यों होगी, वरना वजह फर्क़ बयान करना ज़रूरी है।

सवाल : हदीस शरीफ में है कि जिसके दिल में राई के बराबर भी ईमान होगा वह जन्नत में जायेगा और ईमान हुजूर की शाने अज़मत, अदब और ताज़ीम और इश्क रसूल का नाम है। अगरचे हम नमाज़ें नहीं पढ़ते, गुनाहों में मुलव्विस रहते हैं मगर सुन्नी मुसलमान हैं इसलिये जन्नत में जायेंगे? (खुशफहमी)

जवाब : बेशक हर सुन्नी सहीहुल अकीदा मुसलमान जन्नती है। वह जन्नत में जायेगा। मगर गुनाहों की सज़ा काट कर उसे जन्नत में दाख़िल किया जायेगा क्योंकि जन्नत पाक व साफ जगह है। वहां गुनाहों से पाक लोग होंगे।

उनके कपड़े भी पाक होंगे। उनके जिस्म और ख़्यालात भी पाक होंगे और गुनाह एक तरह का मेल है गंदगी हैं जन्नत में मेल और गंदगी की क्या ज़रूरत। गुनाहों के मेल को धोने के लिये अल्लाह तआला ने एक लांडरी बनाई है जिसको जहन्नम कहते हैं। गुनाहगार आदमी को सबसे पहले इस लांडरी में डाला जायेगा और जब उस के सारे गुनाह जल कर धुलकर पाक व साफ़ हो जायेंगे तब उसको जहन्नम से निकालकर जन्नत में दाख़िल किया जायेगा। देखो एक मेला कुचेला गंदा कपड़ा उस वक़्त पहनने के लायक होता है जब वह लांडरी में जाता है। धोबी या घर वाली उसे पहले गर्म पानी में भिगोती है साबुन लगाती है, उसे पूरा ज़ोर लगाकर पीटती हैं जब कपड़ा ख़ूब पीटता और मार खाता है तब जाकर साफ़ व शफ़ाफ़ होता है। उसे ख़ूब निचोड़ कर धूप में ख़ूब सुखाया जाता है। सूखने के बाद प्रेस के ज़रिये फिर आग की गर्मी देकर सही हलात पे लाया जताा है तब जाकर कहीं वह कपड़ा बदन से करीब होता है, जिस्म से लगने के काबिल होता है। बिल्कुल इसी तरह समझ लीजिये जिसके सीने में राई के बराबर भी ईमान होगा, वह जन्नत में जायेगा ज़रूर मगर सबसे पहले उसे गुनाहों की सज़ा देने के लिये उस ख़ुदाई लांडरी में धुलने के लिये भेजा जायेगा। जब उसके तमाम गुनाह जहन्नम में जल जायेंगे, धुलकर साफ़ व शिफ़ाफ़ हो जायेगा तो उसे वहां से निकालकर जन्नत में दाख़िल किया जायेगा। मेरे सुन्नी मुसलमान भाईयो! ऐसा न समझना कि ईमान है, अमल की अब कोई ज़रूरत नहीं। दर हकीकत ईमान के बाद ही अमल की ज़रूरत है। बग़ैर ईमान के कोई अमल काबिले कबूल नहीं। यानी ईमान अमल ही के लिये होता है। अगर अपने फरायज़ वा जेबात को तर्क किया है तो उसकी सज़ा पहले मिलेगी। बाद में सज़ा काट कर अगर दिल में राई के बराबर भी ईमान है तो जन्नत में जाना है मगर कब? सज़ा मिलने के बाद। धुलाई और पिटाई होने के बाद, पहले ही से नहीं। इसलिये फरायज़ व वाजिबात को वक़्त पर अदा कीजिंये। नेकियों की दावत दीजिये। बुराईयों से ख़ुद बचिये और दूसरों को भी बचाईये। गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ दीजिये तकवा व तहारत वाली ज़िन्दगी जीना सीखिये।

सवाल : नफ़्से अम्मारा और नफ़्से मुतमईन्ना क्या है?

जवाब : हर इंसान का नफ़्स एक ही है मगर इसकी कैफ़ियत जुदागाना हैं। अगर नफ़्स हुक्मे रब और शरीयत के तावे है तो नफ़्से मुतमईन्ना है और अगर ख़िलाफ़े शरीयत नफ़्स किसी उमूर की तरफ़ उभारे तो यह नफ़्स अम्मारा है जिसकी बागडोर शैतान के हाथ में है। इस नफ़्स अमारा की शरारतों से बचना भी बहुत ज़रूरी है क्योंकि यह निहायत नुक़सानदेह दुश्मन है और इसकी आफ़ात निहायत ही सख़्त हैं इसका ईलाज बहुत मुश्किल अमर है। इसकी बीमारी निहायत ख़तरनाक बीमारी है और इसकी दवा सब दवाओं से दुश्वार है। नफ़्स का इस क़दर मुज़िर और ख़तरनाक होना दो वजह से है। अव्वल यह कि नफ़्स घर का चोर है और चोर जब घर में ही छिपा हो तो उससे महफ़ूज़ रहना बहुत मुश्किल होता है और बहुत ज़्यादा नुक़सान पहुंचाता है। दूसरी वजह यह कि नफ़्स एक मजबूर दुश्मन है और इंसान को जब किसी से मुहब्बत होती है तो उसके अयूब नज़र नहीं आते बल्कि मुहब्बत की वजह से महबूब के अयूब से अंधा रहता है। अगर इंसान नफ़्स के अयूब से आगाह न हो जो हर वक़्त इंसान के साथ अदावत और नुक़्सान रसानी में मसरूफ़ है तो ऐसा शख़्स अगर इस पर ख़ुदा की रहमत और उसका फ़ज़्ल न हो तो अनक़रीब हलाकत और ज़िल्लत के गहरे गडढे में जा गिरेगा।

इबलीस की मरदूदियत के बाद हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमुस्सलाम से जो लग्ज़िश ज़हूर पज़ीर हुई इसमें भी चाहत नफ़्स कार गर थी। इबलीस ने क़सम खाकर कहा कि दाना खा लेने के बाद तुम्हें हमेशा के लिये जन्नत में रहना नसीब हो जायेगा तो दोनों बक़ाए हयात को अज़ीज़ गर दानते हुए फिसल गये। तो यह लग्ज़िश भी (जो बाद में बिल्कुल माफ़ हो गयी) नफ़्स की मआवनत व शिरकत से हुई और दोनों हज़रात इस बिना पर अल्लाह तआला के पड़ोस व कुर्ब से दूर कर दिये गये और जन्नते फ़िरदौस से इस फ़ानी, हक़ीर, खोटी हलाकत में डालने वाली दुनिया की तरफ़ मुन्तकिल कर दिये गये। और इस लग्ज़िश के बाइस उन्हें बहुत सी दिक्क़तें पेश आयीं और उनकी औलाद भी क़यामत तक दुनिया के फंदों में मुबतला हो गयी।

फिर हाबील का क़त्ल भी नफ्से अम्मारा की वजह से हुआ। और हारूत व मारूत भी इसी नफ्से अम्मारा के सबब फ़ित्ने में मुबतला हुए। और इसी तरह क़यामत तक नफ्स की वजह से ना क़ाबिल गुफ़्ता बेह वाक़ियात रूनुमा होते रहेंगे। मख़लूक़ में जो फ़ित्ने जो ख़राबियां जो गुमराहियां और जो गुनाह वाक़ेय होते हैं और होते रहेंगे उनकी बुनियाद नफ्स की ख़्वाहिश ही होती है। अगर यह न होता तो मख़लूक़ खैरियत और सलामती से रहती। जब नफ्स की अदावत इस हद तक ख़तरनाक है तो आक़िल को चाहिये कि नफ्स की शरारतों से बचाव का एहतेमाम करे।

सवाल : नफ्से अमारा तो बहुत ही ज़िद्दी, शरकश और बद फ़ितरत शय है इसका लगाम से क़ाबू में आना बहुत मुश्किल है तो ऐसे दुश्मन को कौन सा हीला और तदबीर हो सकता है जिससे हम इसको ज़ेर कर सकें? (सूफ़ियाए किराम)

जवाब : वाक़ई यह इंतेहाई सरकश है। इस पर क़ाबू पाने के लिये लाज़मी और ज़रूरी है कि इसे बहुत ज़लील व ख़्वार करके रखा जाये ताकि लगाम और क़ाबू में आ सके। उलमाए किराम ने फ़रमाया कि नफ्स को ख़्वार और उसके ज़ोर को तीन चीज़ों से तोड़ा जा सकता है। अव्वल यह कि उसे शहवत से रोका जाये क्योंकि अड़ियल हैवान को जब चारा कम मिलता है तो नरम हो जाता है। दूसरी चीज़ यह है कि इबादात का भारी बोझ उस पर लाद दिया जाये। क्योंकि गधे को जब चारा कम दिया जाये तो बोझ ज़्यादा लादा जाये तो लाज़मी तौर पर अपनी शैख़ी छोड़ देता है और मुतीअ व मनक़ाद हो जाता है। तीसरी चीज़ यह कि हर वक़्त रब तआला से इमदाद तलब करता रहे कि वह नफ्स के शर व फसाद से बचा कर रखे। कुरआन में इरशादे बारी तआला है नफ्स तो हमेशा बुराईयों का हुक्म ही देता है। हां जिस पर अल्लाह का फ़ज़्ल व करम हो वही महफ़ूज़ रहता है। जब तुम इन तीनों बातों पर कारबंद हो जाओगे तो इंशाअल्लाह तआला नफ्स सरकश मुतीअ व मनक़ाद हो जायेगा। उस वक़्त तुम्हें इसको ज़ेर करने और लगाम देने में जल्दी करनी चाहिये ताकि आइंदा के लिये इसकी शरारतों से महफ़ूज़ रह सके। अलहासिल यह कि नफ्से अम्मारा को राहे इबादत व शरीयत पर चलाने की तदबीर यह है कि तू क़ौल फेअल और फ़िक्र गर्ज़ हर

तरह से उस खौफ का कोड़ा मुसल्लत रखे। जैसा कि किसी बुजुर्ग के मुताल्लिक़ मंकूल है उनके नफ्स में किसी गुनाह की रग़बत और चाहत पैदा हुई तो वह बाहर सहरा की तरफ चल पड़ा। वहां जाकर कपड़े उतारे और तपती रेत पर लौटना शुरू किया और नफ्स से मुख़ातिब होकर कहा, ''ऐ रात के वक़्त मुरदार की तरह चारपाई पर पड़े रहने वाले और दिन लग़वियात में ज़ाया करने वाले नफ्स! इस तपिश और हरारत को चख ले। जहन्नम की आग तो इससे कहीं ज़्यादा गर्म है। जब तेरे लिये यह हरारत नाक़ाबिले बर्दाश्त है तो दौज़ख़ की आग की गर्मी किस तरह बर्दाश्त करेगा। इसीलिये तो मेरे पीर व मुरशिद शहज़ादए आला हज़रत ताजदारे अहले सुन्नत फ़रमाते हैं-

मेरा नफ्स सरकश भी रहज़न है मेरा
यह देता है दम, दम बदम ग़ौसे आज़म
मेरे दम को इसके दमों से बचादे
करम कर करम कर करम ग़ौसे आज़म
(कलामे नूरी)

सवाल : जिस्म में बहुत से आज़ा हैं जैसे हाथ, पां, नाक, कान, जुबान वग़ैरह मगर दिल की पाकीज़गी दुरुस्तगी और इस्लाह के लिये जितना ताकीदी हुक्म कुरआन व अहादीस में नाफिज़ हुआ है इतना किसी और आज़ा ये बदन के लिये नहीं ऐसा क्यों?

जवाब : इसलिये कि दिल का मामला बाकी आज़ा से ज़्यादा खतरनाक है और इसका असर बाकी आज़ा से ज़्यादा है। इसकी दुरुस्तगी ज़्यादा वक़्त तलब और उसकी इस्लाह ज़्यादा मुश्किल हैं पूरे इंसानी वजूद की पाकीज़गी का दारोमदार इसी दिल पर है। अगर यह बिगड़ गया तो समझो पूरा वजूद बिगड़ गया। जिस्म में सबसे बेहतरीन चीज़ भी यही है। और सबसे बदतरीन चीज़ भी यही है। किसी बादशाह ने हज़रत लुक़मान अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि बकरी ज़िब्ह करो और इसके जिस्म में जो चीज़ सबसे ज़्यादा बेहतरीन हो वह चीज़ निकालकर हमारे पास ले आओ। आपने बकरी ज़िब्ह की और उसका दिल लेकर आये और फरमाया इससे बढ़कर इके जिस्म में कोई चीज़ बेहतर नहीं।

चंद रोज़ बाद बादशाह ने फिर कहा कि जाओ बकरी ज़िब्ह करके उसके जिस्म में जो सबसे बदतरीन चीज़ हो ले आओ। आप बकरी ज़िब्ह करके फिर दिल ले आये। बादशाह ने पूछा यह क्या मामला है? फरमाया ऐ बादशाह! जिस्म में सबसे बेहतरीन यही चीज़ है। अगर यह दुरुस्त है तो सब से बेहतर है और अगर यह बिगड़ जाये तो इससे बदतरीन जिस्म में कोई चीज़ नहीं।

इस्लाहे क़ल्ब के मुताल्लिक़ कुछ कुरआनी आयात पेश करता हूं जिन पर अमल करने से इंशाअल्लाह तआला दिल की इस्लाह पूरी हो जायेगी। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है अल्लाह ख़ायन आंखों और दिल की पोशीदा राज़ों को जानता है। दूसरे मकाम पर फ़रमाया, जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अल्लाह उससे बाख़बर है। एक और जगह फरमाया, बेशक अल्लाह तआला सीने के राज़ जानता है। देखो अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में कितनी दफ़ा इस बात को दोहराया और तकरार किया है। अल्लाह तआला का सीने के इसरार पर आगाह होना ही डरने और ख़ौफ़ करने के लिये काफ़ी है। क्योंकि अलामुल ग़यूब के साथ मामला बहुत नाजुक है इसलिये तुम्हें ख़्याल होना चाहिये कि तुम्हारे दिलों में किस तरह के राज़ हैं जिनसे अल्लाह तआला बाख़बर है। अगर मअज़ल्लाह तुम्हारे ख़्यालात व इरादे रज़ील, बुरे और गंदे हों तो तुम्हें शर्म व हयात करना चाहिये। ख़्यालात, इरादे, वसवसे दिलों में पैदा होते हैं इसलिये दिल को हर तरह की गंदगी और आलूदगी से पाक व साफ़ रखना चाहिये। हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया, अल्लाह तआला सिर्फ़ तुम्हारी ज़ाहिरी सूरतों और खालों को नहीं देखता बल्कि वह तुम्हारे दिलों को देखता है।

इस हदीस मुबारका से मालूम हुआ कि दिल रब्बुल आलेमीन की नज़र का मकाम है। तो उस शख़्स पर ताज्जुब है जो ज़ाहिरी चेहरे का एहतेमाम करे। उसे धोए मेल कुचेल से साफ़ व सुथरा रखे ताकि मख़लूक़ उसके चेहरे के किसी ऐब पर मतलअ न हो मगर दिल का एहतेमाम न करे जो रब्बुल आलेमीन की नज़र का मकाम है। चाहिये तो यह था कि दिल को पाकीज़ा रखे उसे आरास्ता करे और साफ़ सुथरा रखे ताकि रब्बुल आलेमीन इसमें किसी ऐब को न पाये। लेकिन अफसोस का मकाम है कि दिल गंदगी पलीदी और ग़लाज़त से लबरेज़ है मगर जिस पर मखलूक की नज़र पड़ती है (चेहरा कपड़ा) उसके

लिये कोशिश होती है उसकी खूब धुलाई सफाई होती है उसमें कोई ऐब व कबाहत न पायी जाये।

ख़ूब अच्छी तरह याद रखो दिल एक बादशाह के मानिंद है जिसकी इताअत की जाती है और बाकी आज़ा रियाया की तरह हैं कि सब उसकी पैरवी करती हैं। तो अगर सरदार दुरुस्त हो तो उसके ताबेअ भी दुरुस्त होते हैं। इसी तरह अगर बादशाह दुरुस्त हो तो रियाया भी दुरुस्त और ठीक होती है। इस ब्यान की वज़ाहत हुजूर अलैहिस्सलाम की दर्जे ज़ैल हदीस से होती है। आपका इरशाद है इंसान के अंदर गोश्त का एक लोथड़ा है अगर वह दुरुस्त हो तो सारा जिस्म दुरुस्त होता है और अगर वह ख़राब हो तो सारा जिस्म ख़राब होता है। सुन लो कि वह दिल है।

दोस्तो जब तमाम जिस्म की इस्लाह कलब की इस्लाह पर मौकूफ़ है तो दिल की इस्लाह बहुत ज़रूरी है इसलिये दिल की पाकीज़गी व दुरुस्तगी के लिये सबसे ज़्यादा ताकीदी हुक्म दिया गया है। अल्लाह हम सब मुसलमानों को इबरत पकड़ने वालों, हिदायत याफ्ता लोगों और इस्लाहे कलब की तग व दू करने वालों में शामिल फरमाये। आमीन

मोहताजे दुआ -
मुहम्मद इलयास ख़ान नूरी
मु0 पो0 रतनपुर, तहसील मातर, ज़िला खेरा, गुजरात

इमाम अहमद रज़ा खान मुहद्दिस बरैलवी रज़ि अल्लाहु अन्हु का बारगाहे खत्मुल-मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में ख़िराजे अक़ीदत

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शमअ़ बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम
शहरे यारे इरम ताजदारे हरम
नव बहारे शफाअत पे लाखों सलाम
अर्श ता फर्श है जिसके ज़ेरे नगीं
उसकी क़ाहिर रियासत पे लाखों सलाम
दूर व नज़्दीक के सुनने वाले वह कान
काने लअले करामत पे लाखों सलाम
जिसके माथे शफाअत का सहरा रहा
उस जबीने सआदत पे लाखों सलाम
जिस तरफ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे नुबुव्वत पे लाखों सलाम
वह दहन जिसकी हर बात वह्य ख़ुदा
चश्म-ए-इल्म हिक्मत पे लाखों सलाम
पतली-पतली गुलें कुदस की पत्तियां
उन लबों की नज़ाकत पे लाखों सलाम
जिसकी तस्की से रोते हुए हंस पड़ीं
इस तबस्सुम की आदत पे लाखों सलाम
कुल जहां मिल्क और जौ की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअत पे लाखों सलाम
जिसको बारे दोआलम की परवाह नहीं
ऐसे बाज़ू की कुव्वत पे लाखों सलाम
पहले सज्दा पे रोज़े अज़ल से दुरूद
याद गारिए-ए-उम्मत पे लाखों सलाम
मुझ से ख़िदमत की कुदसी कहें हां रज़ा
मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम